भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और मौलाना मुहम्मद अली जौहर

ब्रजवासी लाल अग्रवाल

६५५.०३८
ब्रज/भा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और मौलाना मुहम्मद अली जौहर

डॉ० ब्रजवासी लाल अग्रवाल

राधा पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली-११०००२

प्रकाशक :
राधा पब्लिकेशन्स
४३७८/४ बी, अन्सारी रोड़, दरियागंज,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : ३२६१८३९, ३२५४३०६

© लेखक
प्रथम संस्करण १९९६
ISBN : 81-7487-055-5

मुद्रक :
एशियाटिका कम्पूटर्स
५८१५, गली नं० ६, न्यू चन्द्रावल
दिल्ली - ११०००७
दूरभाष : २३८८८१

तरूण आफॅसेट प्रिन्टर्स

प्राक्कथन

देशप्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल- असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित॥[१]

देश प्रेम की इसी पावन रंगभूमि में सर्वस्वत्यागी, देशभक्त शिरोमणि, मातृभूमि के महान सुपुत्र मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" का अवतरण ऐसी आपात् और क्रान्ति की वेला में हुआ जब भारत माता विदेशी दासता की बेड़ियों में जकड़ी अपने उद्धारकर्ता सुपुत्रों की ओर कातर दृष्टि से देख रही थी। "जौहर" साहब "वसुधैव कुटुम्बकम्" के महान मानवतावादी सिद्धान्त में विश्वास करते थे और जिसको आचरण में उतारने के कारण आपकी आत्मा का विस्तार केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में था। जौहर साहब के गहन अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके जीवन का उद्देश्य विश्वशांति था। आप शांति के द्वारा क्रांति के समर्थक थे।

कर्मठता, कर्तव्यपरायणता और धार्मिकता आपको अपने पूर्वजों से "पैतृक सम्पत्ति" के रूप में प्राप्त हुई थी। जौहर साहब का जन्म एक मध्यम वर्गीय, सुप्रतिष्ठित तथा धार्मिक मुस्लिम परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री अब्दुल अली रियासत रामपुर के तत्कालीन नवाब यूसुफ अली खां की सेना में रिसाला न० ६ के जमादार थे। आपकी माता श्रीमती आबादी बानो बेगम जो "बी अम्मा" के नाम से प्रसिद्ध हैं, एक कर्तव्यपरायण, व्यवहारकुशल, धार्मिक एवं सच्चे अर्थों में वीर जननी थीं। मुस्लिम परम्पराओं के अनुसार आपको प्रारम्भ में धार्मिक शिक्षा दी गयी। आपकी शिक्षा बरेली, अलीगढ़ तथा आक्सफोर्ड में सम्पन्न हुई।अपने विद्यार्थी जीवन में आप एक मेधावी छात्र रहे। रामपुर के आप प्रथम स्नातक थे। आप आई.सी.एस. की परीक्षा में भी सम्मिलित हुए परन्तु भारतीय-स्वतन्त्रता के लिए चिन्तित एवं प्रयत्नशील रहने के कारण उसमे सफल न हो सके। आपका जन्म ब्रिटिश सरकार की नौकरी करने को नहीं अपितु मातृभूमि की स्वतन्त्रता और विश्वशान्ति के महान उद्देश्य के लिए हुआ था। नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां ने आपको वरिष्ठ

1. "स्वप्न," रामनरेश त्रिपाठी,

शिक्षा अधिकारी के पद पर नियुक्त किया। नवाब के तथाकथित हितचिन्तकों ने नवाब को जौहर साहब के विरुद्ध भड़का दिया और परिणाम-स्वरूप उन्हें यह पद छोड़ना पड़ा तत्पश्चात आपको बड़ौदा के राजा ने पहले अफ़ीम विभाग में फिर नौसारी का आयुक्त नियुक्त किया। राजदरबारों के बन्धन उन्हें जकड़ न सके। देश भक्ति की उमड़ती हुई भावना ने आपको निर्भय पत्रकार बना दिया और उन्होंने कलकत्ता से "कामरेड" नामक अंग्रेजी समाचार पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। अपनी निर्भीक एवं निष्पक्ष आलोचना तथा भाव प्रवण भाषा के कारण यह पत्र शीघ्र ही लोकप्रियता के शिखर पर पहुंच गया। लार्ड और लेडी हार्डिंग प्रतिप्रातः इसे पढ़ने को उत्सुक रहा करते थे। सुप्रसिद्ध अंग्रेज गद्यकार एच.जी. वैल्स ने जौहर साहब की लेखिनी की समता मैकाले की लेखिनी से की है। दूसरा उर्दू समाचार पत्र "हमदर्द" आपने देहली से प्रकाशित किया जो समान रूप से ही प्रसिद्ध हुआ।

मौलाना साहब भारत को ब्रिटेन के समान ही स्वतन्त्र देखना चाहते थे। एक शुद्ध मानवीय दृष्टिकोण से वह भारत में हिन्दू या मुस्लिम राज्य नही, स्वराज्य चाहते थे। स्वतन्त्रता के लिए परमावश्यक तत्व एकता के लिए वह ईश्वर से प्रार्थनाएं किया करते थे। वह सत्य और अपने निर्णय पर अटल रहने वाले व्यक्ति थे तथा पूर्ण स्वतन्त्रता एवं स्वशासन के समर्थक थे। अपनी जन्मभूमि, अपना देश उनको स्वर्ग से भी प्रिय था "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" वाल्मीकि रामायण की इस उक्ति का जीवन्त रूप मौलाना साहब में देखा जा सकता था। महात्मा गांधी के समस्त सिद्धान्तों को अपने आचरण में उतारा था। आप स्वयं चर्खा चलाकर सूत कातते थे। जीवन भर आपने खादी ही पहनी। आपके प्रयासों ने स्वतन्त्रता की चिंगारी को ज्वाला का रूप दिया।

मुहम्मद अली के मानस में धर्म का दीप माता-पिता के वात्सल्य के साथ दीप्तिमान हुआ। नमाज का नियम पालन वे आजीवन करते रहे। कुरान शरीफ़ से उन्होंने मानव सेवा का पाठ सीखा था। उनका नामकरण इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब तथा अली (मुहम्मद साहब के चचेरे भाई, दामाद और खलीफ़ा) के नामों पर हुआ था। अतः वे आजीवन इस्लाम की सेवा में संलग्न रहना चाहते थे। जीवन की परिपूर्ण सारिणी तथा आचार संहिता के रूप में वह इस्लाम को मानते थे। दया, दान तथा अहिंसा की शिक्षा उन्होंने इस्लाम से ग्रहण की थी तथा उसे जीवन में मूर्तिमान किया। वह व्यष्टि ही नहीं समष्टि की मुक्ति चाहते थे। उनका

विश्वास था कि सच्चा धर्म मानव-मानव के बीच प्रेम उत्पन्न करता है तथा मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधता है। उनके विचार में इस्लाम एक समाजिक नीति था। बाह्य धार्मिक आडम्बरों में उनका विश्वास नहीं था। कुरान उनके लिए कानून थी और ईश्वर का अंतिम आदेश थी। इसीलिए, यद्यपि पं. नेहरू उन्हें तर्कहीन धार्मिक समझते थे तथापि एक ईमानदार, सच्चे, शक्तिसम्पन्न तथा प्रतिभावान व्यक्ति के रूप में उनका हार्दिक सम्मान करते थे। जौहर साहब का धर्म, उन्हीं के अनुसार "न्यायधर्म" था।

प्रथम विश्वयुद्ध के मध्य आपको अंग्रेज जाति से घृणा हो गयी। युद्ध में चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग, रोलट ऐक्ट षडयन्त्र, जलियांवाले बाग का नरसंहार तथा मुसलमानों को दिये गये बववनों के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार का आचरण इस घृणा के मुख्य कारण थे। अब मौलाना महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये और उनके असहयोग आन्दोलन को तीव्र करने में अपना स्वस्थ योगदान दिया। ब्रिटिश सरकार के विरोध के साथ ही मौलाना के यातनापूर्ण जीवन का प्रारम्भ हो गया। आपके समाचार पत्रों - कामरेड तथा हमदर्द को शासनादेश से बन्द कर दिया गया। तथा तत्कालीन नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब द्वारा रामपुर में प्रवेश पर रोक लगा दी गयी तथा अनेक बार कारागार दण्ड भोगना पड़ा। इस अवधि में अपने प्रिय संबंधियों की मृत्यु पर भी आपको रामपुर प्रवेश की अनुमति नहीं दी गयी। विकार के हेतु सम्मुख होने पर भी जो विचलित न हो, वही सच्चा धैर्यवान है। ऐसी परीक्षा की घड़ियों में भी आप नियंत्रित और स्थिर रूप से अपने कर्तव्य पथ पर निरन्तर अग्रसर होते रहे। मातृभूमि का यह सपूत पृथ्वी के समान ही धैर्यवान सिद्ध हुआ।

अपनी कर्मठता, प्रतिभा तथा सच्चाई के बल पर आप कांग्रेस के निर्विरोध अध्यक्ष चयनित हुए। कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में पूर्ण स्वराज्य की मांग तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए किये गये भरसक प्रयत्न आपके मुख्य कार्य थे।

मौलाना का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा से जागृति आती है और जाग्रत नागरिक ही अपने कर्तव्य और अधिकारों को समझ सकते हैं। भारतीय स्वतन्त्रता के सन्दर्भ में आपने इसीलिए प्रारम्भिक से लेकर उच्च शिक्षा तक पर बल दिया तथा उसके लिए योजनाएं बनायीं। इस शैक्षिक विकास का स्वतन्त्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव पड़ा।

मौलाना साहब स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत तथा हृदय, मस्तिष्क, आत्मा एवं शरीर से एक सच्चे देशभक्त कांग्रेसी थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए वे ध्वंसात्मक नीतियों के पक्ष में नहीं थे। कर्मयोगी जौहर साहब का अहिंसा तथा उसके रचनात्मक परिणामों पर दृढ़विश्वास था। उत्साह और शक्ति का अपव्यय उन्हें पसंद नहीं था। वे उत्साह और शक्ति को विवेकपूर्वक सधैर्य प्रयोग करने के पक्ष में थे।

जौहर साहब अछूतोद्धार के पक्षधर थे। एक विशिष्ट वर्ग को "अछूत" कह कर उससे घृणा करना और उसे पृथक करना, नास्तिकता एवं ईश्वरनिन्दा समझते थे। उनका कथन था कि "अछूतों" की अपेक्षा सवर्णों को शुद्धि की अधिक आवश्यकता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जौहर साहिब पवित्रात्मा थे।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर को दास भारत कारागार प्रतीत होता था। दृढ़ इच्छाशक्ति सम्पन्न जौहर साहब ब्रिटिश सरकार की कृपा से ईश्वर की कृपा श्रेयस्कर समझते थे। आपने अपने अमिट प्रभावी भाषणों से ब्रिटिश सरकार की नौकरी को त्यागने तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रेरणा दी।

साइमन आयोग के विरोध में गगनभेदी नारों - "साइमन कमीशन गो बैक" तथा "अल्लाह हो अकबर" में जनता के स्वर में मौलाना साहब का स्वर ही मुखारित हो रहा था। स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सेना नायकों में से एक जौहर साहब ने महात्मा गांधी के साथ मिलकर भारत के नवनिर्माण की प्रतिज्ञा कर ली थी और उनके द्वारा जलायी गयी चिंगारी ने महाअनल का रूप धारण कर लिया जो ब्रिटिश साम्राज्य के लिए कालाग्नि सिद्ध हुई। मौलाना का सम्पूर्ण जीवन स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष, इस्लाम की सेवा तथा साम्प्रदायिक एकता में व्यतीत हुआ।

दिसम्बर १९३० ई. में लन्दन में आयोजित गोलमेज सभा में मौलाना साहब को आमन्त्रण मिला। भीषण रुग्णावस्था तथा कांग्रेस का विरोध करने पर भी आप देश और जाति के हितार्थ इस ऐतिहासिक सभा में सम्मिलित होने लन्दन गये। जलयानरूढ़ होने से पूर्व आपने अपनी जन्मभूमि को प्रणाम करके प्रतिज्ञा की कि वह उसे स्वतन्त्र कराकर ही वापस लौटेंगे। गोलमेज सभा में अत्यन्त प्रभावशाली तथा अविस्मरणीय भाषण दिया। मृत्युशैया पर लेटे हुए देश और जाति के हितचिंतक जौहर साहब हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए योजना बनाते एवं लिखवाते रहे थे।

चार जनवरी सन् १९३१ को प्रातः लगभग साढ़े नौ बजे हाइड पार्क होटल लन्दन में मातृभूमि का यह सपूत, स्वतन्त्रता का अमर सेनानी

चिरनिद्रा में निमग्न हो गया। आपका निधन केवल भारत ही नंहीं अपितु सम्पूर्ण मानव जाति की कभी न पूर्ण होने वाली क्षति थी। आपको पंच भौतिक शरीर को आपकी इच्छानुसार ही पवित्र भूमि बैतुल में "मस्जिदे अक़्सा" में भू समाधि दी गयी।

ऐसे ही पवित्र स्थान और ऐसे ही महानात्माओं, महान त्यागियों तथा देशभक्तों के लिए विलियम कालिन्स ने "हाउ स्लीप दि ब्रेव" लिखकर श्रद्धांजलि अर्पित की थी।[1]

छः अध्यायों में विभक्त प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मौलाना मुहम्मद अली जौहर पर हिन्दी भाषा में किया गया "स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान" पर प्रथम शोध प्रबन्ध है जिसमें शोध प्रबन्ध के शीर्षक के आलोक में जौहर साहब से संबंधित सभी बिन्दुओं पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अनुसंधान में मौलिक तथा अनुदित एवम् पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गयी है।

शक्तिपात आचार्य गुरुवर डॉ. जितेन्द्र चन्द्र "भारतीय" को मैं श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं, जिनका आशीर्वाद प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ और जिसके फलस्वरूप अनुसंधान कार्य त्वरित गति से चलकर यथासमय सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम मैं डॉ. महेन्द्र सिंह त्यागी, विभागाध्यक्ष इतिहास के.जी. के कालेज, मुरादाबाद, के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कुशल निर्देशन में प्रस्तुत अनुसंधान सम्पन्न हो सका। प्रो. श्री पी.सी. सक्सेना (अवकाश प्राप्त विभागाध्यक्ष, इतिहास, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

---

1. How sleep the brave who sink to rest,
   By all their country's wishes blest!
   When spring, with dewy fingers cold
   Returns to deck their hellow'd mould,
   She there shall dress a sweeter sod
   SThan Fancy's Feet have ever trod
   By fairy's hands their knell is rung,
   By forms unseen their dirge is sung;
   There honour comes, a pilgrim gray,
   To bless the turf that wraps their clay,
   And freedom shall a while repair,
   To dwell, a weeping hermit, there!
   —William Collins,
   Poems For the Young,
   Etd. by. S.B. Singh. p. 34,

रामपुर) का भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं जो कि प्रस्तुत विषय के चयन में, विषय की स्वीकृति में सहायक सिद्ध हुए हैं और जिनका मार्ग दर्शन मुझे समय समय पर प्राप्त होता रहा है। मैं डॉ. विनोद प्रकाश वर्मा का विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं अथक प्रयास तथा पग पग पर मार्गदर्शन से मैं यह कार्य सम्पन्न कर सका हूँ। मैं डॉ. एन.डी. वर्मा का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने स्नेहपूर्वक मुझे विषयवस्तु के एकत्रीकरण में अपना बहुमूल्य समय देकर मुझे सहयोग प्रदान किया। वयोवृद्ध श्रद्धेय श्री असगर हुसैन रिज़वी साहब (समकालीन नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब) का भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं जिन्होंने उर्दू ग्रन्थों की व्याख्या तथा अनुवाद एवम् अरबी, फारसी शब्दतालिका बनवाने में अपना अमूल्य समय प्रदान कर मेरी सहायता की।

मैं प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश गुप्ता (राज साहिब) का भी आभारी हूं जिन्होंने मुझे पुस्तकें एवम् महत्वपूर्ण सुझाव देकर मेरा मार्ग दर्शन किया। साथ ही मैं डॉ. जहीर सिद्दीकी एवं डॉ. कमर इक़बाल साहब का भी आभारी हूं, जिन्होंने संबंधित पुस्तकें एवं मौलाना साहब का ब्लाक उपलब्ध कराने में मेरी सहायता की। मैं श्री हकीम राम औतार गुप्ता को भी उनके स्वस्थ सहयोग तथा सुझावों के लिए साधुवाद देता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं श्रीमती आशा वर्मा का भी आभारी हूँ जिन्होंने अनेक कठिनाइयों को सहर्ष स्वीकार कर मुझे शोध प्रबन्ध पूर्ण कराने में सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त श्रीमती शोभा अग्रवाल को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिनका सहयोग एवं प्रेरणा मुझे आद्यान्त प्राप्त होती रही है और जिन्होंने लेखन कार्य तथा त्रुटि सुधार में अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी मेरी सहायता की है।

अनुसंधानकर्ता रज़ा लाइब्रेरी रामपुर, ज्ञान मन्दिर पुस्तकालय तथा शौलत लाइब्रेरी, रामपुर का भी पुस्तकीय सहायता के लिए संबंधित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का भी हृदय से आभारी है। इसके अतिरिक्त त्वरित गति से शुद्ध टँकण के लिए श्री शेखर चन्द्र जोशी का भी हृदय से अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने अत्यधिक लगन एवं परिश्रम से कार्य को समय से पूर्व कराने में सहायता प्रदान की।

अन्त में सम्पूर्ण मानवजाति के हित चिन्तक भारत माता के अमर सुपुत्र, महान देशभक्त एवम् कर्मयोगी मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" को मैं हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्रद्धावनत,

ब्रजवासी लाल अग्रवाल

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय— भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की पृष्ठभूमि १-१४

द्वितीय अध्याय— मुहम्मद अली का जीवन परिचय १५-५२

(अ) जन्म, परिवार तथा प्रारम्भिक शिक्षा

(आ) उच्च शिक्षा एवं उच्च शिक्षा का उनके जीवन पर प्रभाव

(इ) ब्रिटेन से स्वतन्त्रता की प्रेरणा

(ई) राजनैतिक विचार

(उ) धार्मिक विचार

तृतीय अध्याय— मुहम्मद अली का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में आगमन ५३-९२

(अ) प्रथम विश्व युद्ध के मध्य अंग्रेज जाति से घृणा

(आ) जलियांवाला काण्ड एवं रौलट एक्ट का मुहम्मद अली प्रभाव और अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिक्रिया

(इ) गांधी जी के सम्पर्क में आना और उनके असहयोग आन्दोलन को तीव्र करना

(ई) मुहम्मद अली के यातनापूर्ण जीवन का प्रारम्भ

चतुर्थ अध्याय— मुहम्मद अली तथा ख़िलाफत आन्दोलन ९३-१२५

(अ) ख़िलाफत आन्दोलन में मुहम्मद अली का सक्रिय भाग

(आ) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति के रूप में मुहम्मद अली के कार्य ।

(इ) मुहम्मद अली का गोलमेज कान्फ्रेन्स में भाषण

पंचम अध्याय— स्वतन्त्रता संग्राम की सफलता के लिए शैक्षिक विकास में मुहम्मद अली के कार्य १२६-१४५

(अ) भारत के शिक्षा के विकास पर बल

(आ) उच्च शिक्षा के विकास हेतु पृथक-पृथक मुस्लिम विश्व विद्यालय की स्थापना का प्रयास

(इ) शैक्षिक विकास का स्वतन्त्रता संग्राम पर प्रभाव।

षष्ठ अध्याय— स्वतन्त्रता संग्राम में मुहम्मद अली का योगदान १४६-२०१

(अ) मुहम्मद अली के विचार

(आ) भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन को प्रज्वलित करना

(इ) स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति मुहम्मद अली की सेवायें।

(ई) उद्देश्य की पूर्ति के लिए आत्म बलिदान

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" - **एक शायर**

शब्दावली २०२-२२७

सन्दर्भ ग्रन्थसूची २२८-२३५

प्रथम अध्याय

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की पृष्ठभूमि

भारत एक विशाल देश है। भारत की स्थिति ही कुछ ऐसी है कि यह सदैव ही अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विश्व विख्यात रहा है। उत्तर दिशा में बर्फ से ढकी हिमालय की ऊंची चोटियाँ, वनों की हरियाली, नदियों एवं झरनों की कल-कल ध्वनि ने सदैव ही दर्शकों के हृदयों को आकर्षित किया है। भारत अपनी सम्पत्ति के लिए भी विश्व में विख्यात रहा है। अपार सम्पत्ति के कारण ही इसे अतीत में "सोने की चिड़िया" के नाम से पुकारा जाता रहा है।

जब भारत की अपार सम्पत्ति की चर्चा दूसरे देशों में पहुंची तो वहां के लोग भारत की ओर आकर्षित हुए। कुछ विदेशियों ने भारत की अपार सम्पत्ति को लूटने की दृष्टि से समय-समय पर भारत पर आक्रमण किये।[1]

सिकन्दर महान ऐसे ही महान आक्रमणकारियों में से एक था। वह यूनान निवासी था और विश्व पर विजय प्राप्त करने का स्वप्न देख रहा था। ईसा पूर्व ३२६ में उसने भारत पर आक्रमण किया और पुरु को पराजित करने के पश्चात वह आगे न बढ़ सका और वह जिस प्रकार आंधी के समान भारत पर आया था उसी प्रकार भारत से वापस लौट गया।

इसी प्रकार सिल्यूकस ने भी साम्राज्य विस्तार की इच्छा से भारत पर आक्रमण किया। उस समय भारत पर चन्द्रगुप्त मौर्य शासन कर रहा था। युद्ध में सिल्युकस पराजित हुआ और उसे विवश होकर चन्द्रगुप्त मौर्य से सन्धि करनी पड़ी।

शकों तथा हूणों ने भी भारत पर आक्रमण किये। उनका उद्देश्य भी भारत की धन सम्पत्ति को लूटना और यहां के क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित करना था। लेकिन शक और हूण उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ

---

1. इस पर अनेकों बार विदेशियों ने हमले किये। उनमें से कुछ यहां बस गये और भारतीय हो गये, और राजा या सम्राट के रूप में शासन किया। कुछ ने देश को लूटा-खसोटा और धन-सम्पत्ति बटोर कर वापस चले गये।
   – स्वतन्त्रता संग्रामः बिपन चन्द्र, पृ. २,

ही क्षेत्रों पर केवल कुछ समय के लिए ही अधिकार स्थापित कर सके, तत्पश्चात वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति में ही घुलमिल गये और अपना अस्तित्व ही खो बैठे।

आगे चलकर अरब वासियों ने भारत पर आक्रमण किये। इन आक्रमणकारियों में महमूद गजनबी और मुहम्मद गौरी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका उद्देश्य भी धन लूटना ही था। इसी कारण इन्होनें यहां के मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें अपार धन हाथ लगा।[१]

मुहम्मद गौरी ने तत्कालीन शक्तिशाली हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया और अपने देश लौटने से पूर्व विजित प्रदेश के लिए अपना एक सुन्नी गवर्नर नियुक्त किया और इस प्रकार भारत में गुलाम वंश की स्थापना हुयी।

तत्पश्चात खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी वंश तथा मुगलों ने भारत में शासन किया। यद्यपि यह सभी विदेशी थे फिर भी यह लोग भारतीय सभ्यता में रंग चुके थे और भारतीय उन्हें अपना एक अंग मानने लगे थे।

अहमदशाह अब्दाली ने भी भारत पर आक्रमण किया। उसका अन्तिम आक्रमण सन् १९६१ ई. में मराठों के विरुद्ध हुआ था। पानीपत के मैदान में मराठों और अहमदशाह अब्दाली की सेना में घमासान युद्ध हुआ जिसमें पराजित हुए और उत्तरी भारत से मराठों का प्रभाव सदा के लिए समाप्त हो गया क्योंकि मुगल सम्राट औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य मरणासन्न अवस्था में आ गया था और उसका कोई भी उत्तराधिकारी ऐसा न हुआ जो भारत में मुगल साम्राज्य को स्थायी रख पाता। और मराठों के पतन के उपरान्त ही भारत में यूरोपियन जाति को अपने पैर जमाने का अवसर प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् पुर्तगालियों और डचों के आगमन के बाद अंग्रेज व्यापारिक दृष्टि से भारत में आये। पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के लिए इंग्लैण्ड

---

1. The temple of Som Nath was very high. It is said that it was endowed with 10,000 villages. The revenue of which was spent on its up keep ..... The rich offerings of its devotees has filled the coffers of the temple with Gold and precious stones of in calculable value.
..... The life & times of Sultan Mahmood of Ghajna. Mohd. Nazin. page 211,

के स्वतन्त्र व्यापारियों ने मिल कर एक कम्पनी की स्थापना की जिसका नाम "ईस्ट इंडिया कम्पनी" रखा गया। ३१ दिसम्बर १६०० ई. को इंग्लैण्ड की रानी एलिज़ाबेथ ने इस कम्पनी को पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति के लिए एक वार्टर तथा एक अधिकार पत्र प्रदान किया। कम्पनी का एक गवर्नर तथा २४ डायरेक्टर नियुक्त हुए, जिन्होंने छोटे और बड़े ५ जहाज खरीदे जिन पर ४४० मल्लाह थे।[1]

यद्यपि उनका उद्देश्य एक मात्र व्यापारिक ही था, लेकिन भारत की विभिन्न रियासतों के सम्पर्क और यूरोपियन प्रतिद्वन्द्वियों से ईर्ष्या की भावना ने उन्हें विवश किया कि वह राजनैतिक और सैन्य-क्रिया कलापों में भाग लें।

भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाने के लिए इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम ने कप्तान हाकिन्स को अपना राजदूत बनाकर मुगल सम्राट जहाँगीर से मिला। सम्राट उसके व्यवहार से प्रसन्न हुआ। उसने सम्राट से याचना की कि वह सूरत में अंग्रेजों को अपनी व्यापारिक कोठियाँ बनाने की आज्ञा दे दें। लेकिन पुर्तगालियों के षडयन्त्र के कारण सम्राट की स्वीकृति न मिल सकी, और वह सन् १६११ ई. में निराश होकर इंग्लैण्ड लौट गया।

सन् १६१५ ई. में इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम ने दूसरी बार सर टॉमस रो को अपना राजदूत बना कर मुगल दरबार में भेजा।[2] सर टॉमस रो जहाँगीर से व्यापारिक सन्धि करने में असमर्थ रहा, लेकिन वह शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) से, जो उन दिनों गुजरात का सूबेदार था, फरमान प्राप्त

---

1. The company began by appointing Governor and twenty-four directors. They purchased five ships large and small, and manned them with 440 Seaman.
   _ The Rise of the British Power in the East.
   Hon, Mountstuart Elphin Stone: page - 31.

2. It was in the reign of Jehangir that an English Ambassadar, Sir Thamas Roe deputed by James the first, arrived at the Mughul court, in the hope of securing proteetion to the English in the commerce which they were carrying on with India.
   The History of the British Empire in India.
   .Edward Tharnton ESO: Vol. I, Page 32,
   जेम्स प्रथम का राजदूत सर टॉमस रो, १६१५ में जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ। उसे कोठियाँ स्थापित करने की आज्ञा मिल गयी।सूरत में कोठी आरम्भ की गयी और १६३९ ई. में मद्रास की नींव पड़ी।
   — हिन्दुस्तान की कहानी: जवाहर लाल नेहरू, पृ. १८०,

करने में सफल रहा। इसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों को व्यापारिक सुविधायें मिल गयीं। सूरत ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रधान केन्द्र बन गया। इसके साथ ही भड़ौच, अहमदाबाद तथा आगरा में भी इनकी व्यापारिक कोठियाँ बन गयीं। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने बम्बई मद्रास और कलकत्ता में अपना प्रभाव जमा लिया, लेकिन अंग्रेजों को उस समय तक कोई विशेष लाभ नहीं हो सकता था, जब तक कि वह फ्रांसीसियों को भारत से नहीं निकाल देते, इसलिए आगे चलकर अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध हुआ, जिसमें फ्रांसीसियों को पराजित होना पड़ा और इस प्रकार से उनका पतन हो गया।[१]

धीरे धीरे अंग्रेजों ने सम्पूर्ण भारत पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। और जब उनका प्रमुख उद्देश्य भारत की अपार सम्पदा को ढोकर इंग्लैण्ड ले जाना था, इसी कारण उन्होंने भारतवासियों का शोषण करना आरम्भ कर दिया।[२] कम्पनी के शासन में भारत को एक अर्थ प्राप्त करने का साधन मात्र मान लिया गया। डलहौजी जैसे गवर्नर जनरलों नें भारत का जम कर शोषण किया। यद्यपि कुछ गवर्नर जनरल ऐसे भी आये जिन्होंने भारत में सुधार प्रतिपादित किये, लेकिन यह सुधार अत्याचारों की अपेक्षा नगण्य थे। सुधारों के क्षेत्र में सर्वाधिक श्रेय लार्ड विलियम बैंटिक को ही दिया जाता है।

अठारह सौ सत्तावन की क्रान्ति प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की सूचक थी। भारत का यह प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम वास्तविक अर्थों में अंग्रेजों के शोषण का ही परिणाम थी।[३] और इसी १८५७ की क्रान्ति ने ब्रितानी

---

1. दक्खिन में अंग्रेजों और फ्रान्सीसियों के बीच जो लड़ाई हो रही थी, वह उन दोनों के बीच होने वाली लोकव्यापी युद्ध का ढंग थी। इसमें अंग्रेज सफल हुए और फ्रांसीसी लगभग हिन्दुस्तान से अलग कर दिये गये।
   — हिन्दुस्तान की कहानी : जवाहर लाल नेहरूः पृ. १८४,
2. ईस्ट इंडिया कम्पनी के व्यापारियों की दिलचस्पी नफे और खजाने में थी, अपने अधीन आये हुए लोगों की हालत सुधारने या उनकी रक्षा भी करने में नहीं थी। – हिन्दुस्तान की कहानी : जवाहर लाल नेहरू, पृ. १८८
3. अंग्रेजों के अत्याचार तथा स्वतन्त्रता की भावनाओं ने जो जाग्रत हो चुकी थी, भारत वर्ष के प्रत्येक नर-नारी को सचेत कर दिया और वे क्रान्ति के लिए तैयार हो गये। – स्वतन्त्र दिल्ली, डॉ. सैयद असहर रिजवी, पृ. १६,
   — अचानक नहीं धधक उठी थी १८५७ ई. में जनक्रान्ति की लपटें। सौ साल पहले प्लासी की लड़ाई के बाद कम्पनी की लूट खसोट और अत्याचार से परेशान भारतीयों ने कई बार विद्रोह की चिनगारी सुलगाई कितने ही संगठित विद्रोह हुए, एक के बाद एक और इन्हीं के चरमोत्कर्ष था सन् सत्तावन की जन-क्रान्ति। – रविवासरीय हिन्दुस्तान, ९ मई, १९८२ : शीला झुनझुनवाला

शासन की नींव निर्बल कर दी।[१]

अंग्रेजों ने भारतीय कुटीर उद्योग-धन्धों को समूल नष्ट करने के प्रयास किये, जिससे कि ब्रिटेन में निर्मित माल की खपत भारत में हो सके। अंग्रेजों ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अत्याचारों एवं राजनैतिक चतुराई से उद्योग प्रधान नगरों को नष्ट करके भारत को केवल खेतिहर देश बना दिया।[२]

भारतीयों के असन्तोष की झलक १८५७ ई. से पूर्व हुए विभिन्न विद्रोह में देखने को मिलती है। जैसे कटक के पाइकों विद्रोह, दीवान वेलूभाम्बी का विद्रोह, भील विद्रोह, जाट विद्रोह, कित्तूर का विद्रोह और बुन्देलों का विद्रोह आदि-आदि। इन विद्रोह के बाद यह बात सर्वमान्य हो गयी थी कि कम्पनी शासन करने में नितान्त अयोग्य है। "क्राउन" पहले से ही भारत पर अपना नियन्त्रण चाहता था। परिणाम स्वरूप २ अगस्त १८५८ ई. को भारत प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी शासन में ले लिया गया। और यहां के कार्य देखने के लिए कैबिनेट में एक भारत सचिव की नियुक्ति की गयी। यद्यपि महारानी विक्टोरिया ने १८५७ ई. में घोषणा प्रेषित की थी जिसमें इस बात पर जोर दिया गया था कि जाति अथवा रंग के आधार पर किसी के साथ भेद-भाव नहीं बरता जायेगा। लेकिन यह घोषणा मात्र बनकर ही रह गयी।

---

1. १८५७ का विद्रोह ब्रितानी शासन की जड़ें हिलाने के लिए काफी था।
   — स्वतन्त्रता संग्राम : विपिन चन्द्र पृ. ४२,
2. स्वतन्त्र व्यापार भारत वर्ष के लिए वर्जित था। सूरत, ढाका, मुर्शिदाबाद तथा अन्य स्थानों की देशी कारीगरी का पतन तथा विनाश ऐसा दुखःमय सत्य है जिसका वर्णन सम्भव नहीं— बंगाल के समान भारत वर्ष के सभी भागों में कला कौशल तथा उद्योग धन्धों का विनाश हो गया।
   — स्वतन्त्र दिल्ली डा. सैयद अतहर अब्बास रिज़वी, पृ. १०
   हिन्दुस्थान औद्योगिक इंग्लैण्ड का एक खेतिहर उपनिवेश बन गया, जो कच्चा माल देता और इंग्लैण्ड के तैयार माल को अपने यहाँ खपाता।
   — हिन्दुस्थान की कहानी : जवाहर लाल नेहरू : पृ. १९८,
   अंग्रेज इतिहास कार मार्टिन के शब्दों में ही – सूरत, ढाका, मुर्शिदाबाद जैसे शहर इस तरह बरबाद हुए कि उनका वर्णन नहीं करते बनता— मैं तो कहूंगा कि शहजोर ने अपनी ताकत से कमजोर को कुचल दिया। बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से अंग्रेजों ने भारत को एक खेतिहर देश बना दिया।
   – रविवासरीय हिन्दुस्तान, ९ मई १९८२, द्वारा शीला झुनझुनवाला,

भारतीयों का असन्तोष बढ़ता ही जा रहा था, और ब्रिटिश सरकार उन्हें बहला-फुसला कर उनके असन्तोष को नियन्त्रण में रखने के लिए बाध्य करती थी। ब्रिटिश साम्राज्य का क्रूर जाल दिन प्रतिदिन फैलता ही चला गया क्योंकि अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक दृष्टि से भारतीयों का शोषण ही करना था। अतः अंग्रेजों ने भारत का आर्थिक दृष्टि से शोषण करना प्रारम्भ किया और अंग्रेजी माल की खपत के लिए यहां के कुटीर उद्योग धन्धों को नष्ट किया।[१] और ब्रिटेन में तैयार माल भारत में आकर बिकने लगा, जिसके परिणाम स्वरूप भारत का धन ब्रिटेन जाने लगा। भारतीयों ने अनुभव किया कि अंग्रेज भारत का शोषण करके यहां की सारी सम्पदा अपने देश ले जाना चाहते हैं। अतः भारतीयों का असन्तोष बढ़ता ही गया। ब्रिटिश नीति भारत को कच्चे माल की पूर्ति करने वाला एक कृषि प्रधान उपनिवेश बनाने की थी।[२] राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करने में आर्थिक और धार्मिक असन्तोष भी एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। अंग्रेजों की जातीय विभेद नीति ने भी भारतीयों में असन्तोष की लहर दौड़ा दी। अंग्रेजों की दृष्टि में भारतीय वन मानुष और नीग्रो का सम्मिश्रण थे, जिनको समझाने के लिए भय आवश्यक था।[३]

इतना ही नहीं अंग्रेजों ने भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार भी बन्द कर दिये थे।[४] उन्होंने १८७८ ई. में वर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट द्वारा

---

1. It continued throughout Nineteenth Century, breaking up other old industries also, ship making, metal works. Glass paper and many crafts.
   . Discovery of India: Jawahar Lal Nehru. p. 256.
2. India becoming an agricultural colony of Industrial England, supplying raw-materials and providing markets for Englands Industrial goods.
   . Discovery of India: Jawahar Lal Nehru: p. 256.
3. अंग्रेज भारतीयों को ऐसा जन्तु समझते थे, जो आधा वनमानुष और आधा नीग्रो था, और जिसे भय द्वारा ही समझाया जा सकता था।
   —भारत का संवैधानिक और राष्ट्रीय विकास गुरुमुख निहाल सिंह, पृ., १३१
4. More important thanatt these was exclusion of Indian from all high offices, both in the civil administration and in the army it was not merely as sare grievance from the point of view of material interest of individuals but went much deeper than that many regarded it was a serious defect in the system of administration by a body of foreign rulers.
   .. British Paramountcy and Indian Renaissance.
   .. Part I page 410 R.C. Majumdar.

समाचार पत्रों पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा आई.सी. एस. के उम्मीदवारों की उम्र भी २१ वर्ष से घटाकर १९ वर्ष कर दी गई जिसके कारण भारतीयों के आई.सी.एस. में प्रवेश ही बन्द हो गये।[१] इसके अतिरिक्त यह परीक्षा इंग्लैण्ड में होती थी और परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। यदि कोई भारत वासी परीक्षा उत्तीर्ण कर भी लेता था तो उसे साधारण सी गलती के आधार पर अलग कर दिया जाता था, जिसके परिणाम स्वरूप भारतीयों में असन्तोष की लहर दौड़ गयी। इस विभेद नीति का विरोध करने के लिए भारतीयों द्वारा आन्दोलन किये गये। जो भारतीयों की एकता के सूचक थे।

इसके अतिरिक्त लार्ड डलहौजी द्वारा प्रभावी राज्य-अपहरण नीति भी राज्यों में तीव्र असन्तोष और आतंक का कारण थी।[२] उसने भारतीय रियासतों पर अधिकार करने की भावना से मनमाने कानून से गोद लेने की प्रथा को अमान्य कर दिया।[३] और सतारा, झांसी, सम्भलपुर एवं नागपुर रियासतों का अपहरण किया।[४] इसके अतिरिक्त कतिपय धार्मिक

1. १८७८ ई. में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट द्वारा समाचार-पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। आई.सी.एस. के उम्मीदवारों की उम्र २१ वर्ष से घटाकर १९ वर्ष कर दी गयी। जिससे भारतीयों का प्रवेश ही बन्द हो गया।
   भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम और हिन्दी उपन्यास :
   डॉ. सीताराम झा 'श्याम' : पृ. ३०,
2. The Doctrine of lapse, particularly its practical application by Lord Dalhousie, produced grave discountent in the states directly effected and ereated a sanse of alarm among the other Indian States.
   . British Paramountry and Indian Renaissance.
   . Part I, R.C. Majumdar, page ४०७,
3. The numerous annexations made by Dalhousie gave the impression that the British were determined to wipe out the traces of Indian Rule the entire sub continent ..... The removal of these dynasties was there fare, resented by the people.
   . A History of the Freedom Movement Vol. II,
   (1831-1905) page 239.
4. डलहौजी के समय में कुछ प्रमुख राज्यों यथा झांसी, जैतपुर, उदयपुर, संभलपुर, नागपुर आदि के कोई पुत्र नहीं थे। प्राचीन भारतीय परिपाटी के अनुसार वे अपने साम्राज्य के उत्तराधिकारी के लिए अपने मनोनुकूल किसी बच्चे को गोद ले सकते थे। डलहौजी ने इसे अमान्य घोषित कर इन रियासतों को कम्पनी के अधिकार में कर लिया।— भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम और हिन्दी उपन्यास,
   डॉ. सीताराम झा 'श्याम', : पृ. ९,

कारण भी प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को भड़काने के लिए उत्तरदायी थे। सिपाहियों को गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस दिये जाते थे, जिन्हें प्रयोग करने से पहले मुंह से तोड़ना पड़ता था। इससे धार्मिक भावना को आघात लगने के कारण सैनिकों में घोर असन्तोष व्याप्त हो गया।[१]

इसके साथ ही साथ भारतीयों में अंग्रेजों के विरुद्ध असन्तोष का एक कारण यह भी था कि उन्होंने भारत में सती प्रथा को बन्द कर विधवा विवाह की आज्ञा दी। यह आज्ञा भारतीयों की धर्म भावना के विरुद्ध थी।

भारतीयो मे व्याप्त धार्मिक असन्तोष का सर्वाधिक गंभीर कारण अंग्रेजो द्वारा भारतीयों का छल और बल पूर्वक ईसाईकरण था।[२] और इतना ही नहीं भारतीयों को निम्न दृष्टि से देखा जाता था और उच्च पदस्थ भारतीयों को भी सड़क पर जाने वाले प्रत्येक अंग्रेज को सलाम करना पड़ता था, सवारी से उतर कर सिर झुकाये खड़ा रहना पड़ता था।[३] इसके अतिरिक्त भारतीयों को जीवन घातक चोटें, पहुंचायीं जाती थी

---

1. — चर्बी लगे कारतूसों ने चिंगारी को भड़काने का अवसर दिया। इनफील्ड रायफलों के कारतूसों में एक चर्बी लगा कागज होता था, जिसे इस्तेमाल के पहले दांत से काट कर निकालना पड़ता था। चर्बी कभी-कभी गो या सूअर के मांस की होती थी।

   – स्वतन्त्रता संग्रामः विपन चन्द्र, पृ. ४३,

   . . So the Cartridges manufactured for the Enfield Rifles were to be smeared with a mixture of stearine and tallow without any specification of the nature of the animal fat composing it and, although no hog's - lard was supplied there is no question on that some Beef, fat was used in composition of the tallow.

   — Indian Mutiny of 1857-58,
   – Sir, John Kaye : Page 381,

2. But a far more serious cause of discomtent was the vague dread which siezed the minds of all classes of peoples that the British Govt. was determined to convert the Indians in to Christeanity.
   ... British Paramountacy and Indian Renaissance
   Part I, R.C. Majumdar : Page 418

3. Every native, what ever his pretended rank may be ought to be compelled under heavy penalties, to salaam all English gentleman in the streets, and if the native is on horse back or in a carriage, to dismount and stand in a respectful attitude until the European has passed him.

   – British Paramountacy and India Renaissance,
   Part I, R.C. Majumdar, Page. 417

क्योंकि न्यायकर्ता अंग्रेज थे, और अंग्रेज अधिकारी साफ बच निकलते थे।

उन्नीसवीं सदी को भारतीय पुनर्जागरण का काल कहा जा सकता है। इस युग में कुछ ऐसी धार्मिक और सामाजिक सुधार सम्बन्धी संस्थाओं की स्थापना की गयी जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त विविध कुप्रथाओं को जड़ से मिटा कर भारतीयों में प्राचीन भारतीय संस्कृति की गरिमा का गान करके भारत वासियों में राष्ट्रीय चेतना के भाव अंकुरित किये।

राजाराम मोहन राय द्वारा सन् १८२७ ई. में स्थापित ब्रह्म समाज ने भारतीय कट्टरपंथी सीमाओं को तोड़ा। राजा राम मोहन राय ने राजनैतिक सुधार के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया, अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में रुचि लेते हुए जनतांत्रिक उद्देश्य का समर्थन किया।[१] सन् १८७५ ई. में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने भारतीयों में देश प्रेम जाग्रत किया, नारी शिक्षा का प्रचार किया और अन्ध विश्वासों का कड़ा विरोध किया।

सन् १८७५ ई. में ही एक रूसी महिला "मैडम विले वे टस्की" ने थियोसोफिकल सोसाइटी स्थापित की और भारतीयों की स्वतंत्रता का जोरदार समर्थन किया।[२] स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस जी की स्मृति में "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की। और श्री रामकृष्ण परमहंस जी से प्रभावित होकर उनको नव भारत की आत्मा माना गया।[३] स्वामी विवेकानन्द जी ने भारत के स्वाभिमान आत्म शक्ति और देश प्रेम को जाग्रत किया। उन्होंने भारतीयों को जन्म भूमि की पूजा की शिक्षा दी।

---

1. राजा राममोहन राय पहले भारतीय नेता थे जिन्होंने राजनैतिक सुधार के लिए आन्दोलन का सूत्रपात किया।— उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में गहरी दिलचस्पी ली और हर जगह स्वाधीनता, जनतन्त्र और राष्ट्रीयता के उद्देश्य का समर्थन किया।

   —— स्वतन्त्रता संग्राम, विपिन चन्द्रः पृ. ५०

2. इस संस्था की एक सभा नेत्री श्रीमती एनीबेसेन्ट ने हिन्दुत्व के नवोत्थान एवं भारतीय राष्ट्रीयता के विकास के लिए इतना कुछ किया कि उनकी सेवा भुलाई नहीं जा सकती।

   — संस्कृति के चार अध्यायः रामधारी सिंह दिनकर, पृ. ५६८,

3. Ram Krishan was the soul of New India.
   . Ox Ford History of India: Vincent A. Smith, p. 731.

उसी समय यूरोप के देशों में शासन में सुधार हेतु आवाज उठाई गयी और आन्दोलनों का सूत्रपात किया। जैसे इटली, जर्मनी, रूमानिया के राजनैतिक आन्दोलनों ने तथा फ्रांस में तृतीय गणराज्य की स्थापना आदि घटनाओं ने भारतीयों के मष्तिष्क पर स्वतन्त्र प्रभाव डाला और भारतीयो को भी इन आन्दोलनों से स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने की शिक्षा मिली। भारतीय सीमा के बाहर घटित इन घटनाओं ने भारतीय राष्ट्रवाद की धारा को स्वाभाविक रूप से प्रभावित किया।

भारतीयो में बढ़ते हुए इस असन्तोष को देखकर ह्यूम नामक सेवा निवृत्त अंग्रेज अधिकारी द्वारा ही सन् १८८५ ई. में कांग्रेस नाम संस्था की स्थापना की गयी, जिससे कि सभी भारतीय एक मंच पर आकर एकता के सूत्र में बंधकर अपने असंतोष को अंग्रेजी सरकार के सम्मुख व्यक्त कर सके। वास्तव में ह्यूम महोदय ने कांग्रेस की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा की दृष्टि से की थी।[१] कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य कुछ भी रहा हो लेकिन यह सत्य है कि इस संस्था की स्थापना होने से भारत के कोने कोने के नेता एक मंच पर आकर एकता के सूत्र में बंध गये और वे अंग्रेजों से शासन सम्बन्धी सुधारों की मांग करने लगे।

प्रारम्भ में कांग्रेस में उदारवादियों का बोलबाला रहा। उदारवादियों ने ब्रिटिश सम्राट के प्रति विश्वास तथा सहयोग की नीति अपनायी और याचना, स्मृतिपत्रों एवं प्रतिनिधि मंडलों के आधार पर जनता को राजनैतिक अधिकार दिलाने के लिए प्रयास किये। लेकिन उनकी इस प्रकार की उदार नीति का अंग्रेजों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस में ही उग्रवादियों का एक दल १९०६ ई. में गठित हुआ। इस उग्रवादी दल के नेता थे बालगंगाधर तिलक जिन्होने स्पष्ट घोषणा की कि स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।[२] उग्रवादी दल में तीन व्यक्तियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं तिलक, ला. लाजपत राय एवं विपिन चन्द्रपाल। उग्रवादी दल का मुख्य उद्देश्य स्वतन्त्रता की प्राप्ति था।

---

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का उद्देश्य था ब्रिटिश साम्राज्य की संकटों से रक्षा करना और उसको छिन्न भिन्न होने से बचाना।

— यंग इन्डियाः लाजपत राय पृ. १३५,

2. स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे। लूटी हुयी स्वाधीनता ली जाती है, मांगी नहीं जाती।

— भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहासः रामगोपाल, पृ. ७४

इसी प्रकार आगे चलकर भारत को स्वतन्त्र कराने हेतु क्रान्तिकारी दल की स्थापना हुयी। क्रान्तिकारियों की विचार था कि स्वतन्त्रता पाने के लिए यदि हिंसा का भी सहारा लेना पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि शक्ति के बदले शक्ति का प्रयोग करने से ही स्वतन्त्रता मिल सकती है। प्रमुख क्रान्तिकारियों के नाम हैं – सरदार भगत सिंह, विनायक दामोदर सावरकर, गणेश सावरकर, श्याम जी, कृष्ण शर्मा, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आदि।

प्रारम्भ में कांग्रेस का उद्देश्य प्रशासन के क्षेत्र में सुधार की मांग करना था लेकिन आगे चलकर भारत के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना इसका प्रमुख लक्ष्य बन गया।

इस प्रकार अनेक स्वतन्त्रता सैनानियों के नाम हमारे सम्मुख आते हैं, उन्हीं में एक प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी हैं मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" जिनका भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[१]

आपने अनेकों बार देश को स्वतन्त्र कराने हेतु जेल यात्रायें की, क्योंकि आपकी दृष्टि में जेल भारतीय स्वतन्त्रता का द्वार थी।[२] कठिन मार्ग तय करके स्वतन्त्रता के उद्देश्य तक पहुँचने वालों में मुहम्मद अली एक प्रमुख व्यक्ति थे।[३] उन्होंने भारतीय मुसलमानों में जागृति उत्पन्न

---

1. रईसुलअहरार मौलाना मुहम्मद अली जौहर एक ऐसी जामेसिफात शख्सीयत का दूसरा नाम है जो बयक वक़्त, कौमी लीडर, अज़ीम रहनुमा, शायर, बजलासंज हक़्गो और आजादी के परवाने की हैसियत से न सिर्फ हिन्दोस्तान बल्कि सारी दुनियां रुशनात है।
   उनवान : मौलाना मुहम्मद अली जौहर बहैसियत एक अख़बारनवीस, हसीन जहां, एम. ए., स्वीनियर १९८१, पृ. ४९,
2. I do not seek to avoid punishment for the Jail is the gate way to India's freedom.
   - Selected Writings & Speeches of Mohamed Ali. Vol. II, Page no. १००,
3. आजादी की जिस मंजिल तक हम सन् १९४७ ई. में पहुंचे थे, उसके सफर की बहुत सी दुश्वारियां तय करने में मुहम्मद अली का भी हाथ था अजीम हाथ।
   उनवानः रईसुल अहरारः असरार बसरीः मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात मुरततिबा, सै. नज़रबर्नी, पृ. १६५,

की, आत्मनिर्भर होने का साहस प्रदान किया और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए प्राणवान बनाया।[१]

सन् १९३० ई. में प्रथम गोलमेज सभा में उन्होंने घोषणा की कि मैं बिना स्वतन्त्रता प्राप्त किये भारत लौट कर नहीं जाऊंगा। यदि आप मुझे स्वतन्त्रता नहीं देंगे तो आपको मुझे अपने स्वतन्त्र देश में समाधि के लिए स्थान देना होगा।[२] मौ. मुहम्मद अली ने भारतीय हिन्दुओं और मुसलमानों के हृदयों पर वह चिह्न छोड़े हैं जिन्हें समय सरलता से नहीं मिटा सकता।[३]

मौलाना मुहम्मद अली हृदय से भारतीय स्वतन्त्रता चाहते थे।[४] उन्होंने

---

1. मौ. मुहम्मद अली एक आली हौसला, बलन्द हिक्मत और शेर दिल लीडर थे।उन्होंने हिन्दोस्तान के मुसलमानों को अंग्रेजों की सरपरस्ती से निकालकर अपने पैरों पर खड़े होने की हिम्मत दिलाई और उनमें आजादी की रूह फूंकी।
   – उनवान- हिन्दोस्तान मुसलमान आईनये अय्याम में :
   आबिद हुसेन, मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात मुरततिबा सै. नज़रबर्नी, पृ. ४३,
2. मैं अपने मुल्क को उसी वक्त वापिस जाऊंगा जबकि आज़ादी का परवाना मेरे हाथ में हो, मैं एक ग़ैर मुल्क में जब तक कि वह आज़ाद है, मरने को तरजीह दूंगा। अगर आप मुझे हिन्दोस्तान की आज़ादी नहीं देंगे तो फिर आपको मुझे यहाँ क़ब्र के लिए जगह देनी पड़ेगी।
   शीर्षकः मेरी कब्र स्वतन्त्र देश में होनी चाहिए – मुहम्मद अली द्वारा ज़हीर सिद्दीकी - रजत (त्रैमासिक) हिन्दी पत्रिका, १९७७, पृ. ३३,
3. उनकी हमाजिहत कशिश ने मुल्क के हिन्दू और मुसलमानों के दिलों पर वह नकुश छोड़े हैं जिनको तारीख़ की गर्द आसानी से फ़ना नहीं कर सकती।
   उनवान - शमशीर बरहना, मौलाना मुहम्मद अली "जौहर"
   सै. नज़रबर्नी - स्वीनियर १९८१, पृ. ५४,
   ब - मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" ने जो अज़ीम कुर्बानियां पेश की उन हक़ीक़ी क़ुर्बानियों से तारीख़ के सफाहात ज़री हरूफ़ में आज भी जगमगा रहे हैं। उनवान -क़ाफ़िलये हिन्द के सालारे आज़म, मुहम्मद अली "जौहर", इश्तियाक़ निज़ामी, स्वीनियर १९८१, पृ. १०२,
4. अ- मुहम्मद अली आज़ादिये हिन्द के दिलदादा थे, ज़ाती डायरी चन्दवर्क़ मुरततिबा अब्दुल लतीफ आजमी, पृ. २५७,
   ब- हक़ीक़त यह है कि मौलाना मरहूम एक सच्चे क़ौम परस्त लीडर थे। उनकी तहरीरों से अन्दाज़ा होता है वह इन्सानियत, मुल्क और कौम का खुद को ख़ादिम तसब्बुर करते थे।--- वतन से मुहब्बत उनके दिल में आख़िरी लम्हा तक क़ायम रही।
   उनवानः मुहम्मद अली जौहर एक जामे शख़्सीयत, सईद फ़रहत, स्वीनियर, १९८१, पृ. १०५,

जिस पौरुष और शक्ति से देश और जाति की सेवा की वह अद्वितीय है।[१] मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" ने प्रारम्भ में, मुस्लिम लीग की सदस्यता ग्रहण कर मुस्लिम सम्प्रदाय के हितों की रक्षा के लिए कुछ महत्वपूर्ण कार्य किये। लेकिन मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" व्यापक दृष्टिकोण के व्यक्ति थे। इसी कारण आपका उद्देश्य केवल मुसलमानों के हितों को देखना नहीं था, अपितु आपका उद्देश्य भारत के प्रत्येक व्यक्ति की सुख और सुविधा को देखना था, अर्थात् सम्पूर्ण भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराना था।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सन् १९२३

---

1. जिस जवांमर्दी से उन्होंने (मुहम्मद अली) मुल्क और क़ौम की खिदमत की वह अदीमुलमिसाल है।– मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, मुरततिबा, अब्दुल लतीफ आज़मी पृ. ३०६,

   ब- इस हक़ीक़त को फ़रामोश नहीं किया जा सकता कि जंगे आज़ादी के परवानों में मुहम्मद अली "जौहर" और उनके शाना व शाना काम करने वाले रहनुमाओं का ही सदका है कि आज हम आज़ादी की फ़िज़ा में सांस ले रहे हैं।

   – उनवान - क़ाफ़िलये हिन्द के सलारे आज़म मु. अली जौहर, इश्तियाक़ निज़ामी, स्वीनियर १९८१, पृ. १०२,

2. मौलाना मुहम्मद अली ने आज़ादिये वतन की ख़ातिर जान की बाज़ी लगायी और अज़ीज़ अक़रुबा अख़बार और घर बार सब ही कुछ कुर्बान कर रक्खा था और सिर्फ एक ही धुन थी कि मुल्क आज़ाद हो जाये और अंग्रेजों की ग़ुलामी से निजात मिले।

   – उनवान - मौ. मुहम्मद अली बहैसियते शायर नुरुर रहमान, मौलाना मुहम्मद अली "जौहर", शख़्सीयत और ख़िदामात, मुरततिबा सै. नज़रबर्नी, पृ. १२४,

   The duty of the Muslims to-day is a double one. They owe a duty to themselves as Indians to secure freedom for themselves and for their posterity. India is no less their country than the Hindus; and even if the Hindus were to shrink from the sacrifices required in freedom's battle, though they will certainly never do so, it would still be their duty to perservere and to say that they would win Swaraj for all India even if they received no aid from the rest of India. But as Muslims too they are to secure Swaraj for their country.

   .. Select writings and speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol. II, page.186.

में अध्यक्ष भी चुने गये।[१] आपने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए जो कार्य किये हैं, उन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता।[२] आप अपने बड़े भाई शौकत अली के साथ "अलीबन्धु" नाम से जाने जाते हैं एवं आपने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[३]

---

1. In December १९२३ the annual session of the Congress was held at Cocanada in the south. Maulana Mohamed Ali was the president.
   . Jawahar Lal Nehru - an-autobiography p. ११७.
   .. In return for his Herculean Services to the Mother land the nation awarded him with the greatest reward in its gift by electing him president of the Indian National Congress.
   ... Maulana Mohamed Ali: By: Said Mohamed Khan B.A. (Alig.) p. no. १४.
2. मौलाना मुहम्मद अली जंगे आज़ादी के एक अहम मुजाहिद थे। उन्होंने बर्तानवी सामराजियत के ख़िलाफ़ जो कुर्बानियां दीं उन्हें कभी फ़रामोश नहीं किया जा सकता।
   – उनवान - मौलाना मुहम्मद अली, चीफ मिनिस्टर जम्मू कश्मीर, मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, मुरततिबा - सै. नजरबर्नी, पृ. १४, उन्होंने (मु. अली) आजादी की लड़ाई लड़ते-लड़ते मैदाने जंग में ही अपनी जान दे दी और पूरी ज़िन्दगी एक बहादुर सिपाही की तरह अंग्रेजों से मुक़ाबिला करते रहे।
   – उनवान - मौ. मुहम्मद अली की सियासी ज़िन्दगी, डॉ. शर्फउद्दीन 'साहिल', जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, पृ. ८२,
3. अली ब्रादर्स के नाम से प्रसिद्ध मुहम्मद अली तथा शौकत अली ने भारत स्वतन्त्रता युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मौलाना जौहर का कार्यक्षेत्र अपने बड़े भाई की अपेक्षा अधिक विस्तृत था।
   शीर्षकः मौ. मुहम्मद अली जौहर, (१८७८-१९३१) श्री देवेन्द्र नाथ जिला सूचना अधिकारी, रामपुर, १९८०, रामपुर का इतिहास, पृ. न. ४,

द्वितीय अध्याय

मुहम्मद अली का जीवन परिचय

(अ) जन्म, परिवार तथा प्रारम्भिक शिक्षा
(आ) उच्च शिक्षा एवं उच्च शिक्षा का उनके जीवन पर प्रभाव
(इ) ब्रिटेन से स्वतन्त्रता की प्रेरणा
(ई) राजनैतिक विचार
(उ) धार्मिक विचार

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बढ़ाने एवं बिगाड़ने में उस वातावरण का भी योगदान रहता है जिस वातावरण में वह व्यक्ति जन्म लेता है। मौलाना मुहम्मद अली के पूर्वजों में सर्वप्रथम नाम श्री हयातउल्लाह साहब का मिलता है।[१] मौलाना मुहम्मदअली के पूर्वज पेशावर से पंजाब और पंजाब से देहली होते हुए अग़वानपुर जिला मुरादाबाद में बस गये थे।[२]

1. महबूब बख़्श खां वलद अमान उल्लाह वलद तूफ़ेल मुहम्मद वलद फैज मुहम्मद वलद मदार बख़्श वलद आज़म उल्लाह वलद हयात उल्लाह।
-तज़करा कामिलाने रामपुरः मुंसिफ़ हाफ़िज़ अहमद अली खां 'शोक', पृ. ४५९,
. Hayat Khan's son, Azimullah Khan, his son Murad Bakhsh Khan his son Faiz Mohamed Khan, his son Tufail Mohamed Khan and his son Aman Ullah Khan. All resided on the Indian soil. Aman Ullah Khan fifth in succession to Hayat Khan, was a 'Comrade' and a favourite of Nawab Najib-ud-Daulah. To him was born at Afghanpur a son during the year the Nawab breathed his last, in 1770 A.D. and was named Mahboob Bakhsh Khan.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar. (Book one)
. By. Allah Bakhsh Yusufi, page no. 20
2. इनके मुरिले आला पेशावर के अतराफ़ से इस्लामी. फ़ुतूहात के साथ-साथ पंजाब के अक्सर हिस्सां में बुद व बाश करते हुए देहली और देहली से ज़िला मुरादाबाद के अग़वानपुर मौज़ा जो एकज़माने में हाकिम नशीन मक़ाम था आये।
– तज़करा कामिलाने रामपुरः हाफ़िज़ अहमद अली खां 'शौक' पृ. ४५९,
. Hayat Khan, biding fare well to his father land, entered the soil of the Punjab and after having been mobile there for some time proceeded to Delhi and from there to Afghanpur, a village in the District of Moradabad of the United Provinces.
. Life Maulana Mohamed Ali, Jauhar, Book one,
By. Allah Bakhsh Yusufi, Page no. 19.

मौलाना मुहम्मदअली जौहर के पूर्वजों की जाति के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ आपकी जाति पठान मानते हैं।[१] जबकि अन्य आपको जाति से शेख मानते हैं। वास्तव में आप जाति से शेख थे।[२] मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के प्रपितामह (परदादा) श्री महमूद बख़्श साहब का जन्म ११८४ हिजरी तदनुसार सन् १७७० ई. में अग़वानपुर जिला मुरादाबाद में हुआ था।[३] बड़े होने पर आप अपने पिता तथा नाना जी

1. The origin of the Ali Brother's family has remained a controversial question. But as far as I have gathered it belongs to Mir Ahmad Khds a sub section of the famous tribe called Yusufzai - Pathans.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar. Book one, Allah Bakhsh Yusufi, page no. 11,
2. आप आबाई शेख़ हैं।– हयाते जौहर : मुरततिबा, इशरत रामपुरी, पृ. ३१
– मैं (मुहम्मदअली) शेख हूं गो रामपुर अफ़ग़ान में पैदाइश और अरसे तक सुकूनत के बाइस कभी-कभी पठनबली पर उतर जाता हूं। - नुक़्श मकातीब नम्बर हिस्सा अव्वल, पृ. ३६२,
– यह ख़ानदान ऐतेबार क़ौमियत शेख़ था। और आज भी इसी हैसियत से मशहूर है।
-उनवान-शमशीर बरहना मौ. मुहम्मद अली 'जौहर', सै. नज़र बर्नी, स्वीनियर, १९८१, पृ. ६३,
– मौलाना मुहम्मद अली मरहूम मफ़कूद की क्या.क़ौम थी। इस बारे में एक बात यकीनी है और वह यह कि वह पठान न थे। न कभी इस ख़ानदान के लोगों ने ख़ुद अपने पठान होने का दावा किया और न यहां के किसी पठान ने इन्हें पठान माना। यह पूरा ख़ानदान शेख़ कहलाता था ख़ुद आपको शेख़ कहते थे। इस ख़ानदान के सैकड़ों, हज़ारों अफ़राद रुहेलखण्ड के शहरों और कस्बों में आबाद हैं।-
-'महनामा नक़्श' १९६८ ई. खतून न. १, मौ. इम्तियाज़ अली खां अर्शी डायरेक्टर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर बनाम अल्लाह बख्श यूसुफ़ी, पृ. ११६,
– जौहर शेख़ मुहम्मद अली शेख़ अब्दुल अली क़ौम शेख़ हैं।
शीर्षकः स्वतन्त्रता सेनानी मौलाना मुहम्मद अली, द्वारा-तज़करए शज़राए रामपुर, कुदरत अली खां.कुदरत, रजत हिन्दी वर्ष, अंक २, पृ. १,
3. महबूब बख़्श की विलादत अगवानपुर ११८४ हिजरी मुताबिक़ सन् १७७० ई. हुयी।– तज़करा कामिलाने रामपुरः मुसन्निफ़ - हाफ़िज़ अहमदअली खां 'शोक', पृ. ४६०
.. To him was born at Afghanpur a son during the year the Nawab breathed his last, in 1770 A.D. and was named Mahboob Bakhsh Khan. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar. Book one, . By . Allah Bakhsh Yusufi : page 20,

के साथ नजीबाबाद जिला बिजनौर में रहने लगे और यहीं १२४४ हिजरी तदनुसार १८२४ ई. में आपका निधन हुआ एवं स्वर्गीय नवाब नजीबुद्दौला साहब के मकबरे के चबूतरे के नीचे सीढ़ियों से बाई तरफ आपको भूसमाधि दी गयी।[१]

श्री महबूब बख़्श खां साहब के निम्नलिखित चार सन्तानें हुई - श्री महबूब बख़्श खां, हुसैन बख़्श खां, करीम बख़्श खां एवं एक लड़की दुलारी बेगम।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के दादा श्री अली बख़्श खां साहब का जन्म १२२९ हिजरी तदनुसार सन् १८१३ ई. में नजीबाबाद में हुआ था। पन्द्रह सोलह वर्ष की आयु में ही आप पिता की छत्रछाया से वंचित हो गये। इसलिए तत्कालीन नवाब श्री मुईनुद्दीन खां बहादुर ने अपने पुत्र के समान आपका पालन पोषण किया एवं आपको अपने पिता श्री महबूब खां साहब के स्थान पर ही नियुक्त किया।[३]

जब नवाब मुईनुद्दीन खां साहब के काल में नजीबाबाद की दशा आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त शोचनीय हो गयी तब विवश होकर अली बख़्श खां साहब किसी अन्य नवाब या रईस के यहां नौकरी करने के उद्देश्य से लखनऊ आ गये।[४] उस समय रियासत रामपुर में नवाब सै. मुहम्मद

---

1. सन् १२४४ हिजरी को महबूब बख़्श खां का इन्तेक़ाल नजीबाबाद में हुआ। नवाब नजीबुद्दौला बहादुर मरहूम मक़बरे के चबूतरे के नीचे सीढ़ियों से उल्टी तरफ आपको दफ़न किया गया।– तज़करा कामिलाने रामपुरः मुसन्निफ़ हाफ़िज़ अहमदअली खां 'शौक', पृ. ४६५,
2. आपने अली बख़्श खां, हुसैन बख़्श खां, करीम बख़्श खां, तीन बेटे और एक बेटी दुलारी बेगम यादगार छोड़ी।- तज़करा कामिलाने रामपुरः मुसन्निफ़-हाफ़िज़ अहमद अली खां "शौक", पृ. ४६५,
   . He left three sons : Ali Bakhsh Khan, Hussain Bakhsh Khan, Karim Bakhsh Khan and a daughter.
   . Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar.
   . By Allah Bakhsh Yusufi Book one, page 20.
3. अली बख़्श खां वलदे महबूब बख़्श खां सन् १२२९ हिजरी मुताबिक़ १८१३ ई० में नजीबाबाद में पैदा हुए। नवाब मुईनुद्दीन खां बहादुर ने अपने फ़रज़न्दों की तरह पाला परवरिश किया। पन्द्रह सोलह साल की उम्र में गो बांध का साया सर से उठ गया मगर नवाब साहब ने इस रंज को महसूस नहीं होने दिया और उन्हें बाप की ख़िदमत का मामूर किया।- तज़करा कामिलाने रामपुरः हाफ़िज अहमद अली खां "शौक", पृ. ४६६,
4. १२५९ हिजरी मुताबिक यकूम फरवरी सन् १८४३ ई. – मिफ़्ताहुल तक़वीम, तरक्की उर्दू बोर्ड, नई दिल्ली, १९७७ ई. पृ. २६८,

सईद खां साहब बहादुर (जन्नत आराम गाह) का शासन था। उन्हें नवाब सैयद मुहम्मद यूसुफ अली खां साहब "फिरदौसमकां" (रियासत के उत्तराधिकारी) के लिए एक "अहलेकार" की आवश्यकता थी। नवाब सैयद मुहम्मद सईद खां, अली बख़्श खां से पूर्व परिचित थे, अतः उन्होंने अली बख़्श को रामपुर बुलाकर नवाब सैयद यूसुफ अली खां साहब की सेवा में १२५९ हिजरी तदनुसार १८४३ ई.[१] में नियुक्त किया एवं "खानसामा" का पद प्रदान किया। और इस प्रकार अलीबख़्श साहब रामपुर में खानसामा पद पर नियुक्त किये गये।[२] अली बख्श साहब ने नवाब यूसुफ अली खां की तेरह वर्ष मन से सेवा कर उनका हृदय जीत लिया और नवाब यूसुफ साहब उनकी सेवाओं से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपने समस्त महत्वपूर्ण कार्य (सामान, वेशभूषा, आभूषण, पुस्तकालय, क्षेत्रीय व्यवस्था तथा क्षेत्रीय लगान आदि) अली बख़्श साहब को सौंप दिये।[३] और इस प्रकार मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के पूर्वज अली बख्श साहब नवाब सैयद मुहम्मद सईद खां साहब के समय में रामपुर

---

1. मुइनुद्दीन खां के जमाने में नजीबाबाद की हालत बिगड़कर माली ऐतबार से काफ़ी खराब हो गयी थी। जब अंग्रेजों ने तनख़ुवाहें बन्द की तो अली बख़्श खां लखनऊ चले गये ताकि किसी रईस की सेवा कर सकें।

   - रजत (हिन्दी) त्रैमासिक पत्रिका, अप्रैल १९७७ : शीर्षक : मेरी क़ब्र स्वतन्त्र देश में होना चाहिए। -मुहम्मद अली - द्वारा जहीर सिद्दीकी, पृ. ३१,

2. नवाब सैयद मुहम्मद सईद खां साहब बहादुर (जन्नत आरामगाह) पहले से ही अली बख़्श खां से वाक़िफ थे। नवाब सैयद मुहम्मद यूसुफ अली खां साहब बहादुर फिरदौ मकां (वलीजहद) थे। इनके पास एक अहलेकार की ज़रूरत थी। जन्नत आराम गाह ने लखनऊ से तलब फ़रमा कर नवाब फ़िरदौस मकां की खिदमत में सन् १२५९ हिजरी में मुकर्रर कर दिया और ख़ानसामा का ओहदा दिया।

   - तज़करा कामिलाने रामपुर, मुस. हाफ़िज़ अहमद अली खां, 'शौक', पृ. ४८४,

3. नवाब फिरदौस मकां इनकी ख़िदामात से इस क़दर खुश हुए कि कुल कारखानये वली अहदी आपके सुपुर्द कर दिया। सामान, लिबास, जेवर, किताब ख़ाना, इलाक़ाये मुस्ताजिरी सब काम अली बख़्श खां करते थे। तेरह साल कामिल वली अहद बहादुर की ख़िदमत की। कुल इलाक़ाये माल गुज़ारी का भी इन्तेज़ाम करते थे।

   तज़करा कामिलाने रामपुर, मुस. हाफ़िज़ अहमद अली खां 'शौक', पृ. ४८४,

आये।[१]

नवाब सैयद मुहम्मद सईद खां की मृत्यु के बाद सन् १२७१ हिजरी तदनुसार १८५५ को नवाब यूसुफ अली खां रियासत रामपुर की गद्दी पर बैठे।[२] उन्होंने प्रथम राजाज्ञा के अनुसार अली बख़्श खां को सीगनखेड़ा का तहसीलदार नियुक्त किया तथा उन पर ६०००- रु. का सरकारी ऋण दूसरी राजाज्ञा जून १२७१ हिजरी तदनुसार १८५५ ई. के अनुसार क्षमा किया।[३] इसके अतिरिक्त नवाब यूसुफ अली खां ने २० अगस्त १८५५ ई. को एक राजाज्ञा और जारी की जिसके अनुसार अली बख़्श साहब को हुजूर तहसील का तहसीलदार नियुक्त किया।[४] सन् १८५७ ई. के

---

1. शहीदे वफ़ा रईसुल अहरार मौलाना मुहम्मद अली साहब "जौहर" मरहूम मग़फ़ूर के बुज़र्ग आबाओ अजदाद एक आला खानदान थे। मौलाना मरहूम के दादा साहब क़िबला मुन्शी अली बख़्श खां साहब मरहूम सूबा यू.पी. की मशहूर मुस्लिम रियासत रामपुर में मुअज़्ज़िज़ ओहदे पर मुमताज़ थे।
   - हयाते जौहर - मुरत. नश्तर बलरामी, पृ. ३
   – नवाब मुहम्मद सईद खां बहादुर के ज़माने में अली बख़्श रामपुर आये। जहां उनके वली अहमद नवाब यूसुफ अली खां बहादुर के जो अतालीक मुकर्रर हुए।
   उन- शमशीर बरहना, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, मुदीर ख़ान क़मर इक़बाल, पृ. ५६,
   — नवाब यूसुफ अली खां बहादुर वालिए रियासते रामपुर ने आपको (अलीबख्श साहब) व इसरार रियासत में तलब करके मौतमेदीन में शामिल किया था।
   – हयाते जौहर, मुरत. इशरत रामपुरी, पृ. ३२,
2. तेरह रजब (चांद का सातवाँ महीना) सन् १२७१ हिजरी मुताबिक़ १८५५ ई. को नवाब फिरदौस मकां मसनद नशीने रामपुर हुए।
   - तज़करा कामिलाने रामपुरः हाफ़िज़ अहमद अली खां 'शौक', पृ. ४८४
3. रईस होने के साथ जो पहला परवाना १८ रजब १२७१ हिजरी नम्बरी (एक) नाफ़िज़ फरमाया उसमें अली बख़्श खां को सीगन खेड़ा का तहसीलदार मुक़र्रर किया। और मसनद नशीने से दो महीने बाद जो सरकारी रुपया. क़र्ज़ व ज़िम्मये अली बख़्श खां व तादाद ६००० रु. था, ज़रियाये परवानये दोयम जून सन् १२७१ हिजरी मुताबिक़ १८५५ ई. नम्बरी (एक सौ छियालिस) मुआफ़ किया।
   – तज़करा कामिलाने रामपुरः हाफ़िज़ अहमद अली खां (मुसन्निफ़) 'शौक', पृ. ४८५,
4. २० अगस्त सन् १८५५ ई. के मुवर्रिख़ परवाना नम्बरी (७२) के ज़रिये से आपको हजूर तहसील का तहसीलदार मुक़र्रर किया।
   - तज़करा कामिलाने रामपुर, मुसन्निफ़ अहमद अली खाँ "शौक" पृ. ४८६,

विप्लव के समय नवाब यूसुफ अली खां साहब के आदेशानुसार आपने नैनीताल में फंसे हुए अंग्रेजों के लिए आवश्यक वस्तुएं एवं अन्य सामग्री पहुंचाकर उनकी प्राणरक्षा की। विप्लव दब जाने पर अंग्रेजी सरकार की ओर से आपको मूल्यवान वस्त्र एवं सम्भल के पास एक जागीर तथा खान की उपाधि प्रदान की गई।[१] अली बख़्श खां साहब अपने पुत्र अब्दुल अली साहब के साथ रियासत रामपुर में ही उच्च पदों पर कार्य करते हुए यहां के स्थायी निवासी हो गये तथा नवाब यूसुफ अली खां की मृत्यु के तीन वर्षों बाद आपकी भी मुहर्रम की दूसरी तारीख सन् १२८४ हिजरी तद्नुसार १८६७ ई. को मृत्यु हुई और आपको मौलाना जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलह के मजार में भू-समाधि दी गयी।[२]

---

1. अय्यामे ग़दर १८५७ में उन्होंने अंग्रेजों की ख़ास इम्मदादों बे आनत की। और इस ख़ैर ख़्वाही के सिले में हंगामा फ़रो हो जाने पर जब तक़सीमे इनआमात का वक़्त आया और हुकूमत बरसरे इक़्तेदार हुई तो उनको जिला मुरादाबाद में मौज़ा ख़ानी समार जागीर में मिला और ख़ान का ख़िताब भी इसी सिलसिले का इज़ाफ़ा है।

   — हयाते जौहर - मुरततिबाः इशरत रामपुरी, पृ. ३१,

   – आपने हंगामाए ग़दर १८५७ ई. में ब्रिटिश हुकूमत की बहुत इमदाद की थी और बहुत से अंग्रेज़ों को पनाह देकर आपने उनकी जानें बचायी थी। जिसके सिले में आपको गवर्नमेण्ट हिन्द की जानिब से ख़ैर ख़्वाही की शुक्रिये के साथ जागीर भी अता हुई थी, जो मुरादाबाद के जिले में है और "खान" साहब का ख़िताब भी। संवाने उमरी शहीदे क़ौम रईसुल अहरार मौ. मुहम्मद अली साहब मरहूम – हयाते जौहरः मुरततिबा - नश्तर बलरामी, पृ. ३,४

2. नवाब फिरदौस मकां (नवाब यूसुफ अली खां साहब) के इन्तेकाल के बाद तीन साल तक ज़िन्दा रहे – मुहर्रम की दूसरी तारीख सन् १२८४ हिजरी मुताबिक १८६७ ई. को इन्तेक़ाल हुआ। मौलाना जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलह के मज़ार में दफ़्न हुए।

   – तज़क़रा कामिलाने रामपुः मुसन्निफ़ - हाफ़िज अहमद अली खां"शौक," पृ. ४९३, ४९४

   — He (Ali Bakhsh Khan) died in the year 1867 and was buried at Najibabad in the Mausoleum of Maulana Jamal-ud-Din.

   . Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Book one,

   . By Allah Bakhsh Usufi, paage. no. 21

अपने पीछे पांच सन्ताने छोड़ी - मु. अकबर अली, मुहम्मद असग़र अली, मुहम्मद महमूद अली, हाफ़िज़ मुहम्मद मुबारक अली साहब लेखक तज़करा कामिलाने रामपुर, एवं अब्दुल अली साहब (मौलाना मुहम्मद अली जौहर के पिता).[१] मौलाना मुहम्मद अली के पिता अब्दुल अली साहब का जन्म रामपुर में १२६५ हिजरी तदनुसार सन् १८४८ ई. में हुआ था। आप अरबी फारसी के अच्छे ज्ञाता थे।[२] जन्म के समय से इन्हें नवाब यूसुफ अली की कृपा से १० रु. महीना छात्रवृत्ति राज्य की ओर से प्राप्त होती थी और बड़े होने पर नवाब साहब ने आपको सवार रिसाला नं ६ का जमादार नियुक्त किया।[३] आपका विवाह नवाब दरवेश खां पंच हजारी (जो अकबर के दरबार के एक वंशज थे) के सम्माननीय परिवार की एक कन्या से हुआ जो कालान्तर में "बी अम्मा" के नाम से

---

1. Nature blessed Ali Bakhsh Khan with the following sons: 1. Mohamed Akbar Ali Khan, 2. Mohamed Asghar Ali Khan 3. Mehmud Ali Khan, 4. Haji Mubarak Ali Khan 5. Abdul Ali Khan, who has the honour of being the fortunate father of our heroes, the Ali brothers.. Life of Maulana Mohd. Ali Johar. By. Allah Bakhsh Usufi, page 21, 22 Book one.
2. अब्दुल अली खां ख़लफ़े पंजुम मुहम्मद अली बख़्श खां - इनकी पैदाइश रामपुर में १२६५ हिजरी मुताबिक़ सन् १८४८ ई. में हुई।- - - फारसी तालीम अच्छी हासिल की। सर्फ़ वनहब अरबी में भी खूब दस्तगाह थी।— तज़करा क़ामिलाने रामपु: हाफ़िज अहमद अली खां "शौक," पृ. ५३८

   . Abdul Ali khan, who has the honour of being the fortunate father of our heroes, the Ali Brothers, was born at Rampur in the year 1848

   . Life of Maulana Mohamed Ali Jouhar, part one, By. Allah Bakhsh Yusufi, page no. 22
3. पैदाइश के वक्त से १० रु. महीना वज़ीफ़ा रियासत से पाते थे। जवान होकर रिसालये शशुम सवारान में जुमेदार मुक़र्रर हुए।— तज़करा क़ामिलाने रामपुर: मुसन्निफ़ - हाफ़िज़ अहमद अली खां "शौक" - पृ. ५३७.
   — शेख अब्दुल अली खां भी रियासत में एक माकूल ओहदे पर फ़ाइज़ हुए। - हयाते जौहर: मुरततिबा - इशरत रामपुरी: पृ. ३२,
   — अब्दुल अली खां, जो कि १८४८ ई. में रामपुर में पैदा हुए थे और नवाब यूसुफ अली खां की वफ़ात के वक़्त ब मुश्किल १६-१६ साल के थे।
   —उनवान - शमशीर बरहना, मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" - सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, मुदीर - ख़ान क़मर इक़बाल, पृ. ६४,

प्रसिद्ध हुयी। इनका वास्तविक नाम "आबादी बानो बेगम" था।[१]

श्री अब्दुल अली खां अपनी व्यवहार कुशलता और आतिथ्य के लिए प्रसिद्ध थे।[२] नवाब कल्बे अली खां 'खुल्द आशियां' की आपने जीवन पर्यन्त सेवा की और हैजे की बीमारी के कारण १७ रमजान १२९७ हिजरी तदनुसार २० अगस्त सन् १८८० ई. को रात्रि के अन्तिम पहर में आपका देहान्त हो गया।

आपके शव को बरेली दरवाजा रामपुर के पास मजार मौलाना जमालुद्दीन साहब में जहाँ आपके पिता को दफ़न किया गया था, दफ़ना दिया गया।[३]

---

1. उनकी शादी नवाब दरवेश खां पंच हजारी (मुकररब दरबार अकबरी) के ख़ानदान आलिया की एक मोहतरमा खातून 'आबादी बानो बेगम' के साथ हुयी जो "बीअम्मा" के लक़व से आज तक हिन्दोस्तान के हर छोटे बड़े की जुबान से याद की जाती हैं।
   – हयाते जौहर - मुरततिबा - इशरत रामपुरी, पृ. ३२,३३,
   .. Abdul Ali Khan had married Abadi Bano Begum, daughter of Muzaffar Ali Khan of Rampur, said to have been a discendant of the house of Darwesh Ali Khan, a famous noble of Mughal Court, holding the title of Panj Hazari (commander of 5,000 warriars).
   . Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar. part no. one By. Allah Bakhsh Yusufi, page no. 22.
2. मुहम्मद अली के वालिद मरहूम अब्दुल अली खां रामपुर शहर में अपनी खुशमज़ाक़ी, मेहमान नवाज़ी और फ़य्याज़ी के लिए मशहूर थे।
   मौ. मुहम्मद अली एक मुतालेवा- मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. १२,
   – जुमला मुलाज़िमीन आपसे बेहद खुश रहते थे और रियाया हमेशा आपको (अब्दुल अली साहब) कलेमाते ख़ैर याद किया करती थी।
   - हयाते जौहः मुरततिबा - नश्तर बलरामीः पृ. ४,
3. १७ रमज़ान को रोज़े की हालत में हैज़ा हुआ। उस वक़्त रामपुर में हैज़े की निहायत शिद्दत थी— १७ रमज़ान १२९७ हिजरी मुताबिक़ २० अगस्त सन १८८० ई. को अख़ीर शब में इन्तेक़ाल हुआ। मज़ार मौलाना जमालुद्दीन साहब मरहूम वाके बरेली दरवाजा में दफन किया।
   – तज़्करा कामिलाने रामपुरः मुसन्निफ़ - हाफिज़ अहमद अली खां "शौक," पृ.५३८,
   – मौलाना मुहम्मद अली के वालिद का नाम अब्दुल अली थी। और वह नवाब रामपुर जनाब यूसुफ़ अली खां के हरदिलअज़ीज़ और मुमताज दरबारियों में से थे। उनका इन्तेक़ाल ३२ साल की उम्र में २० अगस्त सन् १८८० ई. में हुआ। – जामिया मौलाना मुहम्मद अली, जिल्द ७६, अप्रैल १९७९, शुमारा-३ मुदीर ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, पृ. १३,
   .. Cholera had suddenely cut short of our young father's life after a few hours illness.
   My life a Fragement, By : Mohd. Ali, Edited by. Afzal IqbalPage no. 4

आपने अपने पीछे छः सन्ताने छोड़ीं तथा मृत्यु के समय आपकी आयु ३२ वर्ष थी। आपकी सन्तानों के नाम - बन्दे अली साहब, जुल्फ़िक़ार अली साहब, शौकत अली साहब, नवाज़िश अली साहब, मुहम्मद अली साहब एवं एक लड़की है।[१]

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी तथा शलभ मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के जन्म स्थान के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार आपका जन्म स्थान नजीबाबाद जिला बिजनौर है, जैसा कि जौहर-शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित "जौहर-परिचय-पत्र" में भी भारत सरकार ने आपका जन्म स्थान नजीबाबाद ही माना है।[२] जबकि अन्य विद्वान इसके विपक्ष में हैं।[३] यदि हम मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" द्वारा लिखित जीवनी, लेखों एवं पत्रों का अध्ययन करें तो हम देखंगे कि मौलाना का जन्म स्थान नजीबाबाद नहीं, रामपुर ही है क्योंकि स्वयं मौलाना मुहम्मद अली ने अपना जन्म स्थान रियासत रामपुर ही

---

1. बत्तीस साल उम्र हुई। अपनी यादगार बन्देअली खां, जुल्फ़िक़ार अली खां, शौकत अली खां नवाज़िश अली खां, मुहम्मद अली खां और लड़की छोड़ी।– तज़करा क़ामिलाने रामपुरः मुन्सिफ़ - हाफ़िज़ अहमद अली खां "शौक," पृ. ५३८,

   - She (Abadi Bano Begum wife of Abdul Ali) gave birth to five sons and a daughter, named Bunde Ali Khan, Zulfikar Ali Khan, Shaukat Ali Khan, Nawazish Ali Khan and Mohamed Ali Khan, and the daughter Mohameddi Begum.
   Life of Maualana Mohamed Ali Jauhar, Book one,
   . By. Allah Bakhsh Yusufi, page. no. 24,

2. मुहम्मद अली "जौहर" का जन्म १० दिसम्बर १८७८ को उप्र. के बिजनौर जिले में स्थित नजीबाबाद में हुआ। – मुहम्मद अली जौहर - स्मारक डाकटिकट, इन्डियन पोस्ट एंड टेलीग्राफ, दि. १०-१२-१९७८,

3. मुहम्मद अली की पैदाइश के बारे में बिजनौर के सिलसिले की रिवायत ग़लत और बेबुनियाद है।

   — उनवान मुहम्मद अली जौहर और रियासत रामपुर - ज़हीर अली सिद्दीकी, स्वीनियर- १९८१, पृ. ९०,

माना है।[१] अतः जन्म स्थान के बारे में मतभेद का प्रश्न ही नहीं रहता। भारत माँ के इस निडर सपूत और भारतीय स्वतन्त्रता के अग्रदूत मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" का जन्म १० दिसम्बर १८७८ ई. को रियासत रामपुर के एक सम्मानित परिवार में हुआ था।[२] २ वर्ष की अल्प आयु

---

1. रामपुर में उस ज़माने में पैदा हुआ था जब घर-घर मुशायरा होता था।
   – ख़तूत मुहम्मद अलीः मुरततिबा - मुहम्मद सुरूर, पृ. १२४,
   – मैं (मुहम्मद अली) रियासत रामपुर का बाशिन्दा हूं जहां कि वालिये रियासत मुसलमान हैं।
   – "हमदर्द" (उर्दू अख़बार - मुहम्मद अली "जौहर", २५ नवम्बर १९२६ ई.
   – मौलाना मुहम्मद अली रियासत रामपुर के एक मुतबस्सित तबक़े के क़दामत पसन्द ख़ानदान में १८७८ ई. को पैदा हुए।
   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइने अय्याम में - मुसन्निफ़ - सैयद आबिद हुसैन, पृ. १२४,
   – भारत माता के सपूत, हमारी आजादी की लड़ाई के अग्रदूत, अगुआ, लुकमान ो बुद्धिमान, रुस्तम जैसे दिलेर व निडर मौलाना मुहम्मद अली का जन्म तारीख़ १० दिसम्बर १८७८ ई. को उत्तर प्रदेश में रामपुर रियासत के एक नामी घराने में हुआ था।
   शीर्षक - मानवता और देशप्रेम का फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति " रेणु" एम. ए. डी. लिट्.— Maulana Mohamed Ali Birth Century Celeberation Souvener, Editors Katam Lakshmi Narayan Fareed Mirza, Dr. Anwar Moazzam, Seminar, Dec. 1978,
   . Born in a fairly prosper us and cultur Indian Muslim family in the Rampur State, In the last quarter of the last Century, I naturally received some instructions in the faith of Islam.
   . My Life a Fragement : Mohamed Ali,
   Edited By : Afzal Iqbal, Page no. 1,2.
2. मौलाना मुहम्मद अली का जन्म १० दिसम्बर १८७८ को उत्तर प्रदेश में रामपुर रियासत के एक नामी घराने में हुआ था।
   - मानवता और देश प्रेम का फरिश्ता डॉ. राम मूर्ति रेणु, एम.ए., डी. लिट्. Maulana Mohamed Ali, Birth Century Celeberation, Souvener, Dec. 1978, An Article in Souvener, Hyderabad-4,
   – १० दिसम्बर १८७८ ई. को मुहम्मद अली पैदा हुए।
   – उनवान - मौलाना मुहम्मद अली मरहूम, जिया उर रहमान बछरायूनी, मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेबा, मुरत. - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ४८,
   – मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" १८७८ ई. में रामपुर में पैदा हुए और उनके वालिद बुजुर्गवार का नाम अब्दुल अली था जो नवाब रामपुर के ख़ास दरबारियों में थे।
   - उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल,
   मुर. - साहिब ज़ादा तजम्मुल अली खां, पृ. १११,

में ही आप अपने पिता श्री अब्दुल अली की छत्रछाया से वंचित हो गये और आपका पालनपोषण आपकी योग्य माता आबादी बानो बेगम जो "बी-अम्मा" के नाम से जानी जाती थी,[१] ने किया। पिता की मृत्यु के समय घर की आर्थिक स्थित ठीक नहीं थी। अतः "बी अम्मा" ने बड़े धैर्य से अपने बच्चों का पालन पोषण किया।[२] उन्होंने स्वयं रूखा सूखा खाकर बच्चों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने स्वयं कष्ट उठाये

1. Abdul Ali Khan had married Abadi Bano Begum ..... She became an ideal of inhabitants of the Country. Hindus and Muslims alike, and won the name of Bi-Amman, (respected mother), and later on was called with the same name only.
.. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Book one,
By. Allah Bakhsh Yusufi, page no. 22,23.

2. बी अम्मा का सिन उस वक़्त २७ साल का था और मोतरम शौहर ने जायदाद पर ३०-३५ हजार का क़र्ज़ा छोड़ा था। और इधर कमसिन औलाद की तालीम व तर्बियत क़र्ज़े के बारे अज़ीम से सुबक दोषी का ख्याल बज़ाहिर यह एक ऐसा नाजुक ज़माना था जिसका ख़्याल एक औरत ज़ात के लिए हद दरजा तशवीश नाक हो और उन तमाम फ़राइज़ ज़रूरी की अदायगी में एक अज़ीम कशमकश पैदा होकर हालात को मुशकिल तरीन बना दे — मगर उन शरीफ़ नज़ीब ख़ातून का अज़मे सिबात ऐसा न था कि कैसा ही दुश्वार तरीन दूर हो पाये। इसतिकलाल को जुम्बिश आना न मुमकिन था और यही हुआ कि मोहतरमा ने निहायत उलूल अज़मी और सब्रो इसतिकलाल से साहबज़ादेगान को ज़रे तालीम से आरास्ता और ख़ास तर्बियत से पय रास्ता करके साहिबे इल्मव अमल बनाया।

– "हयाते जौहर", इशरत रामपुरीः पृ. ३३,३४,

– उनकी शेरदिल और बा हिम्मत वालिदा (जिन्हें बीअम्मा कहते थे) ने इन्तेहायी इसतिक़लाल से बावजूद इन्तेहायी ना मुसाइद हालात के मुहम्मद अली और उनके चार दूसरे बड़े भाईयों और बहिन की परवरिश तालीम व तर्बियत का बारेगरां अपने कांधों पर उठाया और उन ज़िम्मेदारियों से इन्तेहायी कामयाबी से ओहदा बरआ हुई।

– मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामातः मुरततिबा - सै. नजरबर्नी उनवान - मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामातः - डॉ. हासिम किदवई एम. ए. पी.एचूडी., पृ. १६६,

किन्तु अपने पुत्रों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दिया।[१] मुहम्मद अली की प्रारम्भिक शिक्षा घर से ही आरम्भ हुई। घर पर ही उन्होंने उर्दू फारसी तथा कुरान शरीफ का अध्ययन किया।[२] वह बचपन से ही

---

1. मैं (मुहम्मद अली) जो कुछ हूं और जो कुछ मेरे पास है वह ख़ुदा बन्देकरीम ने मुझे इसी मरहूमा के ज़रिये से अता फ़रमाया। वालिद मरहूम की वफात के दिन से खुद घक की बूढ़ी मामाओं का सा सादा और सस्ता लिबास पहना और उन्हीं की तरह रूखी सूखी खाकर गुज़र की मगर हमारा कोई सवाल रद्द नहीं किया।

   –"हयाते जौहर" - मुरततिबा - इशरत रामपुरी,

   – उनवान - जौहर के हालात ख़ुद उनकी जुबानी, पृ. ३४

   – बीअम्मा चारों बेटों का ख़र्च अलीगढ़ में बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। अपना ज़ेवर और घर का सामान बेच-बेच कर पढ़ाती थी। ख़ुद परदे के अन्दर रह कर ग़रीबों की जिन्दगी बसर करती थी। और हमको बाहर शहजादों की तरह रखती थी।

   उनवान - मौलाना मुहम्मद अली की इबतेदायी जिन्दगीः मौ. शौकत अली, मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेबा - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी पृ. २२,

   – सैकड़ों फ़िकारात में ग़र्क़ बाहिम्मत अज़ीम ख़ातून (बीअम्मा) ने अपने बेटे मुहम्मद अली की परवरिश की उसे तर्बियत दी। ज़ेवरे तालीम से आरास्ता कर दिया।

   उनवान - क़ाफिलिये हिन्द के सालारे आज़म मुहम्मद अली "जौहर" न्यूज एडीटर क़ौमी जंग रामपुर, स्वीनियर १९८१, पृ. १००,

2. मुहम्मद अली जौहर ने इबतिदायी तालीम रामपुर में ही हासिल की। उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल - मुन्सिफ - साहिबजादा तजम्मुल अली खां, पृ. ११२

   – इबतिदा में मौलाना को कुरआन शरीफ की मुकम्मल तालीम दिखायी गयी। हयाते जौहर - मुरततिबा - इशरत रामपुरी, पृ. ३५,

   – I was sent to a school recently founded at Rampur.
   – My life a Fragement : Mohamed Ali, Edited By. Afzal Iqbal, page no. 3.

तीव्र बुद्धि के थे एक बार पढ़ी या देखी गयी चीज को भूलते नहीं थे।[१] रामपुर में उन दिनों अंग्रेजी शिक्षा को अच्छा नहीं समझा जाता था।[२] किन्तु नवाब कल्बे अली खां के बाद रामपुर में अंग्रेजों के समर्थकों की संख्या बढ़ी और अंग्रेजी का प्रचार हुआ इसके परिणाम स्वरूप नगर के एक रईस अब्दुल्ला खां साहब का बड़ा मकान किराये पर लेकर उसके दालानों में बेंच लगाकर प्रारम्भिक कक्षाएं आरम्भ की गयी। मुहम्मद अली ने कुरान शरीफ और मक्तब की शिक्षा के बाद रामपुर के इसी अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश लिया।[३] इस अंग्रेजी स्कूल के अंग्रेजी अध्यापक श्री नजीर साहब थे तथा जिनसे मुहम्मद अली घर पर भी व्यक्तिगत

---

1. Mohamed Ali had and excellent and brilliant memory.
Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Book one, by. Allah Bakhsh Yusufi, Page no. 39.
– मुहम्मद अली बरेली में बला के ज़हीन मगर कम मेहनत थे। उस्ताद सब खुश रहते थे।—"सीरते मुहम्मद अली" - मुरततिबा - रहीस अहमदजाफ़री पृ. ९,
2. रामपुर में अंग्रेजी तालीम को उस जमाने में कुफ्र समझा जाता था। उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी: मौलाना शौकत अली मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. १५,
– मुहम्मद अली को घर पर फारसी अदब की मुरवविजा तालीम दिलाने के बाद सारे ख़ानदान की राय के ख़िलाफ़ अंग्रेजी मदरसे में दाख़िल कर दिया। - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में - मुसन्निफ़- सै. आविद हुसैन, पृ. १२४,
– अंग्रेजी तालीम रामपुर के मदरसे से शुरू की और घर पर भी प्राइवेट तौर पर पढ़ा, उनवान मौ. मु. अली की इबतेदायी जिन्दगी - मौ. शौकत अली मौ. अली एक मुतालेआ - मुरततिबा अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. २४
3. जब रामपुर में कल्बे अली खआं साहब का इन्तेक़ाल हुआ तो रामपुर में अंग्रेजगर्दी शुरू हुई। शहर के एक रईस अब्दुल्ला खां साहब का बड़ा मकान किराये पर लिया गया और इसके दालानों में बेन्च वगैराह लगाकर इबतेदायी दरजे कायम किये गये। मुहम्मद अली ने क़ुरआन शरीफ और मकतब की तालीम ख़तम करने के बाद रामपुर के इसी अंग्रेजी स्कूल में नाम लिखवाया।
– उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी जिन्दगी ले. मौ. शौकत अली,
– मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. १५,१६,

रूप से पढ़ते थे। इन्होंने सन् १८८६-८७ ई. में अंग्रेजी पढ़नी शुरू की।[१] रामपुर में प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के बाद मुहम्मद अली को सन १८८८ ई. में बरेली हाईस्कूल में भेजा गया।[२] बरेली में आपने अपनी तीव्र बुद्धि, योग्यता तथा हाजिर जवाबी से अपने मित्रों और अध्यापकों का हृदय जीत लिया।[३] बरेली से हाई स्कूल करने के उपरान्त आप सन् १८९० ई. में अलीगढ़ कालिज में शिक्षा प्राप्त करने के लिए गये।[४] उस समय आपकी आयु ग्यारह वर्ष थी।[५] आपने १८९२ ई. में मिडिल १८९४ में इन्ट्रन्स (इलाहाबाद विश्वविद्यालय से), १८९६ में एफ. ए. तथा १८९८ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा सर्वोच्च अंक में उत्तीर्ण कर "इकबाल गोल्ड मेडिल" प्राप्त किया।[६] "बी अम्मा"

---

1. ग़ालेबन सन् १८८६ या १८८७ ई. में अंग्रेजी शुरू की।
   मौ. मुहम्मद अली की इब्तेदायी ज़िन्दगी, मौ. शौकत अली,
   मौ. मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ.२४
2. I was sent to a school recently founded at Rampur and subsequently to an other at Bareilly some fourty miles from my home.
   My life a Fragement: Mohamed Ali, p. ३,
3. खुश रहते थे। मिज़ाज में तेज़ी और हाज़िर जवाबी बहुत थी।
   – सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस अहमद जाफ़री, पृ. ९१०
4. मुहम्मद अली इबतेदायी तालीम के लिए प्राइमरी स्कूल रामपुर में दाखिल हुए। इसके बाद सन् १८८८ ई. में अपने भाई शौकत अली के साथ बरेली चले गये वहां से हा. स्कूल करने के बाद १८९० ई. में अलीगढ़ पहुंचे।
   - उनवान - मौलाना मुहम्मद अली मरहूम - जियाउर रहमान बछरायनी
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ४९
5. ११ वर्ष की आयु में अलीगढ़ चला गया – सीरते मुहम्मद अली — मुरततिबा रईस अहमद जाफ़री, पृ. १४,
6. सन् १८९२ ई. में मिडिल का इम्तेहान पास किया और १८९४ ई. में इट्न्स का इम्तहान भी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का अलीगढ़ से पास किया। सन् १८९६ ई. में एफ. ए. (इण्टर का) इम्तहान पास किया। सन् १९९८ ई. में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी का बी.ए. पास किया और यूनिवर्सिटी में अव्वल रहा — कालेज में मुहम्मद अली की पढ़ाई बहुत अच्छी थी। एफ.ए. आसानी के साथ पास कर लिया और बी.ए. में तो यूनिवर्सिटी में अव्वल आये और "इकबाल गोल्ड मेडिल" हासिल किया।
   उनवान- मौलाना मुहम्मद अली इबतेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत अली,
   मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ- मुरतबिा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. २५,२६

और बड़े भाई शौकत अली साहब मुहम्मद अली को एक योग्य व्यक्ति बनाना चाहते थे। शौकत अली साहब ने मुहम्मद अली को बी.ए. प्रथम श्रेणी प्राप्त करने पर, सिविल सर्विस की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए इंग्लैण्ड भेजने का वचन दिया था।[१] और जब मुहम्मद अली ने बी.ए. में प्रथम श्रेणी प्राप्त की तब वचन के अनुसार शौकत साहब, मुहम्मद अली को अपने साथ रामपुर लाये और तत्कालीन रामपुर नवाब श्री हामिद अली खां साहब (जन्नत मकां) से मुहम्मद अली को इंग्लैण्ड भेजने के लिए १० हजार रुपये का ऋण १०० रु. के वार्षिक भुगतान के वचन पर लिया।[२] मुहम्मद अली ८ जून १८९८ को पी. एण्ड कम्पनी ओरियन्टल जहाज से बम्बई से लन्दन रवाना हुए। लन्दन पहुंचने पर अलीगढ़ के भूतपूर्व प्रिन्सिपल श्री थियोडोर बक तथा उनकी छोटी बहिन मिस जे.सी. बक मुहम्मद अली को स्टेशन से अपने घर ले गये जहां वह स्थायी निवास का प्रबन्ध होने तक रहे।[३] तत्पश्चात् एक यहूदी श्री एवं श्रीमती

---

1. जब बी.ए. के इम्तहान का वक़्त आया तो मैंने (शौकत अली) उलसे (मुहम्मद अली) वायदा किया कि अगर वह फर्स्ट डिवीजन में पास करेगा तो जरूर उसको इंग्लिस्तान सिविल सर्विस के लिए भेज दूंगा।
   उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी - शौकत साहब,
   मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरतसिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. २८
2. नवाब साहब रामपुर से (श्री हामिद अली खां साहब) जो मुझसे (शौकत साहब) बहुत मुहब्बत करते थे, १० हजार रुपये अपनी ज़मानत पर क़र्ज़ लिया और हजार रु. सालाना की किस्त अदाई का वायदा किया। १० हजार रुपया देकर उसे (मुहम्मद अली) आक्सफोर्ड डिग्री और सिविल सर्विस के इम्तहान के लिए भेज दिया।
   – उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी, मौ. शौकत साहब,
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेबा - मुरततिआ - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. २८
   – स्टेट से रुपये क़र्ज़ लेकर मुहम्मद अली को आक्सफोर्ड में तालीम दिलाई थी। जिसको बाद में हमने (शौकत अली) और बीअम्मा ने अदा कर दिया था।
   उनवान - ख़ाना वीरानी - शौकत साहब द्वारा मुस्लिम आफ़ाक़ी,
   कौमी जंग (उर्दू अख़बार), २२ जून १९८३, पृ. ४,
3. लन्दन पहुंचकर मिस्टर थियोडोरबक को (जो) अलीगढ़ के प्रिंसिपल थे और उनकी छोटी बहिन मिस जे.सी. बक - - - वह उसको स्टेशन में अपने हमराह ले गयी। – उनवान - मौ. मु. अली इबतेदायी जिन्दगी- शौकत अली साहब, मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ३०

हाईमस जो नं. ८२ ग्राण्ड सबरी बिला कलर्बन में रहते थे, के साथ—२ गिन्नी साप्ताहिक भुगतान पर रहने लगे।[१] सिविल सर्विस के परीक्षा काल में स्वदेश की समस्याओं और उसकी स्वतन्त्रता की चिन्ता में रहने के कारण आपको इस परीक्षा में सफलता न मिल सकी और आप सौ अंकों की कमी के कारण अनुत्तीर्ण घोषित कर दिये गये।[२] यह समाचार सुनकर मुहम्मद अली के बड़े भाई शौकत साहब को अत्यधिक दुःख हुआ किन्तु "बी-अम्मा" ने शौकत साहब से कहकर मुहम्मद अली के पास धैर्य एवं सान्त्वना देने के लिए तथा दिसम्बर १९०१ ई. में रामपुर वापस आने के विषय में एक तार दिलवाया और मुहम्मद अली लन्दन से १२ दिसम्बर १९०१ ई. को रामपुर वापस आये।[३]

जब मुहम्मद अली लन्दन से रामपुर वापस आये तो अपने साथ नासिर खां साहब (नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब के सगे भाई जो उन दिनों आक्सफोर्ड में मुहम्मद अली के साथ पढ़ते थे) का एक पत्र भी अपने भाई हामिद अली खां साहब के लिए लाये, जो नासिर

---

1. लन्दन पहुंचकर थोड़े दिनों मिस्टर बक के यहां क़याम किया और बाद को लन्दन में एक यहूदी मिस्टर और मिसिज हाईमस के साथ २ गिन्नी फ़ी हफ़्ता अदा करके रहने लगे। न. ८२ ग्राण्ड सबरी बिल कलबर्न में रहते थे।
   उनवान - मौ. मु. अली की इबतेदायी जिन्दगी - शौकत अली साहब
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ-मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आजमी, पृ. ३१,
2. जब सिविल सर्विस के आख़िरी इम्तेहान में सौ नम्बरों (१००) की कमी रह गयी तो मुझे (शौकत अली) बहुत रंज हुआ था। मगर बीअम्मा ने हिम्मत अफ़ज़ाई का तार दिया था।
   उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी जिन्दगी - मौ. शौकत अली, मौलाना मुहम्मद अली एत मुतालेआ-मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ३४
   — उन्होंने (मुहम्मद अली) लन्दन जाकर सिविल सर्विस का इम्तेहान तो दिया लेकिन उसमें नाकाम रहे।– मौलाना मुहम्मद अली की याद में - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ. ४,
3. सन् १९०१ ई. में हम सबके (बी अम्मा, शौकत अली आदि) के मशवरे से उनको हिन्दोस्तान बुलाया गया और १२ दिसम्बर सन् १९०१ ई. को वह हिन्दोस्तान पहुंच गये।
   – उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी - शौकत अली
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ३४,

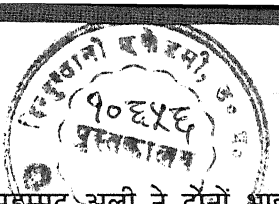

खां साहब से अप्रसन्न थे और मुहम्मद अली ने दोनों भाइयों में (हामिद अली खां साहब एवं नासिर अली खां साहब में) पुनः मेल कराने का प्रयास किया।[१]

मुहम्मद अली के रामपुर वापस आने पर श्री हामिद अली खां साहब ने उन्हें शिक्षा विभाग का उच्च अधिकारी और ३०० रु. मासिक वेतन पर रामपुर हाई स्कूल का प्रधानाचार्य नियुक्त किया।[२] मुहम्मद अली का विवाह आपके ही परिवार की एक लड़की (चचेरी बहन) अमजदी बानो, जो आयु में आपसे १० वर्ष छोटी थी (जन्म १८८८ ई.) से दिनांक १५ फरवरी सन् १९०२ ई. में हुआ।[३] यह विवाह रामपुर में ही बहुत साधारण

---

1. आक्सफोर्ड में उस जमाने में हिजहाइनेस नवाब साहब मरहूम के छोटे भाई नासिर अली भी पढ़ते थे, मुहम्मद अली से भी उनकी मुलाकात थी- - मुहम्मद अली जब इंग्लिस्तान से वापस आया था तो वह छोटे भाई (नासिर अली खां) का बड़े भाई (नवाब रामपुर हामिद अली खां साहब) वालिये मुल्क के लिए मुहब्बत और अक़ीदत मन्दी का पैग़ाम भी लाया था। और उसने कोशिश की थी कि दोनों भाइयों में मुहब्बत कायम हो जाए।
   – उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत अली, मौ. मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा- अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ३५, ३६,
2. After four years I returned to India after taking my degree ..... I joined his highness service as the Chief Educational Officer in my own State of Rampur.
   . My life a fragement : By. Moh. Ali, page 32,
   — मुहम्मद अली के रामपुर आते ही हिजहाइनेस नवाब साहब मरहूम (नवाब हामिद अली खां साहब बहादुर) ने उनको अफ़सरे तालीम मुक़र्रर किया। रामपुर हाइस्कूल का प्रिन्सिपल भी, ३०० रु. माहवार तनख्वाह इबतेदा में दी। उनवान - मौ. मुहम्मद अली की इबतेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत अली,
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ३५,
   – नवाब साहब रामपुर ने उन्हें अपनी रियासत में सबसे बड़ा अफ़सरे तालीमात बना दिया और इसी के साथ रामपुर हा. स्कूल की प्रिंसिपलशिप के फ़राइज़ भी मुहम्मद अली से मुतआल्लिक़ हो गये। – सीरते मुहम्मद अली -मुत. मुरततिबा रईस अहमद जाफ़री, पृ. १८७.
3. अहमदी बानो अली ब्रादरान के बवाजाद भाई मुहम्मद अजमत खां साहब की साहिबजादी थीं जो तक़रीबन सन् १८८८ ई. में पैदा हुई गोया मौलाना मुहम्मद अली से १० साल छोटी थी —— १५ फरवरी सन् १९०२ ई. को मौलाना मुहम्मद अली से उनका अक़द हुआ।
   -- उनवान - मज़नून निगारों का तहारूफ़ - अब्दुल लतीफ आज़मी - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. १८३,

ढंग से सम्पन्न हुआ तथा विवाह के उपरान्त दिये जाने वाले प्रीतिभोज में तत्कालीन रामपुर नवाब साहब भी सम्मिलित हुए थे।[१] मुहम्मद अली और उनकी पत्नी बड़े विशाल हृदय की थी और मुक्त हस्त से व्यय करती थी। अतिथियों के स्वागत सत्कार में पर्याप्त धन व्यय करती थी। आप स्वयं भी स्वादिष्ट व्यंजनों के शौकीन थे।[२] मुहम्मद अली अपनी पत्नी को अत्यधिक प्रेम करते थे।[३] और पत्नी ने भी अन्तिम समय तक उनका साथ दिया।[४] मुहम्मद अली विवाह के बाद सन् १९०२ ई. में दुबारा बी.ए. की डिग्री लेने लन्दन जाना चाहते थे। अतः उन्होंने रामपुर नवाब श्री हामिद अली खां साहब से ४ माह का अवकाश मांगा।[५] किन्तु दरबारियों ने मुहम्मद अली के विरुद्ध नवाब साहब के कान भरने

---

1. निकाह की रस्म रामपुर में अदा हुई थी। किसी किस्म का नाच रंग न था और न कोई रस्म अदा की गयी। - - - जिसमें हिजहाइनेस नवाब साहब भी तशरीफ़ लाये थे - मौ. मु. अली की इबतेदायी जिन्दगी - मौ. शौकत अली, मौ. मु. अली एक मुतालेआ- मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ३५,
2. मुहम्मद अली मियां बीबी दोनों बड़े दिल वाले, बड़े हौसले वाले थे। खुद जी खोलकर ख़र्च करना, पूरे अरमान और हौसला निकालना चाहते थे और खाना खिलाने के तो बादशाह थे।
   – मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़- हिस्सा दोयम - मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २४,
3. बेगम मुहम्मद अली महज़ बीबी न थीं, महबूब और बड़ी चहीती बीबी थीं।
   – मुहम्मद अली, जाती डायरी के चन्दवर्क - हिस्सा दोयम - मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १६४,
4. बेगम मुहम्मद अली - - - आख़िरी वक़्त में अपने शौहरे नामदार का साथ देने के लिए हमराह थीं। और उनकी उम्र की आख़िरी मंज़िल में भी ज़िन्दगी भर की रिफ़ाक़त का हक़ अदा कर रही थीं।
   – मुहम्मद अली, ज़ाती डायरी के चन्दवर्क - हिस्सा दोयम - मुरततिबा- अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १६४,
   — बेगम मुहम्मद अली की ख़िदामात और हिम्मत का तज़करा करना बेकार है।
   शब व रोज़ ख़िदमत की – मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुरततिबा अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३०३,
5. मुहम्मद अली ने शादी के बाद चार माह की रुख़सत तलब की ताकि वह आक्सफोर्ड की बी. ए. की डिग्री का इम्तेहान पास करें।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उनवान - मौ. मु. अली की इबतेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत अली, पृ. ३६,

आरम्भ कर दिये कि इनका लन्दन जाने का उद्देश्य बी.ए. की डिग्री नहीं बल्कि नासिर अली खां साहब को परामर्श करना तथा आपके स्थान पर नासिर अली खां साहब को गद्दी पर बैठाने का है। दरबारियों की इस बात पर विश्वास करके नवाब साहब ने मुहम्मद अली का अवकाश अस्वीकृत कर दिया। विवश होकर मुहम्मद अली ने शौकत साहब को सूचित किया और उन्होंने आकर नवाब साहब रामपुर के संदेह को दूर कर उन्हें जाने की अनुमति दिलवाने में सहायता की।[१], स्वीकृति मिलने पर मुहम्मद अली बी.ए. की डिग्री लेने हेतु लंन्दन गये।[२] और वहां से आधुनिक इतिहास में बी.ए. की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की[३] तथा १९०२ में वापस आकर रियासत रामपुर में पुनः शिक्षा अधिकारी के पद पर कार्य करने लगे।[४] दरबारियों के द्वारा पुनः तंग किये जाने और नवाब को इनके विरुद्ध भड़काए जाने के कारण मुहम्मद अली और

---

1. मगर इस रुख़सत के हसूल में दुश्वारियां पैदा की गयीं और हिजहाईनेस जो उस ज़माने में अलील भी थे, उनको यक़ीन दिलाया गया कि यह रुख़सत वग़ैराह सब गहरी साज़िश का ज़रूरी जुज़्व है। मुहम्मद अली गरीब परेशान हुआ चूंकि हिजहाईनेस (नवाब हामिद अली खां साहब) मुझसे (शौकत साहब) से बहुत मुहब्बत करते थे इसलिए उसने मुहम्मद अली मुझको (शौकत साहब) तार देकर बुलाया और मैंने (शौकत साहब) हिजहाइनेस (नवाब हामिद अली खां) के शुबह को दूर किया और उसको (मुहम्मद अली) जाने की रुख़सत भी ले दी।

   -उनवान - मो. मु० अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उनवान - मो. मुहम्मद अली की इब्तेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत साहब, पृ. ३६

2. उनके ब्रादरे बुज़ुर्ग मौलाना शौकत अली ने फिर हिम्मत की और दोबारा इंग्लिस्तान भेजा ताकि वह बी.ए. की डिग्री आक्सफोर्ड, यूनिवर्सिटी से हासिल कर सकें। - सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस हमद ज़ाफ़री, पृ. १८७

3. I had at Oxford when I took an Honour's degree in modern History... My life a Fragement by Mohd. Ali, page no. 31, Edited by. Afzal Iqbal.

4. हिन्दोस्तान वापस हुए तो रामपुर के महकमाये तालीमात में मुलाज़िम हो गये। – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुरततिबा - सै० अबाहुद्दीनअब्दुर रहमान, पृ० ४

नवाब साहब के बीच खाई बढ़ती ही चली गयी।[१] और शौकत साहब द्वारा किये गये समझाने के सभी प्रयास असफल सिद्ध हुए। अतः विवश होकर मुहम्मद अली ने शौकत साहब के परामर्श से रामपुर रियासत की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और अपने भाई शौकत साहब एवं भाभी के साथ पत्नी सहित बरेली आ गये।[२] और मुहम्मद अली सपत्नीक शौकत साहब के परिवार के साथ उस समय तक रहे, जब तक कि उन्हें बड़ौदा में स्थान न मिल गया ।[३] फरवरी सन् १९०३ ई. में ही इनके प्रथम पुत्री (जोहराबी) का जन्म हुआ जो अत्यन्त सुन्दर थी।[४] इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली के तीन कन्यायें और उत्पन्न हुयी।[५] जिनके नाम क्रमशः आमिना बानो (जिसका विवाह के बाद निधन हुआ और अलीगढ़ में

---

1. वापस आने पर इस साज़िश को और भी बढ़ाया गया और मुहम्मद अली को तंग करने की कोशिश की गयी। छोटी छोटी बातें सरकार तक पहुंचायी जाती थी। तरक़्क़ीये तनख़्वाह का मुआमिला भी ताहाल मुअल्लक़ था।
   उनवान - मौ. मु. अली की इबतेदायी जिन्दगी- मौ. शौकत अली
   मौ. मुहम्मद अली एक मुतालेआ मुरततिबा अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ३६
2. फरवरी सन् १९०३ ई० में वह (मुहम्मद अली) और अमजदी बानो मेरे (शौकत साहब और मेरी मरहूमा बेगम साहिबा के हमराह आ गयी और बरेली के जिले में हम सबने डेरों में दौरा करना शुरू किया।
   -उनवान - मौ. मु. ली की इब्तेदायी ज़िन्दगी - मौ. शौकत अली
   -मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ३७,
3. और बिल आख़िर मुहम्मद अली उस वक़्त तक मेरे मेहमान रहे जब तक कि उनको बड़ौदे में जगह न मिल गयी। - उनवान - मौ. मु. अली इब्तेदायी ज़िन्दगी,
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ३७
4. मुहम्मद अली की बेटी जोहरा ग़ालेबन फरवरी १९०३ ई. को पैदा हुई थी जो निहायत ख़ूबसूरत थी - उनवान - मौ. मु. अली की इब्तेदायी ज़िन्दगी - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरततिबा - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ३९.
5. लड़का कोई न था, लड़कियां चार एक से बढ़कर एक लाड़ली - मौलाना मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़ - हिस्सादोयम - मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २७३

दफना गयीं)[१] हमीदा बानों (इनका भी विवाह के बाद निधन हुआ और देहली में दफ़नाई गयी)[२] गुलनार बानो (जिनका विवाह शुऐब कुरैशी से हुआ था और जो मौलाना की मृत्यु के समय लन्दन में थे।[३]

आक्सफोर्ड के अध्ययन काल से ही कुंवर फतह सिंह (बड़ौदा के राजकुमार) और मुहम्मद अली के निकट और मधुर संबंध थे और कुंवर फतह सिंह की मुहम्मद अली को बड़ौदा बुलाने की हार्दिक इच्छा थी।[४] और जब उन्हें मुहम्मद अली का रामपुर की नौकरी से त्याग पत्र देने का समाचार विदित हुआ तब उन्होंने हठपूर्वक मुहम्मद अली को बड़ौदा बुलाकर "अफ्यून" विभाग में एक उच्च पद पर नियुक्त किया, जिसमें

---

1. आमिना बेगम (मुतवफ्फी ११ मार्च १९२४ ई. मदफन अलीगढ़) जोजा महमूदुल्ला साहब मरहूम, मौलाना की मंझली साहिबजादी थी, जो हिस्टोरिया के बाद दिक से मूजी मरज़ में मुबतिला हुयी। जब उनकी हालत ज्यादा बिगड़ी उस वक्त मौलाना जेल में (बीजापुर) थे। – मौ. मु. अली जौहर की एक नज़्म - उन्हीं की कलम से - मौ. मु. अली, स्वीनियर १९८१, पृ. ३१,
2. मौलाना की तीसरी साहिबजादी हमीदा बानो के अक़द का वक़्त भी टलता टला जा रहा था। दामादी के लिए रामपुर ही के एक अजीज़ माजिद अली खां तय हो गये थे। – मौलाना मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़ - मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी - हिस्सा दोयम, पृ. २२,
3. मौलाना की छोटी साहिबजादी गुनजार बी अपने शौहर शुऐब कुरैशी (वजीरे रियासत भोपाल) के साथ खुद भी इस वक्त इंग्लिस्तान में थी। मौ. मु. अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - हिस्सा दोयम, अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १६३.
4. कुँअर फतह वलिअहदे हुकूमते बड़ौदा और मुहम्मद अली से दौराने क़यामे इंग्लिस्तान में बहुत गहरे और मुखलिसाना ताल्लुकात क़ायम हो गये थे। कुंवर साहब मौसुफ़ की एक अरसे से यह तमन्ना थी कि वह मुहम्मद अली को अपनी रियासत बड़ौदे में बुलवा लें।– सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस अहमद जाफरी, पृ. १८९, १९०,

   – कुँवर फ़तह सिंह अंजहानी वालिये रियासत बड़ौदा आपकी इल्मी क़ाबिलियत और फ़ज़ीलत के उस वक़्त से मोतरिफ़ थे जब आप आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में तालीम पा रहे थे - - महाराजा साहब बराबर उनकी क़ाबिलियत के चर्चे सुनकर मुसिर थे कि रियासत में कोई आला ओहदा पेश किया जाये।
   - हयाते जौहः इशरत रामपुरीः पृ. ३७,

उन्होंने विशेष योग्यता का प्रदर्शन कर महाराजा (कुंवर फतह सिंह के पिता) के हृदय को जीत लिया।[१] अतः महाराजा ने प्रसन्न होकर मुहम्मद अली को जिला नौसारी का कमिश्नर नियुक्त किया।[२] इस पद पर कार्यरत रह कर मुहम्मद अली ने बहुत से सुधार किये और रिश्वत दिये जाने पर न केवल उसे ठुकराया बल्कि रिश्वत लेने पर पाबन्दी लगा दी।[३] तत्पश्चात् आप राजकुमार फ़तह सिंह के निजी सचिव नियुक्त हुए।[४] परन्तु देश सेवा और जन जाग्रति के प्रसार के विचारों ने मुहम्मद अली को यह पद छोड़ने पर विवश कर दिया उन्होंने नौकरी न करने और समाचार पत्र निकाल कर देश सेवा करने का दृढ़ निश्चय कर

1. चुंनाचे महाराजा साहब बड़ौदा ने उन्हें निहायत शफ़्फ़त से बुलाया और बड़ी मुहब्बत से रक्खा और महकमये अफ़्युन में एक आला मन्सब पर तर्क़ररूर कर दिया। कारगुजारी और हुश्ते इन्तेज़ाम का कारनामा ऐसा था जिसने महाराजा की नज़र में मुहम्मद अली को और ज्यादा महबूब बना दिया। – सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस हमद जाफ़री, पृ. १९०,
– बड़ौदा के महकमाये अफ्यून के एक आला अफसर मुकर्रर हुए। यहां रहकर अपनी क़ाबिलियत दिखाई - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुरततिबा - सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. ४,
2. इन तमाम ख़ूबियों से महाराजा ने इज़हारे ख़ुशनुदी व तमानियत करते हुए मौलाना को ज़िला नौसारी का कमिश्नर बनाया।
– हयाते जौहर - मुरततिबा - इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ३७।
3. आपको (मुहम्मद अली) एक बहुत बड़ी रकम बतौर हादिया मिल रही था। आपको बताया गया कि यह रियासत का एक दस्तूरे क़दीम है और सब अफ़सर इस किस्म के हदाया क़बूल कर लिया करते हैं। लेकिन आपने बहुत शख़्ती से इन्कार कर दिया। बल्कि दूसरे अफ़्सरों को भी इस लकुमयेतर को उगलने पर मजबूर किया।
– सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस अहमद जाफरी, पृ. १९१,
– बड़ौदा स्टेट में जब आप सुपरिन्टेन्डेन्ट थे, आपको (मुहम्मद अली) एक मुआमिले में कसीर रकम बतौर नजराना रिश्वत पेश की गई मगर आपने उसको नजरे हिकारत से ठुकरा दिया।
- हयो जौहर - मुरततिबा - नश्तरबलरामी, पृ. ८६
4. मौलाना को वली अहमद का पर्सनल असिस्टेन्ट मुकर्रर किया।
– "हयाते जौहर" सूरूतिबा इश्रत रहमानी रामपूरीए पृ०- ३७,
— इसके बाद बड़ौदा के वलिये अहद कुंवर सिंह के पर्सनल असिस्टेन्ट मुकर्रर हुए। – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुरततिबा - सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. ४,

लिया। इसीलिए आप सन् १९१० ई. के अन्त में बड़ौदा से कलकत्ता गये और अपना समाचार पत्र निकालने के प्रबन्ध में लग गये।[१] यद्यपि इसी अवधि में आपको "जावरा" का मन्त्री बनने का निमन्त्रण तथा भोपाल के सचिव पद पर कार्य करने का निमन्त्रण भी मिला परन्तु मुहम्मद अली ने इन दोनों निमन्त्रणों का ठुकराकर समाचार पत्र निकालना ही श्रेयस्कर समझा।[२] समाचार पत्र निकालने में मुहम्मद अली का मुख्य उद्देश्य जन जागृति के द्वारा देश में अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण उत्पन्न करना था, जिसकी प्रेरणा आपको लन्दन प्रवास की अवधि में मिल चुकी थी। वहाँ के समाचार पत्रों और स्वतन्त्र वातावरण ने आपको अत्यधिक प्रभावित किया था, और आपके हृदय में अपने देश को स्वतन्त्र कराने की इच्छा पहले से बलवती हो उठी थी और इसलिए वह अपनी लेखनी के द्वारा अपने देश की सेवा पहले ही कर रहे थे। आपके लेख अधिकतर "टाइम्स

1. सन् १९१० ई. के इख़्तेताम तक पूरे तौर से यह तय कर लिया कि वह अब मुलाज़िमत नहीं करेंगे बल्कि अख़्बार निकालेंगे और इस ज़रिये से कौम व मुल्क की ख़िदमत करेंगे – सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस अहमद जाफरी, पृ. १९४,

   – I left Baroda also and set up as a Journalist at Calcutta with a weekly Newspaper of my own.
   . My life a Fragement : by. Mohd. Ali,
   Edited : by. Afzal Iqbal, page no. 43,44

2. बड़ौदे से अलहेदगी के बाद नवाब साहब "जावरा" ने जावरे की विज़ारत और बेगम साहिबा भोपाल ने भी मुहम्मद अली को अपनी रियासत में चीफ सेक्रेट्री का ओहदा देना चाहा। मगर मुहम्मद अली तय कर चुके थे कि वह अब मुलाज़िमत नहीं करेंगे इसलिए उन्होंने इन दोनों पेशकश ओहदों को क़बूल करने से इन्कार कर दिया और "कामरेड" के इजरा का इन्तेजान करने लगे।– सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - इशरत रहमानी, रामपुरी, पृ. १९४

   – नवाब साहब जावरा ने इनको अपने यहां विज़ारत पेश की और बेगम साहिबा भोपाल ने अपनी रियासत में चीफ सेक्रेट्री का ओहदा देना चाहा लेकिन उन्होंने इन ओहदों से मुंह मोड़ा और तय किया कि वह एक अख़बार निकाल कर मुसलमानों और हिन्दोस्तानियों की ख़िदमत करेंगे।– मौलाना मुहम्मद अली की याद में: मुरततिबा - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ. ४

आफ इन्डिया", इन्डियन स्पैक्टेटर और हिन्दुस्तान रिव्यू में प्रकाशित होते रहे थे।[१]

कामरेड का प्रथम पत्र दिनांक १४ जनवरी सन् १९११ ई. को कलकत्ते से प्रकाशित हुआ जो अंग्रेजी का एक साप्ताहिक अख़बार था।[२] और १४ दिसम्बर सन् १९१२ ई, तक कलकत्ते से प्रकाशित होता रहा।[३] सन् १९१२ ई. में जब भारत की राजधानी कलकत्ता से देहली स्थानान्तरित हुई तो कामरेड का प्रकाशन देहली से होने लगा और देहली से प्रथम पत्र १२ अक्टूबर सन् १९१२ ई. को प्रकाशित हुआ।[४] सन् १९१४ ई. में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान लन्दन टाइम्स ने तुर्कों को युद्ध से अलग

---

1. आपने (मुहम्मद अली) अपनी अदब वाली और सियासत वाली क़ाबिलियत के तक़ाज़े से कुछ अंग्रेजी अख़बारों में निहायत हैजान पैदा करने वाले मज़मून लिखे।

   - टाइम्स आफ इन्डिया, इन्डियन स्पैक्टेटर, और हिन्दुस्तान रिव्यू वग़ैरह के फाइल इसके गवाह है।

   – हयाते जौहर, मु. इशरत रामपुरी, पृ. ४०

   - His pen continued to decorate with his writings the pages of the most important papers of the time; The Times of India, The Indian Review, The Observer, and segeral others.

   Life of Maulana Mohd. Ali Johar, book one,

   by. Allah Bakhsh Yusufi, page no. 97,

2. - कामरेड का पहला परचा १४ जनवरी सन् १९११ ई. को कलकत्ते से शाये हुआ।

   – सीरते मुहम्मद अली - मुरततिबा - रईस अहमद जाफरी, पृ. २२६,

   – अंग्रेजों ने भारत में तुर्कों के विरुद्ध प्रचार शुरू कर दिया, जिससे भड़ककर मौलाना मुहम्मद अली ने अपना प्रसिद्ध लेख - 'तुर्कों के सामने विकल्प' लिखा। शीर्षक - स्वाधीनता आन्दोलन में मुसलमानों का योग, - सै. महमूद, पृ. २२४, २२५,

3. The Last issue of the "Comrade" published from Calcutta on September 14, 1912, Life of Maulana Mohd, Ali Book one, by Allah Bakhsh Yusufi, page, 133,

4. १४ सितम्बर १९१२ ई. के शुमारे के बाद कामरेड का दफ़्तर देहली मुन्तक़िल हो गया और १२ अक्टूबर सन् १९१२ ई. को देहली से पहला शुमारा शाये हुआ।

   – उनवान कामरेड - जामेजा मौलाना मुहम्मद अली नम्बर जिल्द ७६, मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, पृ. २२,

रहने का परामर्श दिया। मुहम्मद अली ने इसके विरुद्ध ४० घन्टे के निरन्तर परिश्रम के बाद कामरेड में २६ सितम्बर १९१४ को 'च्वाइस आफ दी तुर्क्स' शीर्षक का एक निबन्ध प्रकाशित किया।[1] जिसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजी सरकार ने आपसे रुष्ट होकर कामरेड के प्रकाशन पर रोक लगा दी।[2] और दिनांक १५ मई, सन् १९१५ ई. को महरौली में आप गिरफ़्तार कर लिये गये।[3] कामरेड का पुनः ३१ अक्टूबर सन् १९२४ ई. में प्रकाशन किया गया जो दिनांक २२ जनवरी सन् १९२६ ई. तक निकलता रहा तत्पश्चात सदैव के लिए बन्द हो गया।[4] कामरेड की प्रशंसा केवल भारतीय ही नहीं अपितु अंग्रेज भी किया करते थे। वायुसराय लार्ड हार्डिंग तथा लेडी हार्डिंग कामरेड के नियमित पाठक थे।[5] बड़े बड़े अंग्रेजी जानकार भी आपकी अंग्रेजी योग्यता का लोहा

---

1. That article had been written under the stress of great crisis, while I was still bed-ridden owing to diabetic trouble which had necessiated some six weeks previously a Surgeon's attention to an abcess under a toe Nail. I had sat up for forty hours to write twenty fateful columns, fare going sleep and rest and almost all food, except some very strong Coffee, which I seldom used to take and I had corrected the proofs in a moving train, while on my way to Rampur to bury a dearly beloved cousin. The husband of my only sister, who had died suddenly.
   . My life a fragement : Mohd. Ali. by. Afzal Iqbal, p. 63,
2. २६ सितम्बर सन् १९१४ के कामरेड में मौलाना का मशहूर इदारिया "च्वाइस आफ दि तुर्क्स" शाये हुआ और इसकी वजह से कामरेड की जमानत ज़ब्त हो गयी, जिसके नतीजे में अख़बार बन्द हो गया।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं० जिल्द बावत माहे अप्रैल १९७९, मुदीर - जियाउल हसन फारुखी - उनवान कामरेड, पृ. २२,
3. १५ मई, सन् १९१५ को मौलाना क़स्बा महरौली (मुज़ाफ़ात देहली) में नज़रबन्द कर दिये गये– हयाते जौहर - मु. इशरत रामपुरी, पृ. ५६,
4. तकरीबन १० साल के बाद ३१ अक्टूबर, सन् १९२४ ई. को देहली से दोबारा जारी किया गया। मगर सिर्फ़ एक साल ३ माह के बाद २२ जनवरी, १९२६ ई. को नाक़ाबिले बर्दाश्त ख़सारे की वजह से हमेशा के लिए बन्द हो गया।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुरतिबा मु. - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उनवान - हफ्तेवार कामरेड - गुलाम रब्बानी, पृ. १२७,
5. The 'Comrade' had already became the most significant and influential mouth- piece of people of India, Lord & Lady Harding were its regular readers.
   . Maulana Mohd. Ali. By Fareed Mirza, An Article in Souvenir, a special edition on his birth Century celeberation on Dec. 1978, Hyderabad-4.

मानते थे।[१] अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक एवं ज्ञाता वेल्स ने आपकी समता मैकाले से की है।[२] कामरेड से ही आपके राजनैतिक जीवन का आरम्भ हुआ।[३] कामरेड के अतिरिक्त मुहम्मद अली ने देहली से दिनांक २३ फरवरी, सन् १९१३ ई. में "हमदर्द" नामक एक उर्दू दैनिक समाचार पत्र भी प्रकाशित किया।[४] जो बहुत ही लोकप्रिय हुआ था।[५] किन्तु मुहम्मद अली के १५ मई, सन् १९१५ ई. को महरौली में गिरफ़्तार होने के पश्चात् 'हमदर्द' का प्रकाशन १० अगस्त, सन् १९१५ ई. बन्द हो गया।[६] और मुहम्मद अली के जेल से वापस आने पर ९ नवम्बर, सन् १९२४ से पुनः प्रकाशित किया जाने लगा।[७] किन्तु आर्थिक समस्याओं के कारण मुहम्मद अली को विवश एवं दुखी मन से "हमदर्द" १२ अप्रैल, सन् १९२९ से सदैव के लिए बन्द करना पड़ा।[८]

---

1. बड़े-बड़े अंग्रेज प्रोफ़ेसर आपकी (मुहम्मद अली) अंग्रेजी क़ाबिलियत के कायल थे । हयाते जौहर - मुरततिबा - नश्तर बलरामी, पृ० ७.
2. अंग्रजी ज़बान के मशहूर मुसन्निफ़ एच० जी० वेल्स ने कहा कि उनका (मुहम्मद अली) क़लम मैकाले का क़लम है। मौ० मु० अली की याद में) मु० सै० सवाहद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ० ५
3. कामरेड की सहाफ्ती ज़िन्दगी से मौलाना मुहम्मद अली की सियासी ज़िन्दगी भी शुरू हुई। – मौलाना मुहम्मद की याद में– मुरततिबा - सवाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. ५,
4. मौलाना (मु. अली) ने २३ फरवरी, सन् १९१३ ई. को अख़्बार हमदर्द जारी किया। – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मु. अब्दुल लतीफ आज़मी-उनवान - हफ़्तेवार कामरेड - सै. गुलाम रब्बानी, पृ. १२८,
5. मुहम्मद अली ने हमदर्द इस शान और इस आनबान के साथ चलाया कि उसकी नज़ीर मिलना मुश्किल है। हिन्दोस्तान का वह पहला उर्दू रोजनामा था। - सीरते मु. अली - मु. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २३७
6. १५ मई, को उन्हें (मुहम्मद अली) देहली के करीब महरौली में नज़रबन्द कर दिया गया। इस नज़रबन्दी के बाद चन्द माह तक हमदर्द जारी रहा मगर १० अगस्त, सन् १९१५ ई. को बन्द हो गया।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मु. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उनवान - रोजनामा हमदर्द - मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १३५,
7. 'Hamdard' ..... appear again after ten long years, simultaneously with the 'Comrade' on November 9, 1924, Life of Maulana Mohd. Ali Jauhar, Book one, by : Allah Bakhsh Yusufi, p. 136,
8. On the fateful day of April १२, १९२९, Mohamed Ali, with a broken heart, had to declare that the 'Hamdard' was closed, and closed for ever.
   Life of Maulana Mohd. Ali Jauhar Book one,
   by. Allah Bakhsh Yusufi, page 141, 142,

और इन्हीं समाचार पत्रों के माध्यम से मुहम्मद अली ने अपने क्रान्तिकारी विचार अभिव्यक्त किये।[१] देश को दासता से मुक्त कराने के लिए मुहम्मद अली अत्यन्त व्याकुल थे। वह एक शुद्ध मानवीय दृष्टिकोण के व्यक्ति थे जो हिन्दू या मुस्लिम राज्य नहीं बल्कि स्वराज्य चाहते थे।[२] आपको जीवन में किसी प्रकार की भी दासता असह्य थी और आप जीवन के प्रत्येक पक्ष में स्वतन्त्रता के पक्षधर थे।[३] वह भारत वर्ष मे राष्ट्रीय एकता लाने के लिए जो कि स्वतन्त्रता के लिए परम आवश्यक थी, जातियों की एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते थे और इसके लिए प्रार्थनाएं भी किया करते थे।[४] जातिवाद और साम्प्रदायिक भावना आप में न थी आप व्यक्ति के समान अधिकार के समर्थक थे।[५] उन्होंने

---

1. मेरा (मुहम्मद अली) मंशा यह था कि कामरेड एक ऐसा अख़बार हो जो उन जज़बात की तजुर्मानी करें जो के मुख़तलिफ़ फिरकों की बाहमी तज्ज़ीम की ज़रूरत के मुतअल्लिक़ मेरे दिल में मौजूद थे। मैं चाहता था कि इस अख़बार के ज़रिये से मुसलमानों को हुब्बेवतन से कमाहक्क़ोहू हिस्सा लेने के लिए तय्यार करूं। -.ख़तबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, बी.ए. इलाहाबाद व आक्सफोर्ड, पृ. २३,
2. मैं (मु. अली) आपको यकीन दिलाता हूं और आप अच्छी तरह सुन लें कि मैं अंग्रेज़ी हुकूमत को पसन्द नहीं करता, मैं हरगिज़ इस पर राजी नहीं कि अंग्रेज़ का गुलाम बनूं। – मैं हिन्दू राज्य चाहता हूं न मुस्लिम राज्य बल्कि मैं"सौराज्य" चाहता हूं। — मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुरततिबा - सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २०५ - २०६,
3. मेरी जिद व जहद का बड़ा हिस्सा इन्शा अल्लाह इस बात पर सर्फ़ होगा कि लोगों को नफ़्स परवरी व नफ़्सपरस्ती से खाहु या बुत किसी शकल, किसी लिबास और किसी परदे में क्यों न हो, बवाया जाये और उन्हें गुलामी की जंजीरों से ख़ाह वह अपने नफ़्स की गुलामी हो या बादशाहों की गुलामी या लीडरों की या पीर मौलवी की गुलामी हो निजात दिलाई जाये।
– मजामीने मु. अली, हिस्सा दोयम, मु. मु. शुरूर, पृ. २३,
4. दिलों में गुलामी से नफ़रत और सही जज़बये आज़ादी पैदा करना हिन्दोस्तान की आज़ादी बग़ैर तमाम मिल्लतों के इत्तेफ़ाक व इत्तेहाद के बज़ाहिर व मुमकिन होती है इसलिए मैं हर वक़्त इसका ख़्वाब देखा करता हूं और इसके लिए दस्तबदुआ हूं - मज़ामीने मु. अली, हिस्सा दोयम, मु- मु. सुरूर, पृ. २४,
5. मुहम्मद अली क़ौम परस्त था, न फ़िरकापरस्त, वह सिर्फ़ हक़ परस्त था। वह चाहता था, हिन्दू, मुसलमानों के हक़ पर डाका न डाले और मुसलमान, हिन्दुओं का हक नग़स्ब कर सकें।– निगारेशात मु. अली, मु. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७६,

लोगों को देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने का संदेश दिया।[१] वह सत्य और अपने निर्णय पर अटल रहने वाले व्यक्ति थे।[२] और पूर्ण स्वतन्त्रता एवं स्वशासन चाहते थे।[३] उन्होंने देशवासियों को उनके सबसे बड़े कर्तव्य और अधिकार स्वतन्त्रता के लिए जागरित किया। वह भारत को मातृभूमि, आत्मभिमान से पूर्ण पैत्रिक सम्पत्ति मानते थे, और आपके मतानुसार अंग्रेज भारत के जबरदस्ती संरक्षक बने हुए थे।[४] अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीयों में घृणा उत्पन्न हो रही थी। भारत में गांधी जी के साथ होते हुए असहयोग आन्दोलन को और भी तीव्र गतिमान बनाने के लिए चर्खा कातने की योजना का घर-घर प्रचार किया और मुहम्मद अली स्वयं भी अपने साथ चर्खा रखते एवं सूत कातते थे।[५] आपको खद्दर से अत्यधिक प्रेम था और इसीलिए आप आजीवन खद्दर ही पहनते रहे।[६]

---

1. मुहम्मद अली ने अपने दोस्तों और तिब्बी मशीरकारों को तमवीह का सिर्फ़ यह जवाब दिया कि एक सिपाही काफ़र्ज है कि जब उसका मज़हब व मुल्क ख़तरे में हो तो अपनी जान जोखोंमें डालकर अपने फ़र्ज़ मनसदी को पूरा करें- निगारेशात मु. अली - मु. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७७,
2. सिदाकत व हक़गोई की राह से कोई ज़बरदस्त से ज़बरदस्त ताक़त उसका मुंह नहीं मोड़ सकती थी। – निगारेशात मु. अली, मु. - रईस अहमद जाफ़री पृ० २७८
3. मौलाना मु. अली मुकम्मल आज़ादी और ग़ैरे मशरूत खुद मुख़्तारी के क़ाइल और हामी थे।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मु.- अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ५६
4. India is our Mother Land, our proud heritage, and must in the end be handed over to us by our guardians. I regard the connection of England with India in the nature of Guardians-ship over minor children. If I may apply the Anology I would say that the Hindoo and the Muslim are two brothers sons' of mother Hind and in a state of minority, and that providence has chosen the British to be the Guardian's of the Minors.
   .. 'The Comrade'-Edited by. Mohd. Ali, My political faith, 10th January, 1914 Page 18,
5. मुहम्मद अली चरखा बराबर साथ रखते और एक निकदार मुअय्यन में सूत कातते रहते।– मु. अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, मु. - अब्दुल माजिद दरियाबादी, हि. अ. पृ. १५८,
6. मौलाना तरके मवालात की तहरीक शुरू हुयी तो इसके बाद ज़िन्दगी भर खद्दर पोश रहे।
   मौ. मु. अली, एक मुतालेआ, मु. - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ८३,

आपके मतानुसार चर्खा अंग्रेजी शासन के लिए तोप से कम नहीं था।[१] जो व्यक्ति युद्ध अवधि में अंग्रेजों के कार्यों में सहायक थे, उनसे मुहम्मद अली को घृणा थी।[२] आप आदि से अन्त तक एवं शरीर से आत्मा तक स्वयं को भारतीय मानते थे।[३] आपने ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों में बसे भारतीयों विशेष रूप से कनाडा और दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के प्रति अपमानजनक व्यवहार का कड़ा विरोध किया।[४] आप प्रत्येक मूल्य और स्थिति में विप्लवों और दासता का अन्त चाहते थे चाहे इसके लिए बड़े से बड़े भारतीय नेता को आत्म बलिदान करना पड़े।[५] आप

---

1. मौलाना मुहम्मद अली बार-बार कहते थे कि चर्ख़ा वह तोप है जिसका बराहेरास्त बतानिया के क़ल्ब पर गिरता है। - तहरीके ख़िलाफ़तः मूस. काज़ी मुहम्मद अदील अव्वासी तरक्की उर्दू बोर्ड नई दिल्ली, १९७८ई, पृ. २७५

2. Mohamed Ali had a positive distance for all those who helped the Government in the war work.
. Maulana Mohd. Ali. By Said Mohamed Khan B.A. (Alig.) p. 14,

3. जहां हिन्दोस्तान का मसला आता है, जब उसकी आज़ादी का सवाल आता है, जब उसकी फ़लाह व बहबूद की बहस आयेगी तो मैं पहले हिन्दोस्तानी हूं बाद में हिन्दोस्तानी हूं, आख़िर में हिन्दोस्तानी हूं और कुछ भी नहीं, सिर्फ़ हिन्दोस्तानी हूं। - मौ. मु. अली की याद में- मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २३५,

4. That this meeting strongly protests against the degarding treatment meted out to our fellow country man in the colonies in the British Empire. Particularly in Canada and South Afric and recards its profound conviction that so long as the ordinary rights of citizenship in the empire are devied to his majestyes Indian subjects, it is difficult for them to loyally accept any share in Imperial obligation.
.The Comrade. By. Mohd. Ali, Vol 6, 22nd Nov. page 364-65,

5. मैं (मुहम्मद अली) कहता हूं कि इस आज़ादी के लिए मिस्टर तिलक को फिर जेल जाना चाहिए, मुझे दोबारा उम्र भर के लिए नज़रबन्द होना चाहिए, मिसज बेसेन्ट को फांसी पर चढ़ जाना चाहिए मगर इस किस्म के मज़ालिम का हमेशा के लिए ख़ातिमा होना चाहिए जैसे कि पंजाब में हुए।

- मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आजमी, उनवान - मुहम्मद अली की शख़्सीयत के अनासिरे अरवा, डा. अहमद सज्जाद, पृ. ८५

किसी एक व्यक्ति, समूह अथवा वर्ग की स्वतन्त्रता के पक्षधर नहीं थे।[१] बल्कि पूरे देश की स्वतन्त्रता ही उन्हें वरेण्य थी।[२] और भारतीय स्वतन्त्रता के लिए निरन्तर संघर्ष के पक्ष में थे।

समय और संघर्ष के विषय परिवर्तनों में भी आप अपने स्थान पर स्थित रहे।[३] शरीर से रुग्ण होते हुए भी आपके अन्दर प्राण शक्ति की ज्वाला प्रज्ज्वलित थी।[४] आपने गांधीजी के साथ भारत का भाग्य बदलने का दृढ़ संकल्प किया था और आपके प्रयासों ने स्वतन्त्रता की चिंगारी को एक ज्वाला का रूप दिया।[५] अंग्रेजी शासन को मुहम्मद अली के क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रीय विचार विषैले कांटे के समान चुभते थे।[६]

1-2मैं (मु. अली) जरूर जेल भेज दिया जाऊं — लेकिन हिन्दोस्तान को आज़ाद होने दीजिए ताकि कोई शख़्स आइन्दा किसी हिन्दोस्तानी मर्द और औरत के बारे में यह न कह सके कि तू पैदाइशी गुलाम है।

– औराके गुमगश्ताः मु. - रईस अहमद जाफ़री, पृ. ५०,

3. बड़े बड़े हिचकोले आये, हालात ने बड़े बड़े पलटे खाये, लेकिन उसके (मु. अली) क़दम न उखड़े।

–'निगारेशात मुहम्मद अली', मु. रईस अहमद जाफ़री, पृ. १२,

4. मुहम्मद अली तने तन्हा था, फर्दवाहिद था, बीमार व नजार था, तवाहाल और बर्बाद था लेकिन — उसका क़लम तेग़े असील उनकी निगाह बके जां सौज़ थी।

– निगारेशात मुहम्मद अली - मुर. - रईस अहमद जाफ़री, पृ. १५,१६,

5. अली ब्रादरान और महात्मा गांधी तहरीके आज़ादी के ऐसे सिपहसालार थे जिन्होने मिलकर हिन्दोस्तान की तक़दीर बदलने का मुसम्मम इरादा कर लिया था। उन्होने क़ौम के हर फ़र्दे बसर के दिल में हुर्रियत व क़ौमियत कि वह जिला दी थी जो रफ़्ता रफ़्ता शोलये जव्वाला बन गयी।

– उनवान शमशीर बरहना - मौ. मु. अली जौहर, सै० नज़रबर्नी , स्वीनियर १९८१, पृ. ५४,

6. लेकिन हुकूमत को मौलाना मुहम्मद अली का जज़बये हुर्रियत ख़ारेमुग़ीला की तरह चुभता था। — उनवान : शमशीर बरहना, मौ० मु० अली जौहर, सै० नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ० ५५.

— दोस्तो। काम करने पक तहय्या कर लो और अगर मुल्क की आज़ादी की राह में ज़रुरत पैश आ जाये तो ज़ान तक से दरेग़ न करो।

- ख़तबये सिदारते, मो. मु. अली, मुनअक़िदये कोकनाडा, २६ दिसम्बर १९२३ ई. पृ. १४७।

यह एक निर्विवाद मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि माता पिता के विचारों एवं घर के पर्यावरण का प्रभाव सन्तान पर पड़ता है और उसके अनुरूप ही उसका मानसिक एवं चारित्रिक विकास होता है। मुहम्मद अली के पिता स्व. अब्दुल अली नियम और धर्म के अनुसार चलने वाले सच्चे मुसलमान थे। नियमित नमाज उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था।[१] इसके साथ ही अपने बच्चों की धार्मिक शिक्षा पर बी अम्मा ने भी विशेष ध्यान दिया था और इस प्रकार माता-पिता के स्नेह के साथ धर्म का दीप भी बालक मुहम्मद अली के मानस में प्रकाशित हुआ।[२]

पिता के समान मुहम्मद अली स्वयं भी नमाज के नियम का कठोरता से पालन करते थे और उसके लिए अपने महत्वपूर्ण कार्य को भी छोड़ देते थे।[३] दिल्ली में जुमा की नमाज आप "जामा मस्जिद" में पढ़ते थे और कुछ रु. के पैसे विकलांगों में बांटकर उनके प्रति अपनी करुणा का

---

1. मौलाना अब्दुल अली साहब मरहूम एक सच्चे और पक्के मुसलमान थे। कैसी ही तकलीफ़ हो लेकिन आपकी नमाज़ कभी कज़ा न होती थी।- - - आप बराबर रोजा रखते थे। तिलावते कलामे इलाही का आपको बहुत इश्क़ था। आपका मामूल था कि सफ़र व हज़र में भी आप क़ुरान पाक अपने हमराह रखते थे और सुबह भी नमाज़ के बाद तिलावत फ़रमाया करते थे। कितना ही ज़रूरी काम हो मामुल के मुताबिक़ जब तक न पढ़ लेते हरगिज़ ख़त्म न करते।

   –"हयाते जौहर" - मुर. नश्तर बलरामी, पृ. ४-५,

2. सबसे ज़्यादा जरूरी जिस बात को बी अम्मा ने अपने तमाम बच्चों के लिए ध्यान में रखा वह मज़हबी तालीम था। यानी उन्होंने तमाम ज़रूरी लिखायी पढ़ाई के साथ बचपन ही में उनके दिलों को इस्लामी बढ़ाई और मुहब्बत से भरा और रोशन किया। मौलाना मरहूम के दिल पर उसी तवींयत का असर था कि वह एक मुसलमान दीन के रास्ते में लड़ने वाले की सुरत से अमल के मैदान में अपनी जगह पर डटे हुए पाये गये। इबतेदा में मौलाना को कुरआन शरीफ की पूरी-पूरी तालीम दिलाई गयी।

   – "हयाते जौहर" - मुर. इशरत रामपुरी, पृ. ३५,

3. मुहम्मद अली नमाज़ के बेहद पावन्द थे, कहीं किसी हाल में नमाज़ अदा करने को वह फर्ज़ें अव्वलीन समझते थे। -मु. अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, हि. दोयम, मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३६,

परिचय देते थे।[१] सन् १९१३ ई. में कानपुर में एक सड़क की सीध में आने वाले एक मस्जिद के गुसलखाने को जब ब्रिटिश सरकार ने गिरवा दिया तब पूरे देश में रोश व्याप्त हो गया और मुहम्मद अली ने इसके विरुद्ध "हमदर्द" एवं "कामरेड" में मस्जिद के पक्ष में अपने विचार व्यक्त कर ब्रिटिश सरकार की तीव्र आलोचना की एवं इंग्लैण्ड पहुंचकर "लार्ड हार्डिंग" से भेंट की और मुसलमानों के पक्ष में निर्णय करवाया।[२] मुहम्मद अली का विश्वास था कि यदि कोई व्यक्ति कुरान का गहन और खुले मष्तिष्क से अध्ययन करे तो वह भी इसकी सच्चाई में विश्वास करने लगेगा।[३] उनका कथन था कि यदि वह धार्मिक शिक्षा में विशिष्ट परिवारों

---

1. मरहूम (मु अली) का क़ायदा था कि देहली में नमाज़-ए-जुमा हमेशा जामे मस्जिद में अदा फ़रमाते और एक रु. के पैसे मोहताजों व अपाहिजों में तकसीम. फ़रमाते। – "हयाते जौहर", मुर. नश्तर बलरामी, पृ. ८७,
   — जामे मस्जिद की सीढ़ियों पर फ़क़ीरों और फ़क़ीरिनियों का गोल जमा रहता। उन्हें देने के लिए जेब में २-४ रु. की रेज़गारी जरूर रखते।
   - मु. अली - ज़ाती डायरी के वन्द वर्क़ः हिस्सा दोयम, मुर. - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ५,
2. सन् १९१३ ई. में ही मस्जिद कानपुर का हादसा हुआ। - - - मुहम्मद अली ने हमदर्द के ज़रिये से बहुत सख़्त एज़ीटेशन की। - - - मौलाना मुहम्मद अली सै. वजीर हसन को साथ लेकर इंग्लिस्तान गये।- - - मौलाना मुहम्मद अली ने सर जेमिसलावेश संयुक्त सूबों के पहले गवर्नर को अपने असर में लेकर लार्ड हार्डिंग वायसराय को हिदायत भिजवायी और आख़िरकार यह मामला मुसलमानों की मरज़ी के मुताबिक़ फैसला हुआ।
   – हयाते जौहर मुर. इशरत रामपुरी, पृ. ५३,५४,
   – मई १९१३ ई. में शहर कानपुर में एक सड़क निकालने के सिलसिले में म्युनिसपिलटी और कलक्टर ने एक मस्जिद के गुसलखाने को गिरा दिया।- - - बड़ा हंगामा बरपा हुआ और उसके लीडरों में मुहम्मद अली भी थे।"कामरेड" ने अपने अहतेजाजी और तनक़ीदी मज़ामीन में कलक्टर तो अलग रहे ख़ुद सूबे के हाकिमे आला सर जेमिश मिस्टर की ख़बर ले डाली।
   – तहरीके ख़िलाफ़तः मुन्सिफ़ काज़ी मुहम्मद अदील, तरक्की उर्दू बोर्ड, नई दिल्ली १९७८, पृ. ६९
3. Mohamed Ali Said that he was quite certain that if any one read the Quran with an open and receptive mind, he would be convinced of its truth.
   .Jawahar Lal Nehru. An Autobiography, page 119.

में से होते तो वह कुरान के अध्ययन में अपना आधा जीवन लगा देते।[१] मानव सेवा का पाठ उन्होंने कुरान से ही सीखा था। उनकी दृष्टि में कुरान के अनुसार ईश्वर ही शासन कर्ता है, अन्य कोई नहीं।[२]

सन् १९१५ ई. से सन् १९१९ ई. तक नजरबन्दी और जेल की अवधि में उन्हें कुरान शरीफ के विस्तृत अध्ययन का पहली बार अवसर मिला।[३] वह आजीवन "मुहम्मद" तथा "अली" की सेवा में (अर्थात इस्लाम की सेवा में) रत रहना चाहते थे जिनके कि नामों पर उनका नामकरण हुआ था।[४] वह धर्म और दर्शन में समन्वय लाना चाहते थे।[५] मुहम्मद अली ने इस्लाम का विशद अध्ययन किया था। २३ मार्च सन् १९२० ई. को लन्दन के "एक्सेस हाल" में दिये गये भाषण में आपने

---

1. Had I belonged to one of the families that specialize in religious learning, I would, no doubt have spent half a life-time in the study of Qur'an and its Tafseer or exegesis of Hadeeth or the Traditions of the Prophet, of figh or Muslim jurisprudence (including not only law, as under stood in European countries, but also ordinances regarding prayers, fasts, alms giving religious duty prescribed for a Muslim)
. My life a fragement : Mohd. Ali. p.5,

2. Islam is Theocracy, and in the language of the Qur'an 'There is no government but God's" and him alone are we commanded to serve." Select Writing and Speeches of Maulana Mohamed Ali Vol. II, by. Afzal Iqbal, pa. no. 215

3. नज़रबन्दी के ज़माने में मुहम्मद अली को १कुरआन मजीद के मुताले का जिसका उन्हें बचपन से शौक था, पूरा मौक़ा मिला। – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में, मुस. सै. आविद हुसेन, पृ. १२८,

4. I pray that as long as I live I may be enabled to live in the service of the cause of Mohamed Ali, after whom I was named over fifty years ago. I earnestly request the readers to pray for me that the rest of may days be dedicated to the service of Islam. and the death should come while I serve in his path.

Life of Maulana Mohd. Ali. Book one,
. By. Allah Makhsh Yusufi, Edited by Afzal Iqbal, p. No. 7,

5. 'Science' he said , shall be in our right hand and philosphy in our left, and an our head shall be the crown of there is no God but Allah and Mohamed is apostle.
My Life a fragement: Mohd. Ali, By. Afzal Iqbal. p. 27,28,

यह बताया कि इस्लाम केवल सिद्धान्तों की पुस्तक नहीं है, बल्कि जीवन की परिपूर्ण सारिणी है, जीवन की एक परिपूर्ण आचार संहिता है और विशद सामाजिक नीति है।[१] इसी भाषण के अन्त में उन्होंने घोषणा की कि वह "ब्रिटिश क्राउन" की स्वामिभक्त प्रजा होकर रहना चाहते थे लेकिन ऐसा वह इसी आधार पर कर सकते थे जबकि उन्हें परिपूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दी जाती।[२]

मुहम्मद अली का उक्त कथन उनकी धार्मिक कट्टरता की ओर संकेत करता है। धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए ब्रिटिश क्राउन की स्वामिभक्त प्रजा होना उनके लिए शोभनीय नहीं था। सन् १९२१ के करांची के प्रसिद्ध मुकदमे में जूरी के समक्ष मुहम्मद अली ने घोषणा की हम ऐसे राजा को अधिक मान्यता नहीं दे सकते जो कि ईश्वर के प्रति वफादार होने के हमारे अधिकार पर रोक लगाता है।[३] जूरी के समक्ष ही उन्होंने स्पष्ट किया कि एक मुस्लिम को मुक्ति पाने के लिए चार चीजें परम आवश्यक हैं, उसे अपने धर्म के अनुसार आचरण करना चाहिए, नमाज पढ़ना चाहिए, शिक्षा देनी चाहिए, रमजान में रोजे रखने चाहिए तथा मक्का जाना चाहिये और इन्हीं अच्छी बातों का उपदेश प्रत्येक को देना चाहिए केवल अपनी ही मुक्ति से काम नहीं चलेगा बल्कि अपने पड़ोसियों की

---

1. Islam is not a bundle of dogmas and doctrines that theologians plague humanity with. It is a complete scheme of life a perfect code of right conduct and a comprensive social polity as wide as the human race and in fact as wide as the entire creation. Select writing & speeches of Maulana Mohd. Ali. Edited by Afzal Iqbal Vol II, page no. 19,

2. I want to remain a loyal subject of the British Crown, but I can only do so on this basis, that I shall have, as heretofore, complete religious freedom, that I shall be allowed to call my soul my own.

   Select Writings and Speeches of Maulana Mohamed Ali Volume II,
   Edited by Afzal Iqbal,
   page no. 30

3. Mohamed Ali declared, "We do not recognise the King any longer as our King - We do not owe any loyalty to any man who denies our right to be loyal to God."

   . Select Writings of Speeches of Maulana Mohamed Ali, Edited by Afzal by Iqbal, Vol. II, page. 57,

रक्षा भी करनी होगी।[१] और जो व्यक्ति कुरान् के अनुसार आचरण नहीं करता वह कदापि मुसलमान नहीं हो सकता।[२]

अप्रैल सन् १९२६ ई. में मुहम्मद अली ने हज करने की योजना बनाई और इसकी सूचना आपने अपने उर्दू "हमदर्द" दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित की।[३] हज़ के अवसर पर आप स्वस्थ नहीं थे किन्तु फिर भी आपने हज़ की यात्रा की और यात्रा को अपना सौभाग्य समझा।[४] हज की यात्रा पर आपकी पत्नी भी आपके साथ थी।[५] मृत्यु के उपरान्त आप हज़ के पवित्र स्थान में स्थान पाने के लिए ईश्वर से सदैव प्रार्थना किया करते थे। और स्वयं को धार्मिक सेवा में लगाकर अपने नाम को सार्थक करना चाहते थे। मुहम्मद अली में धर्म के प्रति अटूट आस्था थी।[६] दिन प्रतिदिन उनका प्रेम धर्म के प्रति बढ़ता ही जा रहा था। आपका विश्वास था कि धर्म मानव में प्रेम पैदा करता है और मानव

---

1. The four conditions required for a muslim to win salvation are contained in this, the shortest chapter of the Qur'ran. A man's salvation depends upon these,: that he must act upon that faith. A man who believes in Islam, says his prayers, gives alms, fasts in the Ramzan, goes to macca and does not hurt anybody.... You are here to save your neighbours as well. S.W. & S. of M. Mohd. Ali, Vol. II Etd. A. Iqbal.
2. जो शख्स अपने को मुसलमान कहता है उसको कुरआन के हुक्म का पाबन्द होना चाहिए अगर वह क़ुरआन के किसी आयत की भी ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है तो वह मुसलमान नहीं है।
   – तहरीके ख़िलाफ़त- मुस. काज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ.
3. - अप्रैल सन् १९२६ ई. में मुहम्मद अली ने हज़ का इरादा किया और हमदर्द में इसका ऐलान किया।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - अब्दुल माजिद दरियाबादी, हि. अव्वल, पृ. ३५३,
4. पिछले साल मैं चार महीने बीमार रहा - - - इसी हालत में हज़ और ज़ियारत (रसूल की समाधि को देखना) की सआदत (खुशकिस्मती) भी मुझे नसीब हुयी।
   –"हयाते जौहर" - उनवान - जौहर के हालात खुद उनकी जुबानी, "हमदर्द" मुरततिबा - इशरत रामपुरी, पृ. २९
5. हज़ व ज़ियारत को चले तो तन्हा नहीं, बीबी को भी हमराह लिया। - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा - अव्वल, पृ. ३५३,
6. उनमें (मु. अली) इस्लाम की मुहब्बत कूट कूट कर भरी थी। - तहरीके ख़िलाफ़त, मुस. - क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी,पृ. ६९,

जाति को एकता के सूत्र में बांधता है।[१] आप ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखते थे और उसके प्रति कृतज्ञ भी थे।[२]

इस्लाम् को वह केवल एक धर्म ही नहीं बल्कि एक सामाजिक नीति मानते थे।[३] पाँच्ो समय की नमाज और तीस दिन के रोज़ों को वह देवी पूजा कहते थे।[४] अलगाव और पर्दे को वह इस्लाम के तलाक कानून को दुरुपयोग से बचाने के लिए आवश्यक समझते थे।[५]

मौलाना मुहम्मद अली का बाह्य आडम्बरों में विश्वास नहीं था आपके अनुसार कोई अपनी मूंछों को कटा लेने, लम्बी दाढ़ी रखने और जोर से प्रार्थनाएँ करने मात्र से एक मुसलमान नहीं हो सकता।[६] आपका विश्वास

---

1. मुहम्मद अली का कदम अब रोज़ ब रोज़ इस्लामियत की तरफ ज़्यादा ही जा रहा था।
   -"तहरीके खिलाफत" : मुस्. काजी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. ६९,
2. खुदा गवाह है कि जब से होश संभाला है उस पर और उसके रसूल पर ईमान है।- - - जिसके प्यारे नाम पर मेरे मां बाप ने मेरा नाम रखा था उसी के सदक़े मुझ पर भी करम हुआ है। और मुझमें भी उस बड़ी और पाक ज़ात यानी रसूल का चाहने वाला फरमा रहा है।
   – "हयाते जौहर" मुर. इशरत रामपुरी, पृ. २७,
3. Islam is not only a creed but also a social polity, and the bond of Islam, however, enfeebled by narrow Schism still binds three hundred million people of different races, colours and countries as no other bond in the word's long history has yet done.
   . Select writing & speeches of Maulana Mohamed Ali, Edited by : Afzal Iqbal, Vol I, page 57.
4. Some of its first demands are Divine Worship at least five times a day and thirty days fast every year.
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohamed Ali,
   Edited by: Afzal Iqbal Vol. I, page 59.
5. As regards the soclusion and the veil, far from being the direct consequence of polygamy and facility of divorce, they are practised in order to check polygamy and polyandry, both secret and open, and to lessen the temptation to abuse the Islamic law of divorce.
   Select Writings & Speeches of Maulana Mohamed Ali. Edited by Afzal Iqbal, Vol. I, page 60.
6. By the clipping one's Moustache and growing a long beard and muttering prayers one does not become a Muslim.
   Select writing & speeches of Maulana Mohd. Ali. by Afzal Iqbal, Vol. II. p. 73.

था कि एक मुसलमान का धर्म केवल कुछ निश्चित सिद्धान्तों में विश्वास करने और उनके अनुसार स्वयं जीवन यापन करने में ही निहित नहीं है अपितु वह धर्म को व्यावहारिक और व्यापक स्तर पर लाना चाहते थे।[१] मौलाना मुहम्मद अली ने धार्मिक भावना की पवित्रता के कारण सुअर की चर्बी लगे कारतूसों को दांत से तोड़ने का विरोध किया।[२] वह कुरान को केवल अपना धर्म ही नहीं बल्कि कानून मानते थे और ईश्वर के आदेश के अनुसार निरन्तर संघर्षरत रहने को तैयार रहते थे। आपने घोषणा की कि ईश्वर के लिए वह अपने भाई, अपनी प्रिय बूढ़ी मां, अपनी पत्नी और अपने बच्चों की हत्या करने में भी को कोई संकोच नहीं करेंगे।[३]

मौलाना मुहम्मद अली एक कट्टरपन्थी मुसलमान थे। यही उनके अन्तरंग एवं बहिरंग व्यक्तित्व का दोष था इसीलिए देशवासी उनसे रुष्ट थे।[४] पं. जवाहर लाल नेहरू से आपका बहुधा ईश्वर के संबंध में तर्क हुआ करता था और नेहरू जी उन्हें तर्कहीन धार्मिक समझते थे। लेकिन उनकी ईमानदारी, सच्चाई, शक्ति और प्रतिभा से प्रभावित थे।[५]

---

1. A Muslim's faith does not consist merely in believing in a set of doctrines and living up to that belief himself, he must also exert himself to the fullest extent of his power, of course without resort to any compulsion, to the end that others also conform to the prescribed beliefs and practices.
   . Select Writings and Speeches of Maulana Mohamed Ali, Edited by. Afzal Iqbal, Vol. II, page. 77-78.
2. But what is the tearing with one's teath of greased cartridges of eating a whole pig compared to the sin of killing a Muslim?
   Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Edited by Afzal Iqbal, Vol II, page no. 97-98.
3. I will not spare any one-I will slaughter my own brother, my dear aged mother, wife, children and all for the sake of God, so help me God.
   Select writing & Speeches of Maulana Mohamed Ali, Edited by Afzal Iqbal. Vol. II, page no. 103,
4. बिरादराने वतन आपसे इसलिए बदजन थे कि आपने बारहा फ़रमाया था कि मैं मुसलमान पहले हूं और कांग्रेसी या हिन्दी बाद में।
   -"हयाते जौहर" मुर. नश्तर बलरामी, पृ. ८९,
5. He was deeply and, as I considered, most irrationally religious, and I was not, but I was attracted by his earnestness his overflowing energy and keen intelligence.
   . Jawahar Lal Nehru.
   An-Autobiography, page 117.

निसन्देह मुहम्मद अली एक महान भारतीय थे किन्तु उनकी भारतीयता इस्लामियत पर आधारित थी।[१] वह किसी के साथ अन्याय होते हुए नहीं देख सकते थे और अपने धर्म को न्याय धर्म बताया करते थे।[२]

1. बेशक मुहम्मद अली बहुत बड़ा हिन्दोस्तानी था उसको अपने हिन्दोस्तानी होने का फख्र था। लेकिन उसकी हिन्दोस्तानियत मातहत थी उसकी इस्लामियत के वह खुदा और वतन दो का क़ायल न था, क़ायल सिर्फ ख़ुदा का था। और चूंकि ख़ुदा और वतन ही ने वतन वालों की ख़िदमत भी फ़र्ज़ कर रखी थी इसीलिए वह वतन का ख़ादिम भी था। – मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, हि. दोयम, पृ. १९२,
2. मेरा मज़हब अद्ल का मज़हब है मैं तो अपने मज़हब के लिहाज़ से किसी पर जुल्म व ज़्यादती देख ही नहीं सकता। मुसलमान के साथ-साथ मुसलमान के ख़लूश के मायने ही यह है कि हम एक दूसरे को नाइन्साफ़ी से रोकें, अद्ल व ख़ुशख़ुलकी की तकलीन तवलीग़ करते रहे।
मुहम्मद अलीः ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़ - हिस्सा दोयम,
मुरखित मुरततिबा - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ७८।

तृतीय अध्याय

मुहम्मद अली का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में आगमन

(अ) प्रथम विश्वयुद्ध के मध्य अंग्रेज जाति से घृणा

(आ) जलियांवाला काण्ड एवं रोलेट एक्ट का मुहम्मद अली पर प्रभाव और अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिक्रिया।

(इ) गांधी जी के सम्पर्क में आना और उनके असहयोग आन्दोलन को तीव्र करना।

(ई) मुहम्मद अली के यातनापूर्ण जीवन का प्रारम्भ

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अविस्मरणीय भूमिका रही है। कांग्रेस के संस्थापक एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी मिस्टर ए.ओ. ह्यूम माने जाते हैं जो कि भारत में उच्चतम पदों पर कार्य कर चुके थे। ए. ओ. ह्यूम ने भारतीयों की जाग्रत भावनाओं को देखते हुए विचार किया कि जाग्रत राष्ट्र की राष्ट्रीयता को भय से नहीं दबाया जा सकता। इसीलिए आपने राष्ट्रीयता के नाम पर देश के शिक्षितों को संगठित कर उन्हें अंग्रेजी राज्य में वैधानिक सुधारों की और उलझाने का विचार किया।[१] एवं एक योजना का निर्माण किया तथा अन्य अंग्रेज उच्चाधिकारियों से विचारविमर्श कर उसे कार्यान्वित करने के उद्देश्य से दिसम्बर १८८५ में पूना में कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन करने की घोषणा की। किन्तु प्लेग के फैलने के कारण स्थान परिवर्तित करना पड़ा। कांग्रेस

---

1. मि. ए.ओ. ह्यूम - - - पुराने आई. सी. एस. थे और भारतीय शासन विभाग के उच्च-अति-उच्च पदों पर काम करके पेन्शन पा रहे थे। मिस्टर ह्यूम ने सोचा कि जाग्रत राष्ट्र की राष्ट्रीयता को केवल भय से दबा देना सम्भव नहीं है। कुछ प्रलोभन चाहिए। उन्होंने सोचा कि राष्ट्रीयता के नाम पर ही देश के शिक्षित जनों का एक मजबूत संगठन बना दिया जाये और अंग्रेजी राष्ट्र में वैधानिक सुधारों की ओर उलझा दिया जाय, तो काम बन सकता है।

   – कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, लेखक किशोरीलाल बाजपेई, पृ. ६,

का प्रथम अधिवेशन बम्बई में किया गया।[१]

कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन वोमेश चन्द्र बनर्जी के सभापतित्व में २८ दिसम्बर सन् १८८५ ई. को बम्बई में हुआ। अपने सभापति के पद से उन्होंने बोलते हुए कांग्रेस के निम्नलिखित चार उद्देश्य बताए - एक साम्राज्य के विभिन्न भागों में देश हित के लिए लगन से कार्य करने वाले व्यक्तियों के बीच घनिष्ठता के तथा मित्रता के सम्बन्ध स्थापित करना। दो समस्त देशवासियों में वंश, धर्म और प्रान्त संबंधी दूषित संस्कारों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की भावनाओं का पोषण और वर्धन करना। तीन - महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्नों पर भारत के शिक्षित लोगों में भली प्रकार चर्चा होने के उपरान्त परामर्श का संग्रह करना। चार- उन तरीकों और दिशाओं का निर्णय करना जिनके द्वारा भारत के नागरिक देशहित के कार्य करें।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर कांग्रेस के एक अत्यन्त त्यागी और कर्मठ कार्यकर्ता रहे। तथा निःस्वार्थ सेवा करते हुए और कारावास की यातनाओं को सहन करते हुए सच्ची देशभक्ति का परिचय दिया। २८ दिसम्बर सन् १९१९ ई. में आप अपने बड़े भाई शौकत अली साहब के साथ लगभग ५ वर्ष के कारावास के उपरान्त बेतुल कारागार से मुक्त किये गये।[२]

---

1. मिस्टर ह्यूम ने सन् १८८५ को दिसम्बर में पूना में आल इंडिया नेशनल कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन करने की घोषणा की किन्तु दिसम्बर में पूना शहर प्लेग की बीमारी से जकड़ गया इसीलिए कांग्रेस का पहला अधिवेशन वहां न होकर बम्बई में हुआ।
   - कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, ले. किशोरीलाल बाजपेई, पृ. ७.
2. २८ दिसम्बर, सन् १९१९ ई. को रिहाई अमल में आई।
   जामेआ मौ. मु. अली नं. जिल्द ७६, शुमारा - ३, मुदीर-ज़िया उल फ़ारुखी पृ. २८.
   — दिसम्बर १९१९ ई. में मौलाना मुहम्मद अली व शौकत अली बेतुल जेल से रिहा हुए। - तहरीक़े ख़िलाफतः मुस० क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १०२,
   — दिसम्बर १९१९ में अली बन्धुओं को रिहा कर दिया गया। वे जेल से सीधे अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में पधारे जहाँ जनता ने उनका शानदार स्वागत किया। उन्होंने अधिवेशन में उत्साह की एक नई लहर दौड़ा दी।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार शीर्षक - स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमानों का योग - सै. महमूद, पृ. २२५।

बेतुल कारागार से मुक्त होने के पश्चात् मौलाना मुहम्मद अली अपने घर रामपुर न जाकर वहीं से अपने बड़े भाई शौकत अली साहब, के साथ २९ दिसम्बर सन् १९१९ ई. को अमृतसर में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सम्मिलित हुए। कांग्रेस के अधिवेशन के अतिरिक्त अमृतसर में 'मुस्लिमलीग' एवं ख़िलाफ़त कमेटी के अधिवेशनों का भी आयोजन था। अमृतसर पहुंचने पर 'अली बन्धुओं' का भव्य स्वागत किया गया एवं पं. मदन मोहन मालवीय जी ने आप दोनों भाइयों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रतिनिधि मनोनीत किया।[१]

दूसरे वर्ष जब नागपुर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन का आयोजन किया गया तब उस कांग्रेस के अधिवेशन में आप दोनों भाई कांग्रेस के नियमानुसार निर्वाचित सदस्य के रूप में सम्मिलित हुए।[२] आपके भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सम्मिलित होने से पूर्व कुछ ही राष्ट्रवादी

---

1. रिहाई के बाद फ़ौरन २९ दिसम्बर को सीधे अमृतसर पहुंचे जहां कांग्रेस के साथ-साथ मुस्लिम लीग और ख़िलाफ़त कमेटी के इजलास हो रहे थे। अमृतसर में हिन्दू मुसलमानों ने इनका पुरतपाक ख़ैरमक़दम किया। और पं. मदनमोहन मालवीय ने इन्हें कांग्रेस का डेलीगेट बनाया।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं., सन् १९७९, माह अप्रैल, मुदीर-जिय़ाउन हसन फ़ारुख़ी, पृ. ८६,
   - जब अली ब्रादरान जेल से रिहा हुए तो उस वक़्त अमृतसर में कांग्रेस कमेटी का इजलास हो रहा था दोनों भाई रामपुर जाने के बजाय सीधे अमृतसर पहुंचे और उन्होंने कांग्रेस के इजलास में शरकत फरमाई।
   - स्वीनियर १९८१, उनवान- शमशीर बरहना सै. नज़रबर्नी, पृ. ५८,
   यह सन् १९१९ ई. का वाक़ेआ है कि मैं कांग्रेस में पहली मर्तबा डेलीगेट की हैसियत से शरीक हुआ और उस वक्त भी मेरी (मु. अली) शरकत मामूली ज़ाब्ते के मुताबिक न थी।
   - ख़तवये सिदारते - मौलाना मुहम्मद अली, बी. ए. इलाहाबाद व आक्सफोर्ड, इजलास इन्डियन नेशनल कांग्रेस, मुनअक़िदये कोकनाडा, २६ दिसम्बर १९२३ ई० पृ. २,
   — पं. मदनमोहन मालवीय ने इन दोनों भाइयों को कांग्रेस का डेलीगेट बनाया। सीरते मुहम्मद अलीः रईस अहमद जाफ़री (मुर.) पृ. २७५.
   –They were released at the end of 1919 and both immediately Joined the National Congress.
   . Discovery of India. Pt. Jawahar Lal Nehru. Page no. 302.
2. दूसरे साल नागपुर में जो इजलास मुन अक़िद हुआ सिर्फ वही ऐसा था जिसमें दोनों भाई बाक़ायदा मुनतखब होकर डेलीगेट की हैसियत से शरीके कांग्रेस हुए। - खतुबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, बी. ए., पृ. २,

मुस्लिम भाई कांग्रेस में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत थे किन्तु आपके भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में आगमन के पश्चात् कांग्रेस में मुस्लिम भाइयों की संख्या निरन्तर वृद्धि करती रही। आपका कांग्रेस में सम्मिलित होने का उद्देश्य देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास करना एवं सेवा था।[१] भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में मौलाना मुहम्मद अली का आगमन सम्पूर्ण मुसलमानों का प्रतिनिधित्व था।[२]

मौलाना मुहम्मद अली ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में आगमन के पश्चात् खिलाफत कान्फ्रेन्स की ओर से ८ जुलाई सन् १९२१ ई. को करांची के ईदगाह में एक विशाल अधिवेशन का आयोजन किया गया तथा जिसकी अध्यक्षता मौलाना मुहम्मद अली ने की।[३] इस अधिवेशन

---

1. मौलाना चूंकि देश को आजाद कराकर देश सेवा करना चाहते थे। इसलिए वह कांग्रेस में शामिल हो गये।
   - रजत (त्रैमासिक) अप्रैल, १९७७ ई. पृ. ३३ - मेरी कब्र स्वतन्त्र देश में होना चाहिए (मौलाना मुहम्मद अली): जहीर सिद्दीकी.
2. अब तक मुसलमाने हिन्द बहैसियते क़ौम कांग्रेस में शामिल नहीं हुए थे महज़ चन्द गिने चुने नेश्नेलिस्ट मुसलमान ही इसके अराकीन थे। कांग्रेस की तारीख़ में यह पहला मौका था कि अली ब्रादरान शरीके इजलास होते गोया सारी क़ौम ही उसमें शरीक थी। इसके बाद मुसलमाना ने हिन्द ज़क़ दर-ज़क कांग्रेस में शामिल होने लगे। – स्वीनियर, १९८१ पृ. ५८, शमशीर बरहना – मौलाना मु. अली जौहर, सै. नज़रबर्नी।
   – दोनों भाइयों के कांग्रेस की तरफ से दावत दी गयी और दोनों भाई बराहेरास्त जलसागाह में पहुंचे - - - मौलाना मुहम्मद अली की शरकत गोया तमाम मुसलमाना ने हिन्द की शरकत थी क्योंकि वह अपने इल्म व फ़ज़ीलत, इस्लाम नवाज़ी, जुरअल, हक़ गोई व बेबाकी, अज़ीम ईसार व क़ुर्बानी की वजह से हिन्दोस्तान के मुसललिमा लीडर बन चुके थे।
   — तहरीके खिलाफत- पृ. १०२, मुस.- काज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी,
3. ८ जौलाई (१९२१) को करांची में हुए अखिल भारतीय ख़िलाफ़त सम्मेलन ने भारतीय सेवा के मुस्लिम सिपाहियों से अपील की कि वे सेना में काम करना छोड़ दें क्योंकि धार्मिक दृष्टि से यह गैरकानूनी है।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ - शीर्षक - १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. ३४
   – सन् १९२१ ई. में करांची में ख़िलाफत कान्फ्रेन्स का इजलास हुआ। मौलाना मुहम्मद अली उसके सद्र थे। उनवान - यादें मुहम्मद अली जौहर की - मुस. - रफ़त ज़मानी स्वीनियर-१९८१, बेगम राजमाता ऑफ रामपुर, पृ. ४७,
   — करांची के इस जलसे की सिदारत मौलाना मुहम्मद अली ने की। उनवान - शमशीर बरहमा - मौ. मु. अली जौहर - सै. नजरबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५८,

में मुस्लिम धार्मिक नेताओं के अतिरिक्त हिन्दू नेता भी सम्मिलित थे।[१] इस अधिवेशन में मौलाना मुहम्मद अली ने कुरान, हदीस, एवं उलामाओं के धार्मिक प्रवचनों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि अंग्रेजी सरकार की सेना में सेवा करना धर्म की दृष्टि से हराम है। क्योंकि इससे एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान पर गोली चलानी पड़ती है।[२] अतः १४ सितम्बर सन् १९२१ ई. को वाल्टेअर स्टेशन पर अंग्रेजी सरकार द्वारा आपको जब आप गांधी जी एवं साथियों सहित मद्रास के दौरे पर थे, गिरफ्तार करा लिया गया[३] और आप पर सेना में विद्रोह की भावना जागृत कराना एवं झूठी बातें फैलाने का आरोप लगाया गया।[४] वाल्टेअर में गिरफ्तार करने के पश्चात् मौलाना मुहम्मद अली बड़े भाई शौकत

---

1. कान्फ्रेन्स में हस्बे मामूल काफ़ी जोश व खरोश था अकाबिर उलामाये इस्लाम के अलावा हिन्दू लीडर और अवाम भी कान्फ्रेन्स में शरीक थे।
   - तहरीके ख़िलाफ़त - मुस. क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १८३,
   – The Ali Brother's and some other leaders among whom was Shri Shankaracharya, a Hindu divene were prosecuted for their participation in the Khilafat Committee meetings and for their speeches at Karachi.
   "At the feet of Mahatma Gandhi" : By Rajendra Prasad, page. No. 106.,
2. इस कांफ्रेन्स में यह तजवीज़ की गयी कि इस्लाम की रू से अंग्रेज फ़ौज की मुजाज़िमत हराम है क्योंकि इससे एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान पर गोली चलानी पड़ती है, जिसकी सज़ा अज़रूये कुरआन जहन्नुम है।- - उन्होंने (मु. अली) पूरे ज़ोरे ख़िलाफत को काम में लाते हुए और आयात व अहादीस का हवाला देते हुए इन्तेहायी गर्म और तवील तक़रीर की और सिर्फ़. फ़ौज की मुलाज़िमत ही को हराम क़रार नहीं दिया बल्कि तमाम सामेईन को ज़बरदस्त तरग़ीब दी कि वह फौजियों की मुलाज़िमत से मुस्ताफ़ी होने के सिलसिले में पूरी कोशिश करें।
   – "तहरीके खिलाफ़त" - मुस. क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १८३
   – करांची में हुए ख़िलाफ सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास किया गया जिसमें इस दिन से ब्रिटिश सेना में नौकरी करना या भर्ती होना धर्मविरुद्ध बतलाया गया था। – असहयोग आन्दोलन में गुजरात का योगदान -
   ले. - इन्दुलाल याज्ञिक, १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकियां पृ. ७७,
3. मुहम्मद अली को १४ सितम्बर को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया। - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां,
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. ३४
4. मौलाना मुहम्मद अली पर ईदगाहे किरांची में एक बाग़ियाना तक़रीर करने और गवर्नमेन्ट के ख़िलाफ नफ़रत फैलाने का भी इलजाम था। तहरीके ख़िलाफ़त - मुस. क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १८४, १८५

अली एवं जगत गुरु शंकराचार्य आदि सहित करांची लाये गये। करांची सेशन जज की अदालत में जब आपका व्यान शुरू हुआ तब आप जज से धार्मिक बहस लेकर उलझ गये।[१] और विवश होकर जज को चुप होना पड़ा। क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली ने जज से कहा कि हमने मुसलमान सिपाहियों को फौज की नौकरी छोड़ने की सलाह देकर एक धार्मिक और कानूनी फर्ज़ पूर्ण किया है। इसलिए न हम ईश्वर के गुनहगार है और न ही ब्रिटिश सरकार के।[२] इस मुकदमे में जगत गुरु स्वामी शंकराचार्य को एक वर्ष एवं अली बन्धुओं को २-२ वर्ष का कारावास दिया गया।

---

1. सेशन का मुकदमा शुरू हुआ तो बक़िया लोगों ने ख़ामोशी इख्तेहार की मगर मौलाना मुहम्मद अली जज से उलझ गये और ज़ोर देकर कहना शुरू किया कि अगर ख़ुदा का कानून बर्तानवी हुकूमत के क़ानून से मुतसादिम होगा तो मैं ख़ुदा का फ़रमाबरदार हूंगा। बर्तानवी क़ानून को नज़रअन्दाज़ करूंगा।
   – तहरीके ख़िलाफत - मुस. क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १८६,
   — करांची में हुए खिलाफत सम्मेलन में एक "फ़तवा" जारी किया गया जिसमें कहा गया था कि मुसलमानों के लिए ब्रिटिश सेना में भर्ती होना धर्म विरुद्ध है। इसके लिए अली बंधु, डॉ. किचलू मौलाना हुसैन अहमद मदनी, कुछ और मुसलमान नेताओं और श्री शंकराचार्य को गिरफ्तार किया गया। श्री शंकराचार्य के अलावा सभी को दो दो साल की कड़ी सजा दी गयी।
   — १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमानों का योग, पृ. २३५,
2. हमने (मु. अली) हालाते मौजूदा में मुसलमान सिपाहियों को फ़ौज की मुलाज़िमत तर्क़ करने की दावत देकर एक मज़हबी और कानूनी फर्ज़ पूरा किया है। इसलिए न हम ख़ुदा के गुनाहगार है और न हुकूमत के मुजरिम।
   - बयान - मौलाना मुहम्मद अली साहब जो उन्होंने करांची के मैजिस्ट्रेट की अदालत में दिया - मुर. - मुंशी मुश्ताक, १९२१ ई. पृ. न. ३६,
   उन्होंने (मु. अली) और मौलाना शौकत अली ने कुछ दिन पहले एक बयान जारी किया था जिससे हुकूमत के नज़दीक हिन्दोस्तानी फ़ौज में इज़्तेयान पैदा होने का सन्देशा था। दोनों भाइयों को २-२ साल की कैद की सज़ा दी गयी।
   हिन्दोस्तानी मुसलमान - आइनये अय्याम में
   - मुस. सै. आविद हुसेन, पृ. १३१,
   – यह दोनों सज्जन सितम्बर (१९२१) में गिरफ्तार किये गये और करांची दौरा जज के न्यायालय ने इन पर कई अपराध लगाये गये इनमें से दफा १२० और दफा १३१ (डषन्त्र रचना और बल्वे में सहायता देना, जो सबसे कड़े थे वे तो ठहर न सके पर गौण आक्षेपों अर्थात् दफा ५०५, दफा १०९ और दफा ११७ (बलवा कराने के उद्देश्य से झूठी बातें फैलाना) पर उनको कड़े दण्ड दिये गये।
   – यंग इंडिया - महात्मा गांधी - अनु. छविनाथ पाण्डे, पृ. ८४,

"अली बन्धुओं" को करांची के मुकदमें में। नवम्बर सन् १९२१ ई. को दो-दो वर्ष का कारावास दिया गया, जिसे कांग्रेस में उन्हें (अली बन्धुओं को) दण्ड दिये जाने को विचार स्वतन्त्रता का अपमान माना और सहस्त्रों भाषण मंचों से उसकी पुनरावृत्ति की।[१] अंग्रेजी सरकार द्वारा आपको २९ अगस्त, सन् १९२३ ई. को कारागार से मुक्त किया गया। इसी वर्ष सन् १९२३ ई. मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कोकनाडा अधिवेशन आयोजित किया गया।[२] और मौलाना मुहम्मद अली इसके निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये।[३] तथा आपके अनुरोध पर पं. जवाहर लाल नेहरू ने आपके अध्यक्षीय काल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सचिव पद पर कार्य किया।[४]

---

1. अली बन्धुओं को १ नवम्बर (सन् १९२३ ई.) को सजा दी गयी। कांग्रेस ने उन्हें (अली बन्धुओं) दण्ड दिये जाने को विचार स्वतन्त्रता का अपमान माना और अपनी कमेटियों तथा सहस्त्रों भाषण मन्चों पर प्रस्ताव रूप से उस अपराध को दुहराया। सहस्त्रों मनुष्य इस काम में सम्मिलित हुए।
   — यंग इंडिया - महात्मा गांधी - अ. छवि नाथ पाण्डेय, बी.ए. एल.एल.बी. पृ. ८४८५
2. In December 1923 the annual Session of the Congress was at Coconada in the South. Maulana Mohamed Ali was the president and, as was his want he delivered an enormously long presidential address. Jawahar Lal Nehru. an autobiography : page 117.
3. और सबसे पहला ओहदा जो सारी उम्र में मुझे पेश हुआ और जिसका फ़ैसला मेरे क़ैद व बन्द के ज़माने से ही में बिला मेरी इज़ाज़त बल्कि बिला मेरी इत्तेला के हो गया वह इन्डियन नेशनल कांग्रेस की ख़िदारत थी।
   – हमदर्द, २१ अक्टूबर सन् १९२६ ई०, मुदीर - मुहम्मद अली।
   मुल्क ने आपको वह एज़ाज़ बख्शा जो हिन्दोस्तान के लिए एक फ़र्द के लिए सबसे बड़ा एज़ाज़ है। यानी आपको नेशनल कांग्रेस का सद्र मुनतख़ब किया गया। जिसका इजलास व मक़ाम कौकनाड़ा हुआ। - हयाते जौहर - मुर. नश्तर बलरामी, पृ. ८८
4. Mohamed Ali induced me, much against my will, to accept the All India Congress Secretaryship for his year of presidentship.
   . Jawahar Lal Nehru - An Autobiography, p. 117.

जून सन् १९२८ में मौलाना मुहम्मद अली जौहर अपना इलाज कराने के लिए यूरोप गये हुए थे।[१] इन्हीं दिनों पं० मोतीलाल नेहरू ने देश की व्यवस्था से सम्बन्धित एक रिपोर्ट तैयार की, जिसमें भारतीय बहुसंख्यक मुसलमानों के मतानुसार उनको उचित स्थान एवं अधिकार प्रदान नहीं किये गये थे, और इसलिए वे इस "नेहरू रिपोर्ट" से अप्रसन्न थे।[२]

यूरोप से दिसम्बर १९२८ ई. में वापस आने पर आपने नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया।[३] क्योंकि नेहरू रिपोर्ट ने भारतीयों के लिए "नव आबादी का दरजा" (अर्धस्वतन्त्रता) स्वीकार कर लिया था जबकि मौलाना मुहम्मद अली पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्ष में थे।[४]

---

1. जून सन् १९२८ ई. में मौलाना इलाज की ग़रज़ से यूरोप तशरीफ़ ले गये थे।

   मज़ामीने मुहम्मद अलीः मुर. मुहम्मद सुरूर उस्ताद, जामियामिलिया देहली, सन् १९४० हिस्सा दोयम, पृ. २२९,

2. पं मोतीलाल नेहरू ने मुल्की हक़ हुकुक़की रियासत से एक रिपोर्ट तैयार की लेकिन इस रिपोर्ट में हिन्दोस्तान के मुसलमानों के हक का एक हद तक लिहाज़ नहीं किया गया और इसकी इशाअत पर बड़े बड़े मुसलमानों ने महसूस किया कि मुसलमानों के हक हुकुक़ की रियासत नहीं की गयी है।

   – 'हयाते जौहर' - मुर. इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ९२

3. मुहम्मद अली जब यूरोप से अपने इलाज को न मुकम्मल छोड़कर हिन्दोस्तान वापस आये तो उन्होंने भी पूरी सिद्दत के साथ नेहरू रिपोर्ट और उसकी सिफ़ारिशात से इख़्तेलाफ किया।

   – सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. ४६९,

   मुहम्मद अली मुकम्मल आज़ादी और ग़ैरे मशरूत ख़ुद मुख़्तारी के क़ाइल और हामी थे और इससे कम के लिए वह किसी सूरत में भी तैय्यार नहीं थे।

   – उन. मौ. मु. अली मरहूम - ज़ियाउररहमान - मौ. मु. अली एक मुतालेआ, मुर. - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ५६,

4. नेहरू रिपोर्ट ने हिन्दोस्तान के लिए नव आज़ादी का दरजा तस्लीम कर लिया था और मौलाना मुहम्मद अली कामिल आज़ादी के अलमबरदार थे।

   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनए अय्याम में. मुस. सै. आविदहुसैन, पृ. १३३

पं. मोतीलाल नेहरू से उनका इस बात पर विरोध हो गया कि उन्होंने गांधी जी के कारावास की अवधि में विरोध किया और कांग्रेस को २ भागों में विभक्त कर दिया।[१]

जब से मौलाना मुहम्मद अली को यह सन्देह हुआ कि कांग्रेस हिन्दू महासभा के पद चिह्नों पर चलने वाली है, तब वह इससे अलग हो गये।[२] मुहम्मद अली के अनुसार वह स्वयं तो कांग्रेस से अलग नहीं हुए थे बल्कि कांग्रेस ही उनसे अलग हुई थी। इसका प्रमाण यह है कि पृथक हो जाने के पश्चात् भी उन्होने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सभाओं में जाना और भाग लेना नहीं छोड़ा। अपनी पृथकता के लिए वह किसी व्यक्ति विशेष को दोषी नहीं ठहराते थे।[३]

---

1. मेरा (मु. अली) उनका (मोतीलाल) इख्तेलाफ़ इस बाईल है कि अव्वल तो महात्मा गांधी क़ैदोबन्द के ज़माने में मुखालिफ़त की और कांग्रेस के दो टुकड़े कर डाले और दूसरे उन्होंने एक और - - - - लाला लाजपत राय की इमदाद हासिल करने की उम्मीद पर सूबा ए सरदह और स्वराज्य पार्टी दोनों ने मुसलमानों की हक़तलफी को गवारा किया।
   — सीरते मुहम्मद अली, मुर. रईस अहमद जाफरी, पृ. ३६४,
2. जब तक वह इसे इण्डियन नेशनल कान्फेन्स समझते रहे अपनी वफादारी का सबूत दिया कि उनकी नजीर मिलनी मुश्किल है। जब उन्होंने समझा कि यह - - - - हिन्दू महासभा का नक्शे सानी है तो वह अलहदा हो गये।
   – सीरते मुहम्मद अलीः रईस अहमद जाफ़री, पृ. १४१
3. साले सिदारत के बाद मुहम्मद अली रफ़्त-रफ़्ता कांग्रेस से हटते गये या उन्हीं की जुबान के ततब्बों में कांग्रेस उनसे हटती गयी।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २५७,
   — After his year of presidentship, Mohamad Ali gradually drifted away from the Congress, or, perhaps, as he would have put it, the congress drifted away from him. The process was a slow one, and he continued to attend Congress and A.I.C.C. meetings and take vigorous part in them for several years more. But the rift widened, estrangement grew. Perhaps no particular individual or individuals were to blame for this, it was an inevitable result of certain objective conditions in the country. But is was an unfortunate result which hurt many of us.
   . Jawahar Lal Nehru, An-autobiography. page 120.

दिसम्बर १९२९ ई. में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के लाहौर अधिवेशन में गांधीजी, जवाहर लाल नेहरू और अन्य कांग्रेसी नेताओं ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग के सन्दर्भ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने का प्रस्ताव रखा : मौलाना का कथन था कि यदि मुसलमानों को अधिकार प्रदान किये जायें तो वे भी हिन्दुओं की तरह इसमें सम्मिलित हो सकते हैं। मौलाना की इस बात पर ध्यान न दिये जाने के कारण वह निराश हो गये और कांग्रेस एवं उनके बीच विकर्षण उत्पन्न हो गया।[१]

---

1. दिसम्बर सन् १९२९ ई. में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी का जलासा लाहौर में क़ायम हुआ और महात्मा गांधी और पं. जवाहर लाल नेहरू के साथ साथ कांग्रेस के लीडरों ने हिन्दोस्तान की पूरी आज़ादी की मांग की ग़रज़ से सिविल ना फरमानी के शुरू करने की तहरीक की उस वक़्त भी आपने (मु. अली) ने महात्मा जी से कहा कि तहरीक की उस वक़्त भी आपने (मु. अली ने) महात्मा जी से कहा कि हिन्दोस्तान के मुसलमान अपने हिन्दू भाइयों के साथ मिलकर अपने ख़ास मक़सद को कामयाब बनाने के लिए तय्यार है मगर उनके हुकूक का तस्फिका कर दिया जाये लेकिन इस पर कुछ ऐसा विचार नहीं किया गया और आख़िर मौलाना ने निराश होकर केवल मुसलमानों ही के सुधार में अपना ख़ास मक़सद रखा और कांग्रेस के फैसले से मुतमइन न होकर किसी तरह बददिल हो गये।

   – "हयाते जौहर" - मुर. इशरत रामपुरी, पृ. ९३

   -आख़िर में इन्हें कांग्रेस से शिकायत पैदा हो गयी थी, मगर इसके बावजूद महात्मा गांधी और पं. नेहरू वग़ैरह से आख़िर वक़्त तक अपने ज़ाती ताल्लुक़ात में कोई फर्क नहीं आने दिया। – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालआ - मुर. अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ८३,

   — इस मौके पर उन्होंने गांधी जी से गुफ़्तगू करके उनको मुसलमानों के जाइज़ मुतालेबात को मंजूर करने पर ज़ोर दिया और उनको यक़ीन दिलाया गया कि अगर मुसलमानों की शिकायतें दूर हो गयी तो वह पूरी हमआहंगी के साथ कांग्रेस का साथ देंगे।

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में – मुर. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. २१५,

मुसलमानों के अधिकारों के पक्ष में आवाज उठाने पर और कांग्रेस से कोई सहयोग न होने पर ही यह विकर्षण उत्पन्न हुआ।[१] अंततः सन् १९३० ई. में मौलाना मुहम्मद अली जौहर कांग्रेस से स्पष्ट रूप से अलग हो गये।[२]

प्रथम विश्व युद्ध की कालावधि (१९१४-१९१९) में भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के षडयन्त्रकारी दृष्टिकोण और अत्याचारों के कारण मुहम्मद अली के हृदय में अंग्रेजों के विरुद्ध घृणा उत्पन्न हो गयी।[३] राष्ट्र वादियों में और विभिन्न सम्प्रदायों में फूट डालना तथा राजा नवाबों को अपना मित्र बनाना उनकी कूटनीति थी तथा उग्र विचार वालों का दमन, स्वतन्त्रता आन्दोलन को कुचलने के लिए कड़े कानूनों की व्यवस्था और भारतीयों

---

1. हिन्दोस्तान के आवाम को जिन लोगों ने बेदार किया और तहरीके आज़ादी में हिस्सा लेने के लिए तय्यार किया उनमें मौलाना मुहम्मद अली और उनके बड़े भाई शौकत अली सूसियत के साथ काबिले ज़िक्र है। उनकी ख़िदामातों को हिन्दोस्तान भुला नहीं सकता। लेकिन उन्होंने जहाँ मुल्क की आज़ादी की तहरीक में हिस्सा लिया वहाँ जब वक्त आया तो मुसलमानों के शहरी हुकूक़ के तहाफ्युज़ का सवाल भी उठाया। इस पर इनके और कांग्रेस के बाज लीडरों के दरिम्यान इख़्तेलाफ़ हुआ और कांग्रेस इनसे दूर हटती गयी।
   – कौमी जंग (उर्दू दैनिक समाचार पत्र) २२ जून १९८३,
   – उन. "खाना वीरानी" – मौलाना शौकत अली - द्वारा मुस्लिम आफ़ाक़ी, पृ. ४
2. सन् १९३० ई. में मु. अली खुल्लम खुल्ला कांग्रेस से अलग हो गये। लेकिन इसकी इवतिदा आख़िरे सन् १९२८ ई. से ही हो चुकी थी।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ः मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २९०,
   – उन्होंने नेहरू रिपोर्ट की मुख़लिफत की और दिसम्बर सन् १९३० ई. में जब कांग्रेस ने - - - नेहरू रिपोर्ट को क़बूल कर लिया तो मौलाना कांग्रेस से अलहदा हो गये। – मज़ामीने मुहम्मद अली– हिस्सा दोयम पृ. २९९, मुर. - मुहम्मद सुरूर उस्ताद, जामिया मिल्लिया इस्लामिया देहली सन् १९४० ई.।
3. मैं (मु. अली) एतेराफ़ करता हूँ कि दौराने जंग में और ख़ास कर सन् १९१८ ई. के आखिर में इल्तेवाये जंग के बाद से मेरे ख्यालात इस गवर्नमेन्ट की तरफ़ से बिल्कुल तब्दील हो गये। –"ख़तबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली" पृ. १४०.

के साथ अत्याचार उनकी स्पष्ट दमन नीति थी।[१] इसके विरुद्ध देशवासियों को सावधान करते हुए कहा कि भारतवासी किसी भी प्रकार अंग्रेजों की इन नीतियों में सहयोग नहीं देंगे।[२] उन्होने देशवासियों को विश्वास दिलाया कि उन्हें अंग्रेजों का दास बनना कदापि स्वीकार नहीं था।[३] स्वतन्त्रता की भावना उनके हृदय में वैसी ही पीड़ा उत्पन्न करती थी - जैसी कि बबूल का कांटा उत्पन्न करता है।[४]

---

1. साम्राज्य के अस्तित्व के लिए बढ़ते हुए इस खतरे का सामना करने के लिए सरकार ने त्रिसूत्री कार्यक्रम अपनाया - उग्रविचार वालों का दमन, राष्ट्रटारियों में फूट डालने और नरम विचार वालों से समझौता करने का स्वतन्त्रता आंदोलन को कुचलने के लिए कड़े कानून बनाये गये जिन्हें बड़ी ही निर्दयता के साथ लागू किया गया विभिन्न सम्प्रदायों में फूट डाली गयी और नरम विचार वाले हिन्दुस्तानियों तथा जमींदारों की पीठ ठोकी गयी और उन्हें संरक्षण प्रदान किया गया। अखबारों पर कड़े प्रतिबन्ध लगाये गये, देशभक्तों को जेलों में बन्द कर दिया गया या उन्हे देश से निकाल दिया गया और छात्रों तथा शिक्षकों को सजाएँ दी गयी। इतना ही नहीं, ब्रिटिश हकूमत ने देसी रियासतों के राजाओं - महाराजाओं को अपना दोस्त-हमदर्द बना लिया, मुसलमानों के साथ पक्षपात किया और साम्प्रदायिक ईर्ष्या - द्वेष को भड़काया। – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाकियां,
   शीर्षक -१९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २,
2. आज मैं (मु. अली) ऐसी कांग्रेस की तरफ़ से हिन्दोस्तानी क़ौम की तरफ से और उस तक़दीरे इलाही की तरफ़ से हम सब पर कारफ़रमा है, उन मुट्ठी भर आदमियों को ख़बर करना चाहता हूं कि इन्शाअलह पर कभी कामयाब न होंगे और हिन्दोस्तानी क़ौम उनकी अय्याराना कार्यवाहियों के साथ किसी हालत में रवारवी नहीं बरतने की।

   – ख़तुबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. ८३,
3. मैं (मु. अली) आपको यक़ीन दिलाता हूँ और आप अच्छी तरह सुन लें कि मैं अंग्रेजी हकूमत को पसन्द नहीं करता मैं हरगिज़ इस पर राजी नहीं कि अंग्रेज का गुलाम बनूं।

   – मौलाना मुहम्मद अलीः ज़ाती डायरी के चन्द वर्क (हिस्सा दोयम) – मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २०५,
4. हकूमत को मौलाना मुहम्मद अली काजज़वये हुर्रियत ख़ारे मुग़ीला की तरह चुभता था। - उनवान - रामशीर बरैहना मौलाना मुहम्मद अली जौहर,
   – सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५५

अंग्रेजों द्वारा भारतीय कृषकों को सेना में भरती होने के लिए विवश किया गया जिससे विद्रोह उत्पन्न हुआ।[१] इसके अतिरिक्त भारतीयों की स्वतन्त्रता की भावना के दमन के लिए अंग्रेज सरकार ने सन् १९०८ ई. में "फौजदारी कानून" सन् १९१० ई. में "प्रेस कानून" १९१५ में "भारतरक्षा कानून" और १९१९ ई. में रोलेट ऐक्ट पारित किया जिसके कारण भारतीय जनता में आक्रोश उत्पन्न हुआ।[२]

दूसरी और ब्रिटिश प्रधान मंत्रियों एक्यूथ और लायड जार्ज तथा ब्रिटिश वायसराय हार्डिंग ने इस्लामी पवित्र स्थानों, तुर्की राज्य की अखंडता और मुस्लिम राज्यों की स्वतंत्रता का आश्वासन दिया था। लेकिन विश्व युद्ध के मध्य उन्होंने बड़ी निर्लज्जता से इन आश्वासनों की अवहेलना की। विश्वयुद्ध में भारतीय मुस्लिम सैनिक तुर्की की मुस्लिम सेना के विरुद्ध इसी विश्वास से लड़े थे कि इन आश्वासनों का अंग्रेज पालन करेंगे।लेकिन युद्ध के मध्य ब्रिटिश सेनाओं ने अश्व के पवित्र स्थानों

---

1. इस कानून का विरोध तो देश भर में हुआ, लेकिन पंजाब की स्थिति कई कारणों से अत्यन्त विस्फोटक थी। युद्ध के लिए ३ लाख लड़ाकू और ६० हजार गैर लड़ाकू सैनिकों को भरती करने के उद्देश्य से लोगों पर दबाव डाला गया और बहुत से गाँवों में मजदूरों का मिलना मुश्किल हो गया था। परिवार के कमाने वाले फौज में चले गये थे। किसानों पर जो विपत्ति आयी थी, उससे विद्रोह की आग भभक उठी और उस पर भयंकर जुल्म ढाये गये।
   १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. ५,
   – पंजाब के देहाती इलाकों में जबरदस्ती रंगरूट भरती की दुःखदायी बातें लोग अभी तक बुरी तरह याद करते थे - मेरी कहानी - ले. जवाहर लाल नेहरू, पृ. ३८
2. लगभग सभी सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल ने मार्च १९१९ में रोलेट एक्ट पास कर दिया – रोलेट एक्ट के विरोध में सारे भारत में सभायें की गयी - - - इस 'काले कानून' (रोलेट एक्ट) से पहले पहले ब्रिटिश सरकार १९०८ में फौजदारी (संशोधन) कानून, १९१० में प्रेस कानून और १९१५ में "भारत रक्षा कानून" पास कर चुकी थी। इन सारे कानूनों का उद्देश्य एक ही था – भारतीयों में स्वाधीनता की भावना को दबाना। परन्तु इन दमनकारी कानूनों का विपरीत प्रभाव पड़ा। कुछ महीनों में देशभर में अभूतपूर्व रोष फैल गया। - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकिया, पृ. २२३,

को भी नहीं छोड़ा। इसके अलावा सेवरे की संधि के अन्तर्गत तुर्की के टुकड़े-टुकड़े किये जाने की धमकी थी।[१] अंग्रेजों ने ग्रीस के लोगों को तुर्की की भूमि पर कब्जा करने के लिए भड़काया और तुर्कों के अरब प्रान्त सीरिया और लेबनान जुर्दान और ईराक को फ्रान्स तथा ब्रिटेन के संरक्षण में रख दिया। फिलीस्तीन यहूदियों को बसने के लिए दे दिया गया और मिस्र को तुर्की साम्राज्य से अलग करके, ब्रिटेन ने अपना संरक्षित प्रदेश बना लिया। तथा यह भी निश्चय किया कि तुर्की का सुल्तान इस्लाम धर्म व ख़लीफा के पद पर भी नहीं रहेंगे।[२]

इसके साथ ही अंग्रेजी सरकार ने २० अगस्त १९१७ ई. को यह घोषणा भी की थी कि धीरे-धीरे भारतीयों को स्वयं शासन संचालन का अवसर प्रदान किया जायेगा परन्तु १९१९ ई. के अधिनियम ने अंग्रेजों

---

1. तुर्की साम्राज्य के साथ किये गये व्यवहार से भारतीय स्तंभित रह गये। युद्ध के दौरान लायड जार्ज द्वारा किये गये वायदों के नाम पर मित्र राष्ट्रों ने ओटोमान (तुर्की) साम्राज्य के खंडित कर देने का फैसला किया।

   - स्वतन्त्रता संग्राम - विपिन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, वरुणदे, अनु. रामसेवक श्रीवास्तव, पृ. १२०

   – ब्रिटिश प्रधानमंत्री लायड जार्ज ने इन मुसलमानों को यह आश्वासन दिया था कि उनके पवित्र स्थानों पर आक्रमण नहीं किया जायेगा और तुर्की के ऐशिया माइनर और थ्रेस के पजाऊ और तुर्क बहुल इलाके उससे नहीं छीने जायेंगे। परन्तु अंगरेज और उनके मित्रराष्ट्र युद्धकाल में किये गये इस वायदे को भूल गये।

   –"१९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकियाँ"– भारतीयों का विद्रोह- अजित प्रसाद जैन, पृ. ५६

2. भारत सरकार यह आश्वासन दे चुकी थी कि मुसलमानों के पवित्र स्थानों की रक्षा की जायेगी परन्तु इन सबके बावजूद जो संधि हुई, उसके अनुसार तुर्की के अरब सूबे उससे छीन लिये गये और ब्रेस यूनान को दे दिया गया। यह भी तय हुआ कि तुर्की का सुल्तान इस्लाम के खलीफा के पद पर नहीं बना रहेगा।

   – "१९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां" – स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमानों का योग– सै. महमूद, पृ. २२५

के इस आश्वासन को भी कोरा धोखा सिद्ध कर दिया।[१] और ब्रिटिश सरकार के यही सब क्रियाकलाप मुहम्मद अली जौहर के मष्तिष्क में अंग्रेज जाति के विरुद्ध घृणा का कारण बने।

जलियां वाले बाग का हत्याकांड[२] भारतीय इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। ऐसे नृशन्सतापूर्ण नर संहार का उदाहरण ब्रिटिश शासन की अवधि में दूसरा नहीं मिलता।

१३ अप्रैल १९१९ ई. का पवित्र दिन - वैशाखी का शुभ त्यौहार। रोलेट ऐक्ट के विरोध में एक शान्तिपूर्ण सभा का आयोजन जलियांवाले बाग में हुआ।[३]

इस सभा में हजारों की संख्या में पुरुष, महिलाएं और बच्चे सम्मिलित हुए। वहां उपस्थित सभी लोग नेताओं के भाषण शांति पूर्वक सुन रहे थे। उसी समय ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर अपने कुछ साथियों के साथ मुख्य द्वार पर आये और उन्होंने तुरन्त अपने साथ आये सैनिकों को आदेश दिया और बिना किसी पूर्व चेतावनी के ही आतंकवादी

---

1. भारतवासी काफी असंतुष्ट और क्षुब्ध थे। ब्रिटिश हकूमत के प्रति उनके मन में वफादारी की जो भावना थी, उसे काफी ठेस पहुंची और यह वफादारी बड़ी तेजी के साथ खत्म होती जा रही थी। युद्ध के आरम्भ में भारतवासियों ने उसमें जो मदद की उसकी अंग्रेजों ने प्रशंसा की थी और ऐसा लगा था कि इस देश का प्रशासनिक ढांचा काफी बदला जायेगा और २९ अगस्त सन् १९१७ को सरकार की ओर से इस आशय की एक घोषणा भी की गयी कि धीरे धीरे भारतवासियों को स्वयं शासन चलाने का मौका दिया जायेगा और यह भारत की राजनीतिक प्रगति का लक्ष्य होगा। लेकिन जब १९१९ के अधिनियम सामने आये, तब भारतवासियों को घोर निराशा हुई।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन - ले. डॉ. ताराचन्द, पृ. ३
2. So it was in Punjab early in April 1919 when a Sudden fear over whelmed the authorities and English people generally, made them see danger every where, a widespread rising, a second mutiny with its fright full massacress ..... Jawahar Lal Nehru, An-autobiography, page 71,
3. On the 13th April, which was the Hindu new years day, a large public meeting was advertised and held in the Jallianwala Bagh.

   The Voice of Freedom, the Speeches of Pt. Moti Lal Nehru Edited by. K.M. Panikkar and A. Prasad. page. 3,

उद्देश्य से उस शान्तिपूर्ण सभा पर गोलियां चलवायीं।[१] यह नर संहार १० मिनट तक चलता रहा, जिसमें १६५० चक्र गोलियां चलायी गयी। इस गोलीकाण्ड में १००० व्यक्तियों की जानें गयी जिनमें ४२ बच्चे भी सम्मिलित थे।[२]

जलियाँ वाले बाग के नर संहार से मर्माहत होकर मौलाना मुहम्मद अली ने अपने विचार अभिव्यक्त किये कि तिलक को और उन्हें स्वयं स्वतन्त्रता के लिए आजीवन कारावास भोगना चाहिए, श्रीमती एनीबेसेन्ट को मृत्यु दण्ड भोगना चाहिए, परन्तु इस प्रकार की दुखद घटनाओं और अत्याचारों की समाप्ति होनी चाहिए।[३]

सन् १९१४ से १९१८ ई. तक चार वर्ष ब्रिटिश सरकार को विश्वयुद् में व्यतीत करने पड़े। इसी समय उसे कई ऐसी भारतीय समस्याओं और संगठनों का भी सामना करना पड़ा जो उसके साम्राज्य को समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे।[४] इसके साथ ही सैनफ्रान्सिसको में १८ अगस्त

---

1. जनरल डायर ने सारे पंजाब में आतंक फैला देने की इच्छा से, बिना किसी चेतावनी के अपने सैनिकों को पार्क में एकत्रित निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया। - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२७
2. जलियांवाल बाग का यह नर संहार पूरे दस मिनट तक चला था और उन दस मिनटों में १६५० चक्कर गोलियाँ चलायी गयी थी। - - - सरकारी दावे की बजाय यह बात सच्चाई के ज्यादा निकट है कि इस गोली कांड में १००० व्यक्तियों की जाने गयी हैं। मालवीय जी के अनुसार मरने वालों में ४२ बच्चे भी थे। – जलियांवाला बाग - सुरेश सलिल, पृ. १०-११,

2a सारा गोला बारूद खत्म होने के बाद जब डायर वापस हुआ तो घटना स्थल पर १००० मृत पड़े थे और कई हजार घायल।
स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, अमलेश त्रिपाठी, बरुण दे,
अनु. रामसेवक श्रीवास्तव, पृ. १२७

3. मैं (मुहम्मद अली) कहता हूं, इस आज़ादी के लिए मिस्टर तिलक को फिर जेल जाना चाहिए, मुझे दोबारा उम्र भर के लिये नजरबन्द होना चाहिए, मिसेज बेसेन्ट को फांसी पर चढ़ा देना चाहिए। मगर इस किस्म के मज़ालिम का हमेशा के लिए ख़ातिमा होना चाहिए जैसे कि पंजाब में हुए।
— सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७५
4. सन् १९१४ से १९१८ के चार वर्षों के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी सारी शक्ति पहले विश्वयुद्ध में जर्मनी के कैंसर से निबटने में खपानी पड़ी थी।इसी बीच उसे कई ऐसे संगठनों व योजनाओं का सामना भी करना पड़ा जो भारतीय उपमहाद्वीप की आजादी के लिए भारत अथवा भारत के बाहर सक्रिय थी। – जलियांवाला बाग – देश की तत्कालीन परिस्थितियां और रोलेट ऐक्ट- सुरेश सलिल, पृ. १३

१९१३ ई. को एक गदरपार्टी का भी निर्माण हो चुका था तथा जिसने "गदर" नामक समाचार पत्र का सम्पादन ला. हरदयाल की अध्यक्षता एवं सचिव सरदार सोहनसिंह भकना के माध्यम से जारी किया था एवं जिसका प्रभाव सैनफ्रान्सिस्को से कनाडा तक फैल चुका था क्योंकि उस समय कनाडा भारतीय प्रवाहियों का प्रमुख केन्द्र था।[1]

अतः विवश होकर अंग्रेजों को भारतीयों के कनाडा प्रवेश पर रोक लगानी पड़ी जिसके परिणाम स्वरूप १९०८ से १९११ ई. के मध्य नये कानूनों के माध्यम से लगभग एक हजार प्रवासी भारतीयों को विवश होकर भारत लौटना पड़ा। इसी के साथ ही कामागाटामारू समुद्री जहाज को भी कनाडा के बैंकोवर बन्दरगाह में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गयी और निराश ३७६ प्रवासी भारतीयों ने स्वदेश लौटकर अंग्रेजों के प्रति हिंसापूर्ण विरोध प्रकट किया।[2] अंग्रेजों ने वापस आये प्रवासी भारतीयों के हिंसापूर्ण विरोध का दमन करने के लिए पहले से ही एक कानून की व्यवस्था १५ अगस्त सन् १९१४ के इंग्रेस अधिनियम (प्रवेशाधिकार अध्यादेश) नामक कानून के माध्यम से कर रखी थी, जिसके अनुसार ५ सितम्बर सन् १९१४ ई. से बाद भारत आने वाले भारतीयों की गतिविधियों पर रोक थी।[3]

---

1. सैनफ्रान्सिसको में १८ अगस्त, १९१३ ई. को गदर पार्टी की स्थापना हुई थी और उसका अध्यक्ष लाला हरदयाल को तथा सचिव सरदार सोहन सिंह भकना को नियुक्त किया गया था। गदर पार्टी ने १५ नवम्बर, १९१३ से 'गदर' नाम से ही एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला था और लाला हरदयाल को उसका मुख्य सम्पादक बनाया गया था।
   – जलियाँवाला बाग - देश की तत्कालीन परिस्थितियां और रोलेट ऐक्ट, सुरेश सलिल, पृ. १४
2. किसी भारतीय के कनाडा प्रवेश पर रोक लगा दी गयी थी, जिसके परिणामस्वरूप सन् १९०८ से १९११ के दौरान नये कानूनों की लपेट में आये लगभग एक हजार नये प्रवासियों को मजबूर होकर अपने घरों को वापस लौटना पड़ा - - - - "कामागाटामारू" नामक समुद्री जहाज को कनाडा के बैंकोवर बन्दरगाह में घुसने की अनुमति नंहीं दी गयी थी और ३७६ भारतीय यात्रियों को निराश होकर भारत वापस लौटना पड़ा था।- - - यात्रियों को बेहद गुस्सा था और उस गुस्से ने शीघ्र ही हिंसापूर्ण विरोध का रूप ले लिया। – जलियांवाला बाग – सुरेश सलिल पृ. १४,१५,
3. १५ सितम्बर को इंग्रेस अधिनियम नाम से एक कानून जारी किया गया था जिसके अनुसार सरकार ५ सितम्बर के बाद भारत आने वाले हर व्यक्ति की गतिविधियों पर पाबंदी लगा सकती थी। – जलियाँवाला बाग, सुरेश सलिल, पृ. १५

वापस आये प्रवासी भारतीयों को गदर पार्टी से संबंधित होने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें पंजाब जाने वाली रेलगाड़ी से यात्रा करने का आदेश दिया किन्तु यात्रियों द्वारा आदेश न मानने, विद्रोह करने एवं घातक हथियार एवं विस्फोटक पदार्थ पास होने के कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा उनमें से २०० नजरबन्द किये गये, १८ मारे गये एवं २५ घायल हुए। एवं गदर पार्टी की गतिविधियों को दबाने के उद्देश्य से उन पर मुकदमा चलाकर २० को फांसी एवं ५८ को आजन्म कारावास देकर काला पानी भेज दिया एवं ५८ को कारागार भेज दिया गया।[१]

अब ब्रिटिश सरकार एक ऐसे कानून की योजना में लग गयी जिसके माध्यम से भारतीय जन आन्दोलन को कुचला जा सके। इसीलिए उसने सन् १९१७ ई. में सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में एक "राजद्रोह दमन समिति" नामक कमेटी का गठन किया जो कालान्तर में सिंडीशन कमेटी के नाम से प्रसिद्ध हुई तथा जिसका कार्य भारतीयों क्रांतिकारियों का पता लगाना एवं दमन का मार्ग बताना था। कमेटी के सुझाव पर ब्रिटिश सरकार ने विधान मण्डल के समक्ष २ बिल रौलेट बिल के नाम से प्रस्तुत किये। उन्हीं में से एक "अनार्किकल एण्ड रिवोल्यूशनरी क्राइम्स

---

1. चूंकि कामागाटामारू से वापस आये यात्री कनाडा की गदरपार्टी की गतिविधियों से प्रभावित हो चुके थे, अतः उन्हें सीधे पंजाब जाने वाली रेलगाड़ी से यात्रा करने का हुकम दिया गया।- - - एक जगह तो उन्हें पुलिस का कड़ा सामना भी करना पड़ा जिससे अट्ठारह लोग मारे गये और पच्चीस गम्भीर रूप से घायल हुए - - - छिपाकर लाये गये हथियार और विस्फोटक पदार्थ भी सरकार के हाथ लगे। इस सबके परिणाम स्वरूप लगभग दो सौ लोगों को नज़रबन्द कर लिया गया।- - - गदर पार्टी से जुड़े लोगों पर एक संगीन मुकदमा चलाया गया और उनमें से बीस लोगों को फांसी पर लटका दिया गया, अट्ठावन को कैद की सजा देकर कालापानी भेज दिया गया और बाकी अट्ठावन को जेल में डाल दिया गया। जलियांवाला बाग – सुरेश सलिल, पृ. १५,१६
— विदेशों में रहने वाले बहुत से पंजाबी अपने घरों को लौट आये थे। इन लोगों के मन में सरकार के खिलाफ बड़ी कटुता थी। सरकार ने भी उन पर मुकदमा चलाने के लिए प्रवेशाधिकार अध्यादेश (कांग्रेस आर्डीनेन्स) की धाराओं का इस्तेमाल किया।
— १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकियां, पृ. ५
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार।

एक्ट" अर्थात अराजक तथा क्रान्तिकारी अपराध अधिनियम कहा गया जो रौलेट एक्ट के नामसे २१ मार्च, सन् १९१९ ई. को बलपूर्वक भारतीय जनता पर लागू किया गया।[१]

इस रौलेट ऐक्ट में बिना कारण बताये सजा, नज़रबन्दी, घर की तलाशी आदि यातनाओं की कड़ी व्यवस्था थी।[२] इसीलिए इस कानून का भारतीय जनता द्वारा सम्पूर्ण देश में विरोध किया गया। बिल के पारित होने पर समस्त भारतीयों में क्रोध जागृत हुआ और उन्होंने इस वाले कानून के विरोध में प्रदर्शन, हड़तालें एवं अन्य आन्दोलन प्रारम्भ

---

1. भारत की ब्रिटिश सरकार किसी ऐसे कानून की तलाश में थी, जिसके द्वारा भारत के जन-आन्दोलनों को कुचला जा सके।- - - १९१७ में "राजद्रोह दमन समिति" नाम से सरकार ने एक ऐसी कमेटी का गठन किया उस समिति के अध्यक्ष सर सिडनी रौलेट को बनाया गया। वह हिज़ मैजेस्टी कोर्ट आफ जस्टिस की किंग्स बैच डिवीजन का जस्टिस था।- - - राजद्रोह दमन समिति, जो आगे चलकर सिटीशन कमेटी के नाम से मशहूर हुई - - - की सिफारिशों के ही आधार पर सरकार ने विधान मंडल के सामने दो बिल पेश किये। उन बिलों को रोलेट बिल का नाम दिया। उनमें से एक बिल को "अनार्किकल एण्ड रिवोल्यूशनरी क्राइम्स एक्ट" अर्थात् अराजक तथा क्रान्तिकारी अपराध कहा गया। यही वह बदनाम रोलेट एक्ट था, जिसे २१ मार्च १९१९ को बलपूर्वक भारतीय जनता पर लागू किया गया था।

   – जलियांवाला बाग- सुरेश सलिल, पृ. १७,१८,

2. न्यायाधीशों को अधिकार दिया गया कि वे राजनैतिक मुकदमों की सुनवायी बिना जुरी के करें, उनके फैसले पर अपील संभव नहीं थी। ऐसे कागजातों का रखना भी दण्डनीय अपराध हो गया, जिसमें सरकार के विरुद्ध आरोप लगाये गये हों। - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२३,

   रालेट एक्ट नाफ़िज़ कर दिया। इसकी रूह से हुकूमत को अन्धाधुन्ध मुक़दमे चलाने और गिरफ़्तारियां करने का इख़्तेयार दिया गया था और कानून में जो आम तौर पर अहतेयात होती है उसमें उसका नाम तक न था।

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में, पृ. ८,
   मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान,

किये।[१]

जिस समय रौलेट ऐक्ट लागू किया गया उस समय मौलाना मुहम्मद अली बैतुल कारावास में थे। आप पर अमानवीय एक्ट की तीव्र प्रतिक्रिया हुई और कारावास से मुक्त होने के पश्चात् ख़िलाफत कमेटी के माध्यम से आपने गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

गांधी जी १९१५ ई. के आरम्भ में दक्षिण अफ्रीका से भारतीय प्रवासियों के राष्ट्रीय सम्मान और मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए एक सफल आन्दोलन का नेतृत्व कर स्वदेश वापस आये।[२] मौलाना मुहम्मद अली से आपका प्रथम परिचय १३ अप्रैल सन् १९१५ ई. को हुआ एवं प्रथम परिचय में ही आप गांधीजी के विचारों एवं व्यक्तित्व से प्रभावित हुए । और आप महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में आये।[३] आपका विचार था कि हम अहिंसा से भी विजय प्राप्त कर सकते और

---

1. क्रुद्ध भारतवासी अब गोरे शाही द्वारा किये जाने वाले अपमानों और उसके अत्याचारों के सामने मूक रहकर झुकने को तैयार न थे।- - - हिन्दुस्तान के लोग असंतोष और क्षोभ से तप्त हो उठे थे।- - -इस कानून का विरोध तो देश भर में हुआ।

   — १९२१ के सहयोग आन्दोलन की झांकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द- पृ. ५,

   — A wave of anger gracted them all over India and even the moderates joined in this and opposed the measures with all their might. Indeed there was universal opposition on the part of Indian of all shades of opinion. Still the bills were pushed through by the officials and became law, the principal Concession made being to limit them for three years.
   . Jawahar Lal Nehru, An-Autobiography, page no. 40,

2. गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से, जहाँ उन्होंने भारतीय प्रवासियों के राष्ट्रीय सम्मान और मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए एक अभूतपूर्व आन्दोलन का नेतृत्व किया था, १९१५ के आरम्भ में ही स्वदेश लौटे।

   — १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. ५,

3. १३ अप्रैल, सन् १९१५ ई. को गांधी जी से मौलाना की पहली बार मुलाक़ात हुयी तो वह भी तस्लीम करते हैं कि पहली ही नज़र में उनकी मुहब्बत का क़ायल हो गया।

   — मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८१

आप गांधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त से पूर्णतया सहमत थे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ने गांधी जी के "त्रिविध अहिंसा" (मन, वचन और कर्म से) के विचार की प्रशंसा की।[२] एवं भारतीय स्वतन्त्रता और मुस्लिम सम्प्रदाय के हितों की सुरक्षा के लिए उनका नेतृत्व परम आवश्यक माना।[३]

आप गांधीजी में अपार श्रद्धा रखते थे इसीलिए मुस्लिम क्षेत्रों में जाते समय गांधीजी को अपने साथ अवश्य लेते थे।[४] गांधी जी भी आप दोनों भाइयों को हृदय से चाहते थे।[५] २८ जौलाई, १९२० ई. को गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने

---

1. We, however, entirely agree with Mahatma Gandhi that non-violence is the any proper policy for India to adopt to-day for her emancipation, we can achieve victory without violence. Select writings & speeches of Maulana Mohd Ali, Vol. II, Edited by Afzal Iqbal, page 208,
2. Now Mahatma Gandhi's standard of Non-violence, to which be required all National Valuntees at Ahmedabad in 1921 to pledge them-selves, is very high one; for he requires Indians to be Non-violent not only indeed,,but also in word and even in though and intent.
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohamed Ali,
   Vol. II, Edited Afzal Iqbal, page no. 208.
3. मुहम्मद अली गांधी जी और उनकी क़ियादत को इन्तेहा पसंद ज़ाविये से देखते थे। हिन्दोस्तान को अंग्रेजों से आज़ाद कराने और इस्लामी मफ़ाद के तहाफ़्फ़ुज़ के लिए गांधी जी की हिमायत करते थे।
   –मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी,
   उनवान- हिन्दोस्तानी सियासत में मुहम्मद अली का हिस्सा - मुइनशाकिर पृ. ९१.
4. यह अली ब्रादरान ही का दम था जिन्होंने महात्मा गांधी को क़ौम का महबूब और हरदिल अज़ीज बना दिया अली ब्रादरान जब भी मुसलमानों में जाते गांधी जी को अपने हमराह जरूर ले जाते थे।
   उन. शमशीर बरहना - मौलाना मुहम्मद अली जौहर - सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर, १९८१, पृ. ५६,
5. महात्मा गांधी, मौलाना शौकत अली और मुहम्मद अली को बहुत मानते थे– शीर्षक - मानवता और देश प्रेम की फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति रेणु, एम. ए. डी. लिट्
   Maulana Mohamed Ali, Birth Century celeberation Souvenir, Hyderabad-4 Dec. 1978.
   – गांधीजी और अली ब्रादरान के ताल्लुकात बहुत अच्छे रहे।
   – "रजत" (हिन्दी त्रैमासिक) अप्रैल १९७७ ई. मेरी क़ब स्वतन्त्र देश में होना चाहिए - मौलाना मुहम्मद अली द्वारा जहीर सिद्दीकी, पृ. ३३

की घोषणा की।[१] गांधी जी के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार, खादी का प्रचार और मद्यनिषेध का रचनात्मक एवं असहयोग के कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेशी सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधियों के त्याग तथा विधान सभाओं, अदालतों और सरकारी शिक्षा संस्थाओ के बहिष्कार का कार्य रखा गया। और उसको कार्यान्वित करने के लिए प्रयास किये जाने लगे।[२] असहयोग आन्दोलन का यह कार्यक्रम सम्पूर्ण देश में बड़े उत्साह के साथ पहली अगस्त सन् १९२० ई. से प्रारम्भ किया गया।[३]

मौलाना मुहम्मद अली ने कठोरता से अहिंसा के पालन पर बल देते हुए कहा कि वर्तमान शासन के प्रति हमारा युद्ध बिना शत्रुता की भावना के होना चाहिए और एक दूसरे के प्रति हमें अधिक सहनशीलता से व्यवहार करना चाहिए।[४] आपने गांधीजी के साथ असहयोग आन्दोलन को सफल बनाने के लिए भारतवर्ष का भ्रमण किया और कार्यक्रम को

---

1. २८ जौलाई को गांधी जी ने घोषणा की कि एक अगस्त से असहयोग आन्दोलन शुरू किया जायेगा।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकिया–
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २६
2. उन्होंने (गांधी जी) हिन्दू-मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार, खादी का प्रचार और मद्यनिषेध का रचनात्मक कार्यक्रम सामने रखा। इसके साथ ही उन्होंने असहयोग के कार्यक्रम के अन्तर्गत विदेशी सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधियों के त्याग तथा विधान सभाओं, अदालतों और सरकारी शिक्षा संस्थाओं के बहिष्कार का आह्वान किया।
   — १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां, पृ. ५०
   — गांधी जी के आदर्श - हम भूल न जांए - श्री प्रकाश
3. पहली अगस्त को असहयोग आन्दोलन बड़े जोर-शोर से शुरू हुआ।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां,
   -१९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २६
4. In any case, what is necessary is that we should rigidly practice non-violence and set a better example to the masses than we have yet done. Our was even against the existing system, of government must be a war without an enemy, and we should certainly practice far more tolerance towards each other, whether those opposed to us are No-Changers or Swarajists, and whether they are Hindus or Muslims.
   Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali. Vol. II, Edited by. Afzal Iqbal, page no. 209, 210.

सफल बनाने अथक प्रयास किया।[१] और देशवासियों के हृदय में स्वतन्त्रता की अग्नि जागृत की एवं आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की रुचि उत्पन्न की।[२]

मौलाना मुहम्मद अली ने असहयोग आन्दोलन को तीव करने के लिये उलामाओं के माध्यम से फ़तवे दिलाकर, भारतीय मुस्लिम सैनिकों का ब्रिटिश सरकार की सेना में नौकरी करना गुनाह सिद्ध कराया एवं उनसे सेना की नौकरी त्यागने की प्रार्थना की।[३] इसके अतिरिक्त आपने देशवासियों से विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार एवं स्वदेशी खद्दर के प्रयोग

---

1. Mahatma Gandhi and Ali Brothers initiated the Non-co-operation Movement and toured whole of India.
. Maulana Mohd. Ali, Birth Century celebearation, Souvener, Editors; Katam Lakshmi Narayan, Fareed Mirza, Dr. Anwar Moazzam .... An Articel. Mauana Mohd. Ali by Fareed Mirza, Hyderabad, 4, Dec. 1978.

2. Fashion together, flitting from place to place and province to province, touring with Mahatma Gandhi and a small party of fellow-workers.
My life a Fragement. Mohd. Ali, Edite. Afzal Iqbal, p. 150.
– आप गांधीजी को हमराह लेकर निकले और तमाम हिन्दोस्तान का दौरा किया जिसकी वजह से तहरीक तरके मवालात बिजली की तरह से हिन्दोस्तान में फैल गयी और तहरीक को निहायत क़ामयाबी हुई।
- हयाते जौहर - मुर. नश्तर बलरामी, पृ. २०,

2. अली ब्रादरान और महात्मा गांधी तहरीके आजादी के ऐसे सिपहसालार थे जिन्होंने मिलकर हिन्दोस्तान की तक़दीर बदलने का मुसम्मम इरादा कर लिया था। उन्होंने क़ौम के हरफ़र्द व वसर के दिल में हुर्रियत कौमियत की वह जूं जला दी थी जो रफ्ता रफ्ता शोलाए, ज्वाला बन गयी। तहरीक तरके मवालात और तहरीक ख़िलाफ़त को आवाम ने क़ौमी जेहाद समझ कर क़बूल किया।
– शमशीर बरहना मौलाना मुहम्मद अली जौहर, सै. नजरबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५४

3. करांची में हुए ख़िलाफ़त सम्मेलन में एक"फतवा" जारी किया गया जिसमें कहा गया था कि मुसलमानों के लिए ब्रिटिश सेना में भर्ती होना धर्म विरुद्ध है। इसके लिए अली बंधु - डॉ. किचलू, मौलाना हुसैन अहमद मदनी कुछ और मुसलमान नेताओं और श्री शंकराचार्य को गिरफ्तार किया गया। – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकिया– स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमानों का योग, सै. महमूद, पृ. २३५
– खिलाफ़त समिति ने मुसलमानों से कहा कि वे युद्ध में भरती न हों। इसके लिए अली बन्धुओं को गिरफ़्तार कर लिया गया। - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र . अनु. रामसेवक श्रीवास्तव, पृ. १३३,

के लिए अनुरोध किया। एवं चर्खा कातने की योजना को सफल बनाने के लिए स्वयं भी चर्खा साथ रख सूत कातते थे।[१] परिणाम स्वरूप विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया जाने लगा एवं खादी की उपयोगिता बढ़ी।[२]

इसके अतिरिक्त आपने असहयोग आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अंग्रेजी विद्यालयों के स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापनाओं के लिए भी अथक प्रयास किया एवं गांधी जी को साथ लेकर अलीगढ़ में मुस्लिम वर्ग की शिक्षा हेतु "जामेआ मिलिया इस्लामिया" नामक विद्यालय

---

1. मौलाना ने महात्मा जी के साथ - - - खद्दर और चरखे की तरफ़दारी और तहरीक में भी पूरा-पूरा काम किया और खद्दर प्रचार के लिए बहुत कोशिश की आपकी कोशिशों ने महात्मा गांधी के साथ इतना ज़ोर पकड़ा और इतना प्रोपेगन्डा हुआ कि हिन्दोस्तान के हर शहर व कस्बे में तमाम हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, हर क़ौम व हर मज़हब के लोग बड़ी खुशी के साथ शिरकत कर दिल से राजी होकर इस काम में लग गये।

   — हयाते जौहर - इशरत रामपुरी, पृ. ७७,

   — मुहम्मद अली ने गांधीजी की चरखा कातने की स्कीम को घर-घर जारी कराना चाहा वह स्वयं भी चरखा कातते थे।

   –"रजत" (हिन्दी त्रैमासिक) - मेरी कब्र स्वतन्त्र देश में होना चाहिए, मुहम्मद अली, द्वारा जहीर सिद्दीकी, पृ. ३२,

   — लाखों चरखे बांटे गये और घर-घर में सूत कतना शुरू हो गया।

   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन, ले. डॉ. ताराचन्द, पृ. ३२

2. विलायती कपड़े चले गये और देखते-देखते सिर्फ़ खादी ही खादी दिखायी देने लगी ।

   — " मेरी कहानी" — जवाहरलाल नेहरु, पृ० ५१

का शुभारंभ किया।[१] तथा बनारस में काशी विद्यापीठ नामक एक महान संस्था के उद्घाटन समारोह में गांधीजी के साथ सम्मिलित हुए।[२] इसके अतिरिक्त देश में बिहार और गुजरात विद्यापीठ जैसे अन्य राष्ट्रीय शिक्षण-संस्थानों की भी स्थापना हुई।[३]

---

1. मौलाना मुहम्मद अली बड़े दूरदर्शी विद्यावेत्ता थे। वह समझ गये कि उस समय के स्कूल व कालिज सिर्फ़ गुलाम कलर्कों को तैयार करने वाले कारखाने थे और उनसे क़ौम के लिए मुफीद तालीम की आशा करना खरगोश के सींग निकालना है। इसीलिए उन्होंने कोशिश करके अलीगढ़ के पास जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना की।
   - शीर्षक - मानवता और देशप्रेम का फरिश्ता - डॉ. राम मूर्ति रेणु, एम. ए. डी. लिट्.
   Maulana Mohamed Ali, Birth Centrury Celeberation, Souvener, Hyderabad, 4, Dec. 1978.
   मौलाना मुहम्मद अली मरहूम जामेआ मिल्लिया के बानियों में से और पहले शैखुल जामेआ है।— इसमें कोई शुबह नहीं कि मौलाना मुहम्मद अली ने इसके क़्याम के लिए जो अन्थक कोशिशें की वह किसी और के वश की न थी। यह उन्हीं की पुरजोश और मुख़लिसाना कोशिशों का नतीजा था कि इन्तेहायी नामुसहिद हालात के होते हुए जामेआ मिल्लिया न सिर्फ़ यह कि क़ायम हो गयी बल्कि मुल्क व कौम के दिलों में उसने मुमताज जगह हासिल कर ली।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं., मुदी- जियाउनहसन, फ़ारुख़ी, पृ. १९७,
2. महात्मा गांधी ने मेरे शहर बनारस में काशी विद्यापीठ नामक एक महान राष्ट्रीय शिक्षा संस्था का उद्घाटन किया। इस शिक्षा संस्था के - - - - उद्घाटन समारोह के अवसर पर महात्मा गांधी अली बन्धुओं मौलाना शौकत अली और मुहम्मद अली के साथ बनारस आये।
   १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - गांधीजी के आदर्श को हम भूल जायें श्री प्रकाश, पृ. ५०;
3. जामिया मिल्लिया इस्लामिया और काशी, बिहार और गुजरात विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय शिक्षण - संस्थानों की स्थापना हुई।
   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १३२,
   – अंग्रेज स्कूलों के बहिष्कार से जो नौजवान देश भक्त बाहर आये थे, उनको कॉमी शिक्षा देने के लिए उन दिनों बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ आन्धजातीय कलाशाला वगैराह जो संस्थायें निकली थी उनमें जामिया एक थी। - मानवता और देशप्रेम का फरिश्ता- डॉ. राममूर्ति रेणु, Maulana Mohamed Ali, Birth Centrury Celeberation, Souvener, Dec. 1978.

मौलाना मुहम्मद अली गांधी जी के साथ अलीगढ़ गये वहाँ आपने मुस्लिम छात्रों से अंग्रेजी कालेजों का बहिष्कार कर असहयोग आन्दोलन को तीव्र करने का अनुरोध किया। छात्रों ने आपके अनुरोध पर अंग्रेजी कालेजों का बहिष्कार किया और ४-५ माह तक पूर्ण सफल रहा।[१] हजारों विद्यार्थियों ने आन्दोलन को सफल बनाने के उद्देश्य से अंग्रेजी विद्यालयों का बहिष्कार किया एवं देशवासियों द्वारा नवस्थापित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश लेकर आन्दोलन को तीव्र गति प्रदान की। देशवासियों द्वारा स्थापित इन नव राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं में अध्यापक बन्धुओं ने भी नाममात्र का वेतन लेकर देश प्रेम का परिचय देते हुए आन्दोलन को सफल बनाने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।[२]

मौलाना मुहम्मद अली के अनुरोध पर बहुत से मुसलमानों ने ब्रिटिश सरकार की नौकरियां त्याग दी और कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर आन्दोलन को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया तथा छात्रों ने अंग्रेजी कालेजों का, सम्मानित व्यक्तियों ने उपाधियों का, वकीलों ने वकालत का

---

1. महात्मा जी उन्हें(मुहम्मद अली) साथ लेकर अक्टूबर १२ (१९२० ई.) को अलीगढ़ पहुंचे। यहीं से सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार आरम्भ हुआ जो चार-पाँच माह तक पूरे जोर पर रहा।

   – यंग इंडिया - महात्मा गांधी-

   – अनु - छविनाथ पाण्डे, बी.ए. एल.एल. बी. पृ. ५८

   — मौलाना मुहम्मद अली ने डॉ. ज़ियाउद्दीन की मज़ाहिमत के आगे तो सियर डाल दी लेकिन तुलाबा में उन्हें (मुहम्मद अली) खासी क़ामयाबी हुयी। उनकी ख़ितावत और ज़ोरे बयान ने नौजवानों के दिनों को मुसख़्ख़र कर लिया और तुलाबा की एक अच्छी खासी तादाद कालेज छोड़कर मौलाना की क़ायम की हुई क़ौमी यूनिवर्सिटी में दाख़िल हो गयी।

   - जामेआ मौला मुहम्मद अली न.१ - मुदीर - ज़ियाउलहसन फ़ारुख़ी उन-तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर - नज़ीरउद्दीन मीनाई, पृ. १४५, १४६,

2. हजारों विद्यार्थियों ने कालेजों और स्कूलों का त्याग किया और बहुत सी राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाएं खोली गयी, जहां अध्यापक नाममात्र के वेतन पर काम करते थे।

   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां,

   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. तारा चन्द, पृ. ३२

तथा देशवासियों ने विदेशी वस्त्रों का त्याग कर आन्दोलन को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।[१] इसके अतिरिक्त बहुत से देशप्रेमियों ने स्वतन्त्रता के लिए स्वेच्छा पूर्वक अपनी गिरफ्तारियां दीं।[२] तथा दिसम्बर एवं जनवरी में तीस हजार राष्ट्रवादी स्वतन्त्रता के लिए कारावास गये।[३]

असहयोग आन्दोलन की निरन्तर बढ़ती हुयी सफलता से संचित लार्ड रीडिंग ने आन्दोलन को असफल एवं दबाने के उद्देश्य से दमन चक्र तीव्र किया। फरवरी १९२२ ई. में गांधीजी ने बाइसराय को पत्र द्वारा बारडौली मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने की चेतावनी दी किन्तु ५ फरवरी को उत्तर प्रदेश में चौराचौरी नाम कस्बे में घटित घटना के कारण गांधी जी ने आन्दोलन स्थगित करने एवं बारडौली में सत्याग्रह

---

1. — नौकरियां छोड़ दी गयीं विद्यार्थियों ने स्कूल औप कालेज छोड़ दिये, बहुत से ख़िताब पाने वाले साहिबों ने गवर्नमेन्ट हिन्द के ऐजाजी ख़ितावात वापस कर दिये। ग़रज़ हर शहर और देश में आज़ादी के आशिक इस आज़ादी को पसंद करने वालों के नारयेहक़ पर बेखुद और बेइख़्तेयार अपने देश और ख़िलाफत की हिफ़ाज़त के लिए दौड़ भाग करते हुए दिखाई देने लगे। — हयाते जौहर - मुर. इशरत रामपुरी, पृ. ७७,
— इन दोनों (मु० अली व गांधीजी) की आवाज़ पर लोगों ने अपने ख़िताबात वापस कर दिये बहुत से लोगों ने अंग्रेजी हुकूमत की मुलाज़िमत छोड़ दी बुकाला ने विकालत तर्क कर दी और विदेशी माल का क़ामयाब मुक़ातेबा किया गया। - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली न. मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुखी,
उन. मो. मु. अली की सियासी ज़िन्दगी - डॉ. मुहम्मद शैफुद्दीन, पृ. ८६
2. मौलाना की सच्ची और असरवाली कोशिशें बहुत ज़्यादा कामयाब साबित हुयीं। हज़ारों तरके मवालात वाले हिन्दोस्तानी ज़ेलखानों में चले गये और हर शख़्स सच्चे दिल से तहरीक का तरफ़दार हो गया।
— हयाते जौहर, मुर. – इशरत रामपुरी, पृ. ७७,
3. कुछ ही महीनों में दौर में ३० हजार राष्ट्रवादियों को जेल में ठूंस दिया गया। श्री दास ने स्वैच्छिक ढंग से अपनी गिरफ्तारी करायी। बाद में मोती लाल नेहरू, लाजपतराय और गोपबन्धुदास भी उनके पीछे पीछे जेल में पहुंच गये- स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १३५,
दिसम्बर सन् १९२१ ई. व जनवरी १९२२ ई. में तरके मवालात के सिलसिले में ३० हजार अशख़ास जेल गये।
– मौलाना मुहम्मद अली याद में - मुर. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. १३३,

न करने का निर्णय लिया। जिसके कारण कांग्रेस की नेता दो भागों में बँट गये एवं खिलाफत में भी फूट पड़ गयी। जिसका लाभ उठाकर अंग्रेजों ने गांधी जी को १० मार्च १९२२ ई. को गिरफ्तार किया।[1] और उन्हें अपराधी घोषित कर ६ माह का कारावास दिया।[2] और इस प्रकार यह आन्दोलन मार्च १९२२ ई. को समाप्त हो गया किन्तु फिर भी थोड़ा बहुत सन् १९२४ ई. तक चलता रहा।[3]

---

1. रीडिंग अब बड़े कदम उठाने के लिए कटिबद्ध था। दमन चक्र पूरी तेजी से चलाया गया। - - - गांधीजी द्वारा फरवरी में लिखे एक पत्र में यह प्रकट कर दिया गया कि - - - वे बारडौली में सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करेंगे। अभाग्यवश ५ फरवरी को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के एक छोटे कस्बे चौरीचौरा में - - - पुलिस वालों की प्रदर्शनकारियों से भिड़न्त हो गयी।- - - क्रुद्ध भीड़ ने थाने में आग लगा दी और उसमें बन्द लोग व सामान जलकर राख हो गये।- - - इस नैतिक सिद्धान्त के उल्लंघन से गांधीजी को आघात पहुंचा।- - - उन्होंने आन्दोलन को स्थगित करने और बारडौली में सत्याग्रह करने का फैसला किया।- - - आन्दोलन के एकाएक रोक देने से कांग्रेस में गड़बड़ी फैलनी स्वाभाविक थी - - - नेता दो भागों में बंट गये— ख़िलाफ़त आन्दोलन कारियों में भी फूट पड़ गयी। इस फूट का फायदा उठाकर सरकार ने — गांधीजी को १० मार्च को गिरफ्तार किया गया।
   — १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झाँकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन डॉ. - ताराचन्द, पृ. ३८ से ४० तक
   — १० मार्च, १९२२ को गांधीजी को गिरफ्तार कराया और उन पर सरकार के विरुद्ध द्वेष फैलाने का अभियोग लगाया - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १३६,
2. इसके कुछ ही दिनों बाद महात्मा गांधी भी गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें ६ साल की सज़ा हुई।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां-
   शीर्षक - गांधीजी के आदर्श हम भूल न जाएं - श्रीप्रकाश, पृ. ५३,
   – अदालत की निगाह में कानून तोड़ने और उसकी आत्मस्वीकृति करने व्यक्ति गांधी को ६ साल की सजा दी जाती है।
   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १३८
3. न केवल भारत के किन्तु संसार के इतिहास का यह पहला अहिंसात्मक विद्रोह वास्तव में मार्च, १९२२ में समाप्त हो गया था लेकिन यह १९२४ तक थोड़ा बहुत चलता ही रहा।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां - १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. ४४.

गांधीजी की गिरफ्तारी के समय मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" बेतुल कारागार में थे। अगस्त १९२३ ई. में कारागार से मुक्त होने के पश्चात् आपने देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं एक छोटे से कारागार से निकल कर बड़े कारागार में आ गया हूं।[१] आपने देश में व्याप्त हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक घटनाओं के प्रति दुख प्रकट करते हुए दोनों सम्प्रदाय के लोगों से आपसी भेदभाव भुलाकर तथा एक दूसरे के प्रति विश्वास एवं प्रेम रखते हुए कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की स्वतन्त्रता के लिए अथक प्रयास करने का अनुरोध किया।[२] इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने मुस्लिम भाइयों में भी ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति घृणा के भाव जागृत कर उनसे गांधी जी को यरवदा कारागार से मुक्त कराने का अनुरोध किया।[३]

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" का यातनापूर्ण जीवन २६ सितम्बर १९१४ ई. के "कामरेड" में प्रकाशित निबन्ध "च्वाइस आफ दि तुर्क्स" जो उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में तुर्कों के समर्थन में लिखा था और जिसके फलस्वरूप

---

1. मुहम्मद अली ने रिहाई के बाद प्रेस के नुमांइदे को एक बयान दिया जिसमे कहा कि - मैं एक छोटे जेल से निकल कर बड़े जेल खाने में आ गया हूं। मुझे बड़ौदा जेल की कुंजी की तलाश है ताकि मैं गांधीजी को रिहा कर सकूँ और इसके हुसूल इनहिसार आज़ादी पर है।
   — सीरते मुहम्मद अली
   -मुर. रईस अहमद ज़ोफ़री, पृ. ३५०
2. "मुहम्मद अली ने हिन्दोस्तान के मुसलमानों को अंग्रेज दोस्ती और गुलामी से नुफूर कर दिया। मुसलमानों और हिन्दुओं के दरिम्यान जो फ़ासला था उसे मिटाया और जंगे आज़ादी में मुसलमानों को हिन्दूओं के साथ शाना व शाना खड़ा कर दिया।"
   – मौलाना मुहम्मद अली: शख्सीयत और ख़िदामात - मु. सै. नज़रबर्नी, उन: जौहर की शख़्सीयत अदबी और ग़ैरे अदबी - सै. हामिद, आई. ए. एस. पृ. १७५,
3. दोस्तों अगर हमें अपने सरदार (गांधी जी) से कुछ भी मुहब्बत है तो आओ आज उस काम को जिसे अब तक नहीं किया गया, कर लें और अपनी क़ौम की मदद से मुल्क को आज़ाद करा लें और इस बड़े बासटियल (यह वह मशहूर किला था जिसमें इन्क़लाबे फ्रान्स के ज़माने से जम्हूरी क़ैदी बन्द थे) को तोड़ डालें जिसमें महात्मा गांधी और उनके हजारहा पैरों क़ैद हैं।
   - खुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, बी.ए. पृ. १३७,

ब्रिटिश सरकार द्वारा कामरेड की जमानत जब्त की गयी थी, से ही प्रारम्भ हो जाता है।[१] क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली ने यह निबन्ध तुर्कों के समर्थन में ४० घन्टों की निरन्तर कठिन परिस्थितियों में लिखा था।[२] जिसका आपके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और आप अस्वस्थ हुए। इसके साथ ही आप जियावीतीस के भी मरीज थे।[३]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर के गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर डॉ. मुख्तार अहमद साहब अंसारी एवं हकीम अजमल खां साहब ने आपको मानसिक कार्य (समाचार पत्रों का सम्पादन आदि) त्याग कर अपनी जन्म भूमि रामपुर जाकर पूर्णतया विश्राम करने का सुझाव दिया। अतः मौलाना मुहम्मद अली १५ अप्रैल, सन् १९१५ ई. को रामपुर आये।[४] आपके

1. The security deposited for my printing press was declared forfeited on account of an article that had appeared in the Comrade.
... My life a Fragement : Mohamed Ali.
Edited By : Afzal Iqbal, page no. 62.
2. That article had been written under the stress of a great crisis,..... I had satup for forty hours to write twenty fateful calumns, fare going sleep and rest and almost all food, except some very strong coffee which I seldom used to take.
My life a Fragement, by. Mohamed Ali,
Edited by : Afzal Iqbal, page no. 63.
— २६ सितम्बर सन् १९१४ ई. के कामरेड में "च्वाइस आफ दी तुर्क्स" शाये हुआ इसके फौरन बाद कामरेड की ज़मानत ज़ब्त हुई और अखबार बन्द हो गया। — मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उन रोजनामा हमदर्द - मुस. अब्दुल माज़िद दरियाबादी, पृ. १३५
3. मौलाना मुहम्मद अली जियाबीतीस के मरीज थे।
– यादों की दुनिया मुसन्निफ़ - यूसुफ हुसैन खां पृ. २७१
4. मुहम्मद अली ने फिर जियाबीतीस की शिकायत महसूस की और डॉ. मुख्तार अहमद साहब अन्सारी और हकीम अजमल खां ने आपको यह मशवरा दिया कि आपने फ़ौरन सारे दिमाग़ी काम न छोड़े तो आपकी ज़िन्दगी को ख़तरा है। इस मशवरे के बाद मुहम्मद अली रामपुर गये कि वहां तबादलये आब वहवा का ख़्याल भी था और वतन की कशिश भी – सीरते मुहम्मद अली, रईस अहमद जाफ़री,पृ. २४८,
... The warry and the additional work and constant travelling involved in the press Act litigation at calcutta and then at Lahore had played have with my health and my Doctors, cheerfully guaranted my death with in an easily measurable distance of time if I had not take the 'long leave'.
My life a Fragement : Mohamed Ali, Elited by Afzal Iqbal, page no. 64,65.

आने के बाद डायरेक्टर जनरल पुलिस नवाब रामपुर के पास आये और उनकी उपस्थिति में आपसे कानपुर मस्जिद घटना से संबंधित रोषपूर्ण वार्तालाप किया। डायरेक्टर जनरल पुलिस के जाने के पश्चात् आपको सूचित किया गया कि आप बिना नवाब रामपुर की अनुमति के रामपुर से बाहर नहीं जा सकते।[१] और इस प्रकार मौलाना मुहम्मद अली जौहर सर्वप्रथम अपनी ही जन्मभूमि रामपुर में अपने ही शुभचिंतक नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब द्वारा नजर बन्द किये गये।[२] क्योंकि नवाब रामपुर हामिद अली खां ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक एवं शुभचिंतक थे और इंग्लैण्ड की महारानी द्वारा "अंग्रेजी साम्राज्य का प्रियपुत्र" नामक उपाधि से सम्मानित किये गये थे।[३] इसीलिए नवाब रामपुर ने मौलाना मुहम्मद अली को अंग्रेजों की इच्छानुसार एवं उन्हें प्रसन्न करने के उद्देश्य से रामपुर में, बीमारी की स्थिति में नज़रबन्द किया।[४]

---

1. मौलाना मुहम्मद अली को जिन हालात से गुज़रना पड़ा इसकी वजह से इनकी सेहत ख़राब हो गयी इसलिए १५ अप्रैल, सन् १९१५ ई. को ढाई माह की रुख़सत लेकर आराम करने के लिए अपने वतन रामपुर चले गये।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उन. रोजनामा हमदर्द - मुस. - अब्दुल माजिद "दरियाबादी", पृ. १३५

2. रामपुर पहुंचे ही थे कि डायरेक्टर जनरल पुलिस सूबा मुलतहिदा नवाब साहब रामपुर के पास आये और नवाब साहब की मारिफ़त आप तलब किये गये। वहां आपसे कानपुर के क़जिये के मुतअल्लिक सवालात किये गये और इस दौरान में शख़्त गुफ़्तगू हो गयी। डायरेक्टर जनरल के जाने के बाद आपको (मु. अली) यह बताया गया कि आप नवाब साहब की बग़ैर इजाज़त रामपुर से नहीं जा सकते । गोया दूसरे मानों में आप नज़रबन्द किये गये— सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २४८,

3. नवाब साहब रामपुर चूंकि "फ़रज़न्दे दिलपेजीरे दौलते इंग्लेशिया" (अंग्रेजी सल्तनत के प्यारे बेटे) के ख़िताब से नवाज़े गये थे इसीलिए यह कुयुद व हुदुद ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की वफ़ादारी के सिलसिले में हो सकती है।– मुहम्मद अली और रियासत रामपुर - मुस. ज़हीर सिद्दीकी, स्वीनियर, पृ. ९३,

4. गवर्नमेन्ट अंग्रेजी का कोई हुक्म न था, सिर्फ अंग्रेजों की खुशनुदी हासिल करने के लिए उन्होंने यह काम किया था। – कौमीजंग, २२ जून ८३ पृ. ४.

मुहम्मद अली की बिमारी का समाचार ज्ञात होने पर मौलाना शौकत अली साहब उनको लेने के उद्देश्य से रामपुर आये।[१] और उन्होंने रामपुर नवाब से मुहम्मद अली के स्वास्थ्य सुधार के उद्देश्य से उन्हें देहली होते हुए मसूरी ले जाने की प्रार्थना की और १४ घंटे की रामपुर में नज़रबन्दी के उपरान्त मौलाना मुहम्मद अली अपने भाई शौकत अली साहब के साथ १३ मई सन् १९१५ ई. को देहली आये।[२] देहली आने के २ दिन पश्चात ही दिनांक १५ मई १९१५ ई. को देहली के निकट महरौली में आपको नज़रबन्द कर दिया गया। आपके नज़रबन्द होने के बाद कुछ माह तक हमदर्द दैनिक उर्दू समाचार पत्र प्रकाशित होता रहा तत्पश्चात् १० अगस्त सन् १९१५ ई. को बन्द हो गया।[३] महरौली में नजरबन्द मुहम्मद अली से देहली निवासियों का आकर मिलते रहना ब्रिटिश सरकार को अच्छा नहीं लगता था इसलिए उसने आपको एक माह पश्चात् महरौली

---

1. आपकी (मु. अली) अलालत की ख़बर सुनकर मौलाना शौकत अली देहली से रामपुर गये।
   – सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २४९,
   — रामपुर के गर्म मौसम में मिस्टर मुहम्मद अली की सेहत दुरुस्त न हो सकी और हिजहाइनेस (नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब) ने उनको मसूरी जाकर रहने की इजाज़त दे दी।- - - शौकत अली के हमराह जिन्होने हिजहाइनेस से बहुत कुछ कह सुनकर उनको इजाज़त दिलवाई थी मिस्टर मुहम्मद अली देहली वापस आये।
   — सिलसिला हालाते नज़रबन्दाने इस्लाम नम्बर एक
   – शौकत अली व मुहम्मद अली साहबान की नज़रबन्दी, पृ. ४४,
2. ग़ालिबन १४ घन्टे की पुरलुत्फ़ नज़रबन्दी के बाद आप रिहा हुए।
   — सीरते मुहम्मद अली - मुर. - रईस अहमद जाफ़री, पृ. २४८,
   – आराम करने के लिए अपने वतन रामपुर चले गये, लेकिन वहां नज़रबन्द कर दिये गये। कुछ दिनों के बाद बहालिये सेहत के लिए पहाड़ पर जाने की इजाज़त मिली चुनांचे अपनी सेहत के बारे में डा. अंसारी से मशवरा करने के लिए १३ मई (१९१५ ई) को देहली आये।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, उन. रोजनामा हमदर्द - मुस. अब्बल माजिद दरियाबादी। पृ. १३५
3. १५ मई (१९१५) को इन्हें (मुहम्मद अली, शौकत अली) देहली के क़रीब महरौली में नज़रबन्द कर दिया गया। इस नज़रबन्दी के बाद चन्द माह तक हमदर्द जारी रहा मगर १० अगस्त सन् १९१५ ई० को बन्द हो गया।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. १३५, उन – रोजनामा हमदर्द – मुस० अब्दुल माजिद ददियाबादी,

से अप्रैल सन् १९१५ ई. में लैन्सडौन भेज दिया।[1] तत्पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने मौलाना मुहम्मद अली जौहर के लैन्स डौन से छिन्दवाड़ा कारागार में भेज दिया। छिन्दवाड़ा कारागार में मुहम्मद अली ने साढ़े तीन वर्ष व्यतीत किये और इसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने आपको ८ जून सन् १९१९ ई. से २८ दिसम्बर सन् १९१९ ई. तक बेतुल कारागार में रखा।[2] और इस प्रकार मौलाना मुहम्मद अली जौहर अपने भाई मौलाना शौकत अली के साथ पांच वर्ष तक कारागार में रहे।[3] बेतुल कारागार से कारावास की अवधि को पूर्ण करने के पश्चात् अली ब्रादरान

---

1. मुहम्मद अली महरौली में नज़रबन्द थे— देहलीवालों को यह आसानी थी कि वह महरौली आकर मुहम्मद अली से मिल सकें — गवर्नमेण्ट को शायद उनकी (देहली वालों की) यह हरकत बुरी मालूम हुयी। इसीलिये उसने इन ख़तरनाक लोगों को महरौली से हटा दिया और लैन्सडौन भेज दिया।
   — सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईसअहमद जाफ़री, पृ. २५०-२५१,
2. ज़्यादा अरसा न गुज़रा था कि मौसमे सरमा शुरू हो जाने की वजह से नज़रबन्दों (अली ब्रादरान) को छिन्दवाड़ा भेज दिया गया। – सिलसिला हालाते नजरबन्दाने इस्लाम नम्बर एक - शौकत अली व मुहम्मद अली साहिबान की नज़रबन्दी, पृ. ४५.

   —Ali Brothers were intended on 15th may, 1915 first in a small village Mehrauli, the site of famous Qutub Minar, then in Landsdowne, small hill station near Mussarie lastly in Chindwara in Central Provinces (now M.P.) where the passed $3\frac{1}{2}$ years for seven months from 8 June to 28 dec. 1919 the Ali brothers were prisoners in betul jail a district head quarters in central provinces.

   Maulana Mahmood Ali, Birth Century celeberation, Souvener, Hyderabad-4, An Article on Maulana Mohamed Ali by. Fareed Mirza.—
3. सन् १९१५ ई. से सन् १९१९ ई. के आख़िर तक वतन से दूर कुतबसाह व लैन्स डौन और छिन्दवाड़ा में नज़र बन्द रखा गया और बाद को तरक़्क़ी देकर छिन्दवाड़ा से बैतुल जेल ले गये। इस तरह ५ बरस तो अंग्रेज के हुकुम से पूरे ज़मानये जंग तक हम लोग वतन से दूर नज़रबन्द रहे और इस अरसे में ख़ूब ख़ाना वीरानी हुयी। — कौमी जंग, २२ जून १९८३,"ख़ाना वीरानी" – शौकत अली- द्वारा मुस्लिम आफ़ाक़ी पृ. ४,
   – छिन्दवाड़े से मुन्तक़िल करके इन्हें बेतुल जेल पहुंचा दिया यहां से नजरबन्दी के बजाय जेल की जिन्दगी शुरू होती है और जो थोड़ी बहुत आज़ादी बरायेनाम बाक़ी थी वह भी नज़रे ख़ातिरे सय्याद हो गयी।
   – सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २६८

अमृतसर आये और वहां पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सम्मिलित हुए।[१]

दिसम्बर १९१९ ई. में अमृतसर में होने वाले कांग्रेस एवं मुस्लिम के अधिवेशनों में सम्मिलित होने के पश्चात् मौलाना मुहम्मद अली, बड़े भाई शौकत अली के साथ परिवार एवं परिचितों से मिलने हेत रामपुर पधारे।[२] रामपुर आने पर "अली बन्धुओं" का भव्य स्वागत किया गया। रामपुर आने के कुछ दिनो के उपरान्त आपको अलीगढ़ कालेज की ओर से अधिवेशन में सम्मिलित होने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ किन्तु अली बन्धुओं के अलीगढ़ पहुंचने से पूर्व ही गवर्नर टेलर की ओर से हिजहाइनेस नवाब साहब रामपुर के पास सन् १९२० ई. में एक सन्देश आया कि वह मुहम्मद अली को अलीगढ़ जाने एवं ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कार्य करने से रोके।[३] गवर्नर टेलर की इच्छानुसार हिजहाइनेस नवाब रामपुर

---

1. गिरफ़्तारी और नज़रबन्दी के बाद दिसम्बर १९१९ ई. में कम ब बेश पांच साल के बाद दफ़अतन हैरत अंग्रेज़ तरीके पर इन खुलबुलाने असीर को क़ैदे क़फ़स से आज़ाद किया गया।- - - अली ब्रादरान रिहा होते ही सीधे अमृतसर पहुंचे कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग के इज़लास में शरीक हो और आप २९ दिसम्बर (१९१९ ई०) को अमृतसर पहुंचे।
   – सीरते मुहम्मद अली- मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७३, २७४
   – अली ब्रादरान जैसे शेरानेवतन और फ़िदाईयाने मिल्लत भी कम ब बेश पांच साल के बाद नज़रबन्दी और असीस से रिहा हुए।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर - सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. १०,
2. इन जलसों से हम चन्द दिन के बाद रामपुर गये जहां हमारे अज़ीज़ हमवतनों ने मुहब्बत का सबूत दिया। और अज़ीज़ों से मिल कर हम सभी खुश हुए।
   – क़ौमी जंग, २२ जून सन् १९८३, पृ. ४ उन० - ख़ाना वीरानी - मुर० मस्लिम आफ़ाक़ी मुस० - शौकत अली - रोजनामा ख़िलाफ़त, बम्बई १५ अप्रैल १९३०,
3. जबकि हम (अली बन्धु) अपने पुराने मादरे कालेज की दावत पर वहां जा रहे थे कि गवर्नर टेलर का हुक्मनामा कहिये या इशारा कहिये हिजहाइनेस नवाब रामपुर को मिला और उन्होंने हुक्म दिया कि अलीगढ़ जाना और सियासी काम छोड़ दो वरना वतन में आने की इजाज़त न होगी।
   – कौमी जंग, २२ जून सन् १९८३ पृ. ४ - उन- ख़ाना वीरानी- मुर. मुस्लिम आफाकी मुस. - शौकत अली,
   - - - सन् १९२० ई. की इबतिदा ने सर हाइकोर्ट वी. टेलर से हिज हाइनेस नवाब रामपुर को पैग़ाम भिजवाया कि या तो अली ब्रादरान को अलीगढ़ जाने से रोक दिया जाये या उन्हें रामपुर से जिला वतन कर दिया जाये। - उन- मुहम्मद अली और रियासत रामपुर - मुस. ज़हीर सिद्दीकी, स्वीनियर १९८१, पृ. ९४,

हामिद अली खां ने अली बन्धुओं से एक सीमा में रहते हुए कार्य करने के लिए कहा अर्थात् अंग्रेजों के विरुद्ध कार्य न करने का सुझाव दिया किन्तु अली ब्रादरान इसके विपक्ष में थे।[१] अतः उन्होंने नवाब की इच्छानुसार कार्य करने में असमर्थता व्यक्त की जिसके कारण हामिद अली साहब अली बन्धुओं से रुष्ट हो गये और उन्होंने अली ब्रादरान को राज्य की सीमा से बाहर एवं भविष्य में राज्य की सीमा में प्रवेश न करने का आदेश दिया और अली बन्धुओं ने गवर्नर टेलर को बुरा भला कहकर रामपुर नवाब के आदेश का पालन किया[२] और हृदय में जन्मभूमि के प्रति असीम प्रेम लिये उसकी सीमा से बाहर चले गये।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर गांधीजी एवं अन्य साथियों सहित असहयोग आन्दोलन को तीव्र करने के उद्देश्य से मद्रास भ्रमण पर थे कि १४ सितम्बर, सन् १९२१ ई. को बाल्टेअर रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार

---

1. नवाब हामिद अली खां कुछ कुमूद व हुदूद में रह कर काम करने के लिए कहते थे। जिसके लिए अली ब्रादरान तय्यार न थे।
   - उन- मुहम्मद अली जौहर और रियासत रामपुर - मुस-जहीर सिद्दीकी, स्वीनियर १९८१, पृ. ९३,

2. उन्होंने (नवाब रामपुर श्री हामिद अली खाँ) हुकुम दिया कि अलीगढ़ जाना और सियासी काम छोड़ दो वरना वतन में आने की इज़ाज़त न होगी। हम (अली ब्रादरान) टेलर को बेनुक़त सुनाकर वतन छोड़ने पर मजबूर हो गये और अफ़सोस के साथ हुकुम की तामील की।
   – कौमी जंग २२ जून, १९८३,
   उन- ख़ाना वीरानी - शौकत साहब,
   मुर. - मुस्लिम आफ़ाकी, पृ. ४,

   –बहुकम हिजहाइनेस नवाब हामिद अली खां वालिए रामपुर अपने अली ब्रादरान मुद्दत से जिला वतन थे और शख़्त से शख़्त ख़ानगी जरूरत के वक़्त भी इस सरज़मीन पर कदम नहीं रख सकते थे।

   – मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ४

   अपने वतन रामपुर में क़दम रखने की उन्हें (मुहम्मद अली) इजाज़त नहीं दी।
   –उन. मौ. मु. अली और जामेआ मिल्लिया इस्मालिया - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. १९७,
   जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर - मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुक़ी।

कर लिये गये।[१] आपके अतिरिक्त मौलाना शौकत अली, स्वामी शंकराचार्य जी एवं अन्य साथी भी गिरफ़्तार करके करांची भेज दिये गये। करांची मेजिस्ट्रेट के सम्मुख ले जाने के पश्चात् सभी कैदियों को सेशन अदालत में भेज दिया गया, जहां मुहम्मद अली को धारा ५०५ के अन्तर्गत दोषी सिद्ध कर २ बरस का कठोर कारावास दिया गया।[२] २ बरस के कारावास की अवधि को पूर्ण करने के पश्चात् मौलाना मुहम्मद अली जौहर २९ अगस्त सन् १९२३ ई. को कारागार से मुक्त कर दिये गये।[३] इसी वर्ष सन् १९२३ ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का को कनाडा में अधिवेशन होना था जिसके लिए सर्वसम्मति से आप अध्यक्ष मनोनीत किये गये और २८ दिसम्बर सन् १९२३ ई. को आपने कोकनाडा में होने वाले

---

1. Maulana Mohamed Ali was arrested on September 1921 at the Railway station of Waltair when he was travelling with Mahatma Gandhi on their way to Madras.
.. Maulana Mohamed Ali, Birth Century celeberation, Souvenir, Dec. 1978, Hyderabad-4,
An Article on Maulana Mohamed Ali, by, Fareed Mirza.
—मौलाना शौकत अली, हुसेन अहमद, निसार अहमद, पीर गुलाम मुजिदिद साहिबान भी गिरफ़्तार करके करांची लाये गये और स्वामी शंकर आचार्य जी को भी गिरफ़्तार करके वहीं पहुँचा दिया गया।— कराँची में सबसे पहले मेजिस्ट्रेट के रूबरू इन हज़रात का मुक़द्दमा पेश हुआ।- - - - -
मेजिस्ट्रेट ने बारी बारी हर जुर्म पर मुकदमा चलाया अदालती कार्यवाही करके मुहम्मद अली और उनके रुफ़का को सिशेन सुपुर्द कर दिया- - - - -
मुलज़िम नम्बर एक मुहम्मद अली मैं (जज) तुम्हें दफा ५०५ ताज़िराते हिन्द का मुज़रिम पाता हूँ और दो बरस क़ैद व मश क़्त की सज़ा देता हूं।
– सीरते मुहम्मद अली, मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. ३३४-३४०,
2. कराँची दौरा जज के न्यायालय इन पर कई अपराध लगाये गये। इनमें से दफा १२० और १३१ (षडयन्त्र रचना और बलवे में सफलता देना) जो सबसे कड़े थे वो तो ठहर न सके पर गौण आक्षेपों अर्थात् दफा ५०५ दफा १०९ और दफा ११७ (बलवा कराने के उद्देश्य से झूठी बातें फैलाना पर इनको कड़े दण्ड दिये गये।
– यंग इंडिया - महात्मा गांधी, पृ. ८४
अनु. छविनाथ पाण्डेय बी.ए. एल.एल.बी,
3. १४ सितम्बर सन् १९२१ ई. को मौलाना दोबारा गिरफ्तार कर लिये गये और मुक़दमे के बाद २ साल की सज़ा मिली। २९ अगस्त, सन् १९२३ ई. रिहा हुए।
–मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ, मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी पृ. १३५,

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्षीय पद सुशोभित किया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर सन् १९२३ ई. में २ साल के कारावास से मुक्त होकर अपनी जन्मभूमि रामपुर जाना चाहते थे, किन्तु नवाब रामपुर श्री हामिद अली खां साहब द्वारा सन् १९२० ई. में लगाये गये "रामपुर प्रवेश प्रतिबन्ध" के कारण इच्छा होते हुए भी न जा सके।[२] और ११ वर्ष तक आप परिवार के बालक बालिकाओं से केवल रेलवे स्टेशन के "वेटिंगरूम" में ही वर्ष में एक दो बार मिल लिया करते थे और इतना ही नहीं संबंधियों की मृत्यु होने पर भी आपको नगर प्रवेश की अनुमति नहीं थी। इसीलिए अली ब्रादरान आँखों में दर्शनों की आस एवं हृदय में दर्द लिए दूर से ही मृतकों के लिए प्रार्थना कर लिया करते थे।[३]

हृदयहीनता की सीमा यह थी कि मरणासन्न बी अम्मा को भी देखने की उन्हें अनुमति नहीं दी गयी और मरणासन्न अवस्था में ही बी अम्मा को पालकी में बैठकर अपने पुत्रों से मिलने स्टेशन आना पड़ा।[४]

---

1. In December, 1923 the annual session of the Congress was held at Coconada in the south. Maulana Mohamed Ali was the president. Jawahar Lal Nehru, An Autobiography, page no. 117
   - दिसम्बर सन् १९२३ ई. में कांग्रेस का सालाना इजलास कौकनाड़ा (दकन) में हुआ मौलाना मुहम्मद अली सदर थे। –
   मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. १३५,
2. रामपुर उस दिन से अब तक न जा सके।
   उन- मुहम्मद अली जौहर और रियासत रामपुर, मुस. - जहीर सिद्दीकी, स्वीनियर १९८१, पृ. ९४,
3. इस ग्यारह बरस के अरसे में सिवा बच्चे और बच्चियों से रेल के "वेटिंग रूम" में साल में एक या दो मर्तबा मिलने के ग्यारह बरस तक अपने घरों को देखना नसीब नहीं हुआ। न अज़ीज़ों की क़ब्र पर फ़ातहा पढ़ सके दूर से हाथ उठाकर दुआ मांग लिया करते थे और उनकी याद से जब कामों से फ़ुरसत मिलती थी दिल तड़पा लिया करते थे।
   - कौमी जंग, २२ जून १९२३ ई. पृ. ४
   रवाना वीरानी, मौलाना शौकत अली, मुर. मुस्लिम आफ़ाक़ी।
4. बी अम्मा जब क़रीबुलमर्ग (मरने के करीब) थीं तो इस ख़्याल से कि हम पुराने आक़ा के मुकाबले में खड़े हो जाये और उनके हुकुम को पसेपुस्त (पीठ के पीछे) डालकर घर में न जायें वा बजूद डाक्टरों और तबीबों के इख़्तेलाफ के मिलना और ३ मील पालकी में स्टेशन जाना तक़रीबन मौत के मुतरादिफ़ होगा। उन्होंने इसकी परवाह न की बल्कि अहतेजाजज दवा पीना और ग़िज़ा को तर्क कर दिया। तब मजबूर होकर उनको पालकी में स्टेशन ले आये और एक दिन वेटिंग रूम में रहे। – उन - खाना वीरानी, मुस. - शौकत अली, मुर- मुस्लिमआक़ाफ़ी, पृ. ४,

मौलाना मुहम्मद अली की आर्थिक स्थिति दिन प्रतिदिन शोचनीय होती जा रही थी और वे ऋणग्रस्त होते जा रहे थे।[१] इसके अतिरिक्त आपका स्वास्थ्य भी दिन प्रतिदिन गिरता ही जा रहा था क्योंकि जियाबीतीस की बीमारी में कोई विशेष सुधार न होने के कारण वह आपके लिए अत्यन्त ही कष्टप्रद थी।[२]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर देहली में निराश्रय और निरावास थे। हमदर्द तथा कामरेड का कार्यालय भवन तथा मुद्रणयन्त्र सब समाप्त हो चुके थे।[३] इसीलिए मौलाना मुहम्मद अली को अपने दामाद माजिद अली खां साहब के मकान में शरण लेनी पड़ी।[४] इसके अतिरिक्त आपको

---

1. मुहम्मद अली की माली हालत भी रोज़ व रोज़ ज़िब्र से ज़िब्रतर होती जा रही थी।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ५,
   – मुहम्मद अली की माली और ख़ानगी परेशानियां अब हद्दे कमाल को पहुँच रही थी। क़र्ज़ें से लदे हुए थे। हमदर्द से ज़ेरबारी और बढ़ती ही जा रही थी।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १०,
2. इस असना में मौलाना मुहम्मद अली का ज़िबियातिस (ज़ियाबीतीस) का मरज़ ज़्यादा तकलीफ देय हो चुका था।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. २०४,
   – मौलाना ज़िबियातीस के मरीज़ थे।
   – मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात- मुर. सै. नजरबर्नी, पृ. ६२,
3. मौलाना अब देहली में बेघर थे। कूँचये चेलान का क़दीम वसी व शानदार मकान जिसमें हमदर्द व कामरेड का दफ़्तर प्रेस वग़ैराह सब कुछ था वह अब हाथ से निकल चुका था। शायद उसका कुछ किराया भी मौलाना के ज़िम्मे बाक़ी रह गया था।
   – जाती डायरी के चन्द वर्क - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ८३/४
   – बड़ा नाजुक वक़्त था हिन्दोस्तान का ज़र्रा ज़र्रा मुहम्मद अली का मुख़लिफ़ हो रहा था। मुहम्मद अली की ज़िन्दगी इस वक्त के शख़्ततरीनदौर से गुज़र रही थी। माली मुश्किलात के सबब हमदर्द बन्द हो चुका था। मुस्लिम प्रेस का बड़ा हिस्सा इनका मुख़लिफ़ था।
   – निगारिशाते मुहम्मद अली, मुर. रईस अहमद जाफरी, पृ. २७४, २७५,
4. मौलाना अब वहां से बहुत दूर अपने दामाद माजिद ली खां के मकान मक़ाम राजपुर रोड पर मुक़ीम थे।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ८४,

जीवन में अनेक रोगों का भी शिकार होना पड़ा।[१] मौलाना की एक आँख बेकार हो चुकी थी तथा दूसरी भी जवाब दे रही थी। इसके साथ ही गठिया बीमारी के लक्षण भी उनके शरीर में उभरने लगे।

मौलाना मुहम्मद अली के जीवन में चारों ओर से विपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े उनके जीवन में आने वाला हर समय उनके लिए नयी विपत्तियां ही लेकर आता था।[२] सन् १९२३ ई. में जब आप बीजापुर कारागार में २ वर्ष का कठोर कारावास भोग रहे थे तभी आपको अपनी मंझली पुत्री आमिना बेगम की शोचनीय बीमारी की सूचना प्राप्त हुई किन्तु कारागार में बन्दी होने के कारण आप अपनी मरणासन्न पुत्री से न मिल सके और तड़पते ही रह गये।[३] और इस प्रकार तुर्की के सुल्तान का समर्थन करने

---

1. उनकी एक आँख नाकारा हो चुकी थी, दूसरी आँख की बीनाई जवाब दे रही थी। गठिया के असारात भी तारी (छाये हुए) थे। ज़ियाबीतीस के हमले बड़ी सिद्दत से हो रहे थे।
   – निगारिशाते मुहम्मद अली, मुर. - रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७५,
   मौलाना की सेहत ख़राब मुद्दत से चली आ रही थी। अब ख़राबतर हो गयी थी। अस्ल मरज़ ज़ियाबीतीस का था। शकर पेशाब से बकसरत खारिज हो रही थी, और अब अलबियोमेन वगैराह भी ख़ारिज होने लगे थे।
   – ज़ाती डायरी के चन्द्र वर्क - मुर. - अब्दुल माजिद दरियाबादी- पृ. २१.
2. - अब ज़िन्दगी का जो भी साल गुज़रता था, मुसीबतों और दुखदर्द का दौर मुहम्मद अली के लिए पिछले साल से ज़्यादा ही लाता था।
   – ज़ाती डायरी के चन्दवर्क : मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. १०२,
   – कोई एक मुसीबत हो तो बयान की जाये। शहीद क़रज़दारी, शदीद जिस्मानी बीमारियाँ, शदीद दिमाग़ी अफ़कार, महबूब लड़की की अलालत, ज़ाती मुसीबतों से लेकर क़ौमी व मिल्ली मुसीबतों तक कौन सी बला थी, जिसका शिकार यह एक जात (मुहम्मद अली) नहीं हो रही थी।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ९५,
3. सन् १९२३ ई. के मई जून में बीजापुर जेल में क़ैदे शख़्त काट रहे थे। फिर इधर दिल टर्की और हिन्द के कौमी व मिली मुआजिमाल में अटका हुआ, उधर होश जवान वहीती लड़की के मरजूल मौत की खबरें पाकर उड़े हुए।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २३१, २३२,
   – मुहम्मद अली को जेल में अपनी मझली साहिबज़ादी आमिना बेगम की अलालत की तस्वीरा अंग्रेज़ इत्तला मिल चुकी थी।
   – सीरते मुहम्मद अली मुर. रईस अहमद जाफ़री, पृ. ३५०,

के उपलक्ष में लिखे गये च्वाइस आफ दि तुर्क्स निबन्ध के कारण मौलाना मुहम्मद अली अंग्रेजों के कोपभाजन के शिकार हुए। और इसीलिए आपको अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त अनेकों कठिनाइयों एवं यातनाओं का सामना करना पड़ा।[१]

1. सुन्नी मुसलमानों के खलीफा तुर्की के सुलतान का जोरदार समर्थन करने की नीति से कई भारतीय मुस्लिम नेताओं को भारी कीमत चुकानी पड़ी। मुहम्मद अली, शौकत ली, अब्दुल कलाम आजाद और महमूदुल हसन इन मुस्लिम नेताओं में अग्रणी थे, जिन्हें दमन का शिकार होना पड़ा।
१९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
१९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २२,

चतुर्थ अध्याय

मुहम्मद अली तथा ख़िलाफत आन्दोलन

(अ) ख़िलाफत आन्दोलन में मुहम्मद अली का सक्रिय भाग
(आ) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति के रूप में मुहम्मद अली के कार्य
(इ) मुहम्मद अली का गोलमेज कान्फ्रेन्स में भाषण

मौलाना मुहम्मद अली द्वारा समर्थित प्रसिद्ध ख़िलाफत आन्दोलन की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ख़िलाफत आन्दोलन सन् १९१९ ई. में प्रारम्भ हुआ तथा इस आन्दोलन के सर्वेसर्वा अली बन्धु ही थे। इस ख़िलाफत आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य समस्त संसार के मुसलमानों को एक सूत्र में बांधना था।[१] ख़िलाफत मुसलमानों के एक विशाल वर्ग का प्रेरक था। वे जानते थे कि ख़लीफ़ा की शक्ति का ह्रास मुसलमानों की स्थिति को निर्बल बना देगा।[२] ब्रिटिश प्रधान मन्त्रियों द्वारा मुसलमानों को उनके पवित्र स्थानों को बनाये रखने, तुर्कों की अखंडता तथा मुस्लिम राज्यों की स्वतन्त्रता के आश्वासन दिये थे।

---

1. १९१९ ई. में ख़िलाफ़त की तहरीक शुरू हुई, उसके रूहे रमा भी मौलाना मुहम्मद अली और उनके बड़े भाई शौकत अली थे। इस तहरीक का बुनियादी मक़सद यह था कि तमाम दुनियां के मुसलमानों को एक परचम तले जमा किया जाये।
   - उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल, मुस. साहिबज़ादा तजम्मुल अली खां, पृ. ११२,
2. ख़िलाफत को मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग अपना गुरू मानता था उसने महसूस किया कि खलीफ़ा की हैसियत का किसी भी रूप में दुर्बल होना साम्राज्य वादी आधिपत्य में रहने वाले देशों के मुसलमानों की स्थिति पर बुरा असर डालेगा।
   - स्वतन्त्र संग्राम- विपन चन्द्र, पृ. १२०,
   - ख़िलाफत का आधार यह था कि तुर्कों का सुल्तान मुसलमानों का ख़लीफ़ा अथवा धर्मगुरु था। ख़लीफ़ा होने के नाते जजीरत-उल-अरब स्थित इस्लाम के पवित्र स्थानों के प्रति उनके कुछ कर्तव्य थे। यह आवश्यक था कि सभी पवित्र स्थान उसी के निरीक्षण व नियन्त्रण में रहें।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ - १९२१ का असहयोग आन्दोलन डॉ. ताराचन्द, पृ. २९.

परन्तु विश्वयुद्ध की अवधि में की गयी इनकी अवहेलना से ख़िलाफत आन्दोलन को जन्म दिया।[१]

जलियांवाला बाग के नरसंहार से भारतीयों में आक्रोश और उत्तेजना व्याप्त थी। मुस्लिम ख़िलाफत के प्रचार से पूर्ण रूप से प्रभावित थे।[२] ख़िलाफत के औचित्य में गांधीजी को विश्वास था और उसकी (ख़िलाफत की) दृढ़भित्ति पर खड़े होकर उन्होंने असहयोग आन्दोलन का निर्णय लिया।[३] क्योंकि महात्मा गांधी के अनुसार ख़िलाफत हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए मिला एक दुर्लभ अवसर था, इसीलिए उन्होने इसका सदुपयोग किया।[४]

दिसम्बर सन् १९१९ ई. में बेतुल कारागार से मुक्त होने के पश्चात् अली-बन्धु अमृतसर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन के साथ ही हो रहे ख़िलाफत अधिवेशन में भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन

---

1. ब्रिटिश प्रधान मन्त्रियों - एस्क्यूथ और लायड जार्ज तथा ब्रिटिश वायसराय हार्डिंग ने इस्लामी पवित्र स्थानों, तुर्की राज्य की अखंडता और मुस्लिम राज्यों की स्वतन्त्रता का अश्वासन दिया था। लेकिन विश्वयुद्ध के दौराने उन्होंने बड़ी निर्लज्जता से इन आश्वासनों की अवहेलना की।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ- १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. २९,
2. और फिर १३ अप्रैल को जलियांवाला बाग की दुखद दुर्घटना घटी। पंजाब के लोग युद्ध के कर्ज़ और गवर्नर ओ डायर के सिपाही भरती करने के बर्बर तरीके से उत्तेजित थे। मुसलमानों पर ख़िलाफत के प्रचार का गहरा असर पड़ा था।
   स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२७,
3. गॉधीजी धीरे-धीरे उस खिलाफत आन्दोलन में खिंचे जा रहे थे जिसके मंच से उन्हें शीघ्र ही सरकार से असहयोग करने की घोषणा करनी थी।- - - और मानते थे कि खिलाफत की मांग न्यायोचित थी।
   - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२८,
4. अभी कुछ सप्ताह पूर्व ही उन्होंने (गांधीजी) अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन की अध्यक्षता की थी, जो मुसलमानों में उनकी लोकप्रियता की द्योतक थी।
   – १९२१ के सहयोग आन्दोलन की झांकियां,
   - १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डा. ताराचन्द, पृ. २३,
   – उनके लिए (गांधीजी) "खिलाफत आन्दोलन और मुसलमानों को एकता में बांधने का एक ऐसा सुअवसर था, जो सैकड़ों वर्षों में नहीं आयेगा।" - - - नवम्बर १९१९ में गांधीजी खिलाफत सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये।
   – स्वतन्त्रता संग्राम, विपन चन्द्र, पृ. १२९,

में सम्मिलित होने के पश्चात् एवं पं. मदन मोहन मालवीय के द्वारा डेलीगेट बनाये जाने के उपरान्त एवं कांग्रेस मन्च से प्रभावशाली भाषण देने के पश्चात सम्मिलित हुए।[१] और खिलाफत के सक्रिय कार्यकर्ता बने।[२]

२३ नवम्बर सन् १९१९ के देहली व २९ दिसम्बर १९१९ के अमृतसर में खिलाफत समिति द्वारा होने वाले अधिवेशनों में यह निर्णय लिया गया कि एक दल गठित किया जाये जिसका उद्देश्य विदेश भ्रमण कर खिलाफत के प्रति सहानुभूति प्राप्त करना एवं धर्म प्रसार हो तथा साथ ही ब्रिटिश उच्चाधिकारियों से सम्पर्क कर उनके द्वारा दिये गये आश्वासनों को पूर्ण कराना हो।[३] किन्तु इंग्लैण्ड जाने से पूर्व हिन्दू-मुस्लिम

---

1. दिसम्बर १९१९ ई. में मौलाना मुहम्मद अली व मौलाना शौकत अली बेतुल जेल से रिहा हुए उसी वक़्त अमृतसर में आल इंडिया नेशनल कांग्रेस का इजलास मुकर्रर था और उसी के साथ ख़िलाफत कान्फ्रेन्स भी हो रही थी- - दोनों भाई बराहेरास्त जलसागाह में पहुंचे।
   – तहरीके ख़िलाफ़तः क़ाजी मुहम्मद अदील अब्बासी।
   उन- मौ. मुहम्मद अली की रिहाई और इजलास कांग्रेस अमृतसर क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १०२,
2. तहरीके ख़िलाफ़त के बानी और रूह व रवा (आत्मा व दिल) मौलाना मुहम्मद अली थे।
   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर,
   मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी, उन- तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर - नजीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४५,
   मौलाना मुहम्मद अली का सबसे बड़ा कारनामा तहरीके ख़िलाफ़त को क़रार दिया जा सकता है।
   – स्वीनियर १९८१, प. ५७,
3. ख़िलाफत कान्फ्रेन्स में ब मक़ाम देहली व अमृतसर यह तजवीज़ पास की थी कि मुसलमान नुमाइन्दो का एक वफ़्द मुमालिके ग़ैरे मुस्लिम इंग्लिस्तान, अमेरिका, इराक, वग़ैराह जायें और वहां मुसलमानों के मज़हबी फ़राइज़ वाजिबात निहायत माकुलियत के साथ गोश गुज़ार करायें— और गवर्नमेन्ट को उसके मवाईद याद दिलाने थे, जो उसने अपनी निहायत वफ़ादार मुस्लिम रिआया से करके तोड़े थे।
   – सीरते मुहम्मद अली - रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७८, २७९,
   – २३ नवम्बर सन् १९१९ ई. को ख़िलाफ़त कान्फ्रेन्स का एक जलसा दिल्ली में बड़ी धूमधाम से मिस्टर फज़लुल हक़ (बंगाल के रहने वाले) की हिदायत में मुनअकिद हुआ। महात्मा गांधी भी इस कान्फ्रेन्स में शरीक हुए।
   – तहरीके ख़िलाफत मु. काजी मुहम्मद अली अब्बासी, पृ. १०२,

नेताओं का एक संयुक्त दल मौलाना मुहम्मद अली के मार्ग निर्देशन में तत्कालिक भारतीय वाइसराय चेम्सफोर्ड से नवम्बर १९२० ई. में मिला और उन्हें मुस्लिम सम्प्रदाय को दिये गये आश्वासनों को पूर्ण करने के बारे में ध्यान दिलाया। किन्तु वाइसराय द्वारा विपरीत उत्तर प्राप्त कर दल ने उनसे इंग्लैण्ड जाकर उच्च अधिकारियों से सम्पर्क करने की अनुमति प्राप्त की।[१]

दिसम्बर सन् १९१९ ई. के अमृतसर अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया कि ख़िलाफ़त और ज़जीरतुलअरब (एक स्थान का नाम) से संबंधित मुस्लिम वर्ग की समस्याओं के सन्दर्भ में एक दल मौलाना मुहम्मद अली के नेतृत्व में इंग्लैण्ड भेजा जाये।[२] मौलाना मुहम्मद अली ने लिये गये निर्णयानुसार एक फरवरी, सन् १९२० ई. को दल सहित यूरोपीय यात्रा

---

1. इस वफ़द से पेशतर एक वफ़द और हिन्दू मुसलमानों का मुश्तरका नुमाइन्दा बन कर लार्ड चेम्सफोर्ड वाइसराय हिन्द की ख़िदमत में मुहम्मद अली की सरकर्दगी में हाजिर हुआ था।

   – सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद जाफरी पृ. २७८, २७९,

   – १९२० ई. के प्रारम्भ में हिन्दुओं और मुसलमानों का एक संयुक्त प्रतिनिधि मण्डल वायसराय से मिला जिन्होंने स्पष्ट रूप में कह दिया कि ऐसी उम्मीद छोड़ देनी चाहिए। एक प्रतिनिधि मंडल उसके बाद इंग्लैण्ड गया।

   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२९,

   – जनवरी, १९२० में भारतीय मुसलमानों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने वाइस राय से भेंट की। वाइसराय ने कुछ कहा नहीं, लेकिन यह आश्वासन अवश्य दिया कि वह एक प्रतिनिधि मंडल को इंग्लैण्ड जाने की सुविधाएँ देंगे।–

   — १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ।

   - स्वाधीनता आन्दोलन में मुसलमानों का योग - सै. महमूद, पृ. २२५, २२६,

2. इजलास अमृतसर (दिसम्बर १९१९ ई.) में तय किया कि १५ जनवरी सन् २० ई. तक मसअलाये ख़िलाफ़त और जज़ीरतुल अरब (जगह का नाम) के मुतअल्लिक मुसलमानों के मुतालेबात पेश करने के लिए मौलाना मुहम्मद अली की सरकर्दगी में एक वफ़द इंग्लिस्तान भेजा जाये। इस वफ़द सेक्रेट्री हस मुहम्मद हयात मुकर्रर हुए।

   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी, उन- वफ़दे ख़िलाफत के साथ - जि. उल फ़ारुख़ी, पृ. ११८,

के लिए प्रस्थान किया।[१]

प्रतिनिधि मंडल ने सर्वप्रथम इंग्लैण्ड पहुंचकर वहाँ के सभी प्रमुख व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया।[२] मौलाना मुहम्मद अली इंग्लैण्ड के प्रधान मन्त्री लायड जार्ज से भी इस सन्दर्भ में मिले एवं मुस्लिम वर्ग को दिये गये आश्वासनों का स्मरण कराया।[३] किन्तु प्रतिनिधि मंडल को इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री लायड जार्ज से वार्ता करने के पश्चात् निराशा ही हाथ लगी क्योंकि लायड जार्ज ने प्रतिनिधि मण्डल को आशा के विपरीत उत्तर दिया।[४]

---

1. तहरीके ख़िलाफ़त के बानी और रूह व रवां मौलाना मुहम्मद अली थे। तुर्कों के मुस्तक़ बिल के बारे में हिन्दोस्तानी मुसलमानों को नुक़्तये नजर पेश करने के लिए मौलाना १९२० ई. में एक वफ़द लेकर यूरोप गये।
   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर,
   उन- तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर - मुस. नजीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४५,
   एक फरवरी (१९२०) ख़िलाफ़त कमेटी का वफ़द लेकर इंग्लिस्तान गये। – "तौकियाते जौहर" - मो. मुहम्मद अली जौहर, सेमिनार के मौके पर जनवरी सन् १९८३, पृ. ४,
2. सबसे पहले वफ़द जब इंग्लिस्तान पहुंचा तो वहाँ के तमाम जिम्मेदार लोगों से मुलाकात की और उन्हें अस्ल मज़हबी मसअला समझाने की कोशिश की।
   – सीरते मुहम्मद अली - रईस अहमद जाफ़री (मुर.) पृ. २८०,
3. ब्रिटिश सरकार मुसलमानों में सुलगती हुई रोष की चिनगारी से परिचित थी। अतः ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने मुसलमानों को शान्त करने के लिए यह आश्वासन दिया कि "एशिया माइनर और थ्रेस की उपजाऊ भूमि को, जहाँ की जनसंख्या में तुर्कों का भारी बहुमत है, तुर्की से छीनने का हमारा कोई इरादा नहीं है।" इससे भी पहले भारत सरकार यह आश्वासन दे चुकी थी कि मुसलमानों के पवित्र स्थानों की रक्षा की जायेगी।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ - स्वाधीनता आन्दोलन में मुसलमानों का योग
   - सै. महमूद, पृ. २२५,
4. एक प्रतिनिधि मंडल उसके बाद इंग्लैण्ड गया। लेकिन प्रधान मन्त्री लायड जार्ज ने संक्षिप्त और रूखा उत्तर दिया कि पराजित ईसाई शक्तियों के साथ किये जाने वाले बर्ताव से भिन्न बर्ताव तुर्की के साथ नहीं किया जायेगा।
   - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र पृ. १२९,
   - मिस्टर मु० अली लायड जार्ज वज़ीरे आज़म के हुज़ूर में बारयाब हुए।
   – सीरते मुहम्मद अली- मुर० रईस अहमद जाफरी, पृ. २८३,

प्रधानमन्त्री लायड जार्ज से आशा के विपरीत उत्तर प्राप्त कर मौलाना मुहम्मद अली जौहर प्रतिनिधि मण्डल सहित इंग्लैण्ड गये और इंग्लैण्ड में अपने जगह-जगह भाषण कर वहाँ के व्यक्तियों को ख़िलाफ़त के उद्देश्य एवं समस्याओं से संबंधित जानकारी दी एवं उन्हें प्रभावित कर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया।[१] और इसी संदर्भ में आप फ्रान्स, स्विटजरलैण्ड और इटली भी गये.। तपश्चात् मौलाना मुहम्मद अली ने "पापाये रोम" से भी सम्पर्क स्थापित किया एवं उन्हें भी ख़िलाफ़त के उद्देश्यों से अवगत कराया।[२]

जिस समय मौलाना मुहम्मद अली ख़िलाफ़त प्रतिनिधि मंडल सहित यूरोपीय भ्रमण कर रहे थे, तभी १५ मई सन् १९२० ई. को सेवरे में

---

1. वज़ीरे आज़म लायड जार्ज, लार्ड फिशर और दूसरे मुमताज़ लीडरों से मुलाकातें करके ख़िलाफ़त व जज़ीरतुल अरब के मसाईल और हिन्दोस्तानी मुसलमानों के जज़बात व मुतालेबात की वज़ाहत की।

   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर-जियाउल हसन फ़ारुखी,

   — उनवान - वफ़दे ख़िलाफ़त के साथ, ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, पृ. ११८,

   – वहाँ के तमाम जिम्मेदार लोगों से मुलाकात की और उन्हें अस्ल मज़हबी मसअला समझाने की कोशिश की फिर इकतिफ़ा नहीं किया, बल्कि मुहम्मद अली ने मुखतिलफ़ मक़ामात पर दौरे किये और जहाँ कहीं एक ज़रा सा भी मौक़ा मिल सका वहाँ उन्होंने तकरीर की और अपनी तरफ से कोई तरीका फ़िरो गुज़ास्त नहीं किया।

   –सीरते मुहम्मद अली- रईस अहमद जाफ़री, पृ. २८०,

2. हमको (मु. अली) अग़राज़े ख़िलाफ़त बज़रा और मुदब्बिरीन की मुलाक़ाती जलसों में तकरीरें करने और अहम तुर्कव अरब अशख़ास से मिलने के लिए इंग्लिस्तान, फ्रान्स, स्विटजरलैण्ड और इटली का पूरा दौरा करना पड़ता है। फ्रान्स से इंग्लिस्तान हमको ५ दफ़ा आना जाना पड़ा। फिर मुहम्मद अली ने पापाये रोम से मुलाकात की और उनके सामने भी अपने मकासिद का एक मुख़्तसर ख़ाका पेश किया।

   – सीरते मुहम्मद अली - मुर. रईस - अहमद जाफ़री, पृ. २८३

   – सन् १९२० ई. में जमईयते ख़िलाफ़त की तरफ से एक वफ़द का सरकर्दा होकर यूरोप जाना पड़ा और वुज़ाराये बर्तानिया, फ्रान्स व इटालिया व पापाये रोम से मिलना पड़ा।

   मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और खिदामात- मुर- सै. नज़रबर्नी, पृ. १५६,

तुर्की-शान्ति संधि प्रकाशित हुई, जो भारतीय मुसलमानों को ब्रिटिश सरकार द्वारा दिये गये आश्वासनों के विपरीत एवं अन्यायपूर्ण थी। फलस्वरूप इस सन्धि के प्रकाशित होने पर मुस्लिम वर्ग में अंग्रेजों के प्रति रोष जागृत हुआ।[१] क्योंकि इस सन्धि के अनुसार अंग्रेजों ने कांस्टंटिनपोल के अतिरिक्त अन्यायपूर्ण नीति के द्वारा तुर्की क्षेत्रफल एवं जनसंख्या में अत्यधिक कमी की थी।[२]

तुर्कों के साथ अन्यायपूर्ण ढंग से की गयी इस सन्धि के विरोध में भारतीय केन्द्रीय ख़िलाफ़त संस्था ने २८ मई, सन् १९२० को बम्बई में एक आयोजन किया। जिसमें मुसलमानों की मांगों को उचित ठहराते हुए ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने का निर्णय लिया।[३] एवं इसके अतिरिक्त खिलाफत संस्था की ओर से एक अन्य

---

1. १५ मई, १९२० ई. को सेवरे में हुई तुर्की - शांति - संधि की शर्तें प्रकाशित कर दी गयी। ये शर्तें बड़ी कड़ी थीं जिनसे मुसलमान बड़े क्षुब्ध हो उठे।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां,
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डा. ताराचन्द, पृ. २४
   -वायदा ख़िलाफी की इससे बड़ी मिसाल नहीं मिल सकती। मानवता और नैतिकता के आधार पर भारत के लिए आवश्यक था कि वह मुसलमानों की मांगों का समर्थन करें।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां – १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २९
2. सेवरेस की संधि की शर्तों का पता मई (१९२०) के मध्य तक चल गया। कांस्टेटिन पोल तुर्की के पास रह गया लेकिन उसके क्षेत्रफल और जनसंख्या में भारी कटौती हो गयी।
   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १२९,
   — तुर्की के अरब प्रान्त, - सीरिया और लेबनान, जुर्दान और ईराक को फ्रांस तथा ब्रिटेन के संरक्षण में रख दिया गया। फिलीस्तीन यहूदियों को बसने के लिए दे दिया गया और मिस्र को तुर्की से अलग करके, ब्रिटेन ने अपना संरक्षित प्रदेश बना दिया।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां,
   शीर्षक - १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २९,
3. केन्द्रीय खिलाफत समिति की २८ मई को बम्बई में एक बैठक हुयी। इसमें मुसलमानों की मांगों को उचित ठहराया गया और अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन छेड़ने के निर्णय की घोषणा भी की गई।
   – १९२१ ई. के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. २४

आयोजन इलाहाबाद में ९ जून, १९२० ई. को किया गया तथा उसमें असहयोग आन्दोलन को चार चरणों में प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। निर्णय में ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त सम्मानित उपाधियों का परित्याग, असैनिक एवं सैनिक सेवाओं से मुक्ति तथा कर न देना आदि सम्मिलित थे।[१]

इसके पश्चात् जुलाई १९२० ई. में सिन्ध में एक खिलाफत सम्मेलन किया गया जिसमें महात्मा गांधी जी भी उपस्थित थे। गांधी जी ने हिन्दुओं से इस आन्दोलन में सम्मिलित होकर सक्रिय भाग लेकर मुस्लिम भाइयों की सहायता करने का अनुरोध किया।[२] असहयोग आन्दोलन प्रथम अगस्त सन् १९२० ई. को प्रारम्भ किया गया।[३] मौलाना मुहम्मद

---

1. ९ जून (१९२० ई.) को इलाहाबाद में खिलाफत कमेटी की बैठक शुरू हुई। उसने असहयोग आन्दोलन को इन चार चरणों में शुरू करने का फैसला किया।
   १. उपाधियों का त्याग और सरकारी पदों से इस्तीफा
   २. पुलिस के अलावा अन्य सभी असैनिक सरकारी सेवाओं से इस्तीफा
   ३. पुलिस एवं सैनिक सेवाओं से इस्तीफा
   ४. कर देने से इन्कार
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २५
   - ९ जून, १९२० को इलाहाबाद में केन्द्रीय खिलाफत कमेटी ने भी इस योजना का अनुमोदन किया।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – स्वाधीनता आन्दोलन में मुसलमानों का योग, सै. महमूद, पृ. २२६,
2. जुलाई १९२० ई. में सिंध में एक खिलाफत सम्मेलन हुआ जिसमें गांधीजी भी उपस्थित थे। उन्होंने तेईस करोड़ हिन्दुओं से अपील की कि वे अपने सात करोड़ मुसलमान भाइयों की सहायता करें और सरकार से सहयोग न करें।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – १९२१ का सहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २५,
3. असहयोग आन्दोलन का यह कार्यक्रम पहली अगस्त (१९२० ई.) को शुरू किया गया।
   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द, पृ. १२९,
   — पहली अगस्त (१९२० ई.) को असहयोग आन्दोलन बड़े जोर-शोर से शुरू हुआ।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. २६,

अली यूरोपीय देशों में ८ माह व्यतीत कर निराश प्रतिनिधि मंडल सहित १३ अक्टूबर सन् १९२० ई. को स्वदेश वापस आये।[1]

यूरोप से स्वदेश वापस आने के पश्चात मौलाना मुहम्मद अली के हृदय में अब यह बात पूर्ण दृढ़ हो गयी कि यदि हिन्दोस्तानी मुसलमा अपने विदेशी धार्मिक क्षेत्रों को अंग्रेजों के प्रभाव से मुक्त देखना चाहते हैं तो उन्हें इसके लिए प्रथम अपने देश को अंग्रेजी प्रभाव से मुक्त (अर्थात् अपने देश को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतन्त्र) कराना होगा[2] उन्होने खिलाफत आन्दोलन के प्रति महात्मागांधी का असीम प्रेम देखते हुए उन्हीं के मार्गनिर्देशन में आन्दोलन को सफल बनाने का अथक प्रयास

---

1. सन् २० ई. (१९२०) का इन्डियन ख़िलाफ़त डेलीगेट्स पूरे आठ माह तक यूरोप के मुख़तलिफ़ मुल्कों में सरगमें अमल रहा।

   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदह - ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी,

   उन- वफ़दे ख़िलाफ़त के साथ - मुस. ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. ११८,

   – अक्टूबर की पहली सप्ताह में मौलाना मुहम्मद अली यूरोप से लौटे।

   – "यंग इन्डिया" - महात्मा गांधी, अनु. छविनाथ पाण्डे, पृ. ७०,

   – मौलाना मुहम्मद अली मिशन से नाकाम वापस आये।

   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में, मुस. सै. आबिद हुसैन, पृ. १३०, अक्टूबर सन् १९२० ई. में मौलाना मुहम्मद अली यूरोप से तेहीदस्त लौटे।

   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, उन-तहरीके ख़िलाफत का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर, नजीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४५,

2. मौलाना मुहम्मद अली इस मिशन से नाकाम वापस आये मगर इससे यह फ़ायदा ज़रूर हुआ कि एक बात जो वह पहले से समझते थे अब उनके दिल में और अच्छी तरह बैठ गयी और वह यह कि अगर हिन्दोस्तानी मुसलमान इस्लामी मुल्कों को मग़रबी साम्राज्य के तसललुत से निज़ात दिलाना चाहते हैं तो पहले उन्हें अपने और हम वतनों के साथ मिलकर हिन्दोस्तान को आज़ाद कराना चाहिए।

   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में,

   - मुस- सै. आविद हुसैन, पृ. १३०,

किया।[१] इस प्रकार खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन दोनों एक रूप में, उद्देश्य प्राप्ति हेतु तीव्रता से गतिशील हो गये। तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक बने।[२]

मौलाना मुहम्मद अली ने आन्दोलन को तीव्र गति प्रदान करने एवं सफल बनाने के उद्देश्य से महात्मा गांधी जी के साथ भारत भ्रमण किया।[३] आप १२ अक्टूबर सन् १९२० ई. को अलीगढ़ गये और मौलाना मुहम्मद अली ने एम. ए. ओ. कालिज के छात्रों से सम्पर्क किया

---

1. ख़िलाफ़ात तहरीक से गांधी जी की दिलचस्पी के पेशे नज़र मौलाना ने (मुहम्मद अली) उसकी बागडोर गांधीजी के सिपुर्द कर दी।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर - उन- मौ. मु. अली की सियासी ज़िन्दगी, मुस- शर्फुद्दीन "साहिल", पृ. ८६,
   — आप (मुहम्मद अली) गांधीजी को हमराह लेकर निकले और तमाम हिन्दोस्तान का दौरा किया जिसकी वजह से तहरीक तरके मवालात बिजली की तरह से हिन्दोस्तान में फैल गयी और तहरीक को निहायत कामयाबी हुयी।
   – हयाते जौहर, नश्तर बलरामी, पृ. २०,
2. तहरीके ख़िलाफ़त और तरके मवालात की कामयबी से हिन्दू - मुस्लिम इत्तेहाद की एक खुशगवार फ़िज़ा हिन्दोस्तान के तूल व अरज़ में क़ायम हो गयी। - आजेवा मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, उन- मौ. मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी, मुस. डॉ. मुहम्मद शर्फुद्दीन "साहिल", पृ. ८६,
   – अकटूबर १९२० ई. में एक बहुत बड़े मज़में के सामने मौलाना ने जोश से भरा हुआ भाषण देते हुए अपनी राय पेश की कि ख़िलाफ़त और कांग्रेस मिलकर तरके मवालात की तहरीक शुरू करें और जिस तरह भी हो सके आज़ादी हासिल करने के मकसद को कामयाब बनायें।
   - हयाते जौहर, मुर. इशरत रामपुरी, पृ. ७६,७७,
3. इस बीच गांधीजी, शौकत अली, मुहम्मद अली और अन्य नेताओं ने पूरे भारत का दूर-दूर तक दौरा किया। उन्होंने असहयोग आन्दोलन के प्रति जनता में उत्साह का संचार करते हुए अपील की कि इस कार्य के लिए हिन्दू मुस्लिम कंधे से कंधा मिलाकर आगे आयें।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां, शीर्षक १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. २६,
   – मौलाना मुहम्मद अली ने गांधीजी को साथ लेकर पूरे मुल्क का दौरा किया और उनका जगह-जगह पर पुरजोर इस्तिक़बाल किया गया।
   -जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, उन- मौ. मु अली की सियासी ज़िन्दगी, मुस. डॉ. मुहम्मद शर्फुद्दीन साहिल, पृ. ८६,

तथा आपने छात्रों को अंग्रेजी कालेजों का बहिष्कार करने का सुझाव दिया।[१] आपके विचारों से प्रभावित होकर अलीगढ़ कालेज के छात्रों ने कालेज का बहिष्कार कर आन्दोलन को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया। एवं जामिया मिल्लिया की स्थापना की गई।[२] इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने कराँची में हो रहे खिलाफत अधिवेशन (१९२१ ई.) के माध्यम से उलामाओं द्वारा यह सिद्ध करा कर कि अंग्रेजी सेना की सेवाएं धर्म विरुद्ध है, नागरिकों से अंग्रेजी सेना की सेवाएँ त्यागने का अनुरोध किया।[३] मौलाना मुहम्मद अली द्वारा खिलाफत आन्दोलन

---

1. मौलाना मुहम्मद अली ने एम. ए. ओ. कालेज में मुकाबले में अलीगढ़ ही में जामेआ मिल्लिया इस्लामिया कायम कराई जिसकी तासीस (बुनियाद) अक्टूबर १९२० में हुई।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. ११२,
2. मुहम्मद अली के आह्वान पर अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने अपनी पढ़ाई छोड़कर जामिया मिल्लिया की स्थापना थी।
   १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियां, १९२१ का असहयोग आन्दोलन, डॉ. ताराचन्द, पृ. ३२,
   – तुलाबा (छात्रों) में उन्हें (मुहम्मद अली) खासी कामयाबी हुई उनकी ख़िताबत और ज़ोरे बयान ने नौ जवानों के दिलों को मुसख़्ख़र कर लिया और तुलाबा की एक अच्छी खासी तादाद कालेज छोड़कर मौलाना की कायम की हुई क़ौमी यूनिवर्सिटी में दाख़िल हो गयी।
   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली एक नम्बर,
   मु. ज़ियाउल हसन फ़ारुखी, उन- तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर, पृ. १४५,
3. उन्होंने (मुहम्मद अली) पूरे ज़ोरे ख़तावत को काम में लाते हुए और आयात व अहादीस का हवाला देते हुए इन्तेहायी गर्म और तवील तक़रीर की ओर सिर्फ़ फ़ौज की मुलाज़िनत ही को हराम क़रार नहीं दिया बल्कि तमाम सामेईन को ज़बरदस्त तरग़ीब दी कि वह फ़ौजियों को मुलाज़िमत से मुस्ताफ़ी होने के सिलसिले में पूरी कोशिश करें।
   – तहरीके ख़िलाफ़त : मुस. क़ाज़ी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. १८३,
   – इस इजलास में उलामा ने कुरआन और हदीस की रोशनी में यह साबित किया कि बर्तानवी हुकूमत की फ़ौज में मुलाज़िमत करना बदतरीन गुनाह है। आख़िर में यह क़रारदांद जिस पर ५०० उलामा के दस्तख़त थे बइत्ते फ़ाकेराय मंजूर की गई।– जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर,
   - उन - मौलाना मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी, मुस. डॉ. मुहम्मद शर्फुद्दीन "साहिल", पृ. ८६,

में किये गये अथक प्रयासों ने मुस्लिम वर्ग में यह भावना जागृत की कि वे भी राष्ट्र की एक बड़ी शक्ति हैं और ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त कराने में सहायक हो सकती है।[१]

इसके साथ ही मौलाना मुहम्मद अली एवं गांधीजी के अथक प्रयासों से भारतीय नागरिकों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधियां एवं सरकारी सेवायें त्याग दीं तथा विदेशी कपड़ों का भी परित्याग किया और वकीलों द्वारा अदालतों का बहिष्कार किया गया।[२] मौलाना मुहम्मद अली द्वारा खिलाफ़त आन्दोलन में किये गये अथक प्रयासों ने मुसलमानों में जागृति पैदा की। उन्होंने धर्म एवं राष्ट्र के हित के लिए अपने सुखों का त्याग

---

1. तहरीके ख़िलाफ़त ने मुसलमानों में एक अज़ीम वतनी जज़्बा पैदा किया उनको महसूस हुआ कि एक बड़ी ताक़त है और अगर वह इस ताक़त को इस्तेमाल करें तो बर्तानिया को जड़ से उखाड़ कर फेंक सकते हैं। मगर इसी के साथ उनको यह भी महसूस हुआ कि इस ताकत के इस्तेमाल के लिए मुल्क की तमाम जमाअतों से इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ लाज़िमी है।

   – तहरीके खिलाफत, उन- तहरीके ख़िलाफत के इनआभात व तअस्सुरात, क़ाजी, मु. अदील अब्बासी, पृ. २७१,

   – अली ब्रादरान ने गांधी के साथ हिन्दोस्तान का तूफ़ानी दौरा करके पूरे मुल्क को तरके मवालात के गुलगुले से पुरशौर कर दिया था।

   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, उन- वफ़्दे ख़िलाफत के साथ। मुस. ज़ियाउल हसन फ़ारुखी पृ. ११८,

2. अली ब्रादरान और गांधीजी की आवाज़ पर मुसलमानों की बड़ी तादाद अंग्रेजों की मुलाज़िमत छोड़ बैठी। बुकाला ने वकालत छोड़ दी। इंग्लिस्तान के बने हुए कपड़ों का पहनना तर्क कर दिया।

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर. सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. ११५,

   — नौकरियाँ छोड़ दी गयी, विद्यार्थियों ने स्कूल और कालेज छोड़ दिये बहुत से खिताब पाने वाले साहिबों ने गवर्नमेन्ट हिन्द के एज़ाज़ी खिताबात वापस कर दिये। ग़रज़ हर शहर और देश में आज़ादी के आशिक इस आज़ादी को पसंद करने वालों के नारयेहक़ पर बेखुद और बेइख़्तेयार अपने देश और ख़िलाफ़त की हिफ़ाजत के लिए दौड़-भाग करते हुए दिखाई देने लगे।
   – हयाते जौहर - इशरत रामपुरी, पृ. ७७,

कर अपना अधिकतर समय भ्रमणों, अधिवेशनों एवं भाषणों में व्यतीत किया।[१]

इस प्रकार खिलाफत आन्दोलन पूर्णतया मौलाना मुहम्मद अली से संबंधित[२] और धार्मिक विचारों पर आधारित था।[३] एवं मौलाना मुहम्मद अली 'जौहर' उसकी आत्मा थे।[४]

सन् १९२१ ई. में मौलाना मुहम्मद अली को करांची खिलाफत अधिवेशन में सेना में विद्रोह फैलाने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया था। जब मौलाना २ वर्ष उपरान्त बेतुल कारागार से मुक्त होकर सन् १९२३ ई. में आये तब आपने पाया कि देश का वातावरण बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका है और स्थान-स्थान पर देश में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष

---

1. ख़िलाफ़त की तहरीकों को मौलाना की शरकत से बेइन्तेहा तक़वियत पहुंची। अवाम ख़सूसन मुसलमान आवाम में इतनी बेदारी इन्हीं की बदौलत फैली मौलाना ने इन क़ौमीख़िदामात के सिलसिले में बहुत तकलीफ़ें उठाई दौरे, तक़रीरे, जलसे और जलूस रोज़ाना का मशगला था। आराम तो हराम दम लेने का मौक़ा भी न मिलता था।
   - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, मुर. सै. नज़रबर्नी, पृ. ३१,
   — मौलाना की सच्ची और असरवाली कोशिशें बहुत ज़्यादा क़ामयाब साबित हुई हजारों तरके मवालात वाले हिन्दोस्तानी जेलखानों में चले गये और हर शख़्स सच्चे दिल से तहरीक का तरफदार हो गया।
   – हयाते जौहर, इशरत रामपुरी, पृ. ७७,
2. ख़िलाफत तो सरासर उन्हीं से इबादत थी।
   उन - ऐसा कहां से लाऊं तुझसा कहें जिसे,
   मु;- मुहम्मद मसअत खां, वजीरे तामीरात आम्मा, उ. प्र. स्वीनियर १९८१, पृ. ९७,
3. तहरीके ख़िलाफ़त ज़्यादातर मज़हबी जज़बात पर मबनी थी और शुरू ही से उलामा कसीर तादाद में इसकी तरफ खिंचकर आये।
   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर,
   उन- तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर,
   मुस्. नजीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४६,
4. तहरीके ख़िलाफ़त के बानी और रूह व रवां मौलाना मुहम्मद अली थे।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर,
   मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी,
   उन- तहरीके ख़िलाफत का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर,
   मुस. नज़ीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४५,

एवं अप्रिय घटनाएं घटित हो रही हैं। मौलाना को देश का यह बदला वातावरण देख कर अत्यधिक दुख हुआ और आपने देश से इस दूषित वातावरण को दूर करने के लिए तन मन से हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए सहयोग देते रहे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली यह बात भली प्रकार जानते थे कि बिना हिन्दू-मुस्लिम एकता के देश को स्वतन्त्र कराना असम्भव है। इसीलिए आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर विशेष ध्यान दिया एवं दोनों सम्प्रदायों के मध्य व्याप्त कटुता को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास किया।[२]

---

1. आपसी फूट उत्पन्न कर अंग्रेज भारत में अनन्त काल तक अपना राज्य सुरक्षित रखना चाहते थे, इसीलिए उन्होंने धार्मिक संबंधों को राजनीति से जोड़ दिया। उन्होंने कभी मुसलमानों को प्रश्रय दिया तो कभी हिन्दुओं को, जिससे दोनों के बीच सदा कटुता बनी रहे और राष्ट्रीय एकता का संगठन न हो सके।

   – भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और हिन्दी उपन्यास,
   - ले. डॉ. सीताराम झा "श्याम," पृ. ६३,
   – बढ़ते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन का मुकाबला करने के लिए ब्रितानी सरकार ने "फूट डालो और राज्य करो" की नीति पर और अधिक बल दिया।
   ——— उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच एक दरार पैदा करने की कोशिश की।
   – स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द, पृ. ७२,

2. मौलाना मुहम्मद अली की दूर रस निगाहों ने एक हक़ीक़त को अच्छी तरह समझ लिया था कि हिन्दू- मुस्लिम इत्तेहाद के बग़ैर आज़ादी को हासिल करना नामुमकिन है। चुंनांचे उन्होंने दोनों क़ौमों के रिम्ययान तअससुब व नफ़रत की ख़लीज को पाटने की भरपूर कोशिशें की और अपनी तहरीरों और तक़रीरों में लोगों को इत्तेहाद व इत्तेहाद का दस दिया।

   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, - मुदीर- जियाउल हसन फ़ारुख़ी, उन- मौलाना मुहम्मद अली की सियासी ज़िन्दगी, डॉ. मु. शर्फुद्दीन साहिल, पृ. ८२,

   — Everyone must recognise that no form of self government is possisble in India unless the two principal communities, the offinder and the Muslim, are closely and concsciously united. The Comrade, 1914, 10th Jan, p. 18,

प्रयास किये और इसी वर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आप सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये।[१]

अंग्रेज भारत वर्ष में अनन्त काल तक अपना राज्य सुरक्षित चाहते थे इसीलिए उन्होने हिन्दू-मुस्लिमों में आपसी फूट उत्पन्न करने के उद्देश्य से धार्मिक सम्बन्धों को राजनीति से जोड़ दिया और इस उद्देश्य से कि राष्ट्रीय एकता का संगठन न हो सके एवं दोनों जातियों के मध्य सदैव कटुता बनी रहे, वे (अंग्रेज) समय-समय पर हिन्दू मुस्लिम दोनों को मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने आन्दोलन को सफल बनाने एवं हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए अथक प्रयास किया और दोनों सम्प्रदायों के व्यक्तियों को कन्धों से कन्धा मिलाकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया,

---

1. सन् १९२१ ई. में उन्हें (मुहम्मद अली) बग़ावत फैलाने के जुर्म में गिरफ़्तार किया गया और सन् १९२३ ई. तक कुछ कम २ बरस तक वह जेल में रहे। जब रिहा होकर आये तो मुल्क की फ़िज़ा बदल चुकी थी।— मुल्क में बदकिस्मती से हिन्दू मुस्लिम फ़सादात शुरू हो गये मुहम्मद अली इस सूरत सूरते हाल से मायूस न हुए और बड़ी तनदेही से उन्होने हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद का काम किया। इस साल वह कांग्रेस के सदर मुन्तख़ाब हो गये।

   – मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात

   – मुर- सै. नजरबर्नी, पृ. १७१,

   — जब मौलाना मुहम्मद अली क़ैद से रिहा हुए तो उन्होंने मुल्क की फ़िजा को बहुत बिगड़ा हुआ पाया। हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद का जोश जो २ साल पहले इन्तेहा को पहुंच गया था ठंडा पड़ चुका था और मुल्क में जाबजा फ़िरके बराना फ़सादात हो रहे थे। —— मुहम्मद अली ने दोनों फ़रीक़ों के दरिम्यान सुलह कराने में अहम हिस्सा लिया।

   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनए अय्याम में,

   – मुस. - सै. आबिद हुसैन, पृ. १३१,

   — अगस्त सन् १९२३ ई. की आख़िरी तारीख़ों में मौलाना मुहम्मद अली जेल से रिहा हुए तो बाहर निकलकर हिन्दोस्तान की सियासी फ़िज़ा को बिल्कुल बदला हुआ पाया।

   मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. सै. सवाहुद्दीन, अब्दुर्रहमान, पृ. १३२,

एवम् एक मंच पर खड़ा किया।[१] क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली जौहर की हार्दिक अभिलाषा थी कि देश से शीघ्र ही साम्प्रदायिक संघर्षों का अन्त हो और दोनों धर्मों के मध्य पुनः एकता और स्थायी प्रेम उत्पन्न हो। और इसी स्वप्न को साकार करने के उद्देश्य से वह निरन्तर (और साथ ही यह भी चाहते थे कि हिन्दू-मुस्लिम एकता से संबंधित उनका प्रत्येक क्षण व्यतीत हो) परिश्रम करते हुए ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।[२]

काशी में हिन्दू मुस्लिम एकता से संबंधित एक सम्मेलन का आयोजन किया गया था। मौलाना मुहम्मद अली चाहते थे कि इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के पश्चात् व्यक्तियों के हृदयों में परिवर्तन आये, जिससे वे निजी स्वार्थों की अपेक्षा राष्ट्रहित के पक्षधर हो सकें।[३]

हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष का एक मुख्य कारण मस्जिदों के सामने बजने वाले एवं सन्ध्या समय आरती में बजनेवाले मन्दिरों में घंटे, घड़ियाल एवं शंख आदि थे। मुस्लिम वर्ग का कहना था कि यह नमाज में विघ्न

---

1. उन्होंने (मुहम्मद अली) हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद के लिए जबरदस्त काम किया। - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ,

   मुर. - अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ८४,

   – मुहम्मद अली जौहर ने मुसलमानों और हिन्दुओं के दरम्यान जो फासला था उसे मिटाया और जंगेआज़ादी में मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ शाना वशाना खड़ा कर दिया।

   – मौलाना मुहम्मद अली शख्सीयत और ख़िदामात,

   मुर. सै. नजरबर्नी, पृ. १७५,

2. हिन्दोस्तान की आज़ादी बग़ैर तमाम मिल्लतों के इत्तेफ़ाक व इत्तेहाद के वज़ाहिर न मुमकिन होती है। इसलिए मैं (मुहम्मद अली) हर वक़्त इसका ख़्वाव देखा करता हूं और इसके लिए दस्त ब दुआ हूँ।

   – मज़ामीने मुहम्मद अली, मुर. - मुहम्मद सुरूर उस्ताद, पृ. २४,

3. इस कान्फ्रेन्स से (काशी) हम लोग सचमुच शुद्ध होकर जाएं- सब तरह की तंगदिली, दकियानूसी और बेदिलबरदाश्तगी से पाक होकर, ताकि हम अपने वतन को गुलामी की जंजीरों से आजाद कर सकें। उस गुलामी से जो सिर्फ बदन की ही गुलामी नहीं है बल्कि ज़मीर की भी है। – कुछ पुरानी चिट्ठियां, जवाहर लाल नेहरू, पृ. ३७,

कारक है जबकि हिन्दुवर्ग इससे सहमत नहीं था।[१] इसके साथ ही साथ अंग्रेजों ने मुस्लिम वर्ग को अलग चुनाव क्षेत्र की मांग को लेकर भी गुमराह किया था और यह बताया कि बिना पृथक निर्वाचन के मुस्लिम वर्ग की रक्षा असम्भव है जिसके कारण दोनों के मध्य मनमुटाव उत्पन्न हुआ।[२] सितम्बर १९२३ ई० में देहली में होने वाले अधिवेशन में, जो चुनाव समस्या से संबधित था, मुहम्मद अली ने दोनों दलों के मध्य एकता कराने में महत्वपूर्ण भाग लिया।[३]

हिन्दु-मुस्लिम दोनों के मध्य धार्मिक संघर्ष तीव्र हो चुका था।हिन्दु पवित्रता, संगठन तथ मुस्लिम तनजीम और तबलीग आन्दोलन के पक्ष

---

1. लेकिन अब तो झगड़े का एक सबब ऐसा पैदा हो गया जो हमेशा मौजूद रहता था और हमेशा खड़ा हो सकता है। यह था मस्जिदों के सामने बाजा बजाने का सवाल, नमाज के वक़्त बाजा बजाने या ज़रा सी भी आवाज़ आने पर मुसलमान ऐतराज करने लगे। कहते, इससे नमाज़ में खलल पड़ता है।

   --- इत्तिफाक से यही वक्त है जबकि हिन्दुओं के मन्दिर में शाम की पूजा यानी आरती होती है और शंख बजाये जाते है मन्दिर में शाम की पूजा यानी आरती होती है और शंख बजाये जाते है तथ मन्दिरों के घंटें बजते हैं। इसी आरती- नमाज़ के झगड़े ने बहुत बड़ा रुप धारण कर लिया। मेरी कहानी-जवाहरलाल नेहरू, पृ० ९५.

2. अंग्रजों ने फिर फूट डालने की चाल चली उसने मुसलमानों का अलग चुनाव क्षेत्र की मांग करने के लिए उत्साहित किया। उन्हें इस प्रकार बहकाया कि हिन्दु संख्या में अधिक है, इसलिये बिना पृथक निर्वाचन के मुसलमानों के हितों की रक्षा नहीं हो सकती।

   - भारतीय स्वतंत्र संग्राम और हिन्दी उपन्यास, डा० सीताराम झा श्याम पृ० ६५.

3. नये इन्तेख़ाबात में जो साल के आख़ीर में होनेवाले थे हिस्सा लिया जाये या नहीं सितम्बर १९२३ ई० में देहली में मौलाना अब्दुल आज़ाद की ज़ेरे सिदारत इस मसअले का फैसला करने के लिये जो जलसा हुआ इसमें मौलाना मुहम्मद अली ने दोनों फरीकों के दरिम्यान सुलह कराने में अहम हिस्सा लिया। आपस के समझौते से यह रिव्यूलेशन पास हुआ कि कांग्रेस अपनी अदमेतआबुन की पालीसी पर कायम है लेकिन इन मेम्बरों को जो इन्तेखाबात में हिस्सा लेना चाहे इसकी इजाज़त देती है। - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनए अय्याम में, - सै० आबिद हुसैन, पृ० ३१, १३२

में थे।[१] सन १९२४ ई० में गाँधी जी ने कारागार से मुक्त होने के पश्चात् इन साम्प्रदायिक संघर्षों को रोकने के उद्देश्य से देहली में मौलाना मुहम्मद अली के मकान में २१ दिवसीय व्रत प्रारम्भ किया।[२] मौलाना मुहम्मद अली स्वयं भी हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिये चिन्तित थे।[३]

मौलाना मुहम्मद अली भारत भूमि से साम्प्रदायिक संघर्षों का अन्त देखना चाहते थे और ऐसी व्यवस्था के इच्छुक थे जिसके माध्यम से हर जाति व मानव का हित हो सके।[४] आप सदैव हिन्दु मुस्लिम संघर्षों की

1. शुद्धि और संगठन १९२४ के शुरू में हिन्दु-मुस्लिम फसादात की वतामुल्क में फूट निकली शुद्धि और संगठन कीतहरीकों ने खुब जोर पकड़ा उनके जबाब में तवलीग ओर तन्जीम की तहरीक मुसलमानों की तरफ से शुरू हुयी।
   - यादों की दुनियाँ - युसुफ हुसैन खा, पृ० १८९.
   - हिन्दु और मुसलमान दोनों ही सम्प्रदायों के धार्मिक कट्टरपंथियों के बीच धार्मिक आन्दोलन तेज हो गया था ।प्रमाण के लिये हिन्दुओं में पवित्रता, संगठन ओर शुद्धि का आन्दोलन तथा मुसलमानों में तनज़ीम और तवलीग आन्दोलन। स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ० १४५.
2. १९२४ ई० में जब फ़िरके वराना फसादात की आग और ज्यादा फैली तो महात्मागांधी ने देहली में मौलाना मुहम्मद अली के मकान में २१ दिन का तारीखी व्रत शुरू किया।
   - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनए अय्याम में, - सै० आबिद हुसैन, पृ० १३२.
   - गांधी जी दुर्बल स्वास्थ्य के कारण ५फरवरी १९२४ को जेल से छूट गये थे ।उन्होंने उसी साल सितम्बर में २१ दिन का उपवास करके दंगों में प्रदर्शित अमानुषिकता पर पश्चाताप करने और साम्प्रदायिक कीटाणुओं के प्रसार को रोकने की कोशिश की। - स्वतन्त्रा संग्राम - विपन चन्द्र, पृ० १४२.
3. आप दिन रात ऐसी तजवीज की फ़िकर में रहा करते थे कि किसी तरह हिन्दु-मुस्लिम इत्तेहाद कायम कर सके।
   - हयाते जौहर - मुर० नश्तर बलरामी, पृ० ८९,
   – I would say that the Hindoo and the Muslim are two brothers sons of Mother Hind.
   The 'Comrade', 1914, Jan 10, p., 18.
4. मेरी तड़प है हिन्दोस्तान की सरज़मी से फिरका वाराना झगड़ों का अन्त होते देखुँ। ऐसी हुकुमत की शुरुआत हो, जो जनता के प्रति ज्यादा से ज्यादा जिम्मेवार हो, उसकी आशाओं और जरुरतों की कद्र करती हो, उनको पूरा करती हो। "यह तड़प उस अनमोल शख़्सियत के दिल की थी, जिसका नाम मौलाना मुहम्मद अली था।
   - मानवता ओर देश प्रेम का फरिश्ता - डा० राममूर्ति० एम० ए० डी० लिट्० Maulana Mohamed Ali, Birth Century celebration, Souvenir, editors, Katam Lakshmi Narayan, Fareed Mirza, Dr. Anwar Moazzam, Hyderabad - 4.

समाप्ति के लिये कार्यरत रहे और मैत्रीपूर्ण वातावरण स्थिर करने के लिए अथक प्रयास करते रहे। आपके द्वारा हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिये किया गया सबसे उत्तम प्रयास देहली में आयोजित "आल पार्टीज क्रान्फ्रेन्स" थी, जो सितम्बर सन् १९२४ ई० में आपके अध्यक्षीय काल में सम्पन्न हुयी थी।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ने एकता सम्मेलन में जनता से अनुरोध किया कि वे आपसी कटुता समाप्त कर एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं मानवता का व्यवहार करें। तथ देश को अंग्रेजों से स्वतन्त्रता कराने का प्रयास करें। और यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो निःसन्देह वे दुश्मनों की दृष्टि में हँसी के पात्र रहेंगे। इस समस्या के समाधान हेतु मौलाना अपनी पत्नी की बेइज्जती एवं माँ का क़तल भी सहन करने के लिये तत्पर थे।[२]

---

1. मौलाना (मुहम्मद अली) ने हकीम अजमल खाँ स्वामी श्रद्धानन्द के साथ मिलकर आखिरी सितम्बर १९२४ ई० में इत्तेहाद कान्फेन्स मुनअक़िद की जिसमें मुखतलिफ़ पार्टियों के हिन्दु मुसलमान लीडरों ने फसादात को रोकने और दोनों बड़े मज़हबी फिरकों में मसालेहत कराने की कोशिश की। - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनए अय्याम में - मुस० सै० आबिद हुसैन, - मकतबे जामिया नई दिल्ली, पृ० १३२.

   - १९२० से लेकर १९२९ तक के बीच में सालों में आपस में बातचीत और बहस मुबाहिसा करके हिन्दु-मुस्लिम मसलों को हल करने की कई कोशिशें की गयी। ये कोशिशें एकता सम्मेलनों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन सम्मेलनों में सबसे ज्यादा प्रसिद्ध वह था जो १९२४ में मौलाना मुहम्मद अली ने कांग्रेस के प्रधान की हैसियत से बुलाया ओर जो गाँधी के २१दिन के अनशन के अवसर पर दिल्ली में हुआ।
   - मेरी कहानी - जवाहरलाल नेहरू, पृ० ९५

2. मुहम्मद अली ने अपनी तकरीर में यहाँ तक कह दिया कि - अगर कोई हिन्दु मेरी बीवी की बेइज्जती करे जब भी मैं उस पर हाथ नहीं उठाउँगा, मेरी माँ को कतल करे जब भी मैं अदालत में मकुदमा नहीं ले जाउँगा, लेकिन अब इस बदतरीन सूरते हाल का इलाज होना चाहिये. ज़रा-ज़रा सी बात पर हमको चाहिये कि तलवारें म्यान से न निकाला करें वरना हम आज़ादी की मंज़िल से दूर होते चले जायेंगे और अग़ियार बराबर हमारा मज़हका उड़ायेंगे और हम पर जुबाने तान दराज़ करेंगे।"

   - सीरते मुहम्मद अली, मुर० रईस अहमद जाफ़री, पृ० ३७४.

आपने मुस्लिम भाइयों से हिन्दु भाईयों के साथ सहयोग प्रदान कर देश को स्वतन्त्र कराने का अनुरोध किया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली अपने जीवन का अधिक समय इस बात के लिये खर्च करना चाहते थे कि लोगों को अधिक से अधिक स्वतन्त्रता के लिये प्रेरित किया जा सके।[२] क्योंकि आपके विचारानुसार सबसे बड़ा फर्ज अपनी खोयी हुयी स्वतन्त्रता को प्राप्त कर अंग्रेजों से मुक्ति पाना था।[३] और इसी महान उद्देश्य के लिये उन्होंने जीवन का बलिदान किया।[४] मौलाना मुहम्मद अली देश में होने वाले साम्प्रदायिक संघर्षों के लिए हिन्दु-मुस्लिम दोनों का दोषी मानते थे।[५] इसीलिये आपने हिन्दुओं ओर मुसलमानों को समस्त संदेहों से मुक्त होकर एक दूसरे को समझने ओर सहयोग पूर्वक स्वराज्य के लिये संघर्ष करने की

1. मैं (मुहम्मद अली) जो कहता हूँ कि मुसलमानों के लिये मुनासिब है कि हिन्दुओं के साथ शरीक होकर हिन्दोस्तान को आज़ाद करायें।-- अगर हिन्दु आज़ादी के लिये कोशिश न भी करें जब भी मुसलमानों को कोशिश करके हिन्दोस्तान के हिन्दू-मुसलमान दोनों को आज़ाद कराना चाहिये।
   मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर - सै० सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ० १६१, १६२.
2. मेरी (मुहम्मद अली) जिद व जहद का बड़ा हिस्सा इन्शाअल्लाह इस पर सर्फ़ होगा कि लोगों को नफ़सपरवरी व नफ़सपरस्ती से सुवाह यह व्रत किसी शक्ल, किसी निवास ओर किसी पर्दे में क्यों न हो, बताया जाये और उन्हें गुलामी की जंजीरों से ख्वाह वह अपने नफ़्स की गुलामी हो या बादशाहों की गुलामी या लीडरों की या पीर और मौलवीं की गुलामी हो निज़ात दिलायी जाये।
   - मज़ामीने मुहम्मद अली - मुर - मुहम्मद सरुर उस्ताद, पृ० २३,
3. हमारा सबसे अव्वल और सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह है कि अपनी जाये शुदा आज़ादी को हासिल करें और अपने मुल्क को अग़ियार के पन्जये हस्तिबदाद से नियात दिलायें।
   - हमदर्द १६ मार्च, १९२८ ई० - गुलामी की लानत, मुहम्मद अली, पृ० ६,
4. मौलाना की सारी ज़िंदगी आज़ादिये वतन की जिद व जेहद के लिए गुजरी - मौ० मुहम्मद अली शख़्शीयत और ख़िदामत, पृ० ८६, नज़रबर्नी,
5. मुझे (मुहम्मद अली) मालूम है कि हिन्दु-मुसलमानों के ताल्लुकात आज वह नहीं है जो आज से २ बरस क़ब्ल थे लेकिन क्या कोई ईमानदार और वतन दोस्त हिन्दोस्तानी यह कह सकता है कि एक क़ौम तो बिलकुल बेक़सूर है ओर सारा जुर्म सिर्फ एक ही क़ौम का है।
   - ख़ातबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ० ७८,

अपील की।[१] उन्होंने मई १९२० ई. में देहली में ख़िलाफत कान्फ्रेन्स में मुस्लिम भाइयों से धैर्य के साथ हिन्दू भाई से सम्पर्क बनाये रखने का एवं सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया क्योंकि यह समय देश की स्थिति को देखते हुए एकता बनाये रखने के लिए परम आवश्यक था।[२] भले ही हिन्दू भाईयों की ओर से उन्हें कितनी ही यातनाएं क्यों न दी जायें।

मौलाना मुहम्मद अली ने मुसलमानों को उनके कर्तव्यों का बोध कराया और उन्हें स्वतन्त्रता के संग्राम में त्याग करके स्वराज्य की प्राप्ति की प्रेरणा दी।[३] आपकी दृष्टि में स्वतन्त्रता का मार्ग फूलों से युक्त नहीं

1. If they cannot get rid of one another, the only thing to do is to settle down to co-operative with one another, and while the Muslims must remove all doubts from the Hindu minds about their desire for Swaraj for its own sake and their readiness to resist all foreign agression, the Hindus must similarly remove from the Muslim minds all apprehensions that the Hindu majority is synonymous with Muslim servitude.
. Select Writing and Speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol. II,
Edited : Afzal Iqbal, p. 188,

2. मई सन् १९२६ ई. में देहली में ख़िलाफ़त आन्दोलन कान्फ्रेन्स का एक खुसूसी इजलास हुआ - - - इसी जलसे में मुहम्मद अली ने मुसलमानों को मुख़ातब करके कहा– यह मुल्क के लिए शख़्त तरीन इन्कलाब आजमाइश का ज़माना है आप न खुद मुश्तइल हो, न अपने किसी लफ़्ज़ या अमल से अहलेहनुद (हिन्दुओं को) मुश्तइल होने का मौका दें। मैं (मुहम्मद अली) दरख़्वास्त करता हूं कि अगर वह (हिन्दू) तुम्हारे ऊपर हाथ उठाये तो सर झुंका दो, अगर छुरी दिखाये तो सीना आगे कर दो, अगर जुल्म करें तो सब्र से काम लो।
– सीरते मुहम्मद अली- रईस अहमद जाफरी, पृ. ४२०,

3. The duty of the Muslims to-day is a double one. They owe a duty to themselves as Indians to secure freedom for themselves and for their posterity. India is no less their, country than the Hindus, and even if the Hindus were to shrinkfrom the sacrifices required in freedom's battle, though they will certainly never do so, it would still be their duty to preserve and to say that they would win Swaraj for all India even if they received no aid from the rest of India. But as Muslims too they are to secure Swaraj for their country.
Select Writings and Speeches of Maulana Mohamed Ali, Volume II,
Edited by Afzal Iqbal page. 186,

कांटों से परिपूर्ण था, और इसे तभी प्राप्त किया जा सकता है जब हम देशहित सब कुछ त्यागने के लिए तत्पर हों।[१] क्योंकि आपके विचारानुसार यदि युद्ध से भी अधिक बुरी चीजें संसार में है तो दासता उनमें से एक थी।[२] इसीलिए मौलाना मुहम्मद अली जौहर देश को शीघ्र अंग्रेजों की दासता से स्वतन्त्र कराना चाहते थे। और इसके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील थे।

मौलाना मुहम्मद अली का विचार था कि अधिक से अधिक लोगों के कम से कम त्याग से स्वराज्य को जीता जा सकता है।[३] किन्तु यह तभी संभव हो सकेगा जब हम आपसी कटुता को समाप्त कर, कटुता उत्पन्न करने वाले कारकों को समूल नष्ट कर दें।[४] और स्वतन्त्रता के

---

1. आज़ादी का रास्ता फूलों के फ़र्श से पटा हुआ नहीं है, जल्द फ़ौरी मंजिल रसी की सिर्फ़ एक ही तस्वीर है और वह यह कि मौत गवारा कर लें, और शकस्त गंवारा न हो।

   – ख़ुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. १४७,

2. We are among those that believe war to be a great evil : but we also believe that there are worse things than war, and that a nations, slavery is one of them.

   . Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali. Vol. II, Edited by. Afzal Iqbal, 207,

3. Swaraj must be won by the minimum sacrifices of the maximum number, and not by the maximum sacrifices the minimum. Select Writings and Speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol. II,

   Edited by : Afzal Iqbal, page no. 208.,

4. लेकिन सियासी इख़्तालाफ़ात दूर करने का सबसे बेहतर इलाज वही है जैसा कि मैं (मुहम्मद अली) पहले अर्ज़ कर चुका हूं कि एक दूसरे की ख़ताओ को मुआफ करने और भूल जाने की सलाहियत पैदा की जाये लेकिन सिर्फ़ इस क़दर काफ़ी नहीं है बल्कि हम न गवार वाक़ेआत को बार-बार रुनुमा होने से रोकना चाहते हैं तो हमारा फर्ज है कि असबाब से यह मुनाक़िशात के पैदा हुए हैं, उन्हें मिटा दें।

   –ख़ुतबये सिदारते - मौ. मुहम्मद अली, पृ. ८४,

लिए अपनी जान तक की बाजी लगा दें।[१] तथा देश की स्वतन्त्रता के लिए साम्प्रदायिक संघर्षों का अन्त कर एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सहयोग का व्यवहार करें। इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" की यह भी हार्दिक अभिलाषा थी कि देश में फिर एक बार पहले की ही तरह हिन्दू मुस्लिम दोनों ही एक दूसरे के प्रति आस्था रखते हुए एकता का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत करें।२० जनवरी, सन् १९२० ई. में हुई लाहोर की एक आम सभा में मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए उन्हें स्वतन्त्रता संघर्ष में शनैः शनैः अग्रसर होने का सुझाव दिया।[२] उन्होंने अंग्रेजों को ललकार भरे शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि अब हम समस्त भारतीय आपकी सभी छल से परिपूर्ण नीतियों से परिचित हो चुके हैं और अब हम आपके द्वारा चलायी गयी किसी भी नीति के प्रभाव में न आकर उनको सफल उनको सफल होने का अवसर प्रदान करेंगे। और न ही किसी भी कार्य में आपको सहयोग प्रदान करेंगे।[३] इसके अतिरिक्त आपने स्वतन्त्रता संग्राम में एक देश भक्त

1. दोस्तों काम करने का तहय्या कर लो और अगर मुल्क की आजादी की राह में जरूरत पेश आये तो जान तक से दरेग़ न करो।
   – ख़ुतबये सिदारते -मौलाना मुहम्मद अली, पृ. १४७,
   — अब अगर गुलामी से निकलना है तो उसका यही तरीका है कि हम तुम एक दूसरे के साथ इन्साफ व रवादारी का बर्ताव करें। एक दूसरे की तरफ़से जो अज़ीयत जुबान से या हाथ से पहुंचती है उस पर सब्र करें मगर इस गुलामी को हरगिज बरदाश्त न करें।
   – मौलाना मुहम्मद अली - शख़्सीयत और ख़िदामात, मुर. सै. नज़रबर्नी, पृ. १९१,
2. लाहौर में २० जनवरी सन् १९२० ई. को तक़रीर करते हुए हाज़िरीन के जोश के बजाय इस्तेक़ामत की तलक़ीन की - 'अपना जोश दरियादिली से खर्च न करो। हमें इतना बड़ा शोला नहीं चाहिए जो कि एक ही दफा भड़क कर खत्म हो जाये। हमें तो टिमटिमाता हुआ चिराग चाहिए जो सारी अंधेरी रात में रोशनी दे ता वक़्ते सौराज का आफ़ताब तुलून हो जाये। - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात-
   - मुर.- सै. नज़रबर्नी, पृ. १९०,
3. आज मैं (मुहम्मद अली) ऐसी कांग्रेस की तरफ से हिन्दोस्तानी क़ौम की तरफ़ से और उस तक़दीरे इलाही की तरफ से जो हम सब पर कार फ़रमा है उन मुट्ठी भर आदमियों को खबर करना चाहता हूँ कि इन्शा अल्लाह वह कभी क़ामयाब न होंगे और हिन्दोस्तानी कौम उनकी अय्याराना कार्यवाइयों के साथ किसी हालत में ख्वारवी (रवा रवी) नहीं बरतने की।
   – ख़ुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. ८३,

सैनिक के रूप में कूद पड़ने की भी घोषणा की।[१]

सन् १९२४ में हुयी मिलाप कान्फ्रेन्स में आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए पूरी शक्ति लगा दी।[२] कान्फ्रेन्स स्थगित करने के बाद आपने निरंतर भ्रमण किया, भाषण दिये, लेख प्रकाशित किये, व्यक्तिगत सम्पर्क किये तथा सभाओं को सम्बोधित किया।[३] इन सबका उद्देश्य हिन्दू मुस्लिम एकता ही था। और इसके लिए मौलाना ने अथक प्रयास किया।[४]

नवम्बर १९२७ ई. में लन्दन से ब्रितानी मंत्रिमंडल ने नियत समय से २ वर्ष पूर्व ही एक अंग्रेज राजनीतिज्ञ सर जान साइमन के निर्देशन में एक आयोग की नियुक्ति की घोषणा की। इस आयोग का मुख्य

---

1. ऐसी क़ौम के हाथ से जिनमें १५० बरस की गुलामी के बाद हासिल किया हो आजादी का छीन लेना कोई आसान काम न होगा रहा सवाल इसके मुतअल्लिक में (मुहम्मद अली) यह कहूंगा कि जिस दिन हिन्दोस्तान को किसी हमलावर से मुक़ाबिले के लिए ख़्वाह वह मुस्लिम हो या मेरे मुस्लिम मुझसे आजिज़ (कमजोर) सिपाही की जरूरत होगी तो आपका यह रफीक़ जिसे आपने आज सफेजंग से बाहर बुला लिया है फिर ख़ुशी के साथ अपनी सबकी खाली जगह को पूरा कर लेगा यकीन जानिये कि वह आपकी रिफ़ाकत छोड़ने का नहीं - ख़ुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. ११३,
2. मुहम्मद अली भी मिलाप कान्फ्रेन्स में शरीक हुए थे। उन्होंने अपनी पूरी कूवत सर्फ़ कर दी कि कोई ऐसा हल निकल आये कि जाने बैन का फसाद पसंद असर राज़ी हो जाये।
   — सीरते मु. अली, मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. ३७४,
   – मुहम्मद अली ने इस कान्फ्रेन्स को कामयाब बनाने की जितनी कोशिश की किसी लीडर ने कम की होगी। — मु. अली ने अपनी सारी काबलियत और सारी कोशिश सर्फ कर दी कि किसी तरह इस इफ़तिराक़ व इनशिक़ाक़ का खात्मा हो और एक बार फिर मुबारक ज़माना आ जाये कि हिन्दू मुसलमानों की तारीफ़ कर रहा हो और मुसलमान हिन्दू की मनक़वत।
   — सीरते मु. अली, मुर- रईस अहमदजाफरी, पृ. ३७५,
3. इस इलतवा (कान्फ्रेन्स) (मुल्तवी करने) के बाद उन्होंने मुसलसल दौरे किये, तकरीरे की, मजामीन लिखे, प्राइवेट मुलाकातें की, जलसे तलब किये।
   – सीरते मुहम्मद अली - मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. ३७५,
4. हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद के लिए उन्होंने जां तोड़ कोशिशें की।
   उनवान - ऐसा कहां से लाऊं कि तुझसा कहें जिसे,
   मुहम्मद - मजउस खां बज़ीरे तामीरात आम्मा (उ. प्र.)
   स्वीनियर १९८१, पृ. ९७,

कार्य इस बात की समीक्षा करना था कि भारत जनतन्त्र के योग्य हुआ है या नहीं।इस आयोग में कुल सात सदस्य थे किन्तु एक भी भारतीय नहीं था।[१] भारतीयों में ब्रिताना मन्त्रिमण्डल द्वारा नियुक्त इस आयोग के पश्चात् तीव्र आक्रोश उत्पन्न हुआ। इसीलिए जब आयोग ३ फरवरी, सन् १९२८ ई. को बम्बई पहुँचा तब उसे काले झण्डे एवं तख्तियों सहित विरोध प्रदर्शन करते हुए एक विशाल जन समूह का सामना करना पड़ा।[२] मौलाना मुहम्मद अली ने अपने भाषणों के माध्यम से सायमन आयोग का कड़ा विरोध किया।[३]

---

1. नवंबर १९२७ में एकता का नया आधार पैदा हुआ। लन्दन से ब्रिताना मंत्रिमंडल ने घोषणा की कि नियत समय से दो साल पहले ही एक शाही आयोग की नियुक्ति का निर्णय किया गया है जो यह समीक्षा करेगा कि भारत और अधिक सुधारों तथा संसदीय जनतंत्र के योग्य हुआ है या नहीं। आयोग के अध्यक्ष हुए एक अंग्रेज राजनीतिज्ञ सर जान साइमन और इस प्रकार आमतौर पर से सायमन आयोग की संज्ञा दी गयी। उसके सात सदस्यों में से कोई भी भारतीय नहीं था।
   स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द, पृ. १४५,
   — हिन्दू मुसलमानों के इख़्तेलाफात से नज़ाइज़ फ़ायदा उठाकर गवर्नमेन्ट ने हस्बे उमूल २७ ई. में (१९२७) यह कमीशन का तकर्रुर दिया। जिसके अहाता (दायरा) तहक़ीक़ में यह बात दाखिल थी कि वह इसकी तफ़्तीश करे कि गुज़ाश्ता इस्लाहात से इस वक्त तक हिन्दोस्तान ने कितनी तरक़्क़ी कर ली है ताकि उसी के मुताबिक़ जदीद इस्लाहात का खाका तैयार किया जाय।
   – सीरते मुहम्मद अली -मुर० रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. ४५१
2. ३ फरवरी, सन् १९२८ को जब आयोग बम्बई में उतरा तो उसे एक बृहद् जलूस का सामना करना पड़ा। जो 'सायमन वापस जाओ' की तख्तियां और काले झंडों के साथ बढ़ रहा था। चौपाटी पर शाम की एक सभा में ५० हजार लोगों के बीच विभिन्न दलों ने मंत्रिमंडल के निर्णय की निन्दा की।
   - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १४६,
3. मौलाना मुहम्मद अली ने अपनी तहरीरों और तक़रीरों से सायमन कमीशन की शख़्त मुख़ालिफ़त की। उनका पयाम था कि इस वक़्त हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिलकर सायमन कमीशन की आमद को नाकाम बना दिया तो हमारा नाम ज़र्रीं हुरुफ़ से लिखा जायेगा।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर- सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. १९१,

भारत भ्रमण करने के पश्चात् साईमन आयोग ने सन् १९३० ई. के मध्य में अंततः अपनी आख्या मंत्रिमंडल के समक्ष प्रस्तुत की।[१] आयोग द्वारा आख्या प्रस्तुत किये जाने के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने सर रेमसे मैक्डोनाल्ड की अध्यक्षता में १२ नवम्बर १९३० ई. में प्रथम गोलमेज कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया।[२] यह गोलमेज सम्मेलन भारत के सर्वदलीय सम्मेलन का एक संस्करण था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार किया।[३]

उस समय सविनय अवज्ञा आन्दोलन पूरे जोर था और अनेक नेता जेल में था। मौलाना मुहम्मद अली कांग्रेस के निर्णय की अवहेलना कर ४ अक्टूबर सन् १९३० ई. में गोलमेज सभा में भाग लेने गये।[४] भीषण

---

1. साइमन आयोग ने १९३० के मध्य में अंततः अपनी रपट प्रस्तुत की।
   स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १७५,
2. भारतीय समस्याओं को सुलझाने का बहाना कर अंग्रेजी सरकार ने १२ नवम्बर १९३० ई. को लन्दन में एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया।
   – भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और हिन्दी उपन्यास
   - डॉ. सीताराम झा, 'श्याम', पृ. ६०,
   - नवम्बर में ब्रितानी सरकार ने लंदन में रेमसे मैक्डोनाल्ड की खुद की अध्यक्षता में पहले गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया।
   - स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १७५,
3. - यह सम्मेलन भारत के सर्वदलीय सम्मेलन का एक संस्करण था। कांग्रेस ने स्वभावतः उसका बहिष्कार किया।
   स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १७५,
4. Two year later, in 1930, when large numbers of our people were in prison and the civil disobedence movement was in full swing, Mohamed Ali ignored the Congress decision, and attended the 'Round Table Conference'.
   Jawahar Lal Nehru, An-autobiography. pa. 120,
   — Maulana left India again in 1930 for participation in the Round Table Conference.
   . My life a fragement, edt. Afzal Iqbal, p.no. 150,.

रूप से रुग्ण होते हुए भी आप इस सभा में गये।[१] परिचितों एवं संबंधियों के मना करने के उपरांत भी आपके हठ के कारण गंभीर अस्वस्थता की स्थिति में ही आपको स्ट्रेचर पर लिटाकर गोलमेज सभा में सम्मिलित होने के लिए वायसराय आफ इंडिया जहाज पर सवार कराया गया।[२] जिस समय मौलाना मुहम्मद अली को अस्वस्थता की स्थिति में स्ट्रेचर पर लिटाकर बम्बई से वायसराय आफ इन्डिया नाम जहाज पर सवार कराया गया था तब उस समय वहाँ उपस्थित आपके सभी शुभचिन्तकों के नेत्रों में आंसू छलछला आये थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कोई जिन्दा लाश जा रही है।[३]

लन्दन जाते समय जहाज पर पहुंचने से पूर्व आपने अपने शुभ चिन्तकों से जो उनको गंभीर बीमारी में जाने से मना कर रहे थे, कहा कि मुझसे अपने जीवन से अधिक प्रिय अपना देश और धर्म है और

---

1. अस्वस्थ होने के बावजूद मौलाना साहब १९३० में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने इंग्लैण्ड गये।
   — रामपुर का इतिहास - द्वारा - श्री देवेन्द्र कुमार, सूचना अधिकारी, रामपुर पृ० ४,
   - सन् १९३० ई. हकूमत बर्तानिया ने एक गोलमेज कान्फ्रेन्स का ऐलान किया उसमें मौलाना को भी दावत दी गयी बीमारी की वजह से मौलाना सफ़र करने के क़ाबिल न थे मगर मुल्क व कौम के दर्द ने उन्हें लन्दन पहुंचा ही दिया। उन- यादें मुहम्मद अली जौहर की - रफ़त ज़मानी बेगम, राजमाता आफ रामपुर, स्वीनियर, १९८१, पृ. ४८,
2. जिस वक़्त आपको स्ट्रेचर पर लिटा कर बम्बई से वायसराय आफ इंडिया जहाज पर सवार कराया गया उस वक़्त तमाम हाज़रीन की आँखों से आँसू रवां थे। गोया ज़िन्दा जनाज़ा जा रहा है।
   – सीरते मुहम्मद अली, मुर-रईस हमद जाफ़री, पृ. १५०,
3. शुरू अक्टूबर (१९३०) की कोई तारीख थी कि मौलाना जहाज पर बैठ बर्तानिया रवाना हो गये। —— जहाज पर जब सवार हुए तो खुद से सवार होने के क़ाबिल कहाँ थे, स्ट्रेचर पर लिटाकर सवार कराये गये।
   मुहम्मद अली, ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ः मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी हिस्सा दोयम, पृ. १५८, १६०,
   — मुहम्मद अली जब हिन्दोस्तान से —- राउन्डटेबिल कान्फ्रेन्स में शरकत के लिए बम्बई पहुंचे तो बजाहिर वह खत्मशुदा थे। जियाबितीस ने मग्ज़े उस्तोखाहतक को खा लिया था आँखें भी जवाब दे चुकी थीं।
   – मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, पृ. ४७,

चूँकि इस समय लंदन में जो गोलमेज सभा होने जा रही है वह देश की समस्याओं से ही संबंधित है इसलिए मैं अपने अस्वस्थ शरीर की चिन्ता न करते हुए देश कार्य हेतु लंदन अवश्य जाऊँगा - भले ही इस कार्य की पूर्ति में मेरे प्राण ही क्यों न निकल जायें।[१] लन्दन जाते समय मार्ग में आपका अस्वस्थ शरीर और गंभीर स्थिति में आ गया अतः विवश होकर उपचार हेतु आपको फ्रान्स पहुंचने से पूर्व ही पेरिस में उतार लिया गया।[२]

पेरिस में मौलाना मुहम्मद अली को उनके एक तुर्क डॉ. वेहजतदेही ने जो उनका मित्र था, ने आपको पेरिस के अच्छे डाक्टरों को दिखलाया एवं इलाज कराया किन्तु स्वास्थ्य में सुधार होने के कारण हिज हाइनेस सर आगाखां ने मौलाना को अपने मित्र डा. वानेकर को दिखलाया जो हृदय, जिगर एवं मेदे के इलाज में विशेषज्ञ थे। डॉ. वानेकर के इलाज से आपके स्वास्थ्य में सुधार हुआ और आपने फिर लन्दन गोलमेज सभा में सम्मिलित होने के लिए प्रस्थान किया। और इस प्रकार मौलाना मुहम्मद

---

1. मुहम्मद अली ने अपने दोस्तों और तिब्बी नशीर-कारों की तमवीह का सिर्फ यह जवाब दिया कि एक सिपाही का फर्ज है कि जब उसका मज़हब व मुल्क ख़तरे में हो तो अपनी जान जोख़ों में डालकर अपने फ़र्ज़ मनसदी को पूरा करें।

   – निगारिशाते मुहम्मद अली

   उन- अज़ेहाल- मौलाना शौकत अली, पृ. २७७

   – वह (मुहम्मद अली) बम्बई जहाज स्ट्रेचर पर लिटा कर सवार किये गये। फ्रान्स पहुँचते-पहुँचते उनकी हालत ज्यादा बिगड़ी तो पेरिस में उतार लिये गये। - - - साँस लेना मुश्किल हो गया। बुख़ार भी आ गया, जिगर में दर्द पैदा हो गया। भूख बिल्कुल गाईब हो गयी मतली बार-बार आती। — मौलाना मुहम्मद अली की याद में,

   मुर- सै. सवाहुद्दीन अब्दुर्ररहमान, पृ. २१९

2. जहाज पर सवार हुए तो ख़ुद से सवार होने के क़ाबिल कहाँ थे। स्ट्रेचर पर लिटाकर सवार कराये गये, फ्रांस पहुँचते पहुँचते हालत और रद्दी हो गयी लन्दन अभी दूर था और हालत इतनी गिर गयी थी कि वतने सफर का तहममुल भी मुमकिंन न था, रास्ते ही में पेरिस में उतार लिये गये और इलाज यहीं बड़े बड़े माहेरीनेफ़न का शुरू कर दिया गया।— मुहम्मद अली की ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी - हिस्सा दोयम पृ. १६०,

अली शारीरिक यातनाएँ सहन करते हुए लन्दन पहुँचे।[१] महारानी विक्टोरिया ने १२ नवम्बर सन् १९३० ई. को गोलमेज सभा का लन्दन में उद्घाटन किया।[२]

लन्दन पहुँचने के पश्चात् आपका स्वास्थ्य १५ नवम्बर सन् १९३० से फिर बिगड़ गया किन्तु फिर भी आप अपने स्वास्थ्य की चिन्ता न करते हुए निरन्तर बीमारी की दशा में ही गोलमेज सभा में जाते रहे और सभा के कार्यक्रमों में सम्मिलित होते रहे।[३] अस्वस्थता की स्थिति में ही

1. उनके (मौ. मुहम्मद अली) एक तुर्क दोस्त डा. वेहजतंदेवे ने उनको बेहतर से बेहतर इलाज कराया फिर हिजहाइनेस सर आग़ा खाँ ने अपने एक दोस्त डॉ. वाकेनर को दिखाया जो दिल, जिगर, मेदे के इलाज में बड़े माहिर थे। उनके इलाज से दिल की खराबियाँ दूर हो गयीं तो लन्दन रवाना हुए। खुदा-खुदा करके मौलाना लन्दन पहुंचे।
   — मौलाना मुहम्मद अली की याद में,
   – मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २१९,
   रास्ते ही से पेरिस में उतार लिये गये और इलाज यहीं बड़े-बड़े माहेरीने फ़न का शुरू कर दिया गया —— दिनों से गुज़र कर नौबत हफ्तों की आ चुकी और अलालत की तशवीश अंग्रेज खबरें बराबर पेरिस से आती रही ख़ुदा. ख़ुदा करके नवम्बर में इफ़ाक़ा हुआ और मुहम्मद अली इस काबिल हुए कि किसी तरह लन्दन पहुंच सके।
   – मुहम्मद अली - जाती डायरी के चन्दवर्क,
   मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा दोयम, पृ. १६०, १६२,
2. १२ नवम्बर सन् १९३० ई. को मि.के मौअज़्ज़म ने कान्फ्रेंस का इफ़्तेताह किया।
   — मौलाना मुहम्मद अली की याद में
   – मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २१९-२२०,
3. १५ नवम्बर, (१९३०) से मौलाना मुहम्मद अली की हालत अच्छी न थी लेकिन शख्त बीमारी होते हुए मौलाना राउन्ड टेबिल कान्फ्रेन्स में जाते और हिस्सा लेते थे।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा दोयम, पृ. ३०७,
   – बदकिस्मती से इंग्लिस्तान में उसकी सेहत इस दरजा ख़राब हो गयी थी कि वह चलने फिरने से भी माजुक था फिर भी मैंने (शौकत अली) खुद अपनी आँखों से देखा कि वह आखिरे वक्त तक अपने जिस्मानी दर्द व तकलीफ से बावजूद अपने ज़ोमनसबी की अंजाम देही में चारों तरफ मारा-मारा फिरता रहा।
   – निगारिशाते मुहम्मद अली - मुर. रईस अहमद जाफ़री,
   - उन- अर्ज़े हाल - मौ. शौकत अली, पृ. २८१,

मौलाना मुहम्मद अली ने १९ नवम्बर सन् १९३० ई. को गोलमेज़ सभा में अत्यन्त प्रभावशाली भाषण दिया।[१] जो लन्दन एवं भारतीय समाचारपत्रों द्वारा प्रकाशित किया गया एवं जिसकी असंख्य देश प्रेमियों मित्रों एवं दुश्मनों द्वारा मुक्त कंठ से भूरि भूरि प्रशंसा की गयी।[२] अस्वस्थता के कारण आप सभा में खड़े होकर भाषण करने में असमर्थ थे । इसीलिए आपने बैठकर ही भाषण दिया।[३]

गोलमेज सभा में मौलाना मुहम्मद अली ने भाषण देते हुए सिंहनाद किया कि या तो वह स्वतन्त्रता लेकर स्वदेश वापिस जायेंगे अन्यथा ब्रिटिश सरकार को अपने स्वतन्त्र देश में अपनी समाधि के लिए दो गज

---

1. १९ नवम्बर सन् १९३० ई. को गोलमेज कान्फ्रेन्स लन्दन में - मशहूर तक़रीर की थी।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ, मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८७,
   – मौलाना मुहम्मद अली ने कान्फ्रेन्स को मुख़ातिब किया और उसमें जो तक़रीर की वह दुनिया की बेहतरीन तकरीरों में शुमार किये जाने के लायक है।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ. २२०,
2. इंग्लिस्तान और हिन्दोस्तान के प्रेस में यह तक़रीर शाये हुयी तो हरकस व ना कस की ज़बान पर इसी का चर्चा था।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ. २२०,
3. वह (मुहम्मद अली) अपनी अलालत की वजह से खड़े नहीं हो सकते थे। इसीलिए उनसे बैठकर तक़रीर करने की दरख़्वास्त की गयी और जब वह बोल रहे थे तो मालूम होता था कि कोई कोहे आतिश फ़िशा फट रहा है।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान पृ. २२०,

भूमि देने पर विवश कर देंगे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ने गोलमेज सभा में घोषणा की कि वह आदि मध्य और अन्त - तीनों स्थितियों में एक भारतीय हैं अन्य कुछ नहीं।[२] उन्होनें ब्रिटिश सरकार पर आरोप लगाया कि उन्होंने भारतीय इतिहास

---

1. मौलाना ने वहां तक़रीर के दौरान अंग्रेजों से बुलन्द आवाज़ में कहा, अगर तुम मेरा मुल्क आज़ाद नहीं करोगे तो मैं गुलामी की ज़िन्दगी में वापस नहीं जाऊँगा और तुम दो गज जमीन क़ब्र के लिए मुझे देने पर मजबूर होगे।
 – उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल, - साहिबज़ादा तजम्मुल अली खां, पृ. ११२, ११३,
 – मैं मुहम्मद अली मरीज़ हूँ अपने बिस्तरे मरज़ ही से यहाँ आया हूँ। अब मैं उस वक्त तक अपने गुलाम मुल्क़ में ज़िन्दा वापस नहीं जाऊँगा जब तक अपने गुल हमराह रूहे आज़ादी को लेकर न जाऊँ। अगर आपने यह न दिया तो मेरे लिए यहां कब्र की जगह दीजिये।
 – मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क - मुर. अब्दुल माजिद दरियाबादी हिस्सा दोयम, पृ. १६२, १६३,
 — I want to get back to my country : he said, if I can go back with the substance of freedom in my hand, and if you do not give us freedom in India, you will have to give me a grave here.
 Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited By. Afzal Iqbal, p. no. xviii,
2. But where India is concerned, where India's freedom is concerned, where the welfare of India is concerned, I am an Indian first, an Indian second, an Indian last, and nothing but an Indian.....
 .. Select Writings and Speeches of Maulana Mohd. Ali Vol. II, by Afzal Iqbal, p. 356.
 – गोलमेज कान्फ्रेन्स लन्दन में जो मशहूर तक़रीर थी उसमें एक जगह फरमाया गया था कि जिन उमूर का हिन्दोस्तान से ताल्लुक है, मैं अव्वल हिन्दोस्तानी हूँ दोयम हिन्दोस्तानी हूँ और हिन्दोस्तान के सिवा कुछ नहीं हूँ।
 — मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर. अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८७,
 — जहाँ हिन्दोस्तान का मसला आता है जब उसकी आजादी का सवाल आता है जब उसकी फलाह व बहबूद की बहस आयेगी तो मैं पहले हिन्दोस्तानी हूँ, बाद में हिन्दोस्तानी हूँ। आखिर में हिन्दोस्तानी और कुछ नहीं सिर्फ हिन्दोस्तानी हूँ।
 – मौलाना मुहम्मद अली की याद में मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ. २३५,

के घटना क्रम परिवर्तित करने का अक्षम्य अपराध किया है।[१]

इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने गोलमेज कान्फ्रेन्स में भाषण के मध्य यह भी स्पष्ट किया कि वह और उनके बड़े भाई शौकत अली वे प्रथम व्यक्ति हैं जो लार्ड रैडिंग द्वारा जेल भेजे गये थे।उन्होंने उसी समानता के अधिकार की माँग करते हुये कहा कि उन्हें भी वही अधिकार मिले कि वह लार्ड रैडिंग को किसी अपराध में दण्ड स्वरूप जेल भेज सकें।[२] मौलाना ने ब्रिटिश शासन से चुनौती भरे शब्दों में कहा कि वह मैत्री और स्वतन्त्रता लेने आये हैं और निषेधात्मक उत्तर मिलने की स्थिति में वह स्वतन्त्रता संग्रामियों के साथ होंगे।[३]

---

1. आपका जिस तरह का यह गुनाह है कि आपने हिन्दोस्तान को उसके मरदाना औसाफ़ से मरहूम किया इसी तरह आपका यह भी गुनाह है कि आपने हिन्दोस्तान की ग़लत तारीखें स्कूलों में पढ़वाईं जिसकी बिना पर स्कूलों के बच्चे के ज़ेहन में हिन्दोस्तान की तारीख़ का एक ग़लत तसब्बुर पैदा हुआ।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान पृ. २३६,
2. मैं (मुहम्मद अली) और मेरा भाई (शौक़त) पहले अशखास थे जिन्हें लार्ड रैडिंग ने जेल भेजा। मुझे इस मुआमिले में उनसे कोई शिकायत नंहीं लेकिन मैं भी वही इख़्तेयार चाहता हूँ कि जब लार्ड रैडिंग हिन्दोस्तान में किसी जुर्म के मुरतकिब हो तो मैं भी इन्हें (लार्ड रैडिंग) जेल भेज सकूं।
   – सीरते मुहम्मद अली - मुर- रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. ५२७, ५२८,
   – हम दोनों भाई (अली ब्रादरान) वह पहले दो शख़्स हैं जिन्हें लार्ड रैडिंग ने जेल में डाल दिया था। लार्ड रैडिंग से मुझे इन्तकाम लेना मक़सूद नहीं लेकिन अपने मुल्क की आजादी का तो मैं उस वक़्त क़ायल हूँगा जब मुझे इख़्तेयार हासिल हो जाये कि मैं जब चाहूँ लार्ड रैडिंग को उनके किसी जुर्म पर जेल भिजवा दूँ।
   – ज़ाती डायरी के चन्द वर्क- मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी हिस्सा दोयम, पृ. १६२,
3. हम यहाँ सुलह, दोस्ती और आज़ादी के लिए आये हैं और हम इन्हीं चीजों को लेकर वापस जायेंगे और अगर हमको यह चीजें नहीं मिली तो हम मुल्क की आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों के साथ होंगे जहाँ हम १० बरस पहले थे।
   — मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २२६,

मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने गोलमेज कान्फ्रेन्स में भाषण करते हुए यह भी कहा कि वह उसी समय स्वदेश वापस जायेंगे जब भारत में फैडरेशन स्थापित हो जायेगा और सरकार तथा राजा नवाब समझौते के लिए वचनबद्ध हो जायेंगे।[१] इसीलिए आपने सभा में भाषण करते हुए पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग का उद्घोष किया।[२] अन्त में अपने भाव प्रवण भाषण को विराम देते हुए आपने अपना स्थान ग्रहण करते हुए कहा कि वह तब तक दुबारा नहीं बोलेंगे जब तक भारत को इंग्लैण्ड के समान स्वतन्त्र होने की घोषणा न कर दी जाये।[३] गोलमेज सभा में मौलाना मुहम्मद अली, द्वारा दिया गया सशक्त भाषण भारतीय इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा।[४]

---

1. हम (मुहम्मद अली) इस कान्फ्रेन्स से सिर्फ़ उस वक़्त जायेंगे जब हिन्दोस्तान में फैडरेशन कायम हो जायेगा और ताज और वालीयाने रियासत के दरिम्यान रिज़ामन्दाना मुआयदे हो जायेंगे।
   – हयाते जौहर - इशरत रहमानी 'रामपुरी', पृ. ११४,
2. मैं (मुहम्मद अली) यहाँ दरजये मुस्तामेरात माँगने नहीं आया हूँ। मैं दरजये मुस्तामेरात के हासिल करने का काइल नहीं हूँ। मेरा मसलक मुकम्मल आज़ादी है। - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुरु- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ.२२८,
3. I now take my seat and I hope I shall not be called upon to speak again in the Pleanary Conference until you announce, Mr. Chairman, that India is as free as England.
   Select Writings & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, p. 361.
4. गोलमेज कान्फ्रेन्स में मुहम्मद अली ने जैसी बसीरत अफ़ज़ा और ईमान अफ़रोज़ तक़रीर की है वह हिन्दोस्तान की तारीख़ में हमेशा यादगार रहेगी।–
   सीरते मुहम्मद अली - मुर- रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. ५१,

   – मौलाना मुहम्मद अली ने कान्फ्रेन्स को मुखातब किया और उसमें जो तक़रीर की वह दुनिया की बेहतरीन तक़रीरों में शुमार किये जाने लायक है।

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में- मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर - रहमान, पृ. २१९, २२०,

   – मौलाना सफ़र करने के क़ाबिल न थे मगर मुल्क व कौम के दर्द ने उन्हें लन्दन पहुंचा ही दिया। मौलाना ने उसके पहले इजलास में जो तक़रीर की वो जुरअत बेबाकी और ज़ोरे बयान का नादिर नमूना है।

   उन- यादें मुहम्मद अली जौहर की, रफ़तज़मानी, बेगम, राजमाता ऑफ रामपुर, स्वीनियर १९८१, पृ. ४८,

पंचम अध्याय

स्वतन्त्रता संग्राम की सफलता के लिए शैक्षिक विकास में मुहम्मद अली के कार्य

(अ) भारत में शिक्षा के विकास पर बल
(आ) उच्च शिक्षा के विकास हेतु पृथक्-मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रयास
(इ) शैक्षिक विकास का स्वतन्त्रता पर प्रभाव

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" बचपन से ही तीव्र बुद्धि वाले प्रतिभाशाली छात्र थे।[१] आपके माता पिता धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे इसीलिए आपको अपने घर पर ही प्रारम्भ में ही कुरान की शिक्षा एवं अध्ययन का अवसर प्राप्त हुआ और इस प्रकार मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने बचपन में घर पर ही क़ुरान शरीफ का अध्ययन किया।[२]
प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त जब आप बरेली विद्या अध्ययन हेतु गये तब वहाँ भी आपने अपनी प्रतिभा से अपने अध्यापकों का हृदय मोह लिया और इतना ही नहीं आपकी प्रतिभा से प्रभावित होकर आपके मित्रगण भी आपके सुझाव को महत्व देते और हृदय से आपका सम्मान

---

1. Mohamed Ali had an excellent and brilliant memory.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Yusufi, Book I, p.no. ३९.
- मुहम्मद अली अहदे तिफ़ली से ज़हीन और होनहार थे।
उन- शमशीर बरहना - मौलाना मुहम्मद अली जौहर सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५६,
2. इबतिदा में मौलाना को कुरआन शरीफ की मुकम्मल तालीम दिलाई गयी। - हयाते जौहर मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ३५,
– उनकी वाल्दा ने जो बी अम्मा के नाम से मशहूर हुई, उनकी तालीम व तबियत में कोई कसर उठा न रखी थी। घर पर, उर्दू फ़ारसी की तालीम दिलाकर बरेली के हाई स्कूल में दाखिल किया।
- मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर. - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ.३,४

करते थे।[१]

इसके पश्चात् आपने एम.ए.ओ. कालेज अलीगढ़ से बी.ए. किया और सर्वाधिक अंक प्राप्त कर 'इक़बाल गोल्ड मेडिल' भी प्राप्त किया।[२] आपकी शिक्षा के प्रति रुचि देखते हुए ही आपके बड़े भाई श्री शौकत अली साहब ने आपको उच्च अध्ययन हेतु इंग्लैण्ड भेजा।[३] जहाँ आपने गहन अध्ययन कर आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से मार्डन हिस्ट्री में बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर अपनी योग्यता का परिचय दिया।[४]

आक्सफोर्ड से बी.ए. द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करके एवं स्वदेश आने के पश्चात् मौलाना मुहम्मद अली ने अलीगढ़ कालेज में धार्मिक शिक्षा न होने के कारण, पढ़ाने के उद्देश्य से एक प्रार्थना पत्र प्रेषित किया किन्तु विद्यालय के अंग्रेज प्रधानाचार्य ने आपका प्रार्थनापत्र अस्वीकृत कर दिया । तत्पश्चात् आप रियासत रामपुर के शिक्षा विभाग में सेवारत

---

1. कालिज की तालीम के दौरान में उनकी क़ाबिलियत व फ़ज़ीलत के असातिज़ा और तुलाबा सब बददिल मोहरफ़ होने के सबब हर तहरीक व तनज़ीम में आपकी राय को लाज़िमी क़रार देते बल्कि हर मुनज़्ज़म व मुफीद तहरीक के बानी अक्सर खुद आप ही होते और आपके फैसले के मुताबिक सबको इत्तेफ़ाक़ करने में उज न होता।
   – हयाते जौर -मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ३६,
2. कालेज में मुहम्मद अली की पढ़ाई बहुत अच्छी थी।— बी.ए. में तो यूनिवर्सिटी में अव्वल आये और 'इकबाल गोल्ड मेडिल' हासिल किया।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी,
   . He Got through his B.A. with flying colours. .... Maulana Mohamed Ali, Said Mohamed Khan p.no. ५,
3. उनके ब्रादरे बुज़ुर्ग मौलाना शौकत अली ने फिर हिम्मत की और दोबारा इंग्लिस्तान भेजा ताकि वह बी.ए. की डिग्री आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से हासिल कर सकें।
   – सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस हमद जाफरी पृ. १८७,
4. I had at Ox Ford when I took an Honours degree in Modern History.
   . My life a fragement : Mohamed Ali,
   Edt. by Afzal Iqbal page no. 31.
   – १९०२ ई. में बी.ए. की डिग्री लेकर हिन्दोस्तान वापस तशरीफ़ लाये।
   – हयाते जौहर - मुर- नश्तर बलरामी, पृ. ७,

हुए।[१] और नवाब रामपुर श्री हामिद अली खाँ साहब ने आपको रामपुर शिक्षा विभाग का उच्च अधिकारी नियुक्त किया एवं साथ ही रामपुर हाई स्कूल का प्रधानाचार्य नियुक्त किया।[२]

मौलाना मुहम्मद अली की शिक्षा के प्रति अत्यधिक रुचि थी इसीलिए आपने सेवा काल में भी अपने लेख 'टाइम्स आफ इन्डिया', 'स्पेक्टेतर' और 'हिन्दुस्तान रिव्यू' आदि तत्कालीन प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित कराये।[३] बड़ौदा रियासत की सेवा से त्यागपत्र देने के पश्चात् आपने

---

1. When Mohamed Ali returned from Ox Ford and the Nawab desired to have him added to the college Staff (Aligarh college) the Principal refused to agree and thus Mohamed Ali with all his degree was not allowed to serve his Alma Mater and he join the Rampur State educational service.
Maulana Mohamed Ali Jauhar,
by, Allah Bakhsh Yusufi, page no. 152,

2. इंग्लैण्ड से शिक्षा पूर्ण कर वापस लौटने पर रियासत के शिक्षा निदेशक तथा हाई स्कूल के प्रधानाचार्य नियुक्त किये गये।
– रामपुर का इतिहास १९८०- श्री देवेन्द्र नाथ जिला सूचना अधिकारी रामपुर, पृ. ४,
— नवाब साहब रामपुर ने उन्हें अपनी रियासत में सबसे बड़ा अफसरे तालीमात बना दिया और इसी के साथ रामपुर हा. स्कूल की प्रिन्सिपलशिप के फ़राइज़ भी मुहम्मद अली से मुत अल्लिक हो गये।
– सीरते मुहम्मद अली मु०- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १८७,
—— मिस्टर मुहम्मद अली बी.ए. को इस वजह से कि वह रामपुर के रहने वाले हैं। और उन्होंने विलायत में भी तालीम पाई है। — ३००- रु. माहवार एजुकेशन अफ़सर मुक़र्रर फ़रमाते हैं। मिस्टर मुहम्मद अली अंग्रेजी स्कूल रामपुर की आला जमातों को पढ़ायेंगे और मदारिस अंग्रेजी रियासत की निगरानी करते रहेंगे।
– रामपुर गज़ट २० जनवरी सन् १९०२ ई.।

3. While in service it self he contributed many articles to the Times of India and the Indian Spectator.
. Maulana Mohamed Ali. By Fareed Mirza, An article in souvenir, Dec. 1978, Hyderabad-४.
. His pen continued to decorate with his writings the pages of the most important papers of Times of India, The Indian Review, the Observer and Several others.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, By, Allah Bakhsh Yusufi, Book I, p. 97,

स्वयं 'कामरेड' अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार पत्र कलकत्ते से प्रकाशित किया।[१] एवं कुछ समय के उपरान्त देहली से भी आपने एक 'हमदर्द' नामक उर्दू दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित किया।[२] जो बहुत लोकप्रिय हुआ। कामरेड और हमदर्द दोनों अखबारों के माध्यम से मौलाना मुहम्मद अली ने अपने क्रान्तिकारी विचार अभिव्यक्त किये और अंग्रेजी सरकार के पांव लड़खड़ा दिये।[३]

मौलाना मुहम्मद अली ने जब देश की राजनीति में सक्रिय भाग लिया तब वर्तमान देश की शिक्षा पद्धति को देश एवं मुस्लिम वर्ग के अनुकूल न पाकर उसका विरोध करते हुए शिक्षाएं परिवर्तन एवं धार्मिक

---

1. The comrade when it was first founded was intimately associated not only with Muslims Politics but also with Muslim education.

   Select Writings & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited by : Afzal, page no. 297.

   - अंग्रेजी का यह हफ़्तेवार अखबार कामरेड का पहला शुमारा कलकत्ते से १४ जनवरी सन् १९११ ई. को शाये हुआ।

   - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर- ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. २२

2. मौलाना ने उर्दू का एक रोजाना अख़बार हमदर्द भी फरवरी, सन् १९१३ ई. में निकालना शुरू किया। - मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ.५,

3. 'कामरेड' और 'हमदर्द' यह वोही अख़बारात थे जिनके ज़रिये मौलाना ने अंग्रेज़ हुकूमत के पांव लड़खड़ा दिये।

   - मौलाना मुहम्मद अली जौहर - बहैसियत एक अख़बारनवीस, - हसीन जहाँ एम. ए. स्वीनियर १९८१, पृ. ४९,

   .. There is no doubt, it was the first urdu Paper of leading articles emanating from the forceful pen of Mohamed Ali. . Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, By Allah Bakhsh Yusufi, Book one, p. 134,

शिक्षा को अनिवार्य किये जाने के पक्ष में अपने विचार व्यक्त किये।[१] इसके अतिरिक्त आपने इस बात पर भी बल दिया कि अध्यापन की वर्तमान पद्धति में व्याकरण पर से भी अत्यधिक बल समाप्त होना चाहिए एवं भाषा को भी प्रकृत ढंग से पढ़ाना चाहिए।[२]

शिक्षा के धार्मिक पक्ष के अतिरिक्त मुहम्मद अली ने इस बात पर भी बल दिया कि शिक्षा का माध्यम विदेशी नहीं होना चाहिए। और प्रारम्भिक स्तर पर तो कदापि नहीं होनी चाहिए। किन्तु विज्ञान की कुछ शाखाओं में यूरोपियन तकनीकी शब्दावली के प्रयोग की छूट दी जा

---

1. — national education must be of a type distinct from that which is effecred in the government or aided institutions, each community must provide spearately for the education of its youth, without, however, setting up religious texts, or excluding members of other communities, or imposing upon them compulsory religious instruction in the tenets of its faith. This must be so because each community has its own ideals and its own traditions unless it is done in institutions mainly intended for its own youth. S.W. & S. of M. Mohd. Ali, Vol. II, p. 297,

   – अब ऐसे मरकज़ी और सूबेदार बोर्ड फौरन क़ायम हो जाने चाहिए और हमें अपने लड़के लड़कियों को तालीम का संजीदगी के साथ इन्तेजाम करना चाहिए।

   – ख़तबये सिदारत मौलना मुहम्मद अली, पृ. १३४,

   – अलीगढ़ से उन्हें (मुहम्मद अली) यह शिकायत थी कि मज़हबी तालीम बराये नाम थी और मज़हबी ज़िन्दगी का तो नाम भी न था।

   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में - सै. आविद हुसेन, पृ. १२४,

2. The present method of teaching in which grammer obtrudes itself too much on the beginners' attention, has to be entirely discharged, and more direct and natural method must be adopted,.....

   Select Writings and Speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol II, Edited by : Afzal Iqbal, page no. 301.

सकती है।[१] इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने प्राइमरी स्तर पर प्रारम्भिक कला को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने पर बल दिया जिससे छात्र की आँखें और हाथ प्रशिक्षित हो सकें और उसमें सौन्दर्य धारणा एवं आनुपातिक ज्ञान विकसित हो सके।[२]

मौलाना मुहम्मद अली माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी को एक ऐच्छिक विषय बनाने के पक्ष में थे और चाहते थे कि, वह भाषा तेरह वर्ष की आयु से ही सिखाना चाहिए।[३] तथा इसके साथ ही माध्यमिक स्तर पर छात्रों को अन्य यूरोपीय भाषाएँ जैसे फ्रेंच, जर्मन आदि को भी अंग्रेजी के साथ साथ पढ़ाने के पक्ष में थे।[४] और चाहते थे कि माध्यमिक शिक्षा भी प्राइमरी शिक्षा की भांति ही ५ वर्ष में ही पूर्ण होनी चाहिए। और

---

1. Next to the religious aspect of education on which much greater stress has now been laid than never before, it is to be emphasised that the absured and slavish idea of imparting instructions in the various branches of knowledge through the refractory medium of a foreign language must be wholly discharged ..... But is must be entirely removed from the primary stage, and in no case must it be the medium of instruction, though it may for some time be necessary to retain European terminology in the case of certain branches of science.
   Select Writing and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 305, 306,
2. Elementary drawing is to be included in the primary stage as necessary for training the hand and the eye of the child and for developing in him a perception of beauty and a sense of proportion,.....
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited by Afzal Iqbal, pa. no. 313,
3. The study of English is to be retained as an optional subject in the secondary stage, and it is desirable that for some time to come a large number of school students should continue to learn that language from the age of thirteen .....
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol II Edited by . Afzal Iqbal, page no. 305,
4. Permission must, however, be given to school students in the secondary stage to study any European languages, French and German would also be taught side by side with English in these secondary schools.
   . Select Writings & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited by : Afzal Iqbal. page no. 306.

माध्यमिक शिक्षा पूर्ण करते समय छात्र की आयु सगभग १७ वर्ष होनी चाहिए।[१]

इसके अतिरिक्त शिक्षा के बारे में मौलाना मुहम्मद अली का यह भी विचार था कि प्राइमरी स्कूल के पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् छात्रों को प्रारम्भिक गणित, जीवन में (व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए) व्यावहारिक रेखागणित, प्रारम्भिक बहीखाता, का ज्ञान भी कराना चाहिए तथा साथ ही इसके अतिरिक्त उन्हें विभिन्न विज्ञानों, भारत और इस्लाम का इतिहास, भारतीय भूगोल, इस्लामिया देशों का भूगोल, देश के संविधान की रूप रेखा, सरकार और जिले का प्रशासन और एक नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों और अधिकारों का भी ज्ञान कराना चाहिए।[२]

---

1. The next stage would be that of secondary education, corresponding not to the present High School stage, but to the Intermediate Collegiate stage, to be finished like the primary stage in 5 years, and approximately when the student has completed the 17th year of his age.
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II, Edited by Afzal Iqbal, p.no. 309,
2. Thus a student who has completed the primary school course should be expected to be sufficiently well grounded in the main essentials of Muslim Theology, (which would in itself be of very considerable cultural value, when taught in the manner proposed, as a subject of the greates practical utility in this world also), to know a little Arabic so as to be able to read the Holy Quran with a relish and a fervour, to know Arithmetic for all practical purposes of life, an elementary practical Geometry and Mensuration together with elementary book-keeping, which would help a village boy in his ordinary dealings in after-life; to posses accurate and extended general information although of an elementary character, with regard to various sciences, to be acquinted with the outlines of the history of Islam and of India in their relationship with world movements; with the Geography of India in considerable detail, and the Geography of Islamic countries generally in relationship with the rest of the world, with outlines of constitution of his country's Government and the administration of his district; and to know generally his rights and duties as a citizen.
   Select Writing and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol II, Edited by : Afzal Iqbal, page no. 306, 307

विश्वविद्यालय स्तर पर मौलाना मुहम्मद अली उच्च धार्मिक शिक्षा के अतिरिक्त छात्र द्वारा ज्ञान की किसी एक शाखा जैसे इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, गणित, विज्ञान, साहित्य अथवा कानून को अध्ययन के लिए चुनने के पक्ष में थे। और विश्वविद्यालय स्तर पर भाषण पद्धति की अपेक्षा ट्यूटोरियल पद्धति के पक्ष में थे जिससे कि छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जा सके।[१]

इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने मुस्लिम भाइयों से कहा कि उन्हें विज्ञान में अधिक रुचि लेनी चाहिए जिससे कि भविष्य की उच्च शिक्षा की नींव पड़े।[२] साथ ही मौलाना का यह भी कथन था कि कस्बों के स्कूलों में कृषि की शिक्षा को रोज़गार की शिक्षा से स्थानापन्न करना चाहिए। लड़कों के लिए चर्खा कातना अनिवार्य होना चाहिए तथा माध्यमिक और विश्वविद्यालय स्तर पर रोजगार सम्बन्धी शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए तथा जिन उद्योगों के लिए जो नगर प्रसिद्ध है वहाँ उन्हीं

---

1. In the university stage, besides acquiring a further knowledge of his religion and acquainting himself with standard works of Theology, he should be required to take up any one branch or school of studies, History, Sociology, Philosophy, Mathematics, Science, Literature, or Law and to show therein proficiency up to the standard of the B.A., degree of European universities or of the M.A. degree of the present Indian Universities.
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol. II,
   Edited by Afzal Iqbal, page no. 307,
   The method of imparting instruction in the University stage must also differ from the system of lectures in which the student should be taking down notes as the professor proceeds with his lecture, supplemented by a tutorial system in which the tutor should guide and regulate the private studies of the undergraduates, and offer suggestions rather than sit down, textbook in hand, to read and explain the text.
   Select Writing & Speeches of Mohd. Ali, Vol. II, p. 310
2. It is desired that Muslims should take more interest than they do at present in science and with that object in view it is proposed to impart scientific information even in the primary stage to form the foundation of future of educational superstructure.
   Select Writing & Speeches of Maulana Mohd. Ali. Vol. II, Etd. by Afzal Iqbal, p. 311.

के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त रंगाई, धुलाई, जिल्दसाजी और चर्मकारी के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। तथा एकाउन्टेन्सी, स्टेनोग्राफी, सिलाई, बुनाई के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था होनी चाहिए। क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली का विचार था कि रोजगार संबंधी शिक्षा स्पष्ट उपयोगिता के अतिरिक्त शिक्षित नवयुवकों में श्रम की महत्ता और श्रम में गौरव का भाव जगाएगी जिससे शिक्षित वर्ग और मजदूर वर्ग के बीच का भेद मिटेगा।[१]

मौलाना मुहम्मद अली एक महान् विद्याविशारद थे। वह जानते थे कि सरकारी स्कूल सरकार के लिए केवल कलर्कों को ही निर्माण करते हैं इसीलिए उन्होंने एक अच्छी और भिन्न शिक्षा के लिए अलीगढ़ में जामेआ मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना की।[२] जामेआ मिल्लिया इस्लामिया की नींव रखना मुहम्मद अली का एक महत्वपूर्ण कार्य है। २९ अक्टूबर सन् १९२० ई. को आपने महात्मा गांधी जी के साथ इस शैक्षिक संस्था की नींव डालने की घोषणा की और इसके उद्घाटन की औपचारिकता

---

1. Besides this obvious utility, pursuit of vocational studies would impress the educated youth with the dignity and importance of labour, and also remove that estrangement that exists at present between the educated classes and the masses dependent upon vocation.
. Select Writing & Speeches of Maulana Mohamed Ali, Vol. II,
Edited by Afzal Iqbal. page no. 314.
2. मौलाना मुहम्मद अली बड़े दूरदर्शी विद्यावेत्ता थे। वे समझ गये कि उस समय के स्कूल व कालिज सिर्फ गुलाम कलर्कों को तैयार करने वाले कारखाने थे। उनसे कौम के लिए मुफीद तालीम की आशा करना खरगोश के सींग निकालना है। इसलिए उन्होंने कोशिश करके अलीगढ़ कालिज के पास जामेआ मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना की।
– मानवता और देश प्रेम का फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति रेणु, एम. ए. डी. लिट्.
— Maulana Mohd. Ali, Birth Cen. Cel. Souvenir, Dec. 1978, Hd.-4,
- मौलाना मुहम्मद अली ने एम.ए.ओ. कालेज के मुक़ाबिले में अलीगढ़ में जामेआ मिल्लिया इस्लामिया क़ायम करायी जिसकी तासील अक्टूबर १९२० ई. में हुई।
– मौलाना मुहम्मद अली की याद में।
- मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. ११२,

'देवबन्द' कालिज के महान् विद्वान् मौलाना महमुदुल हसन के द्वारा सम्पन्न कराई।[१] तथा अलीगढ़ की इस शैक्षिक संस्था के सभापति शेखुल हिन्द मौलाना महमुदुल हसन साहब एवं प्रिन्सिपल मौलाना मुहम्मद अली बनाये गये।[२] जामेआ के प्रथम प्रधानाचार्य के रूप में आपने शिविर कक्षाएँ आरम्भ की।[३] और आपने जामेआ में अध्ययन के लिए धार्मिक और तत्कालीन विषयों की एक परिपूर्ण रूप रेखा तैयार की।[४]

---

1. मुहम्मद अली का एक कारनामा जामिया मिल्लिया इस्लामिया की बुनियाद रखना भी है।— २९ अक्टूबर सन् १९२० को उन्होंने महात्मा गांधी को साथ लेकर कालिज (मुहम्मडन एंग्लो ओरियण्टल कालेज) की मस्ज़िद के हाल में एक नये तालीमी इदारे की बुनियाद डालने का ऐलान किया जो सरकारी इन्तेजाम को आज़ाद था। इस इदारे का नाम उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया रखा और इसकी रस्में इफतिता देवबन्द (उ. प्र.) स्कूल के मुमताज आलिम और क़ौम परवर तबके के रूहानी पेशवा शेख़ुल हिन्द मौलाना महमुदुल हसन के हाथों से अदा करायी।
   – शमशीर बरहना - मौलाना मुहम्मद अली जौहर, मुस- सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५७,
2. अलीगढ़ में राष्ट्रीय मुस्लिम विद्यालय की स्थापना की गयी। उसके सभापति शेखुल हिन्द मौलाना हुसेन साहब बनाये और मौलाना मुहम्मद अली कालेज के प्रिंसिपल बने।
   – यंग इंडिया - महात्मा गांधी,
   अनु- छवि नाथ पाण्डे, बी. ए. एल.एल.बी., पृ. ७१,
3. मौलाना मुहम्मद अली ने जो जामेआ के पहले प्रिंसिपल थे, उन्हीं खेमों में अपने दर्स का सिलसिला शुरू किया।
   – यादों की दुनियां - मुस - यूसुफ हुसेन खां, पृ. ८८,
4. . He (Mohamed Ali) had prepared a complete scheme for the foundation of a Muslim University, open to all religions, communities and denominations and absolutely free from the taint of religious or racial tests, yet mainly and primarily intended for his own community for the youth of which it was to provide religious as well as secular instructions. Above all, it was to create for young Musalmans a centre with the true Islamic atmosphere, so that its alumni would not merely be educated and cultured men, but educated and cultured Musalmans.
   .. My life a fragement.
   Mohamed Ali, Edt. by Afzal Iqbal p. 26,

मौलाना मुहम्मद अली जौहर के विचारानुसार क़ुरान के गहन अध्ययन के लिए ही जामेआ मिल्लिया इस्लामियां या राष्ट्रीय मुस्लिम विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था।[१] और आपके विचारानुसार जामेआ में अरबी, फारसी, तुर्की और पश्तों को पढ़ाने के लिए इन्हीं देशों के अध्यापकों का होना नितान्त आवश्यक था।[२] और इस प्रकार निसन्देह किसी अन्य मुस्लिम शैक्षिक संस्था की अपेक्षा जामेआ मिल्लिया इस्लामिया का वातावरण कहीं अधिक इस्लामी और राष्ट्रीय था।[३]

इस विद्यालय की स्थापना के लिए मौलाना ने अथक मानसिक और

---

1. It was this state of affairs which the organisers of the Jamia Milla Islamia, or the National Muslim University of Aligarh set out to refor. For this purpose an intimate knowledge of the Holy Quran was considered an indispensable foundation. Therefore at every stage provision was made for an intelligent study of the Word of God.

   - Select Writing and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol. II,
   Edited by Afzal Iqbal, p. no. 301,

2. The Jamia must also engage the services of an Arab, a Persian, a Turk and an Afghan to teach Arabic, persian, Turkish and Pushto by the direct method to the Jamia students.

   - Select Writing and Speeches of Maulana Mohd. Ali, Vol II,
   Edited by Afzal Iqbal, p.no. 316,

3. Above all, the atmosphere of the Jamia even today is a far more Islamic and national atmosphere than is to be found in any other Muslim educational institution.....

   . Select writing & Speeches of Mohd. Ali, Vol II, p. 316,

   - इसका (जामेआ मिल्लिया इस्लामिया) पहला मक़सद यह है कि हिन्दोस्तान के मुसलमानों को हक़दोस्त व ख़ुदापरस्त मुसलमान बनाया जाये और दूसरा मकसद यह है कि उनको वतन दोस्त व हुर्रियत परवर हिन्दोस्तानी बनाया जाये।

   — मौलाना मुहम्मद अली की याद में - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ.११३,

शारीरिक परिश्रम मुसलमानों पर किया गया अविस्मरणीय उपकार है।[१] इस विद्यालय की स्थापना के धार्मिक और राष्ट्रीय दोनों उद्देश्य थे।[२] क्योंकि असहयोग आन्दोलन के समय मौलाना मुहम्मद अली ने अलीगढ़ के छात्रों से अंग्रेजी विद्यालयों को त्यागने का आह्वान किया और छात्रों ने अपना अध्ययन स्थगित कर 'जामेआ मिल्लिया इस्लामिया' की स्थापना में सहयोग प्रदान किया। जिसे लगभग ५ वर्ष बाद जून सन् १९२५ ई. में स्थानान्तरित किया गया।[३]

1. आपने (मुहम्मद अली) सच तो यह है कि मुल्क के मुसलमानों पर एक ऐसा अहसान किया है जिसको कभी भुलाया नहीं जा सकता। इबतेदा में कुछ मुद्दत तक मौलाना ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया का इन्तेजाम और उसकी देखभाल ख़ुद बड़ी कोशिश और मेहनत से फरमाई और ऐसी मजबूत बुनियाद क़ायम कर दी कि आज तक मुस्तकिल इस्लामी दर्सगाह वतन के फ़रजन्दों की तालीम व तर्वीयत में मशरूफ़ है।—
   — 'हयाते जौहर' - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ७९,
   — इसमे कोई शुबह नहीं कि मुहम्मद अली ने इसके क़याम के लिए जो अथक कोशिशें की वह किसी और के वश की न थी। यह उन्हीं की पुरजोश और मुखसिलाना कोशिशों का नतीजा था कि इन्तेहायी ना मुसहिद हालात के होते हुए जामेआ मिल्लिया न सिर्फ़ यह कि क़ायम हो गयी बल्कि मुल्क व क़ौम के दिलों में उसने मुमताज जगह हासिल कर ली।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर - जियाउल हसन फ़ारुख़ी,
   उन- मौ. मुहम्मद अली और जामेआ मिल्लिया इस्लामिया
   अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. १९७,
2. जामेआ क़ायम करने से इनकी (मुहम्मद अली) पहली ग़रज़ यह थी कि यहाँ से दीन व मिल्लत के सन्जीदा खिदमत भी हो जाये। गुज़ार पैदा हो और ज़िमनन मुल्क व वतन की ख़िदमत भी हो जाए।– मुहम्मद अली जाती डायरी के चन्द वर्क़, - मुर - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ० २८६,
   – मौलाना ने अलीगढ़ में — जामेआ मिल्लिया इस्लामिया की नींव डाली जो हिन्दोस्तान की वाहिद क़ौमी दारूल उलूम यूनिवर्सिटी है।
   – हयाते जौहर - इशरतरहमानी, रामपुरी, पृ. ७८,
3. जून सन् १९२५ ई, में जामेआ देहली आ गयी।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली न. मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुक़ी, पृ. १९८,
   – मुहम्मद अली के आह्वान पर अलीगढ़ विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने अपनी पढ़ाई छोड़कर जामिया मिल्लिया की स्थापना की इसे बाद में देहली ले जाया गया।
   – १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   – १९२१ का असहयोग आन्दोलन - डॉ. ताराचन्द, पृ. ३२,

जामेआ मिल्लिया की आधारशिला रखने वाले मौलाना मुहम्मद अली ने मुसलमानों में आत्मविश्वास, जाति प्रेम और उत्साह उत्पन्न किया।[१] और इस प्रकार धार्मिक शिक्षा प्रबन्ध के रूप में मुहम्मद अली "जौहर" की सेवाएं सराहनीय हैं।[२] और यदि मुहम्मद अली ने कुछ और भी न किया होता तो भी जामेआ मिल्लिया की स्थापना ही उनको अमृत्व प्रदान करने के लिए पर्याप्त थी।[३]

अब्दुल माजिद दरियाबादी ने 'जामेआ मिल्लिया इस्लामिया' को मौलाना मुहम्मद अली का बेटा कहा है। उनके अनुसार यह कहना अनुचित है कि मौलाना मुहम्मद अली बिना बेटे के ही संसार से चले गये।[४] मौलाना का जामेआ का उद्देश्य केवल सांसारिक शिक्षा ही प्रदान करना नहीं था, बल्कि सच्चे आस्तिक और देशभक्त भारतीय मुसलमानों

---

1. यह मौलाना (मुहम्मद अली) ही की शख़्सीयत थी जिसने मुसलमानों में खुद ऐतेमादी का जज़बा पैदा किया, क़ौमी जलजला और जोश पैदा किया और हिन्दोस्तानी मुसलमानों में एक नई लगन और नई धुन पैदा की।
   – मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर- सै. नज़रबर्नी, पृ. १८,
2. जहाँ तक कौमी तालीम का ताल्लुक है मौलाना मुहम्मद अली ने इसकी निहायत काबिले कद्र ख़िदमत अंजाम दी।
   - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में,
   मुस- सै. आबिद हुसेन, पृ. १३०,
3. मुहम्मद अली अपनी जिन्दगी भर कुछ न करते सिर्फ़ जामेआ ही की बुनियाद डाल जाते तो भी एक कारनामा सरमाये उम्र होने के लिए काफी था।—
   वह शेर तो इसके अलावा भी बहुत कुछ कर धरके दुनिया से उठा।
   — मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क,
   मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा दोयम, पृ. २८४,
4. यह (मुहम्मद अली) हिन्दोस्तान का वह जहीन औरतब्बाशख़्स है जो कोई तामीरी काम अपनी यादगार नहीं छोड़े जा रहा है। इस ख़्याल की तरदीद के लिए जामेआ मिल्लिया का बजूद काफ़ी है जो ऐसी सईद औलाद छोड़ जाये उसे यह कहना कि वह लावलद उठ गया कैसी सरीह ज़्यादती और ज़ुल्म है।
   – मौलाना मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्दवर्क हिस्सा दोयम,
   - मुर - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २८६,

का निर्माण करना भी था।[१] क्योंकि तत्कालीन शिक्षा अंग्रेजों का ही हित कर सकती थी, भारतीयों का नहीं।[२]

मौलाना मुहम्मद अली का 'जामेआ मिल्लिया इस्लामिया' से जीवन के अन्त तक संबंध बना रहा। उनका देश और उनका घर जामेआ ही था। हक़ीम अज़मल खां के निधन के पश्चात् जब 'जामेआ मिल्लिया इस्लामिया' की दशा शोचनीय हो गयी तब मुहम्मद अली ने इस विषय पर लेख लिखकर अपने उर्दू दैनिक समाचार पत्र हमदर्द में प्रकाशित

---

1. जामेआ ने तालीम के मुतअल्लिक सही नज़रिया क़ायम किया और तलामिज़ा के कुवाये दाखिली को तरक़्क़ी देने का काम अपने जिम्मे लिया और इसको हरगिज़ पसंद न किया ख़्वाह तालीम दुनियाबी हो या दीनी उसकी मिसाल मिसले हिमार हो जाये। इसका पहला मक़सद यह है कि हिन्दोस्तान के मुसलमानों को हक़दोस्त व ख़ुदपरस्त मुसलमान बनाया जाये और दूसरा मक़सद यह है कि उनको वतन दोस्त व हुर्रियत परवर हिन्दोस्तानी बनाया जाये।

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में–

   मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. ११३,

2. मौलाना ने अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को बुलावा दिया कि क़ौमी मरकज पर मुत्तेहद होकर अपनी तालीम व तर्वियत में लग जाये। जो तालीम का तरीका चल रहा है वह उनके लिए फायदे वाला नहीं है, बल्कि नुकसान वाला है। वह अपनी ज़ेहनीअतों को गुलामाना बना रहे हैं।

   – 'हयाते जौहर' - मुर- इशरतरहमानी, रामपुरी, पृ. ७८,

किये।[१] अब जामेआ मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना हुए अर्धशताब्दी व्यतीत हो चुकी है और आज उसमें वे सभी आवश्यक सुविधाएं विद्यमान हैं जो एक श्रेष्ठ विश्वविद्यालय में होनी चाहिए।[२]

तत्कालीन शिक्षा पद्धति देश के अनुकूल नहीं थी, क्योंकि विद्वानों के मतानुसार वह केवल कलर्कों का ही निर्माण करने में सक्षम थी। इसीलिए भारतीय विद्वानों एवं देशभक्तों ने इस शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन लाने के उद्देश्य से इस ओर ध्यान दिया एवं जनता में स्वतन्त्र संघर्ष की मनोवृत्ति बनाये रखने और सार्वजनिक जीवन में जागृति लाने के उद्देश्य से देश में शिक्षा के विकास का कार्यक्रम प्रारम्भ किया।उन्होंने विद्यार्थियों से अंग्रेजी विद्यालयों से अपना सम्पर्क विच्छेद करने का आग्रह

---

1. अगर वे अपनी सियासी मशरूफियत की वजह से मौलाना शैखुल जामेआ की जिम्मेदारियों से अलग रहे मगर जामेआ और अरबाबे जामेआ से उनका ताल्लुक आख़िर दम तक क़ायम रहा। जब तक जामेआ अलीगढ़ में रही मौलाना का मुस्तक़िल क़याम जामेआ ही था। अपने वतन रामपुर में क़दम रखने की उन्हें इजाज़त नहीं थी इसीलिए वतन और घर सब कुछ जामेआ ही था और जब जून १९२५ ई. में जामेआ देहली आ गयी तो कामरेड और हमदर्द के बन्द होने के बाद अगर कोई जगह थी जिसे मौलाना अपना घर कह सकते थे तो वह जामेआ थी।—— जामेआ से ग़ैर मामूली ताल्लुक और मुहब्बत का ही नतीजा था कि जब पहले अमीरे जामेआ हकीम अजमल साहब का इन्तेक़ाल हो गया और जामेआ की हालत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गई तो उन्होंने सन् १९२८ ई. के अवाइल में जामेआ की खुसुसियात पर मुताअहिद मजामीन लिक्खे जो उनके रोज़नामा हमदर्द में शाये हुए। अरसा हुआ जामेआ ने इन मजामीन को क़िताबचे सूरत में शाये किया था।
   – जामेआ मौलाना मुहम्मद अली - मुदीर- जियुउल हसन फारुखी
   - मौ. मुहम्मद अली और जामेआ मिल्लिया इस्लामिया, अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. १९७-१९८,
   — मुहम्मद अली को अलीगढ़ कालेज से मरते दम तक बड़ी दिलचस्पी रही और वह निहायत खलुस व मुहब्बत से उसकी ख़िदमत करने का बलवला अपने दिल में मौजज़न पाते रहे।– सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद जाफरी, पृ. २०४,
2. जामेआ मिल्लिया इस्लामिया के क़ायम हुए अब निस्फ़ सही से ज़्यादा मुद्दत गुजर चुकी है अब उसके अहाते में वो तमाम इमारते मौजूद है जो एक अच्छी यूनिवर्सिटी में होना चाहिए।
   - मौ. मुहम्मद अली की याद में - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.११४,

करके उनके लिए अन्य राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना के प्रयास किये। जिनके माध्यम से वे छात्रों को भविष्य के लिए उत्तम राष्ट्र निर्माता एवं कर्मठ सिपाही के रूप में शिक्षित करना चाहते थे।[१]

इसीलिए गुजरात के राजनीतिक सम्मेलन ने १२ सदस्यों की एक समिति नियुक्त कर उसे राष्ट्रीय शिक्षा की नीति तैयार करने एवं कार्यान्वित करने का कार्यभार सौंपा। जिसे जनता ने बड़े ही उत्साह एवं परिश्रम से चार माह के अल्प समय में ही गुजरात में 'गुजरात विद्यापीठ' शैक्षिक संस्था स्थापित कर पूर्ण किया। जिसका आदर्श वाक्य **सा विद्या या विमुक्तये** सच्ची शिक्षा वही है जो स्वतन्त्र बनाये, बहुत प्रेरणात्मक था। इसके अतिरिक्त शैक्षिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य प्रान्तों में भी कार्यक्रम किये गये और बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, जामेआ मिल्लिया इस्लामिया, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ तथा अन्य अनेक राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाएँ स्थापित की गयीं।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" उन महान् देशभक्तों में से एक थे जिन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ साथ शैक्षिक विकास हेतु भी अथक

---

1. उन्होंने एक ओर तो लोगों में संघर्ष की मनोवृत्ति संगठित करने और दूसरी ओर सार्वजनिक जीवन में जागृति लाने के लिए, एक रचनात्मक कार्यक्रम चलाकर राष्ट्रीय शक्ति का विकास करने की आवश्यकता अनुभव की— सारे देश के विद्यार्थियों से ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के स्कूलों का बहिष्कार करने का आह्वान किया।— इसलिए बहुत सी राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की आवश्यकता थी, जहाँ विद्यार्थियों की राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता संग्राम के कर्मठ सिपाही के रूप में शिक्षित किया जा सके।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ,
   - रचनात्मक कार्यक्रम का महत्व, काका साहब कालेलकर, पृ. ९०,
2. गुजरात के राजनीतिक सम्मेलन ने बारह सदस्यों की एक समिति नियुक्त की और उसको राष्ट्रीय शिक्षा की योजना तैयार करने तथा उसे अमल में लाने का काम सौंपा। हम लोग बड़ी लगन व मेहनत से काम में जुट गये और चार महीनों के भीतर ही गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई। इसका आदर्श वाक्य 'सा विद्या या विमुक्तये' बहुत प्रेरणात्मक था —— अन्य प्रान्तों में भी इस दिशा में कार्य किये गये और बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ तथा अन्य अनेक राष्ट्रीय संस्थाएँ खोली गयीं।
   - १९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ- रचनात्मक कार्यक्रम का महत्व, काका साहब कालेलकर, पृ. ९०-९१

प्रयास किये एवं अलीगढ़ को भी देश भक्ति धारा में प्रवाहित किया।[१] सन् १९०७ ई. में जब छात्रों ने अलीगढ़. यूरोपियन स्टाफ के विरुद्ध हड़ताल की घोषणा की तब मौलाना मुहम्मद अली ने ही छात्रों का समर्थन करते हुए प्रिंसिपल महोदय के साथ कठोर शब्दों में वार्तालाप कर पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का विरोध किया था।[२]

अक्टुबर सन् १९२० ई. में जब मौलाना मुहम्मद अली यूरोप से स्वदेश आये[३] तब स्वदेशी अभियान के चरम उत्कर्ष के समय जातिगत तथा धार्मिक शिक्षा के प्रसार का निर्णय कांग्रेस ने लिया और मुहम्मद अली ने मुहमडन एंग्लो ओरियण्टल कालेज के अभियान का बीड़ा उठाया और उनकी उद्घोषणा से समस्त देश ध्वनित हो गया।[३] आपने महात्मा

---

1. It was Mohamed Ali who tried to direct the movement into patriotic channels for the benefit of the younger generation.
. Life of Maulana Mohd. Ali, Book one,
. By Allah Bakhsh Yusufi, p. 252.
2. All this happened in 1907 when the student had declared a strike against their European staff and in this connection, Mohamed Ali had to exchange hot words with the principal.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Book one,
By Allah Bakhsh Yusufi, p. 155.
3. अक्टूबर की पहली सप्ताह में मौलाना मुहम्मद अली यूरोप से लौटे।
यंग इंडिया - महात्मा गांधी, अनु. छवि नाथ पाण्डेय, पृ. ७०,
– मैं मुहम्मद अली अक्टूबर सन् १९२० ई. में यूरोप से वापस आया।
- मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, हिस्सा दोयम,
अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ११५,
– अक्टूबर सन् १९२० ई. में मौलाना मुहम्मद अली यूरोप से तेहीदस्त लौटे।
- जामेआ मौलाना मुहम्मद अली न.
- उन- तहरीके ख़िलाफ़त का हिन्दोस्तानी मुसलमानों पर असर,
मुस- नज़ीरुद्दीन मीनाई, पृ. १४५,
3. जब स्वदेशी तहरीक जोरों पर थी और कांग्रेस ने यह तय किया कि अंग्रेजी आशियाँ को तर्क करने के अलावा क़ौमी तालीम को ज़ुज़्वये तहरीक बनाया जाय तो मौलाना मुहम्मद अली के सबसे पहले मुहमडन एंग्लो ओरियण्टल की तहरीक का बीड़ा उठाया और इस बात की कोशिश की कि वहाँ का इन्तेजाम क़ौम के फ़रजन्दों के हाथों में आ जाये मगर कालेज के ट्रस्टों के आगे उनकी एक न चल सकी। इस पर मौलाना बरहम हुए और उन्होंने अहलेताज की वह आवाज बुलन्द की कि उसका वलवला पूरे मुल्क में गूँज उठा।
उन - शमशीर बरहना - मौ. मुहम्मद अली "जौहर",
- सै. नज़रबर्नी, पृ. ५७,

गांधी जी के साथ कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अलीगढ़ प्रस्थान किया और कालेज के छात्रों से सम्पर्क स्थापित कर उनसे अंग्रेजी स्कूलों एवं कालेजों के बहिष्कार का आग्रह किया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली के प्रयास से लगभग २०० छात्रों ने अंग्रेजी कालेजों एवं स्कूलों का बहिष्कार किया एवं आन्दोलन में सम्मिलित हो गय।[२] एवं कालेज के अध्यापकों ने भी अपने पदों से त्याग पत्र देकर आन्दोलन को सफल बनाने के लिए अपना सक्रिय योगदान दिया।[३] अंग्रेजी विद्यालयों का बहिष्कार करके आने वाले देशभक्त नवयुवकों को शिक्षित करने के लिए विभिन्न प्रान्तों में अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गयी जिसमें मौलाना मुहम्मद अली द्वारा स्थापित 'जामेआ

---

1. महात्मा गांधी जी उन्हें (मुहम्मद अली) साथ लेकर अक्टूबर १२ को (१९२०) अलीगढ़ पहुंचे। यहीं से सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार आरम्भ हुआ जो ४-५ मास तक पूरे जोर पर रहा।
   – यंग इन्डिया - गांधीजी, अनु. छवि नाथ पाण्डे, पृ. ७०,
   — विद्यार्थियों को सरकारी या सरकार से सहायता लेने वाले विद्यालयों का बहिष्कार करने का आदेश दिया।
   – यंग इन्डिया - गांधीजी, अनु. छवि नाथ पाण्डे, पृ. १२७,

2. Mahatma Gandhi and Ali Brothers initiated the Non-co-operation Movement and rourred whole of India. They visited Aligarh and appealed to the student to join the Non-co-operation Movement more than 200 students joined movement.
   Maulana Mohamed Ali. Birth Century celeberation Souvenir Dec. 1978, Hyderabad-4,
   An article on Maulana Mohamed Ali. by. Fareed Mirza.

3. बहुत बड़ी संख्या में छात्रों ने अपने स्कूल कालेज छोड़ दिये, शिक्षकों ने त्यागपत्र दे दिये।
   स्वतन्त्रता संग्राम - विपन चन्द्र, पृ. १३२
   – जहाँ तक कौमी तालीम का ताल्लुक है मौलाना मुहम्मद अली ने इसकी निहायत क़ाबिलेकद्र ख़िदमत अंजाम दी। चुनांचे उन्होंने गांधीजी के साथ मिलकर एम.ए.ओ. कालेज अलीगढ़ के बहुत से तुलाबा और असातिजा को अदमेतवावुन की तहरीक में शरीक होने पर आमादा किया और उनकी मदद से आज़ाद कौमी यूनिवर्सिटी (जामेआ मिल्लिया इस्लामिया) कायम की।
   – हिन्दोस्तानी मुसलमान - आइनये अय्याम में, सै. आबिद हुसैन पृ. १३०-१३१,

मिल्लिया इस्लामिया' भी एक प्रमुख संस्था थी जिसने आपके नाम को अमर कर दिया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ने गांधीजी के साथ एक स्वर और एक मत होकर अंग्रेजी शिक्षा और पद्धति के विरुद्ध घोषणा की क्योंकि मौलाना धर्म के नियन्त्रण से युक्त शिक्षा को मानवता के लिए एक मारक विष समझते थे।[२] इसीलिए मुस्लिम शिक्षा में रुचि रखने वालों के लिए भारत में राष्ट्रीय मुस्लिम शिक्षा संस्थाओं के लिए अध्ययन का कार्यक्रम तैयार करने का यह एक सुअवसर था।[३]

मौलाना मुहम्मद अली ने स्पष्ट किया कि असहयोगी विद्यार्थियों के द्वारा देश में शान्ति पूर्ण ढंग से सर्वोत्तम कार्य किया गया था। उन्होंने अपने उज्जवल भविष्य की आशाएँ छोड़ दी। यह उनका एक महान् त्याग था। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से उन्होंने खोने की अपेक्षा अधिक अर्जित

---

1. अंग्रेज स्कूलों के बहिष्कार से जो नौजवान देशभक्त बाहर आये थे, उनको कौमी शिक्षा देने के लिए उन दिनों बिहार विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, आन्ध्रजातीय कलाशाला वगैराह जो संस्थाएँ निकली थीं, उनमें जामेआ एक थी जो आज भी भारत माता के उन महान सपूत का नाम अमर व अमिट बनाये एक यूनिवर्सिटी का रूप धर बैठी है।
   – मानवता और देश प्रेम का फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति रेणु,
   — Maulana Mohd. Ali, Birth Cen. Cel. Souvenir, Dec. 1978,
2. मौलाना मुहम्मद अली ने गांधी जी की मइयत ही में अंग्रेजी निज़ामे तालीम के ख़िलाफ़ भी आलमे बग़ावत बुलन्द किया था वह उस निज़ामे तालीम को इन्सानियत के लिए ज़हरे कातिल जानते थे कि जिसकी बुनियाद अख़लाक़ व मजहब की गिरिफ़्त से आज़ाद है इसी जज़्बे के मातेहत जामेआ मिल्लिया इस्लामिया आलामें वज़ूद में आया।
   - मौलाना मुहम्मद अली - शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर. - सै. नज़रबर्नी, पृ. ४८,
3. ... an opportunity was presented to those interested in Muslim education on truly Isamic and national lines to frame a scheme of studies for national Muslim educational institutions in India.
   - Select Writing & Speeches of Mohamed Ali, Vol. II, Edited by. Afzal Iqbal, page 304,

किया।[१] उन्होंने पाश्चात्य शिक्षापद्धति में शिक्षित नवयुवकों को संगठित करने का प्रयास किया क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली का विश्वास था कि इससे इस्लाम और देश की स्वतन्त्रता को शक्ति मिलेगी।[२]

---

1. 'Throughout the country', says he 'finest and silent work has been done by the non-co-operating students. Theirs is a great and noble sacrifice. From a vorldly stand-point they have perhaps lost the prospect of brilliant carreers. I suggest to them, however, that from the national standpoint they have gained more than they have lost.
   Select Writing & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, page 225,
2. मुसलमानों की सियासत में मुहम्मद अली के हिस्से को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि जिन्होंने उलामा और मग़रबी तालीम याफ़्ता नौजवानों को यक़जा करने की कोशिश की वह समझते थे कि इससे इस्लाम और मुल्क की आज़ादी दोनों को तक़वियत मिलेगी।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ-
   मुर - अब्दुल लतीफ आज़मी,
   उन- हिन्दोस्तानी सियासत में मुहम्मद अली का हिस्सा, डॉ. मुईन शाकिर, पृ. ९४, ९५,

षष्ठ अध्याय

स्वतन्त्रता संग्राम में मुहम्मद अली का योगदान

(अ) मुहम्मद अली के विचार
(आ) भारत में स्वतन्त्रता आन्दोलन को प्रज्ज्वलित करना
(इ) स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति मुहम्मद अली की सेवाएँ
(ई) उद्देश्य की पूर्ति के लिए आत्म बलिदान

भारतमाता के सपूत एवं स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत, मौलाना मुहम्मद अली जौहर हृदय, मष्तिष्क, आत्मा एवं शरीर से एक सच्चे देश भक्त कांग्रेसी थे।[१] यद्यपि उन्हें अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए पूर्ण विश्राम की आवश्यकता थी परन्तु हिन्दू और मुसलमान दोनों के ही प्रतिनिधि होने के कारण वह इनके प्रति निरन्तर कार्य करने को अधिक महत्वूपर्ण समझते थे। वह एक सच्चे कर्मयोगी थे और निरन्तर कर्म के बिना उन्हें मानसिक शान्ति नहीं मिल सकती थी।[२]

उनका धर्म न्याय-धर्म था वह किसी पर अन्याय और अत्याचार होता

---

1. मेरा मरना, जीना, शादी, ग़मी, सब कुछ आप ही लोगों के साथ है। अगरचे मैं कांग्रेसी हूँ कि मेरे दिल व दिमाग, रूह व जिस्म सब ही कांग्रेसी है।

   — मौलाना मुहम्मद अली की याद में,

   मुर. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान, पृ.२०४,

2. मैं (मुहम्मद अली) जानता हूँ कि जब तक एक अरसे तक सारे काम छोड़कर सिर्फ अपनी सेहत की तरफ़ से मुतबज्जे न हूँ और पूरा आराम न लूँ उस वक्त तक डाक्टर और हकीम और अच्छी से अच्छी दवा और सख़्त से यख़्त परहेज भी जो सब कुछ मेरे इमकान में है, मुझे शिफ़ा नहीं दे सकते लेकिन जहाँ हिन्दू और मुसलमान दोनों होने की हैसियत से कामों की इतनी कसरत हों वहाँ सबको छोड़ कर सिर्फ अपनी सेहत की तरफ़ मुतवज्जे हो जाना मेरे लिए कब मुमकिन है और फिर अगर मैंने सब काम छोड़ भी दिये तब भी सुकुनेक़ल्ब जिसके बगैर सेहतयाबी न मुमकिन है किस तरह मयस्सर हो सकता है जबकि आलमे इस्लाम और खुद हिन्दुस्तान की गुनागूँ मुसीबतें दिल पर बार बार चोट लगाती है।- हमदर्द - २२ फरवरी १९२६ ई.,

हुआ नहीं देख सकते थे।[१] आपका विचार था कि जब तक हम दास हैं तब तक हमारे अधिकार में कुछ भी नहीं है अतः अंग्रेजों की दासता से देश को स्वतन्त्र करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।[२] उन्होने कनाडा और दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के प्रति किये जाने वाले अपमानजनक व्यवहार के विरुद्ध एक सभा आयोजित की और ,सम्बोधन में कहा कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीयों को एक साधारण नागरिक के अधिकार नहीं दिये जाते तब तक हिज मैजेस्टी के प्रति भारतीय प्रजा कोई वफादारी नहीं दिखायेगी।[३]

आप किसी महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जीवित रहकर संघर्ष करना और कष्ट सहना महत्वपूर्ण समझते थे।[४] आप जिस प्रकार यूरोपीय वेशभूषा को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे उसी प्रकार आप यूरोप राजनैतिक

1. मेरा मज़हब अदल का मज़हब है मैं तो अपने मज़हब के लिहाज़ से किसी पर जुल्म व ज़्यादती देख ही नहीं सकता मुसलमान के साथ-साथ मुसलमान के ख़ुलुश के मायने ही यह है कि हम एक दूसरे को नाइन्साफ़ी से रोके। अद्ल व खुश ख़ुल्की की तलकीन तवलीग करते रहे।
   – मुहम्मद अली की ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ हिस्सा दोयम, अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ७,
2. जब तक हम आज़ादी से महरुम और दूसरे लोगों के ग़ुलाम हैं उस वक़्त तका शहरीयत के इबतेदायी हकूक भी बहराबर नहीं हो सकते और न मज़हबी अहकाम के मुताबिक आज़ादी से अमल कर सकते हैं। हमारा सबसे अव्वल और सबसे बड़ा फ़र्ज़ यह है कि अपनी ज़ाये शुदा आज़ादी को हासिल करें और अपने मुल्क को अग़यार के पन्जये इस्तिबदाद से निज़ात दिलायें।
   – हमदर्द १६ मार्च सन् १९२८, - गुलामी की लानत, पृ. ६,
3. That this meeting strongly protest against the degrading treatment meted out to our fellow countryman in the colonies in the British Empire, particularly in Canada and south Africa, and records its profoun connection that so long as the ordinary rights of citizenship in the empire are denied to his Majesty's Indian subjects, it is difficult for them to loyally accept any subjects, it is difficult for them to layally acceptany share in imperial obligations. 'The Comrade 22nd Nov. 1913, Vol.6, p. 364, 365.
4. किसी मकसद के लिए जान तक दे देना तो कुछ बहुत मुश्किल काम नहीं, ज्यादा मुश्किल यह है कि किसी मकसद के लिए ज़िन्दा रहा जाये और अगर ज़रूरत हो तो तकलीफ़ व मुसीबत बर्दाश्त की जाये और वह मकसद जिसके लिए हमें जिन्दा रहना और तकलीफ़ें और मुसीबतें उठानी चाहिए हिन्दोस्तान में ख़ुदाई हकूमत का हसूल है।
   - ख़तबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली,
   - कोकनाडा, २६ दिसम्बर सन् १९२३ ई. पृ. ५८, ५९,

चलन की भी उपेक्षा करते थे। आपके समस्त प्रयासों का उद्देश्य लोगों को दासता से मुक्ति दिलाना था। आपके विचारानुसार प्रत्येक व्यक्ति के पक्ष में होगा कि किसी भी प्रकार का स्वशासन भारत में तब तक यह मानने सम्भव नहीं है जब तक कि हिन्दू और मुसलमान चेतनापूर्वक घनिष्ठ रूप से एक नहीं हो जाते।[१] इसीलिए उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को समस्त सन्देहों से मुक्त होकर एक दूसरे को समझने और सहयोग पूर्वक स्वराज्य के लिए संघर्ष करने की अपील की।[२] मौलाना मुहम्मद अली स्वतन्त्रता को प्राप्त करने में विध्वंसकारी नीतियों के समर्थक नहीं थे। विध्वंस के स्थान पर आप आत्म बलिदान को अच्छा समझते थे।[३]

मौलाना मुहम्मद अली ने देशवासियों से कठोरता से अहिंसा व्रत के पालन पर बल देते हुए कहा कि वर्तमान शासन के प्रति हमारा युद्ध बिना शत्रुता की भावना के होना चाहिए और एक दूसरे के प्रति हमें अधिक सहनशीलता से व्यवहार करना चाहिए।[४] क्योंकि मौलाना मुहम्मद

1. Every must recognise that no form of self government is possible communities, the Hindus and the Muslims, are closely and concientiously unite.
. The Comrade, 10th January 1914, p.no. 18,
Article: My political faith.
If they cannot get rid of one another, the only thing to do is to settle down to co-operate with one another, and while the Muslims must remove all doubts from the Hindu minds about their desire for swaraj for its own sake and their readiness to resist all foreign aggression, the Hindus must similarly remove from the Muslim minds all apprensions that the Hindu majority is synonymous with Muslim servitude.
Select Writings & Speeches of Mohd. Ali. vol. II, Edited by Afzal Iqbal, p. 188,
3. आजादी का रास्ता फूलों के फर्श से पटा हुआ नहीं है। जल्द फ़ौरी मन्जिल रसी की सिर्फ़ एक ही तदबीर है और वह यह कि मौत गवारा कर लें और शकस्त गँवारा न हो।
– खुतबये. सिदरते मौलाना मुहम्मद अली,
- कोकनाड़ा, २६ दिसम्बर सन् १९२३, पृ. १४७,
4. In any case, what is necessary is that we should rigidly practise non-violence and set a better example to the masses than we have yet done. Out war even against the existing system, of government must be a war without an enemy, and we should certainly practice far more tolerance towards each other, whether those opposed to us are No. Changers or Swarajists, and whether they are Hindus or Muslims.
.. Select Writings & Speeches of Mohamed Ali. Vol II,
Edited By : Afzal Iqbal, page no. 209, 210.

अली का विचार था कि हम अहिंसा से भी विजय कर सकते हैं। आप गांधीजी के अहिंसा के सिद्धान्त से पूर्णतया सहमत थे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली की दृष्टि में चर्खा एक तोप के समान था जिसका गोला सीधा ब्रिटेन के हृदय पर गिरा था।[२] इसीलिए वह तलवार के प्रयोग की अपेक्षा चर्खे के प्रयोग के समर्थक थे।[३] उनका विचार था कि यदि अंग्रेजों को भारत से निकाल दिया जाये तो केवल भारत ही नहीं अपितु दूसरे देश भी स्वतन्त्र हो जायेंगे।[४]

मौलाना मुहम्मद अली प्रजातन्त्र के पक्ष में थे। आपकी कल्पना में राजाओं और राजकुमारों का कोई अस्तित्व नहीं था।[५] साथ ही उनका विश्वास था कि भारत की स्वतन्त्रता के बाद इसके अन्तर्गत छोटे राज्यों में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन आयेगा और हमें उनमें सहानुभूति पूर्ण रुचि

---

1. We, however, entirely agree with Mahatma Gandhi that non-violence is the only proper policy for India to adopt to-day for her emancipation. We can achieve victory without violence.
   Select Writings and speechs of Mohamed Ali, Vol. II, Edited by : Afzal Iqbal page no. 208,
2. मौलाना मुहम्मद अली बार-बार कहते थे कि चर्खा एक तोप है जिसका गोला बराहेरास्त बर्तानिया के क़ल्ब पर गिरता है।
   –तहरीके खिलाफत,
   - मुस मुहम्मद अली अब्बासी
   – तरक्की उर्दू बोर्ड नई दिल्ली १९७८ ई. पू. २७५,
3. And, since we believe that the Charkha requires the minimum sacrifice of the maximum bumper, while the sword requires the maximum sacrifice of the minimum number, we have agreed that the nation should keep its sword, such as it is sheathed, but must work its Charkha for all it is worth.
   Select Writings and Speeches of Mohd. Ali. Vol II, Edt. by Afzal Iqbal p. no. 208,
4. मौलाना मुहम्मद अली बार बार दोहराते थे कि अगर हम अंग्रेज को हिन्दोस्तान से ख़ारिज कर दें तो उसका नौ आबादयाती निज़ाम दरहम बरहम हो जायेगा और दूसरे मुमालिक भी आज़ाद हो जायेंगे।
   - तहरीके खिलाफत - मुस- क़ाजी मुहम्मद अदील अब्बासी, पृ. २७५,
5. मैं (मुहम्मद अली) तबवन और अक़ीदतन जम्हूरियत पसन्द वाक़े हुआ हूँ। मेरे निहा ख़ानये तसब्बुरात में शाहों और शहजादों का बिल्कुल वजूद नहीं है।
   – सीरते मुहम्मद अली , मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. ५१, ५२,

लेनी होगी।[१] आप हिन्दू या मुस्लिम राज्य नहीं बल्कि स्वराज्य चाहते थे।[२] स्पष्ट है कि मौलाना जाति धर्म और वर्ग के संकुचित बुत से बाहर थे।

मौलाना मुहम्मद अली का विश्वास था कि ईश्वर ने मानव और शैतान ने जातियों को बनाया है। धर्म उनको एकता के सूत्र में बाँधता है और जातियाँ तथा सम्प्रदाय मानव को मानव से अलग करते हैं।[३] बदमाशों की अपनी एक अलग जाति होती है। उनका सम्बन्ध किसी जाति या धर्म विशेष से नहीं है।[४] एक मुसलमान रात में किसी मन्दिर में गोमांस फेंक सकता है या किसी मूर्ति को तोड़ सकता है। कोई हिन्दू भी ठीक ऐसा ही कर सकता है। लेकिन शेष हिन्दू और मुस्लिम जाति

---

1. मैं (मुहम्मद अली) कहा करता था कि बाक़ी हिन्दोस्तान को आज़ादी हासिल कर लेने दो फिर देशी रियासतों में बहुत जल्द एक नुमाया और मुतहयरकुन तबदीली देखेंगे। इस असना में हमको चाहिए कि अपने तरजेअमल से इन रियासतों के हुकुमरानों को अपनी तरफ से शुबह में न डालें और उन पर यह साबित करने के लिए हम मौके से फायदा उठायें कि हम लोग उनकी मुशकिलात से गाफ़िल नहीं है और ग़ैर मुल्की दफ़्तरे शाहीये हकूमत से उन पर जो मसाइब नाज़िल हो रही है, हम उनसे बेऐतेनाई नहीं बरतते।
   – खुतवये सिदारते मुहम्मद अली, पृ. १३८,
2. मैं (मुहम्मद अली) हिन्दुराज्य चाहता हूँ और न मुस्लिम राज्य बल्कि मैं तो सौराज चाहता हूं।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर -सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ.२०६,
3. मैं (मुहम्मद अली) बहैसियत हिन्दोस्तानी मुसलमान से कहता हूँ कि खुदा ने इन्सान को बनाया और शैतान ने क़ौम को। क़ौमियत इन्सानों में तफरीक पैदा करती है और मज़हब उनको मुततहिद करता है।
   – हयाते जौहर - मुर- नश्तर बलरामी, पृ. ८०,
4. The badmashes belong to no community but form a distinct community of their own,.....
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali Vol. II, Edited by : Afzal Iqbal. page no. 172,
   – बदमाशों का खुद अपना एक गिरोह होता है जिसको किसी फिरके से ताल्लुक नहीं, जिसमें जो कोई भी शामिल हो जाये वह उन्हीं जैसा हो जाता है।
   - खुतवये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. ९४,

इससे सर्वथा अनभिज्ञ और निर्दोष रहती है।[१]

मौलाना मुहम्मद अली 'जौहर' का विचार था कि अपने धर्म के प्रति प्रेम नहीं बल्कि स्वार्थ प्रेम और छोटी छोटी व्यक्तिगत आकांक्षाएँ ही हमें दूसरे धर्मों के मानने वाले देशवासियों से लड़ाती है।[२] उन्होंने देहली स्टेशन पर अपने एक सम्बोधन में मुस्लिम लोगों को धैर्यपूर्वक अहिंसा का पालन करते हुए संघर्ष करते रहने की प्रेरणा दी।[३] तथा एक अन्य सम्बोधन में हिन्दू भाइयों से कहा कि अंग्रेजी राज्य हिन्दू और मुस्लिम दोनों राज्यों से अधिक कष्टप्रद है। दासता से मुक्त होने का मार्ग यह है कि हम एक दूसरे से न्याय पूर्वक व्यवहार करें और अपने पन की मधुर वाणी में वार्तालाप करें, परन्तु दासता को कदापि न सहन करें।[४] एवं अंग्रेज राज्य को समाप्त कराने के लिए निरन्तर प्रयास करें।

---

1. A Muslim may throw beef during the night into a temple or break an idol, and yet the Muslim community may be just as innocent of this provoking sacrilege as the Hindu community itself, and in similar circumstances the Hindu community may be wholly blameless even though a Hindu certainly threw pork into a mosque or described the Holy Quran.
   - Select Writing & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by. Afzal Iqbal, page no. 174,
2. And it is not the love of our own religion that makes us quarrel with our fellow-countrymen of other faiths, but self-love and petty personal ambition.
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. १६२,
3. यह मुल्क के लिए सख़्त इबतिला व आज़माइश का जमाना है न आप ख़ुद मुश्तइल हो न अपने किसी लफ्ज या अमल से अहले हनूद को मुश्तइल होने का मौका दें। मैं (मुहम्मद अली) यह दर्ख्वास्त करता हूं कि अगर वह तुम्हारे ऊपर हाथ उठायें तो सर झुका दें। अगर छुरी दिखायें तो सीना आगे कर दो अगर जुल्म करें तो सब्र से काम लो।
   - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात- सै. नज़रबर्नी पृ. १८८-१८९,
4. अब अगर गुलामी से निकलना है तो उसका यही तरीका है कि हम तुम एक दूसरे के साथ इन्साफ़ रवादारी से बर्ताव करें। एक दूसरे की तरफ से जो अज़ीयत जुबान से या हाथ से पहुँचती है उस पर सब्र करें मगर इस गुलामी को हरगिज़ बर्दाश्त न करें जिसमें तुम भी सौ - डेढ़ सौ बरस से मुबतिला हो और हम भी। और जो यक़ीनन हिन्दू राज्य से भी ज़्यादा तकलीफ़ देह है और मुस्लिम राज्य से भी।–
   मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, मुर - सै. नज़रबर्नी पृ. १९१

इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने लाहौर में २० जनवरी में २० जनवरी सन् १९२० ई. को देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्साह का अपव्यय न किया जाये। एक ही बार भड़क कर बुझ जाने वाली अग्निशिखा बेकार है। अंधकार भरी रात्रि को प्रकाशित करने वाला दीपक ही वास्तव में उपयोगी है। जब तक कि स्वराज्य का सर्वोदय न हो जाये।[१] क्योंकि भारत हमारी मातृभूमि है और हमें अपनी इस पैतृक सम्पत्ति पर अभिमान है तथा हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई हैं और दोनों ही भारतमाता के सपूत हैं।[२]

कराँची में मौलाना मुहम्मद अली ने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए उनसे सेना की सेवाएँ न करने का आग्रह किया जिसके कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और आप पर कराँची न्यायालय में मुकदमा चलाया गया। न्यायालय में आपने बहस के मध्य अंग्रेज न्यायाधीश को बताया कि उन्होंने एक धार्मिक और कानूनी कर्तव्य पूर्ण किया है और इसलिये वह न तो ईश्वर के और न ही शासन के अपराधी हैं।[३] क्योंकि आपका विचार था कि कुरान के अनुसार केवल ईश्वर ही शासनकर्ता है, अन्य कोई नहीं तथा उसी के आदेशों को पालन करने की आज्ञा हमें दी

---

1. लाहौर में २० जनवरी सन् १९२० ई. को तक़रीर करते हुए हाज़िरीन को जोश के बजाय इस्तेक़ामत की तलक़ीन की–अपना जोश दरियादिली से ख़र्च न करो। हमें इतना बड़ा शोला नहीं चाहिए जो एक ही दफ़ा भड़क कर खत्म हो जायें। हमें तो वह टिमटिमाता हुआ चिराग़ चाहिए जो सारी अंधेरी रात में रोशनी दे। तावक़्ते कि सौराज का आफ़ताब तुलू न हो जाये।
   - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामातद, पृ. १९०, मुर- सै. नज़रबर्नी,
2. India is our Mother Land, our proud heritage,..... I would say that the Hindoo and the Muslim are two brothers son's of Mother Hind.
   The Comrade, 10 Jan. 1914 Mohd. Ali, My political faith, p.no. 18,
3. हमने (अलीबन्धु) हालाते मौजूदा में मुसलमान सिपाहियों को फ़ौज की मुलाज़िमत तर्क़ करने की दावत देकर एक मजहबी और कानूनी फ़र्ज़ पूरा किया है इसलिए न हम खुदा के गुनहगार हैं और न हुकूमत के मुज़रिम।

   - ब्यान मौलाना मुहम्मद अली साहब जो उन्होंने करांची के मजिस्ट्रेट की अदालत में दिया।
   मुर- मुंशी मुश्ताक अहमद, सन् १९२१ ई०, पृ० ३६,

गयी है।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ने देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे आपसे और आपके माध्मय से भारत के समस्त नागरिकों से निर्देशित दिशा में भारत माता के लिए कार्य करने की और इस प्रकार उस अन्तिम उपलब्धि में सहयोग करने की अपील करनी है जो निश्चय ही तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।[२] इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली अछूतोद्धार के भी पक्षधर थे। आपके विचार में अछूत कहे जाने वाले वर्गों से सहानुभूति और मित्रतापूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।[३] क्योंकि मौलाना मुहम्मद अली छुवाछूत में विश्वास नहीं रखते थे। उनका कथन है कि 'ईश्वर ने अछूतों का एक अलग वर्ग बनाया' यह कहना ईश्वर निंदा है। अस्पृश्यता को मिटाना एक तपस्या है। पवित्रीकरण अछूतों का नहीं बल्कि तथाकथित सवर्गों का होना चाहिए।[४] इसीलिए यदि कोई

1. Islam is a thecracy, and in the language of the Quran 'there is no government but God's' and 'Him alone are we commanded to serve.'
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 215,
2. Well, let me appeal to you and through you to all the people of India to work for your mother-land on the lines indicated and thus contribute to the ultimate fulfilment of the proud destiny which inevitably awaits you.
   The Comrade 10th Jan. 1914, My political faith by Mohd. Ali, page no. 18,
3. अगर अछूतपन के दूर करने की कोशिश में हमने जब्र व ज़ौर के क़दीम तरीका का हर इस्तेमाल शुरू कर दिया तो क्या महात्मा के दिल को न दुखायेगा। हमें अछूतज़ातों को उसकी महरूमाना हालत की बिना पर अपना दोस्त बनाना चाहिए न इस गरज़ कि हम दूसरों को इससे ज़रर पहुँचाए या यह कि अपनी मजलूमियत का बदला लें।
   – खुतबये सिदारते मुहम्मद अली, कोकनाड़ा, २६ दिस. १९२३ ई. पृ. १०२,
4. 'It is a blasphemy to say that God set apart any portion of humanity as untouchable. He is no less clear when he' would warn the Hindu brethren against the tendency which one sees nowadays of exploiting the suppressed classes for a political end.' He goes further and plainly tells the Pharisees among the twice-born that 'to remove untouchability is a penance that caste Hindus owe to Hinduism and to themselves. The purification required is not Untouchables, but of the so- called superior castes.'
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 219,

संगठन अस्पृश्यता को मिटाने और अछूतों को अपने में मिलाने के लिए संगठित होता है, तो वह एक मुसलमान और एक कांग्रेसी के रूप में इसमें आनन्द का अनुभव करते थे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली यह बात भली प्रकार जानते थे कि गाय हिन्दू भाइयों की दृष्टि में कितनी पवित्र है।[२] इसीलिए आपने अपने भाई शौकत अली सहित गोहत्या में स्वयं सम्मिलित न होने का निश्चय किया। तब से उनके घर में कभी गोमांस नहीं बना और नौकरों तक को भी इसकी आज्ञा नहीं थी। उन्होंने अन्य मुस्लिम भाइयों को भी गो हत्या न करने का सुझाव दिया और जीवन में कभी गोहत्या नहीं की, और सदा बकरों की ही बलि दी।[३] इसके साथ ही मौलाना ने गोहत्या बन्दी करण के विभिन्न मार्ग भी सुझाये। जैसे बकरे का माँस सस्ता बेचा जाये । हिन्दू भाई दूध सुखी हुई गायों को कसाइयों को न बेचे

---

1. This is entirely an affair of my Hindu breathren, and if they think they need a Sanghatan they should be allowed a perfectly free hand in the matter. Every community is entitled to undertake such social reform as it needs, and if the Sanghatan is organised to remove untouchability and to provide for the speedy assimilation of the Antyaj and their complete absorption into Hindu Society, I must rejoice at it both as a Muslim and as a Congressman.

   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 176,

2. I know how sacred a cow is in the eyes of my Hindu brothers - Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 167,

3. And even before he so picturesquely called the Khilafat our cow my brother and I have decided not to be any party to cow-killing ourselves. No beef is consumed since then in out house even by our servants, and we consider it out duty to ask our co-religionists to act similarly. As for sacrificing cows, my brother and I have never done it, but have always sacrified goats, since a sacrifice of some such animal is a recognised religious duty.

   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 168,

और बकरियों तथा भेड़ों का उत्पादन भी बढ़ाया जाये।[१]

कारावास की अवधि में शौकत अली के कुछ क्रियाकलापों के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'बीअम्मा' मे मिलने की आज्ञा नहीं दी और मौलाना मुहम्मद अली को 'बी-अम्मा' से मिलने की अनुमति दे दी तब देशभक्त मुहम्मद अली ने माँ से मिलने से इंकार करते हुए उन्हें एक पत्र में लिखा कि उनका स्वर्ग खड़गों की छाया में उनके (बी-अम्मा) चरणों में है और उन्हें माँ के दर्शन के बिना ही संसार से विदा लेना स्वीकार है किन्तु यह स्वीकार नहीं कि बड़े भाई शौकत अली आपसे हृदय में मिलने की इच्छा रखते हुए भी आपके दर्शन से वंचित रह जाये।[२] और इस प्रकार यह घटना भी मुहम्मद अली के भावनात्मक त्याग का एक ज्वलन्त उदाहरण है। मौलाना मुहम्मद अली को दास भारत कारागर की तरह लगता था। सन् १९२३ ई. में जेल से मुक्त होकर आपने कहा कि मैं एक छोटी और संकुचित जेल से निकल कर

---

1. The only safe and sure way of stopping cow-killing in this case is to take steps to lower the price of mutton which is prohibitively high, and thus reduce the very large margin that there is at present between the prices of mutton and beef ... I cannot help pointing out that by far the most numerous owners cows are the Hindus, and that if they did not shall vows after they had ceased to give milk, there would be much less vow-killing then there is to-day. Even now we can encourage goat and sheep breeding in order to save the cow.... Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 168, 169,
2. क़ैद के ज़माने में जब ब्रिटिश सरकार ने बीअम्मा को शौकत की कुछ हरकतों की वजह से जेल में न मिलने की सजा दी। केवल बी अम्मा से मुहम्मद अली को मिलने की इजाज़त दी तो उन्होंने स्वयं बी अम्मा से मिलने से इन्कार कर दिया और माँ को ख़त यू लिखा - मेरी जन्नत या तलवारों की छाँव में है या आपके क़दमों के नीचे है ताहम मुझे यह कबूल है आपको देखे बग़ैर आपसे हमेशा के लिए इस दुनिया से रुख़सत हो जाऊँ। मगर यह हरगिज कबूल नहीं कि मैं आपके दीदार से आदत अन्दोज़ हुआ करूं और शौकत की आँखें इस नज़ारे को तरसे। वह (शौकत) हर हालत में मुझसे कहीं ज्यादा आपकी मुहब्बत और इस इनज़ाम के मुसतहिक है।'
- मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात-
मुर - सै. नज़रबर्नी, पृ. ९२,

बड़ी जेल में आ गया हूँ।[१] अपने बन्धुओं की मुक्ति के बिना वह स्वयं की मुक्ति से प्रसन्न नहीं थे।[२]

गोलमेज सभा के लिए लन्दन प्रस्थान करते समय मौलाना मुहम्मद अली ने अपने रोकने वाले शुभचिन्तकों से कहा कि एक सैनिक का कर्तव्य अपने धर्म और देश की रक्षा करना है।[३] गोलमेज सभा में आपने चेतावनी पूर्ण घोषणा की कि आपके पास न तो ऐसी कोई मशीन है जो ३२ करोड़ भारतीयों को समाप्त कर सके, और न आप इतने दुर्भावना वाले हैं कि ऐसा करने का दुस्साहस कर सकें।[४]

मौलाना ने अंग्रेजों की दुर्नीतियों को उनके सामने ही गोलमेज सभा में स्पष्ट करते हुए कहा कि हिन्दू मुस्लिम समस्या भी आप ही की देन है। फूट डालकर राज्य करने में आप बड़े कुशल हैं लेकिन अब हम आपकी नीतियों को समझ गये हैं और हमारा यह व्रत है कि अब हम

---

1. अगस्त १९२० . में जब आप (मुहम्मद अली) जेल से रिहा हुए तो फ़रमाया कि मैं एक छोटे जेल से निकल कर बड़े जेल में आ गया हूँ।
   – 'हयाते जौहर' -मुर- नश्तर बलरामी, पृ. ८८,
2. लेकिन हम अपनी रिहाई से कोई खुशी महसूस नहीं कर सकते अगर मिसिज बेसन्ट मौलवी फ़ज़लुल हसन, हसरत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और अब्दुल वी खां (पेशावर) भी जो यहाँ बेतुल में हैं आज़ाद न किये जायें।
   - सिलसिला हालाते नज़रबन्दाने इस्लाम न. १ शौकत अली व मुहम्मद अली साहिबान की नज़रबन्दी-
   चन्द अहम ख़ुतूत जिन्हें सद्र दफ़्तर अंजुमने इआनते नज़रबन्दाने इस्लाम देहली ने शाये किया। पृ. १५,
3. 'एक सिपाही का फ़र्ज़ है कि जब उसका मज़हब व मुल्क ख़तरे में हो तो अपनी जान जोखें में डालकर अपने फ़र्ज़ें मनसदी को पूरा करें।
   - निगारिशाते मुहम्मद अली- मुर- रईस अहमद जाफरी, पृ. २७७,
4. दुनिया में कोई ऐसी मशीन ईजाद नहीं हुई जिससे आप (अंग्रेज) ३२ करोड़ इन्सानों को मौत के घाट उतारने का सामान मुहैया कर सके। अगर आपके पास कोई ऐसी मशीन हो और सामान भी हो तो फिर आपके पास वह अख़लाक़ी ताक़त या बद अख़्लाकी नहीं कि आप ३२ करोड़ इन्सानों को हलाक करने की जुरअत कर सकें।
   - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर- सै. नज़रबर्नी पृ. १५४,

आपस में फूट नहीं पड़ने देंगे।[१] इसके साथ ही मौलाना मुहम्मद अली ने गोलमेज सभा में अंग्रेजों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं बीमारी की स्थिति में स्वदेश से इस गोलमेज कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होने के उद्देश्य को लेकर आया हूँ कि मैं अब अपने देश को उसी स्थिति में वापस जाऊँगा जब आप मेरे देश को अपनी गुलामी से मुक्ति दे देंगे तथा हमें स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन यापन करने का अवसर प्रदान करेंगे और यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तब आप यह बात अच्छी तरह समझ लीजियेगा कि मैं अपने पराधीन देश को वापस नहीं जाऊँगा और आपको मुझे मेरी कब्र के लिए स्वतन्त्र देश में स्थान देना होगा।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के उक्त विचार देश के प्रति अपार प्रेम के द्योतक हैं। आपने इसके अतिरिक्त गोलमेज कान्फ्रेन्स में अंग्रेजों को चेतावनी एवं भविष्य के प्रति आगाह करते हुए यह भी स्पष्ट भवि यवाणी कि अब वह दिन दूर नहीं जब भारत से शीघ्र ही ब्रिटिश शासन समाप्त होगा और हम भारतीय स्वतन्त्र हों स्वशासन के अधिकारी होंगे।[३] मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" का अन्तिम लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना था।

---

1. 'अस्ल मसअला जिसने हमको परेशान कर रक्खा है वह हिन्दू मुस्लिम मसअला है लेकिन दर हक़ीक़त यह कोई अहम मसला नहीं है हिन्दू मुस्लिम मसअला भी आप ही (अंग्रेजों) का पैदा किया हुआ है। लेकिन मुआमला सिर्फ़ इस क़दर नहीं है। यह फूट डालो और हकूमत करो का पुराना उसूल है। लेकिन यहाँ तक़सीमे अमल भी है। फूट अपने आप में हम डालते हैं और हुकूमत आप करते हैं। जिस वक्त हमने यह फैसला कर लिया कि अपने आप में फूट पड़ने नहीं देंगे, आप हम पर इस तरह हकूमत नहीं कर सकेंगे यहाँ इस मुसममम इरादे के साथ आये हैं कि हममें फूट नहीं पड़ेगी।'
   - मौ. मु. अली - शख़्सीयत और ख़िदामात, सै. नज़रबर्नी पृ. १५४,
2. मैं यहां से खाली हाथ लौटने नहीं आया हूँ। अपने देश तभी वापस जाऊँगा जबकि मुझे आज़ादी मिलेगी। वरना उस गुलाम जमीन पर क़दम नहीं रखूँगा। बजाय इसके किसी आज़ाद मुल्क में दम तोड़ना पसन्द करूँगा अगर आप लोग मुझे मेरे वतन की आजादी नहीं देंगे तो मेरे कब्र के लिए आपको जमीन देनी पड़ेगी।
   - मानवता और देशप्रेम का फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति सिंह रेणु, एम. ए. डी. लिट्.
   Maulana Mohd. Ali, Birth Century Celeberation, Souvenir, Dec. 1978, Hyderabad,-4,
3. 'आइन्दा हकूमत एक यादों अ ख्वाम की हवूमत न होगी बल्कि तमाम हिन्दोस्तानियों की हकूमत होगी जिसमें ज़ात, और अकाइद का इम्तेयाज़ बाक़ी न रहेगा।
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ-
   मुर- अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ८४,

इसीलिए आपने गोलमेज कान्फ्रेन्स में अंग्रेजों से पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग करते हुए कहा कि भारत की उस ३३ करोड़ जनसंख्या को जो कि आत्म बलिदान करने के लिए पूर्ण तत्पर है, उसको अब जान से मार डालना आपके लिए सम्भव नहीं है तथा फूट डालकर राज्य करना अब आपके लिए स्वप्न के समान है। और अब मैं अपने भाषण को विराम देते हुए अपना स्थान इस आशा के साथ ग्रहण करता हूँ कि आप मुझे पुनः जब तक बोलने के लिए नहीं कहेंगे जब तक कि आप मेरे देश को स्वतन्त्र करने की घोषणा नहीं कर देते।[१]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्ध स्वयं को दृढ़ इच्छा शक्ति और साहस का पर्वत समझते थे। आपने मंच से विदेशी राज्य का निर्भयता पूर्वक विरोध किया और ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों का वर्णन किया आप भारत की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग इस प्रकार करते थे कि अंग्रेज और उनके समर्थक थर्रा उठते थे। आप अपने समाचार पत्रों में भारत की स्वतन्त्रता का साकार चित्र चित्रित करते थे। इसीलिए राजनेता एवं राजनीतिज्ञ दोनों ही प्रातःकाल सबसे पहले 'कामरेड' और 'हमदर्द' पढ़ा करते थे।[२]

---

1. मैं (स्वतन्त्रता) अब बैठ जाता हूँ और मुझे उम्मीद है कि मुझे कान्फ्रेन्स के भरे इज़लास में उस वक्त तक दोबारा भाषण देने के लिए नहीं बुलाया जायेगा जब तक जनाबे सद्र यह ऐलान न कर देंगे कि हिन्दोस्तान भी इंग्लिस्तान की तरह आज़ाद है।
   – हयाते जौहर - मुर. इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. ११८,
2. जंगे आज़ादी में अंग्रेजों के ख़िलाफ़ अमालन सरगर्म होने के साथ खुद को अज़्मे व हिम्मत का पहाड़ समझने वाले मुहम्मद अली जब स्टेज पर खड़े होकर विदेशी राज्य की मुख़ालिफ़त करते तो उसमें कोई मसलेहत और अन्देशा दीवार बनकर सामने नहीं आता। वह बिना ख़ौफ व ख़तर अंग्रेज़ के मज़ालिम बयान करते और हिन्दोस्तान की मुकम्मल आज़ादी की माँग को कुछ इस कदर दोहराते कि अंग्रेज और उसके हवारीन लरजावर अन्दाम हो जाते। वह जब अपने अखबार में आज़ादीये हिन्द की तस्वीर खेंचते तो कोई दक़ीक़ा फ़िरो गुज़ास्त न छोड़ते। चुनाँचे अहले सियासत सुबह सबेरे सबसे पहले कामरेड और हमदर्द का मुतालेआ करना फ़र्ज़ें अब्बलीन समझते थे।
   – मौलाना मुहम्मद अली - शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर - सै. नज़रबर्नी, पृ. ८५,

आपने निसंकोच होकर ब्रिटिश सरकार की आलोचना की जिसके कारण आप शीघ्र ही ब्रिटिश सरकार की कृपा से वंचित हुए और आपने ब्रिटिश सरकार की कृपा से ईश्वर की कृपा को अधिक श्रेयस्कर समझा और सच्चाई के पथ पर रह कर संघर्ष करते रहे।[१]

मौलाना मुहम्मद अली ब्रिटिश शासन के विपक्ष में थे आप किसी भी स्थिति में उनका शासन भारत में नहीं चाहते थे। आप स्वतन्त्र नागरिक के रूप में जीवन व्यतीत करने के पक्ष में थे।[२] आप युद्ध को संसार में एक बुरी चीज मानते थे किन्तु आपकी दृष्टि में यदि संसार में युद्ध से भी बुरी कोई है तब वह दासता थी।[३] इसीलिए आप दासता से मुक्ति पाने के लिए संघर्षरत थे और स्वतन्त्रता के बाद एक ऐसे राज्य के इच्छुक थे जो हिन्दू या मुस्लिम न होकर स्वराज्य हो।[४] इसीलिए मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" एक सेनानायक के रूप में स्वतन्त्रता संग्राम लड़ना चाहते थे और देश को अंग्रेजी की दासता से मुक्ति दिलाने के पक्ष में थे। सैनिक के रूप में लड़ना उनकी प्रवृत्ति में था।[५] क्योंकि आपका कथन था कि जब धर्म और देश संकट में हों तब एक सच्चे

---

1. He criticised the Government with characteristic frankness, and soon lost grace with it. But true to himself, he preferred the grace of God to the grace of the government and continued to fight it.
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. xiv.
2. मैं आपको यकीन दिलाता हूँ और आप अच्छी तरह सुन लें कि मैं अंग्रेजी हकूमत को पसंद नहीं करता, मैं हरगिज़ इस पर राज़ी नहीं कि अंग्रेज का गुलाम बनूँ।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २०५,
3. We are among those that believe was to be a great evil, but we also believe that there are worse things than war, and that a nation's slavery is one of them.
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 207,
4. मैं हिन्दु राज्य चाहता हू और न मुस्लिम राज्य बल्कि मैं तो सौराज चाहता हूँ।
   मौ. मुहम्मद अली की याद में मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २०६,
5. मुहम्मद अली एक सिपह सालार बन कर आज़ादी की जंग लड़ना चाहते थे। ताबेदार सिपाही बन कर लड़ना उनकी फ़ितरत में न था।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २१५,

सैनिक का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए अपने कर्तव्य का पालन करे।[१] आप देश की स्वतन्त्रता को संघर्ष के द्वारा प्राप्त करने के पक्ष में थे स्वतन्त्रता की भीख माँगने के पक्ष में नहीं।[२]

मौलाना मुहम्मद अली ने देश की स्वतन्त्रता हेतु चतुर्मुखी युद्ध करने का संदेश दिया। वह खिलाफत और कांग्रेस दोनों पर बलिदान होने को तैयार थे। उन्हें विश्वास था कि उनका मार्ग ठीक है। उन्होंने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यदि हिन्दू भाई देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास में प्रमाद करते हैं तो भी मुसलमान भाईयों को देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रयास करना चाहिए।[३] मौलाना मुहम्मद अली स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हिन्दू मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों की एकता परम आवश्यक समझते थे। इसीलिए आपने हिन्दू भाईयों को भी सम्बोधित करते हुए कहा कि दासता से मुक्त होने का मार्ग हिन्दू मुस्लिम एकता ही है। अतः दोनों को एक दूसरे के प्रति सहानुभूति और सहिष्णुता का व्यवहार

---

1. एक सिपाही का फ़र्ज़ है कि जब उसके मज़हब व मुल्क ख़तरे में हो तो अपनी जान जोखों में डालकर अपने फ़र्ज़ें मनसदी को पूरा करें।
   - निगारिशाते मुहम्मद अली-
   मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७७
2. मौलाना मुहम्मद अली ——— आज़ादी की ख़ातिर हमेशा लड़ने की तरग़ीब देते और उसकी भीख माँगने की मज़म्मत करते रहे। वह अंग्रेजों के मिज़ाज से अच्छी तरह वाकिफ हो गये थे। इसलिए वह समझते थे कि उनको किस तरह दबाया जा सकता है। वह उनकी सियासी फरेबकारियों और चालबाज़ियों से भी अच्छी तरह वाक़िफ़ थे।
   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में–
   मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. १८५,
3. हमको तो चौमुखी लड़ाई लड़ना है। सबसे सही रास्ते पर हम है कि ख़िलाफ़त और कांग्रेस दोनों के ऊपर जान देने को मौजूद है। और मैं बिल खसूस मुसलमान भाईयों से कहता हूँ कि अगर हिन्दू आज़ादी के लिए कोशिश न करें तब भी मुसलमानों को कोशिश करके हिन्दोस्तान के हिन्दू मुसलमानों दोनों को आज़ाद कराना चाहिए। साहिबों यह मेरी पालिटिक्स है और यही मेरा मज़हब है। ख़ुदा मुझको तौफ़ीक़ दे कि उसके मुताबिक अमल करूं।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में-
   - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.१६२,

करना चाहिए और दासता को कदापि सहन नहीं करना चाहिए।[१]

आन्दोलन को सफल बनाने के उद्देश्य से मौलाना मुहम्मद अली ने अक्टूबर सन् १९२० ई. में एक बहुत बड़े जन समूह को सम्बोधित करते हुए कांग्रेस और ख़िलाफ़त को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का परामर्श दिया और प्रत्येक मुल्क पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रेरणा दी। इसी के परिणाम स्वरूप सहस्त्रों भारतीय कारागार में चले गये और प्रत्येक व्यक्ति सच्चे हृदय से विदेशी वस्तुओं के बहिंष्कार का समर्थक हो गया।[२] इसके अतिरिक्त मौलाना मुहम्मद अली ने देशवासियों से यह भी अनुरोध किया कि यदि देश की स्वतन्त्रता के लिए उन्हें प्राणों का बलिदान करने की भी आवश्यकता पड़े तो निसंकोच देशहित को महत्व देते हुए उन्हें अपने प्राणों का भी बलिदान कर देना चाहिए।[३]

मौलाना मुहम्मद अली को यूरोप की यात्रा से यह पूर्ण विश्वास हो गया था कि यदि भारतीय मुसलमान पश्चिमी इस्लामी देशों की मुक्ति

---

1. 'अब अगर गुलामी से निकलना है तो उसका यही तरीक़ा है कि हम तुम एक दूसरे के साथ इन्साफ रवादारी का बर्ताव करें। एक दूसरे की तरफ़ से जो अज़ीयत.ज़ुबान से या हाथ से पहुँचती है उस पर सब्र करें, मगर इस गुलामी को हरगिज बर्दाश्त न करें जिसमें तुम भी १००-१५० बरस से मुबतिला हो और हम भी और जो यक़ीनन हिन्दू राज्य से भी ज्यादा तकलीफ देह है और मुस्लिम राज्य से भी।
   – मौलाना मुहम्मद अली,
   - शख़्सीयत और ख़िदामात - मुर -सै. नज़रबर्नी पृ. १९१,
2. अक्टूबर १९२० ई. में एक बहुत बड़े मजमें के सामने मौलाना ने जोशीली तकरीर करते हुए अपनी राय पेश की कि ख़िलाफ़त और कांग्रेस मिलकर तरके मवालात की तहरीक शुरू करें और जिस तरह भी हो सके आजादी हासिल करने के मक़सद को कामयाब बनाये। — मौलाना की सच्ची और असरवाली कोशिशें बहुत ज़्यादा कामयाब साबित हुयी। हजारों तरकेमवालात वाले हिन्दोस्तानी जेल खानों में चले गये और हर शख़्स तहेदिल से तहरीक का तरफदार हो गया।
   – हयाते जौहर - इशरत रामपुरी, पृ. ७६, ७७
3. दोस्तों, काम करने की तहय्या कर लो और अगर मुल्क की आज़ादी की राह में ज़रूरत पेश आ जाये तो जान तक से दरेग़ न करो।
   - खुतबये सिदारते - मौलाना मुहम्मद अली, पृ. १४७,

चाहते हैं तो सबसे पहले उन्हें अपने देश को स्वतन्त्र कराना चाहिए।[१] इसीलिए उन्होंने मुसलमानों को कर्तव्य बोध कराते हुए कहा कि मुसलमानों को हिन्दुओं के साथ सम्मिलित होकर देश को स्वतन्त्र कराना चाहिए।[२] उनका कथन था कि वह अपने प्रयासों का एक बहुत बड़ा भाग लोगों को स्वच्छन्दता से बचाने, उन्हें विदेशी शासन की दासता, बादशाहों और राजाओं की दासता नेताओं की दासता या विभिन्न मतमतान्तरों के धर्मगुरुओं की दासता से मुक्त कराने में लगेगा।[३]

---

1. मौलाना मुहम्मद अली इस मिशन से नाकाम वापस आये मगर इससे यह फ़ायदा जरूर हुआ कि एक बात जो वह पहले से समझते थे अब उनके दिल में अच्छी तरह बैठ गयी और वह यह थी कि अगर हिन्दोस्तानी मुसलमान इस्लामी मुल्कों को मग़रवी साम्राज्य के तसललुत से निज़ात दिलाना चाहते हैं तो पहले उन्हें अपने और हम वतनों के साथ मिलकर हिन्दोस्तान को आज़ाद कराना चाहिए।
   - हिन्दोस्तानी मुसलमान - आइनये अय्याम में,
   मुर- सै. आबिद हुसेन, पृ. १३०,
2. They owe a duty to themselves as Indians to secure freedom for themselves and their posterity. India is no less their country than the Hindus, and even if the Hindus were to shrink from the sacrifices required in freedom's battle, though they will certainly never do so, it would still be their duty to persevere and to say that they would win swaraj for All India even if they received no aid from the rest of India.
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 186,
   — मैं (मुहम्मद अली) तो कहता हूँ कि मुसलमानों के लिए मुनासिब है कि हिन्दुओं के साथ शरीक होकर हिन्दोस्तान को आज़ाद कराये।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में -
   मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.१६१,
3. मेरी (मुहम्मद अली) जिद व जहद का बड़ा हिस्सा इन्शा अल्लाह इस पर सर्फ़ होगा कि लोगों को नफ़्स परवरी व नफ़्स परस्ती से ख़्वाह यह बुत किसी शक्ल किसी लिबास और किसी पर्दे में क्यों न हो बचाया जाये और उन्हें गुलामी की जंजीरों से ख़्वाह वह अपने नफ़्स की गुलामी हो या बादशाहों की गुलामी या लीडरों की या पीर, पंडित, पादरी और मौलवी की गुलामी हो निज़ात दिलायी जाये।
   – मज़ामीने मुहम्मद अली, मुर- मुहम्मद सुरूर उस्ताद हिस्सा दोयम, पृ. २३,
   —Mohamed Ali raised his stentorian voice and commanded Indian man or woman those shall be a slave no more.
   Maulana Mohamed Ali By. Said Mohamed Khan B.A. (Alig.) page no. 15

मौलाना मुहम्मद अली ने करांची मुकद्में में घोषणा की कि अब हम ब्रिटेन के राजा को अपने राजा के रूप में मान्यता नहीं देते। हम किसी भी ऐसे व्यक्ति के प्रति वफादारी नहीं बरतेंगे जो हमें ईश्वर के प्रति वफादार होने के अधिकार से वंचित करता है।[१] आपके सैनिकों को ब्रिटिश सेना से सेवाएँ छोड़ने का अनुरोध किया। आपका कथन था कि सुअर की चर्बी लगे कारतूसों को दांत से तोड़ने पर उतना ही बड़ा पाप है जितना कि मुसलमान की हत्या में है या एक पूरा सूअर खाने मे है।[२]

साइमन कमीशन की नियुक्ति ब्रिटिश प्रधानमन्त्री रेमजे मैक्डेनाल्ड के द्वारा हुई थी। मौलाना मुहम्मद अली के विचार में वह एक मिथ्यावादी छली और धोखेबाज व्यक्ति था। उन्होंने भारतीय जनता से कहा कि उन्हें ब्रिटिश प्रधानमन्त्री से किसी प्रकार से कल्याण की आशा नहीं रखनी चाहिए।[३]

आपका कथन था कि हमारे भाग्य का निर्णय हमारे ही हाथों में होना चाहिए। जब तक कि हम बिल्कुल बुद्धिहीन न हो जायें- हमें स्वयं ही अपने परिवार का भरण पोषण और देख रेख करनी होगी। किसी दूसरे का यह कहना हास्यास्पद है कि वह हमारे परिवार का कल्याण हमसे

---

1. Mohamed Ali declared - we do not recognise the king any longer as our king- We do not owe any loyalty to any man who denies our right to be loyal to God.
Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 57,
2. But what is the tearing with one's teath of greased cartriges or eating a whole pig compared to the sin of killing a Muslim.
Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 97, 98.
3. बर्तानिया के वज़ीरे आज़म रेमज़े मैकडानाल्ड ने यह कमीशन मुक़र्रर किया था उनके बारे में मौलाना मुहम्मद अली की राय बहुत ही खराब थी उनको वह इन्तेहायी दरज़े का झूठा फ़रेबी बदअहद और कीना परवर अंग्रेज़ समझते रहे इसलिए उन्होने उसी तलक़ीन की कि इस अंग्रेज वजीरे आज़म से किसी भलाई की उम्मीद न रखनी चाहिए।
– मौलाना मुहम्मद अली की याद में -
मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. १८७,

अधिक कर सकता है। अपने निजी जीवन में दूसरे के हस्तक्षेप से अपवित्रता आती है।[१]

मौलाना मुहम्मद अली सायमन आयोग के इसलिए विरोधी थे क्योंकि इस आयोग के सातों सदस्य ऐसे थे जो भारत और इसकी दशा से बिल्कुल अनभिज्ञ थे।[२] उनका यह विचार युक्ति-युक्त था कि पूर्वी देश की वर्तमान स्थिति को कोई पूर्व निवासी ही अच्छी प्रकार समझ सकता है। पाश्चात्य संसद के प्रतिनिधि नहीं। इसीलिए मौलाना मुहम्मद अली ने इस साइमन कमीशन का विरोध करने के लिए देशवासियों से आग्रह किया और जब सायमन आयोग भारत आया तब उसको विरोध में 'साइमन कमीशन गो बैक' के नारों से देश ध्वनित हो उठा। इन नारों ने अंग्रेजों की मानसिक शान्ति भंग कर दी। उस समय मौलाना ने

---

1. हम मशरिक़ियों के लिए हम मशरिक़ी ही मुनासिब और मौज़ू दस्तूरे असासी वज़ा कर सकते हैं न कि मगरिबी पार्लियामेन्ट के नुमाइन्दे —— हिन्दोस्तान के लिए बिरकनहड़, रैडिंग और सायमन जैसे माहिरीन भी मुनासिब और मौज़ूं दस्तूर व ज़ायीन वज़ा नहीं फ़रमा सकते। हमारी किस्मत का फैसला ख़ुद हमारे हाथ में होना चाहिए। जब तक हम फ़ातिरूलअक़ल न साबित हो जाये। अपने बीबी बच्चे का इन्तेजाम हमीं को करना पड़ेंगा। कोई दूसरा यह कहकर हमारे ख़ानगी उमूर की देखभाल अपने ज़िम्मे नहीं ले सकता कि मैं इस देखभाल तुमसे ज़्यादा अहलियत रखता हूं। अपना हलक़ अपने ही थूक से तर किया जा सकता है। दूसरे का थूक गन्दगी और ग़िलाज़त है।
   मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. १८७,
2. उन्होंने (मुहम्मद अली) सायमन कमीशन पर ताकीद करते हुए लिखा कि - इससे ज़्यादा मजहका अंग्रेज़ क्या चीज होगी कि काबीना विज़ारते बर्तानिया ऐसे सात मिम्बर पार्लियामेन्ट को हिन्दोस्तान भेज रहा है, जो हिन्दोस्तान से आज तक बिलकुल ना आशना रहे हैं।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.१८६,
   – एक शाही आयोग की नियुक्ति का निर्णय किया गया — आयोग के अध्यक्ष हुए एक अंग्रेज राजनीतिज्ञ सर जान सायमन और इस प्रकार आमतौर पर उसे सायमन आयोग की संज्ञा दी गयी। उसके सातों सदस्यों में से कोई भी भारतीय नहीं था।
   - स्वतन्त्रता संग्राम- विपन चन्द्र, पृ. १४५,

मुसलमानों की उसके बहिष्कार के लिए अपने प्रभाव से प्रभावित कर तैयार किया तथा अपने दैनिक उर्दू हमदर्द में इसके विरुद्ध लेख लिखकर इसका विरोध किया।[१] और इस प्रकार साइमन कमीशन के विरुद्ध मौलाना मुहम्मद अली ने अपने भाषणों से जो जन जागृति उत्पन्न की उसी के परिणाम स्वरूप हिन्दू और मुसलमान ने इस आयोग के आगमन के उद्देश्य को निष्क्रिय बना दिया।[२]

मौलाना मुहम्मद अली देश को शीघ्र अतिशीघ्र अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराना चाहते थे। इसीलिए आपने दासता से मुक्ति पाने के लिए देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि - एक मिनट के लिए भी आत्मिक और शारीरिक दासता को सहन मत करो। यदि संकोच करोगे तो मिट जाओगे। बिना किसी शर्त के स्वराज्य की मांग करो।इसके लिए संघर्ष करो और इसके लिए मर जाओ। और जब स्वराज्य मिल जायेगा तो देश का पूरा रूप ही परिवर्तित हो जायेगा और आप पर्याप्त सुरक्षित हो जायेंगे।[३]

---

1. जब यह (साइमन आयोग) हिन्दोस्तान आया तो 'साइमन कमीशन गो बैक' के नारों से पूरा मुल्क गूंज उठा——
   मौलाना मुहम्मद अली ने भी मुसलमानों की अक़्सरीयत को उसके बायकाट पर अमादा किया और अपने अख़बार हमदर्द में इसके ख़िलाफ़ मुसलसल मज़ामीन लिखे।
   – मौ. मुहम्मद अली की याद में—
   मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.१८३,
2. मौ. मुहम्मद अली ने अपनी तहरीरों और तक़रीरों से साइमन कमीशन की शख़्त मुख़ालिफ़त की उनका पयान था कि इस वक़्त हिन्दू और मुसलमान दोनों ने मिलकर साइमन की आमद को नाकाम बना दिया तो हमेशा हमेशा के लिए हिन्दोस्तान की तारीख़ में हमारा नाम ज़र्रीं हरुफ़ से लिखा जायेगा।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में—
   मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.१९१,
3. Do not tolerate for a minute longer the slavery that keeps both body and soul in chains. If you besitate you are lost. Make no stipulations for the future but ask for swaraj without any terms without any conditions. Demand it. Struggle for it, suffer for it, and die for it, for when it is won the entire face of the nation will be changed, and you will safe enough..... -Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 249,.

अली बन्धु और महात्मा गांधी स्वतन्त्रता संग्राम के ऐसे सेना नायक थे जिन्होंने भारत के भाग्य का नव निर्माण करने का निश्चय कर लिया था। उन्होने जनता के हृदय में वह चिनगारी जलायी जो शनैः शनैः विशाल अग्निशिखा बन गयी।[१] कराँची अधिवेशन में आपने ब्रिटिश फौज की सेवा को 'हराम' बताते हुए सेना में कार्यरत लोगों से त्यागपत्र देने का शक्तिशाली आग्रह किया।[२] कराँची अधिवेशन के पश्चात् आपने जनजागृति के लिए महात्मा गांधी के साथ पूरे देश का भ्रमण किया।[३]

भारत विभिन्न धर्मावलम्बियों की संगमस्थली है। मौलाना मुहम्मद का यह विश्वास था कि हिन्दू मुस्लिम एकता के अभाव में स्वतन्त्रता असम्भव है। दोनों के बीच की खाई को पाटने के लिए आपने भरसक प्रयास किये।[४] इसीलिए मौलाना ने हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल देते

---

1. अली ब्रादरान और महात्मा गांधी तरीके आज़ादी के ऐसे सिपह सालार थे जिन्होंने मिलकर हिन्दोस्तान की तक़दीर बदलने का मुसम्मम रादा कर लिया था। उन्होंने क़ौम के हर फ़र्द व बसर के दिल में हुर्रियत व क़ौमियत की वह जूजला दी जो रफ़्ता रफ़्ता ज्वाला बन गयी।
   - शमशीर बरहना- मौ. मुहम्मद अली जौहर,
   - सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५४,
2. सन् १९२१ ई. को करांची में ख़िलाफ़त कान्फ्रेन्स का इजलास ज़ेरे सिदारते मौलाना मुहम्मद अली मुनअकिद हुआ — इस कान्फ्रेन्स में यह तज़वीज़ की गयी कि इस्लाम की रुख से अंग्रेज की फ़ौज की मुलाज़िमत हराम है —— और सिर्फ़ फ़ौज की मुलाज़िमत ही को हराम करार नहीं दिया बल्कि तमाम साइमन को ज़बरदस्त तरग़ीब दी कि वह फ़ौजियों की मुलाज़ित से मुस्ताफ़ी होने के सिलसिले में पूरी कोशिश करें।
   - तहरीके ख़िलाफ़त मुस- क़ाज़ी अहमद अदील अब्बासी, पृ. १८३,
3. करांची के जलसे के बाद हस्बे मामूल मौलाना मुहम्मद अली ने महात्मा गांधी के साथ हिन्दोस्तान का दौरा शुरू कर दिया।
   तहरीके ख़िलाफ़त - मुस. क़ाज़ी अहमद अदील अब्बासी, पृ. १८४, १८५,
4. हिन्दोस्न मुख़तलिफ़ इकाइयों तहजीबों और मज़हबों का संगम है। यहाँ दो मिल्लतों के दरिम्यान तसादूम एक मामूली सी बात है। मौलाना की दूर रस निगाहों ने इस हक़ीक़त को अच्छी तरह समझ लिया था कि हिन्दू-मुस्लिम इत्तेहाद के बग़ैर आज़ादी को हासिल करना न मुमकिन है। चुनाँचे उन्होंने दोनों क़ौमों के दरिम्यान तअससुब व नफ़रत की ख़लीज़ को पाटने की भरपूर कोशिशें की और अपनी तहरीरों और तक़रीरों में लोगों को इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ का दर्स दिया।-उन- मौलाना मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी,
   डॉ. मुहम्मद शर्फुद्दीन साहिल - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, मुदीर - जियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. ८२,

हुए दोनों से कांग्रेस में सम्मिलित होने पर बल दिया क्योंकि आपका विचार था कि अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश करने के लिए दोनों की एकता आवश्यक है।[१] और इस कार्य के लिए आपने सुखों को त्याग कर जलसे, भाषण एवं भ्रमण किये तथा देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से आप अनेक बार कारागार गये।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के जन-जागरण के संदेश का इतना गहरा प्रभाव हुआ कि हिन्दू और मुसलमान दोनों सगे भाइयों की तरह कन्धे से कन्धा मिलाकर अंग्रेजी जुए को उतार फेंकने के लिए कटिबद्ध हो गये।[३] मौलाना मुहम्मद अली ने गांधीजी के साथ मिलकर चलाये जाने वाले असहयोग आन्दोलन में छात्रों से इसमें सम्मिलित होने का अनुरोध किया एवं आपके प्रयास से लगभग २०० छात्र आन्दोलन में सम्मिलित हुए।[४] कांग्रेस और खिलाफत को मौलाना के प्रयासों एवं भाषणों से बड़ा बल मिला। और आपके प्रभावशाली भाषणों के कारण

---

1. वह (मुहम्मद अली) मुसलमानों में जाते तो हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद की तलकीन करते और उन्हें कांग्रेस में शामिल होने पर जोर देते थे। इनका ख़्याल था कि अंग्रेजों को वतन छोड़ने पर मज़बूर करने के लिए दोनों फिरकों के इत्तेहाद की ज़रूरत है।
   उन- शमशीर बरहना - मोलाना मुहम्मद अली "जौहर",
   - सै. नज़रबर्नी, स्वीनियर १९८१, पृ. ५८,
2. मौलाना ने इन क़ौमी ख़िदामात के सिलसिले में बहुत तकलीफ़ें उठाई। दौरे, तकरीरे, जलसे और जुलूस रोज़ाना का मशग़ला था। आराम तो आराम दम लेने का मौका भी न मिलता था। कई बार जेल भी गये।
   – मौलाना मुहम्मद अली - शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर -सै. नज़रबर्नी, पृ. ३१.
3. The country got into a veritable ..... and Hindus and Musalmans stood shoulder to shoulder like blood brother to throw off the British Yoke.
   . Maulana Mohd. Ali by Said Mohamed Khan, page no. 11,
4. Mahatma Gandhi and Ali Brother intiated the non-co-operation movement and toured whole of India. They visited Aligarh and appealed to the students to join the non-co-operation movement. More than 200 students joined the movement.
   - Maulana Mohamed Ali Birth Century celeberation, Souvenir, Seminr 30th & 31st December 1978. Maulana Møhamed Ali, by Fareed Mirza.

ही मुस्लिम भाईयों में जागृति फैली।[१] तथा इसके अतिरिक्त आपने आलिमों तथा पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त नवयुवकों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। उनका विश्वास था कि इससे इस्लाम और देश की स्वतन्त्रता को बल मिलेगा।[२]

मौलाना स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक बार जेल गये और उन्होंने अपनों से ही शत्रुता मोल ले ली परन्तु उन्होंने दूसरों की दासता स्वीकार नहीं की। उनका दृढ़ विश्वास था कि वह केवल ईश्वर के दास हैं और इस आध्यात्मिक दासता ने उन्हें अन्य सब दासताओं से मुक्त कर दिया है।[३] आपने देश की स्वतन्त्रता के लिए आत्म बलिदान किया। इस महान

---

1. कांग्रेस और ख़िलाफ़त की तहरीकों को मौलाना की शरकत से बेइन्तहा तक़वियत पहुंची। अवाम ख़ुससुन मुसलमान अवाम में इतनी बेदारी इनकी ही बदौलत फैली।
   – मौलना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर - सै. नज़रबर्नी, पृ. ३१,
2. मुसलमानों की सियासत में मुहम्मद अली के हिस्से को नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता क्योंकि उन्होंने उलामा और मग़रबी तालीम याफ़्ता नौ जवानों को यकजा करने की कोशिश की वह समझते थे कि इससे इस्लाम और मुल्क की आज़ादी दोनों को तक़वियत मिलेगी।
   –मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ,
   मुर- अब्दुल लतीफ आज़मी, उन - हिन्दोस्तानी सियासत में मुहम्मद अली का हिस्सा , डा. मुईन शाकिर, पृ. ९४-९५,
3. आज़ादी की जंग लड़ते हुए वह जेल गये और हुकूमत की सख़्तियां बर्दाश्त की अपनों से दुश्मनी मोल ली मगर ग़ैरों की गुलामी में रहना गंवारा नही किया। एक मुसलमान होने की हैसियत से वह गुलामी को लानत मानते थे। चुनाचे कहते हैं 'इस्लाम के मुताबिक इन्सान सिर्फ़ अल्लाह की गुलामी के लिए पैदा हुआ है इन्सान एक दूसरे के गुलाम नहीं हो सकते। ख़ुदा की गुलामी ने हर किसम की क़ैद व बन्द से आज़ाद कर दिया है।
   - उन - मौलाना मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी,
   डॉ. शर्फुद्दीन 'साहिल' - जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं. मुदीर ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. ८२,
   —Islam is a theocracy, and in the language of the Quran, 'There is no Government but God's' and 'Him alone commanded to serve.'
   –Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. 215,

उद्देश्य के लिए आपने अपने प्रिय समाचार पत्र और गृह का भी त्याग कर दिया। उन्हें केवल देश की स्वतन्त्रता की ही लगन थी। आप अंग्रेजो की दासता से मुक्ति चाहते थे।[१] और यह मुहम्मद अली ही थे जिन्होंने आन्दोलन को देशभक्ति की धारा में युवा पीढ़ी के लाभ के लिए प्रवाहित किया।[२]

मौलाना का सन्देश भारतीयों पर इस प्रकार प्रभावी हुआ कि उनको अंग्रेजों के निष्कासित करने की धुन सवार हो गयी। भारत का सर्वहारा वर्ग स्वतन्त्रता संग्राम में बलिदान होने के लिए सामने गया। 'अल्लाह हो अकबर' तथा महात्मा गांधी की जय के नारों से गगन को भेदता हुआ अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। स्कूल कालेजों का परित्याग कर दिया गया। जनक्रान्ति का एक समुद्र आन्दोलित हो उठा। स्वदेशी वस्तुएँ अपनायी जाने लगीं और विदेशी वस्तुओं को भस्म कर दिया गया। विदेशी शासन के विरुद्ध अनेक गीत लिखे गये।[३] और इस प्रकार मौलाना

---

1. मौलाना मुहम्मद अली ने आज़ादिये वतन की ख़ातिर जान की बाजी लगायी और अज़ीज अकरुवा अख़बार और घरबार सब ही कुछ कुर्बान कर रखा था। और सिर्फ एक ही धुन सवार थी कि मुल्क आज़ाद हो जाये और अंग्रेजों की गुलामी से निज़ात मिले।
   – मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात,
   मुर- सै. नज़रबर्नी पृ. १२४,
2. It was Mohd. Ali, who tried to direct the movement into patriotic channels for the benefit of the younger generation.
   – Life of Maulana MohamedAli Jauhar, Book one, by Allah Bakhsh Yusufi, page १५२,
3. तहरीके आज़ादी ने अवाम के दिल व दिमाग पर क़ब्ज़ा कर लिया था अब सिर्फ़ एक जज़्बा कारफ़रमा था कि अंग्रेज़ को हिन्दोस्तान से निकाल बाहर किया जाये। और इसके लिये सारा हिन्दोस्तान फटे कपड़ों, नंगे सर और नंगे पैर वाले रज़ाकारों से भर गया। लोग अपना काम काज छोड़कर निकल आये और सिर्फ ३ नारे हिन्दू मुसलमान मिलकर लगाते थे- अल्लाह हो अकबर, महात्मा गांधी की जय, मौलाना मुहम्मद अली की जय। कालेजों और स्कूलों से हिन्दू और मुसलमान निकल पड़े और दोश बदोश काम शुरू हो गया। एक लहर थी जो मौजे दरिया की तरह रवाँ दवाँ थी। कहीं इख़्तेलाफ़ या नफ़रत का एक दूसरे से नाम व निशान न था। हुब्बुल वतनी ता यह भी तक़ाजा था कि इन्सान को अपने वतन की बनी हुई चीजों से मुहब्बत हो— विदेशी कपड़ों की गाँव में होली मनायी गयी। उसकी मजम्मत में गाने लिखे गये ।
   – तहरीकी खिलाफ़त, मूल- क़ाजी अहमद अदील अब्बासी, पृ० २७१-७२.

मुहम्मद अली जौहर का सम्पूर्ण जीवन देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करते ही व्यतीत हुआ।[१] सन् १९४७ ई. तक स्वतन्त्रता प्राप्ति के शिख़र तक पहुँचने में जिन बाधाओं का सामना करना पड़ा उन बाधाओं के समाधान में मुहम्मद अली "जौहर" का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[२] और इस वास्तविकता को भी नहीं भुलाया जा सकता कि मौलाना मुहम्मद अली जौहर और उनके अन्य स्वतन्त्रता प्रेमी साथियों के अथक प्रयासों से आज हम स्वतन्त्र देश में जीवनयापन कर रहे हैं।[३] क्योंकि आपकी सम्पूर्ण आयु इस्लाम की सेवा, भारतीय स्वतन्त्रता तथा ,साम्प्रदायिक एकता के प्रयासों में व्यतीत हुई।[४]

1. वह (मुहम्मद अली) वतन की कामिल आज़ादी के लिए हमेशा जिद व जेहद करते रहे और अपनी तमाम ज़िन्दगी इसी मक़सद को हासिल करने में गुजार दी।
   - उन- मौलाना मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी,
   डॉ. शर्फुद्दीन 'साहिल' जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं. १
   मुदीर - जियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. ८२,
   जंगे आज़ादी सफ़े अव्वल का शह सवार बनकर उन्होंने ईसार व कुर्बानी की जो मिसाल क़ायम की है उसका नेमुल बदल तारीखें हिन्द में तलाश करना दुश्वार से दुश्वारतर है।
   - उन- शमशीर बरहना मौलाना मुहम्मद अली जौहर,
   - सै. नज़रबर्नी स्वीनियर पृ. ५४,
2. आजादी की जिस मन्जिल तक हम सन् १९४७ ई. में पहुंचे थे उसके सफर की बहुत सी दुश्वारियां तै करने में मुहम्मद अली का ही हाथ था अज़ीम हाथ।
   - मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात
   - सै. नज़रबर्नी पृ. १६५,
   - जिस जवांमर्दी से उन्होंने मुल्क और कौम की ख़िदमत की वह अदीमुल मिसाल है।
   - मौलाना मुहम्मद अलीः ज़ाती डायरी के चन्द वर्कः मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी पृ. ३०६,
3. इस हक़ीकत को फरामोश नहीं किया जा सकता कि जंगे आज़ादी के परवानों में मौलाना मुहम्मद अली जौहर और उनके शाना व शाना काम करने वाले रहनुमाओं का ही सदका है कि आज हम आज़ादी की फ़िज़ा में साँस ले रहे हैं।
   उन- क़ाफ़िलये हिन्द के सालारे आज़म मुहम्मद अली जौहर-
   इश्तेयाक़ निज़ामी न्यूज एडीटर क़ौमी जंग, रामपुर स्वीनियर १९८१, पृ. १०२,
4. उन्होंने (मु. अली) आज़ादी की लड़ाई लड़ते लड़ते मैदाने जंग ही में अपनी जान दे दी और पूरी ज़िन्दगी एक बहादुर सिपाही की तरह अंग्रेजों से मुकबिला करते रहे।
   - उन- मौलाना मुहम्मद अली की सियासी जिन्दगी, डॉ. शर्फुद्दीन 'साहिल' जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नं. १ मुदीर - जियाउल हसन फ़ारुख़ी, पृ. ८२,

दिसम्बर १९३० ई, में ब्रिटिश सरकार ने लन्दन में भारतीय समस्याओं को सुलझाने के उद्देश्य से एक गोलमेज सभा का आयोजन किया गया और उसमें मौलाना मुहम्मद अली को भी सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया गया।[१] उस समय भारत में सविनय अवज्ञा आन्दोलन पूर्ण रूप से सक्रिय था और बहुत से भारतीयों को ब्रिटिश सरकार ने कारागारों में बन्द कर रखा था। इसीलिए कांग्रेस से मौलाना मुहम्मद अली से कान्फ्रेन्स में (लंदन) सम्मिलित न होने का अनुरोध किया गया।[२] किन्तु देश एवं जाति के हितों को देखते हुए आप भीषण सग्ण अवस्था में होते हुए भी सन् १९३० ई. में गोलमेज कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होने के लिए लन्दन गये।[३] जिससे वह कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होकर अपने देश

1. दिसम्बर १९३० ई. में हकूमत बर्तानिया ने एक गोलमेज कान्फ्रेन्स का ऐलान किया उसमें मौलाना को भी दावत दी गयी।- उन- यादें - मुहम्मद अली जौहर की - रज़ा जमानी बेगम, राजमाता आफ रामपुर, स्वीफ्यर, १९८१, पृ. ४८,
2. Two year later in १९३० when large number of our people were in prison and the civil disobedience movement was in full swing Mohamed ignored the Congress decision, and attended the Round Table conference.
   - Jawahar Lal Nehru, An-Autobiography, p. 120,
3. १९३० ई. की राउन्ड टेबिल कान्फ्रेन्स में सख़्त बीमारी की हालत में लन्दन गये।
   - मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात,
   -मुर- सै. नज़रबर्नी, पृ. ३१,
   – १९३० ई. में जब वह पहली गोलमेज कान्फ्रेन्स में शरकत करने लन्दन गये।
   – हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में - मु. सै. आबिदर हुसेन, पृ. १३४,
   – मौलाना साहब १९३० में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने इंग्लैण्ड गये।
   — रामपुर का इतिहास - श्री देवेन्द्रनाथ, जिला सूचना अधिकारी, रामपुर,
   मुहम्मद अली जब हिन्दोस्तान से रखते सफ़र बांधकर राउन्ड टेबिल कान्फ्रेन्स में शरकत के लिए बम्बई पहुँचे तो बज़ाहिर वह ख़त्मशुदा थे। ज़िबियातीस ने मग़्ज़े उस्तोखुह तक को खा लिया था। आँखें भी जवाब दे चुकी थी।
   - मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात सै. नज़रबर्नी पृ. ४७,
   — Maulana left India again in 1930 for participation in the Round table conference.
   .. My life a fragement by Mohd,. Ali.
   Edt. by Afzal Iqbal, p. 150,

व धर्म की सेवा कर सके।[१]

अपनी प्रिय मातृभूमि को अंतिम प्रणाम करते हुए उन्होंने कहा कि वह उस पवित्र भूमि पर तब तक कदम नहीं रखेंगे जब तक कि वह इसे पूर्ण स्वतन्त्र नहीं देखेंगे। और उनकी यह भविष्यवाणी सिद्ध भी हुई।[२] जब आपके शुभचिन्तकों ने आपको बीमारी की स्थिति में लन्दन न जाने को कहा तब आपने शुभचिन्तकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि - मैं जीवन भर निरन्तर कर्म करने के लिए ही जीवित रहा हूँ और अन्त समय में अपने स्वास्थ्य के कारण यदि मैं कर्म की अवहेलना करता हूँ तो मेरा यह कार्य कायरों और पौरुषहीनों जैसा ही होगा।[३] गोलमेज सभा के लिए प्रस्थान करते समय दृश्य बड़ा हृदय विदारक था। जिस समय आपको स्ट्रेचर (बीमार डोली) पर लिटाकर बम्बई बन्दरगाह से वायसराय आफ इन्डिया जहाज पर चढ़ाया गया तो समस्त उपस्थित लोगों

---

1. मौलाना मुहम्मद अली मौत की गोद में इंग्लिस्तान तशरीफ़ लाये ताकि गोलमेज कान्फ्रेन्स में शरीक होकर अपने देश और क़ौम की बेहतरीन ख़िदमत अन्जाम दें।

   – हयाते जौहर - मुर. इशरत रामपुरी, पृ. १२२,

2. 'When saying Goodbye to his Cherished mother land he declared that he would never set foot on its sacred soil again until he saw it completely free. How true alas did there prophetic words prove.'

   - Maulana Mohamed Ali By. Said Mohamed Khan, page 16.

3. मुहम्मद अली ने कहा कि मैं अपनी सारी ज़िन्दगी काम के लिए ज़िन्दा रहा और इस वक़्त अपने आराम व सेहत की ख़ातिर काम से मुह मोड़ लेना ऐसा फ़ेले मुजरिमाना होगा जो सिर्फ़ नामर्दों और बुजदिलों के लिए मौजू है।

   - निगारिशाते मुहम्मद अली - मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७८,

   – मुहम्मद अली ने अपने दोस्तों और तिब्बी नशीरकारों की तमवीह का सिर्फ़ यह जवाब दिया कि एक सिपाही का फ़र्ज़ है कि जब उसका मज़हब व मुल्क खतरे में हो तो अपनी जान जोखों में डालकर अपने फ़र्ज़ मनसदी को पूरा करें।

   - उन- अर्ज़ेहाल - मौलाना शौकत अली, निगारिशाते मुहम्मद अली, पृ. २७७,

की आँखों में आँसू छलक आये -मानो जीवित शव जा रहा हो।[१]

गोलमेज सभा में उनके द्वारा दिया गया भाषण स्वर्ण अक्षरों में अंकित करने योग्य हैं।[२] आपने सभा में निडरतापूर्वक कहा कि मैं स्वतन्त्रता का तत्व हाथ में लेकर ही स्वदेश वापस जाना चाहता हूँ। यदि आप मुझे भारत में स्वतन्त्रता नहीं देंगे तो आपको मुझे अपनी समाधि के लिए अपने स्वतन्त्र देश (इंग्लैण्ड) में स्थान देना होगा।[३] और अपने भाषण के अन्त में आपने अंग्रेजों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूँ। और मुझे आशा है कि आप मुझसे

---

1. मुहम्मद अली की रवानगी (गोलमेज कान्फ्रेन्स) का नज़ारा बड़ा रिक़्क़त अंगेज था। जिस वक़्त आपको स्ट्रेचर पर लिटाकर साहिले बम्बई से 'वायसराय आफ इन्डिया' जहाज पर सवार कराया गया उस वक्त तमाम हाज़रीन की आँखों में आँसू रवाँ थे। गोया ज़िन्दा जनाज़ा जा रहा है।
   - सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. १५०,
   – सेहत की ख़राबी के बावजूद गोलमेज कान्फ्रेन्स में जाने के लिए बेताव थे। वह बम्बई जहाज पर स्ट्रेचर पर लिटा कर सवार किये गये।
   - मौ. मुहम्मद अली की याद में - मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ.२१८,
2. राउण्ड टेबिल कान्फ्रेन्स में उनकी आख़री तक़रीर हिन्दोस्तान की जंगे आज़ादी की तारीख़ में ज़र्री हरुफ़ में लिखी जायेगी।
   -मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामत - मुर - सै. नज़रबर्नी, पृ. ३१,
3. मौलाना ने — इजलास में (गोलमेज कान्फ्रेन्स) जो तक़रीर की वो. ज़ुरअत बेबाकी और ज़ोरे बयान का नादिर नमुना है। उसके यह चन्द जुमले मौलाना के सच्चे जज़बात को बखूबी ज़ाहिर करता है 'आज जिस मकसद के लिए मैं यहाँ आया हूँ वो यही है कि मैं अपने मुल्क को उस हालत में वापस जाऊँ कि जब आज़ादी का परवाना मेरे हाथ में हो।' 'मैं एक गुलाम मुल्क को वापस नहीं जाऊँगा मैं एक ग़ैर मुल्क में जब तक वो आजाद है मरने को तरजीह दूँगा और अगर आप मुझे हिन्दोस्तान की आज़ादी नहीं देंगे तो फिर आपको यहाँ मुझे कब्र के लिए जगह देनी पड़ेगी।'
   - यादें मुहम्मद अली जौहर की रफ़्त जमानी बेगम राजमाता ऑफ रामपुर, स्वीनियर १९८१, पृ. ४८,
   .. 'I want to go back to my country,' he said, 'if I can go back with the substance of freedom in my hand, and if you do not give us freedom in India, you will have to give me a grave here.'
   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. xviii.

तब तक पुनः बोलने के लिए नहीं कहेंगे जब तक कि आप यह घोषणा न कर दें कि भारत भी उतना ही स्वतन्त्र है जितना इंग्लैण्ड।[१] मौलाना के इस अविस्मरणीय भाषण के पश्चात् उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता गया और फिर न संभल सका।[२] क्योंकि गोलमेज कान्फ्रेन्स के कार्य ने उन्हें पूर्ण रूप से तोड़ दिया था।[३]

जिन दिनों मौलाना मुहम्मद अली लन्दन गोलमेज सभा में सम्मिलित होने के लिए गये हुए थे उन्हीं दिनों वहां आपकी सबसे छोटी पुत्री गुलनार बानो एवं उनके पति श्री शुऐव कुरेशी भी लन्दन में थे। २१ दिसम्बर १९३० ई. को मौलाना मुहम्मद अली ने लन्दन में अपनी पुत्री गुलनार बानो का जन्म दिवस मनाने का निश्चय किया। जबकि इससे पूर्व आपने किसी सन्तान का जन्म दिवस नहीं मनाया था। इसीलिए जब आपके शुभचिन्तकों ने आपसे यह उत्सव न मनाने का आग्रह किया तब मौलाना मुहम्मद अली ने उनसे कहा कि यह मेरे अन्तिम प्रस्थान का समय है, जन्म दिवस मनाने से बच्ची प्रसन्न हो जायेगी। अतः मुझे यह उत्सव मनाने से न रोकिये। और मौलाना मुहम्मद अली ने बड़ी धूमधाम से लन्दन स्थित भारतीय शफ़ीह होटल द्वारा निर्मित व्यंजनों से अपने

---

1. 'I now take my seat and I hope I shall not be called upon to speak again in the plenery conference until you announce Mr. Chairman that India is as free as England.'
- Maulana Mohamed Ali, Birth Century celeberation Souvenir, Semi nar, ३०th and ३१st Dec. १९७८, Hyderabad-४
An Article on Maulana Mohd. Ali, by Fareed Mirza.

2. गोलमेज कान्फ्रेन्स की तक़रीर के बाद से मुहम्मद अली की हालत जो गिरी तो फिर नहीं संभली।

– सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १५३,

3. He already, was a failing health the strain in connection with Round table work broke him completely.

- Maulana Mohamed Ali. By. Said Mohamed Khan, B.A. Aligarh, page. 16.

मित्रों को जन्म दिवस पर प्रीति भोज दिया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" जातिवादी या सम्प्रदायवादी नहीं थे। वह केवल अधिकारवादी थे। वह चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान एक हों और पूरे सम्मान तथा विनम्रता के साथ एक दूसरे को उनके अधिकार दें। मृत्युशैया पर होने पर भी आपने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए एक योजना तैयार की जो कि उनके जीवन के अन्तिम शब्द थे। मृत्यु की गोद में लेटे हुंए मौलाना इस योजना को लिखवाते रहे।[२] इसी मध्य आपका स्वास्थ्य अत्यन्त ही शोचनीय हो गया। तब विवश होकर डॉ. इनकुलसारिया ने डॉ. राइन्ज़ को बुलवाया। चिकित्सकों ने परीक्षा करने के उपरान्त कहा कि मष्तिष्क की रक्त वाहिकाएँ फट गयी है - जीवन की कोई आशा नहीं है। रात्रि ११ बजे तक मौलाना सबको

---

1. ३१ दिसम्बर (१९३०) को गुलनार बानो (सबसे छोटी पुत्री) जो उन दिनों शुऐव कुरेशी (पति) के साथ लन्दन में थी कि सालगिरह के मौके पर मुहम्मद अली ने बहुत से अहबाब को हिन्दोस्तानी शफ़ीह होटल के तैयार किये गये खाने की दावत की। आज तक कभी किसी औलाद की सालगिरह नहीं मनाई थी। जब मना किया तो कहा कि - 'मत रोको मेरा चल चलाव का वक़्त है, वह बच्ची खुश हो जायेगी।'
   - मु. अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क, मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा दोयम, पृ. २८,
   – ३१ दिसम्बर १९३० को गुलनार बानो की सालगिरह को हिन्दोस्तानी शफीह होटल के तैयार किये हुए खाने की दावत दी। आज तक कभी किसी औलाद की सालगिरह नहीं मनायी थी। जब मैंने (शौकत अली) मना किया तो कहा कि 'मत रोको चल चलाव का वक़्त है वह बच्ची खुश हो जायेगी।' मौ. मु. अली - शख्सीयत और खिदामत - मुर- सै. नजरबर्नी पृ. ३०२,
2. मुहम्मद अली न क़ौम परस्त था न फ़िरका परस्त वह सिर्फ़ हक़परस्त था। वह चाहता था कि हिन्दू मुसलमानों के हक़ पर डाका न डालें और मुसलमान हिन्दुओं का हक़ न ग़स्ब कर सकें। इसलिए उसने अलालत और बीमारी के बावजूद ज़हनी और दिमाग़ी उलझनों के बावजूद बिस्तरे अलालत पर पड़े पड़े एक स्कीम तैयार की जो इन्तेख़ाब के मुआमिले में हर्फ़े आख़िर कहा जा सकता था। और आह! कि यही उसकी ज़िन्दगी का हर्फ़े आख़िर साबित हुआ। कमजोर दिमाग इस बोझ को बरदाश्त न कर सका। वह बिस्तरे अलालत पर लेटे-लेटे यह स्कीम डिटेक्ट कराता रहा।
   – निगारिशाते - मुहम्मद अली, मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. २७६,

पहचानते रहे। २ बजे से अचेत हो गये और अगले दिन साढ़े नौ बजे के लगभग उनकी महान् आत्मा शून्य में विलीन हो गयी।[१]

लन्दन के हाइडपार्क होटल के कमरे में, जिसमें आपकी मृत्यु हुई मृत्यु के समय पत्नी, नर्स एवं अब्दुल रहमान सिद्दीक़ी साहब थे। मृत्यु के पश्चात् उन लोगों के बुलाने पर पुत्री गुलनार बानो एवं अन्य वहाँ पहुँचे। अब्दुल माजिद दरियाबादी मौलाना की मृत्यु के १५ मिनट बाद कमरे में पहुँचे।[२] मौलाना मुहम्मद अली के ज्येष्ठ भ्राता मौलाना शौकत अली साहब उन दिनों एक आवश्यक कार्य से आयरलैण्ड गये हुए थे। वह मौलाना की मृत्यु के लगभग १५ मिनट के उपरान्त ही कमरे में पहुँच सके।[३]

---

1. डाक्टर बुलाये गये उन्होने कहा कि दिमाग में खून की रगें फट गयी हैं और अब कोई उम्मीद नहीं ११ बजे शब तक को पहचानते रहे। फिर २ बजे रात से बिलकुल ग़फ़लततारी हो गयी और दूसरे दिन साढ़े नौ बजे दिन को निहायत शुकून से अपने हक़ीक़ी मौला से जा मिले।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में - मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.२६१,
   – डा. राइल्ज़ को डा. इनकुलसरिया ने बुलाया और उन्होंने कहा कि दिमाग में खून की रगें फट गयी है और अब कोई उम्मीद नहीं है। —— साढ़े नौ बजे दिन को निहायत शुकून की हालत में दुनिया से कूँच कर गये॥
   – मुहम्मद अली, ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़- अब्दुल माजिद दरियाबादी हिस्सा दोयम, पृ. ३०२, ३०३,
2. His wife (wife of Maulana Mohd. Ali) was present at his death bed in London.
   My life a Fragement by Mohd. Ali.
   Etd. By Afzal Iqbal, page. 150.
   - अब्दुर्र रहमान सिद्दीकी सिर्फ अलावा नर्स के कमरे में थे उन्होंने सबको पुकारा और, और लोग आ भी गये। मैं (अब्दुल माजिद दरिया बादी) इन्तेक़ाल के १५ मिनट बाद पहुंचा। और गुलनार बानो थोड़ी देर क़ब्ल।
   – मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़,
   मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३०३,
3. मौलाना शौकत अली आयर लैण्ड चले गये थे। लन्दन वापस आये तो वफात के १५ मिनट के बाद कमरे में पहुंचे।
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में,
   -मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६१
   – शौकत साहब क दोस्त से मिलने आयरलैण्ड तशरीफ़ ले गये थे।
   - सीरते मुहम्मद अली - मुर- रईस अहमद जाफरी, पृ. १५३,

मौलाना मुहम्मद अली के गोलमेज कान्फ्रेन्स में कहे गये यह शब्द कि - मैं स्वतन्त्रता का तत्व हाथ में लेकर ही अपने देश वापस जाना चाहता हूं। यदि आप मुझे भारत में स्वतन्त्रता नहीं देंगे तो आपको मुझे यहीं समाधि देनी होगी, निःसार नहीं थे। ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतन्त्रता नहीं दी। परन्तु मुहम्मद अली ने एक स्वतन्त्र देश में समाधि जीत ली।[१] और भारत के इस महान् नेता का देहान्त हाइडपार्क होटल लन्दन में हुआ था।[२] वह अपने सच्चे त्याग के अमर उदाहरण छोड़ कर देश की स्वतन्त्रता पर बलिदान हुए। मृत्यु उसी की सार्थक है जिसका शोक संसार भर को हो। वैसे तो संसार में सभी का जन्म मरने के लिए

---

1. ख़ुदा ने इस मुजाहिदे आज़म के अल्फ़ाज़ की लाज रख ली और गुलाम हिन्दोस्तान में वापस आने के बजाय वहीं लन्दन में अपनी जान, जान आफ़री के सिपुर्द कर दी।

   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ
   मुर- अब्दुल लतीफ आज़मी, पृ. ८६,

   - बर्तानवी सल्तनत के पायाये तख़्त लन्दन में क़ाफ़िलये हिन्द के सालारे आज़म मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" ने वफात पायी। आज़ादिये हिन्दोस्तान की शमा पर परवानावार जान देने वाले अज़ीम मुजाहिद के जसदे अतहर को ख़ुद जौहर की वसीयत के मुताबिक़ गुलाम हिन्दोस्तान में नहीं लाया गया।

   - उन - काफ़िलये हिन्द के सालारे आज़म - मुहम्मद अली जौहर
   - इश्तेयाक़ निज़ामी न्यूज एडीटर कौमी जंग, रामपुर, पृ. १००

   - What he uttered was no empty phrase. The British Government did not give freedom to India, but Mohamed Ali won a grave in a free country.

   Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. xviii.

2. गोलमेज कान्फ्रेन्स के दौरान ही में लन्दन हाइड पार्क होटल में चन्द रोज जिन्दगी और मौत की कशमकश में मुबतिला रह कर मौलाना दुनिया से कूच कर गये।

   - मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, सै. नज़रबर्नी, पृ. ७८,

   – दिमाग की रगें फट गयी और तदब्बुर व तफ़क्कुर का वह सर चश्मा हमेशा के लिए ख़ुश्क हो गया। - निगारिशाते -म . अली मुर- रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. २७६,

ही होता है।[१]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर की मृत्यु का समाचार ज्ञात होने पर लन्दन निवासी सभी परिचित हिन्दू मुसलमान मौलाना के अन्तिम दर्शन के लिए आने लगे। मौलाना का शव एक सफेद चादर से ढका हुआ था। चादर से हटाकर देखने पर यह प्रतीत होता था कि जैसे मौलाना आराम से गहन निद्रा में सो रहे है। आपके मुखमण्डल पर लेशमात्र भी दुःख के चिह्न प्रकट नहीं होते थे।[२] आपके अन्तिम दर्शनार्थ गोलमेज कान्फ्रेन्स के सदस्यगण भी आये।

हाईड पार्क होटल (लन्दन) के नियमानुसार शव को होटल से रात्रि १२ बजे के उपरान्त ही ले जाया जा सकता था। अतः मौलाना का शव हाइड पार्क होटल से लिफ्ट द्वारा रात्रि १२ बजे के उपरान्त ही लाया गया। तत्पश्चात् आपके मृतक शरीर को मोटर द्वारा लन्दन में एक अन्य गृह में रखा गया तथा आपके मृतक शरीर में शव की सुरक्षा हेतु एक इन्जेक्शन लगाया गया, ताकि आपका मृतक शरीर अन्तिम संस्कार तक सुरक्षित रह सके।

मौलाना मुहम्मद अली के ज़नाज़े की नमाज़ का समय ५ जनवरी सन् १९३१ ई. सायंकाल ६ बजे 'पेडगटन टोल हाल' नामक स्थल पर निश्चित किया गया। जहाँ पर ४००-५०० व्यक्तियों के लिए पर्याप्त

---

1. हिन्दोस्तान का यह कायदे आज़म अपने प्यारे वतन हिन्दोस्तान से सात समुन्दर पार ग़ैर मुल्क में – हाइड पार्क होटल (लन्दन) में जां बहक तस्लीम हुआ। और अपनी सच्ची कुर्बानी, हक़ीकी ईसार की हमेशा रहने वाली मिसालें छोड़ कर वतन की आज़ादी पर कुर्बान हुआ। उस्ताद महमूद खां का शेर वफ़ात पर -

मौत उसकी है जमाना करे जिसका अफ़सोस
यूं तो दुनिया में सभी आये हैं मरने के लिए॥

- हयाते जौहर, मुर- इशरत रहमानीरामपुरी, पृ. १२२,

2. लन्दन के तक़रीबन सब हिन्दू और मुसलमान आने वाले आते थे। और ज़्यारत करके चले जाते थे। गोलमेज़ के सब अरकान बारी बारी आते थे। सफेद चादर चेहरे पर पड़ी थी। जब हटाकर मुँह खोलकर मैं (शौकत अली) देखता दिखाता था तो बस यह मालूम होता था कि कोई शख़्स आराम से सो रहा है। आँख या चेहरे पर तक़लीफ़ का ज़र्रा बराबार भी पता न था।

– मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्दवर्क - मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३०४,

स्थान था। ज़नाजे की नमाज में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति सायंकाल ५ बजे से ही पेडगटनहोटल हाल नामक स्थान पर एकत्रित होने लगे। और जब मौलाना के शव को मोटर द्वार नमाज स्थल पर लाया गया तब हिजहाइनेस शाहबली खाँ अफगानिस्तान के राजदूत अफ़ीफ़ी पाशा, मिश्र के राजदूत नूरी इसफन्दियारी साहब, इरान के राजदूत शेख़ हाफ़िज व हिवा साहब तथा हिजाज के राजदूत और मुसलमान एवं गोलमेज कान्फ्रेन्स के सदस्यों तथा अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने मौलाना मुहम्मद अली के शव को कन्धा दिया। तत्पश्चात् जनाज़े की नमाज़ का कार्यक्रम पूर्ण किया गया।[१]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर की मृत्यु दिनांक के बारे में विद्वानों में मतभेद है। 'सलेक्ट राइटिंग एण्ड स्पीचिस आफ मौलाना मुहम्मद अली वाल्यूम सैकिण्ड' में श्री अफ़जल इक़बाल साहब ने आपकी मृत्यु दिनांक ३ जनवरी, सन् १९३१ ई. माना है।[२] जबकि अन्य समकालीन विद्वानों

---

1. यहाँ के होटलों से (लन्दन) मय्यत सिर्फ रात के बारह बजे के बाद ही बाहर निकाली जाती है।— रात के १२ बजे मोटर करके — अहतेयात से मय्यत को उठाकर लिफ्ट से नीचे लाये और — नये मकान में रखा जहाँ रात ही को दवा इंजेक्शन देकर नाश ऐसा कर दिया कि १० बरस तक भी ख़राब न हो। — नमाज़ जनाज़ा शाम को ६ बजे 'पेडगटन टोन हाल' में होगी जहाँ ४०० या ५०० आदमियों की गुन्जाइश थी आलीशान जगह थी तिल रखने की जगह न थी। ५ बजे से लोग आना शुरू हो गये।———
जब जनाजे की मोटर आयी तो हिजहाइनेस शाहबली खां शफ़ीरे अफ़गानिस्तान, अफ़ीफ़ी पाशा सफ़ीरे मिश्र नूरी इस फन्दियारी साहब सफीरे इरान, शेख़ हाफ़िजवहबा साहब शफीरे हिजज़ा और मुसलमान अरकाने गोलमेज कान्फ्रेन्स और दीगर हाज़िरीन ने कन्धा दिया। बाहर अंग्रेजों का हजूम था और अन्दर भी तमाम जमाअतों के अंग्रेज नुमाइन्दे थे।- - - ५ जनवरी (१९३१) को नमाज़े जनाज़ा हो गयी।

मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी पृ. ३०४, ३०५,

2. He died in London on January ३, १९३१ exactly a month and a half after he had uttered the fateful words.

. Select writings & Speeches of Mohamed Ali, Vol II, Edited by Afzal Iqbal, page no. xviii,

ने आपकी मृत्यु दिनांक ४ जनवरी सन् १९३१ ई. माना जाता है।[१] इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने आपकी मृत्यु ५ जनवरी सन् १९३१ ई. माना है।[२]

---

1. With in one and half months after this speech he died on 4th January 1931 in London ... Maulana Mohamed Ali Jauhar. By Fareed Mirza, Birth Cen. Cel. Hyd 4 Dec. 1978.
- ४ जनवरी १९३१ ई. को मुसलमानों का यह अज़ीम रहनुमा इस दुनिया से कूंच कर गया।
उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल,
मुस- साहिबजादा तजम्मुल अली खां, पृ. ११३,
-४ जनवरी १९३१ की सुबह को लन्दन में इनका इन्तेकाल हुआ।
- मौ. मु. अली एक मुतालेआ-मुर०- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ५६.
— मौलाना साहब की मृत्यु इंग्लैण्ड में शिरावरोध के कारण ४ जनवरी १९३१ . को हो गयी।
– रामपुर का इतिहास - श्रीदेवेन्द्रनाथ, जिला सूचना अधिकारी, रामपुर। पृ. ४,
– ४ जनवरी सन् १९३१ ई. को दिमाग की रगें फट गयी और फिर्के व तद्दब्बुर का सर हमेशा हमेशा के लिए खुश्क हो गया।
– मौलाना मुहम्मद अली - शख़्सीयत और ख़िदामात
-मुर- सै. नज़रबर्नी, पृ. ३०,
- ४ जनवरी सन् १९३१ ई. को यह पैगम्बरे सियासत – हाइडपार्क होटल लन्दन में साढ़े ९ बजे हमसे हमेशा हमेशा के लिए जुदा हो गया।
– हयाते जौहर, मुर. सुआलेउद्दीन खां,
नश्तर बलरामी, पृ. ९१,
- ४ जनवरी सन् १९३१ ई. — को हाइड पार्क होटल (लन्दन) में जा वहक तस्लीम हुआ और अपनी सच्ची कुर्बानी हकीक़ी ईसार की हमेशा रहने वाली मिसवलें छोड़कर वतन की आज़ादी पर कुर्बान हो गया।
– हयाते जौहर- मुरत. इशरत रामपुरी, पृ. १२२
2. ४ जनवरी १९३१ को यह हिन्दू मुस्लिम समझौते के लिए एक नयी स्कीम तैयार कर रहे थे कि आधीरात से ज़्यादा इसी काम में बीती, स्कीम का मुसब्बिदा तैयार हो चुका था, दुबारा देखा जा रहा था कि हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद नामुमकिन — नामुमकिन के ख़्याल से उनका आत्मा ५ जनवरी साढ़े नौ बजे १९३१, उनके शरीर से रूठकर सदा के लिए दूर हो गयी।
– मेरी कब्र स्वतन्त्र देश में होनी चाहिए, मु. अली
- द्वारा ज़हीर सिद्दीकी, 'रजत' हिन्दी त्रैमासिक, पृ. २३,
जनवरी ५वीं तारीख और शाबान सन् तेरह सौ पचास हिजरी की १५ वीं शब में ऐन उस वक्त जब रूहे जमीन के मुसलमान अपने परवरदिगार से रिज्क़ की, सेहत की, इक़बाल की, ज़िन्दगी की, मग़फ़िरत की, नेमते मांग रहे थे, मसीयते इलाही ने यह नेमते उज़मा दुनियाये इस्लाम से वापस ली।
– मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़ - मुर- अब्दुल माजिद दरियाबादी, हिस्सा दोयम, पृ. २२०-२२१,

उक्त विद्वानों के विचारों का अवलोकन करने पर एवं मृत्यु के समय उपस्थित स्वयं उनकी धर्मपत्नी के विचारानुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि मौलाना मुहम्मद अली जौहर की मृत्यु दिनांक ४ जनवरी सन् १९३१ ई. ही है, जैसा कि उनकी धर्मपत्नी का भी मत है।[१] और प्रस्तुत अनुसंधानकर्ता का भी मत उनके साथ है।

भारत में जब मौलाना मुहम्मद अली के निधन का शोक समाचार पहुँचा तब सम्पूर्ण भारत में निस्तब्धता छा गयी। भारत भर में उनका शोक परिव्याप्त हो गया। शोक सभाएँ आयोजित की गयी, भाषण दिये गये और अनेक कार्यों का उल्लेख किया। हिन्दू मुसलमान दोनों ही इस शोक में सम्मिलित थे।[२] मौलाना मुहम्मद अली के निधन के बाद भारत में उनके विषय में अनेक पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित की गयीं, जिनमें मौलाना साहब का त्याग वर्णित किया गया। इनमें से 'इन्कलाब', 'मदीना' तथा 'ख़िलाफत' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[३] उनकी मृत्यु की सूचना से

---

1. मौलाना का इन्तेकाल ४ जनवरी १९३१ ई. (१४ शाबान सन् १३३९ हिजरी) की सुबह को बक़ौल बेगम मुहम्मद अली सवा नौ बजे हुआ।
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ,
   मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. १७२,
2. हिन्दोस्तान में जब यह ख़बर पहुंची तो सारे हिन्दोस्तान पर एक सन्नाटा छा गया और गोया उस ज़माने में तहरीके सिविल व मुतबियत जारी थी। जिसके विरुद्ध मुहम्मद अली सख़्त मुख़ालिफ़ थे, मगर फिर भी हिन्दोस्तान भर में उनका ज़बरदस्त मातम किया गया जलूस निकाले गये तक़रीरें की गई उनके ख़िदामात सराहे गये और उनके कारनामे बयान किये गये और उस इज़हारे ग़म व अलम में हिन्दू मुसलमान, दोनों बराबर के शरीक थे।
   - सीरते मुहम्मद अली -मुर- रईस अहमद ज़ाफरी, पृ. १६२,
   - मातम (मौ. मुहम्मद अली) जिस जोर शोर से तन्हा लखनऊ या देहली कलकत्ता या बम्बई में सारे हिन्दोस्तान में हुआ, सारे आलमे इस्लाम में हुआ उसकी नज़ीर तारीख़े इस्लाम में तो आसानी से न मिलेगी।
   मुहम्मद अलीः ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ मुरः अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २२१,
3. मुहम्मद अली की वफ़ात के बाद मुल्क के अक्सर अख़बारात व रसाइल ने रईसुल अहरार नम्बर निकाले और उनमें मुहम्मद अली के शबाने व कवाइफ़ उनके ख़िदामात और उनकी ईसार कुर्बानी पर जबरदस्त मिक़ालात लिखे उनमें ख़ासतौर पर क़ाबिले ज़िक्र 'इन्केलाब', 'मदीना' और 'खिलाफत' के नम्बर कहे जा सकते हैं।
   – सीरते मुहम्मद अली, मुर - सईल अहमद जाफ़री, पृ० १६६.

केवल भारतवर्ष को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की मानवता को गहरा आघात पहुंचा।[१]

ईसाई जगत पर भी मौलाना मुहम्मद अली की मृत्यु पर गहरा शोक छा गया। ईसाइयों के समाचार पत्र 'अलमूकतम' ने उन्हें संसार भर के मुसलमानों का शुभचिन्तक और अत्युच्च प्रतिष्ठा का स्वामी कहा।[२] डेली एक्सप्रेस के अनुसार मौलाना साहब मृत्यु के बाहुपाश में इंग्लैण्ड पधारे। उनको ज्ञात था कि मेरा अन्तिम समय आसन्न है। ऐसी शारीरिक दशा में भी उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम रात्रि भी प्रतिनिधियों को अपनी अन्तिम विदाई का संदेश लिखवाने में व्यतीत की।[३]

टाइम्स आफ इंडिया के संपादक से उनकी मैत्री सोलह वर्षों से चली आ रही थी। उनके अनुसार वह मृत्यु के आलिंगन में होने पर भी गोल मेज सभा में अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ भाषण देने के लिए जीवित रहे। स्व. मौलाना साहब ने उनसे कहा था कि वह शांति और समझौते की

---

1. मौलाना की वफ़ात की खबर बिजली की तरह दम भर में तमाम दुनिया में फैल गई।
   – हयाते जौहर - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२३,
2. ईसाइयों का अखबार अलमुकतम लिखता है - लन्दन से हमें यह जांका खबर पहुंची है कि मौलाई (मेरे आका) मुहम्मद अली का इन्तेकाल हो गया। मौलाई मुहम्मद अली हिन्दोस्तान में मुसलमानों के सबसे बड़े रहनुमा और दुनिया के मुस्लिम रहनुमाओं में एक बलन्द रुतबे के मालिक थे।
   – सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १६७,
3. डेली एक्सप्रेस लिखता है - मौलाना मुहम्मद अली मौत की आग़ोश में इंग्लिस्तान तशरीफ़ लाये ताकि गोलमेज कान्फ्रेन्स को शुमुलियत करके अपने मुल्क व मिल्लत की बेहतरीन ख़िदामात अन्जाम दें। उनको अच्छी तरह मालूम था कि आख़री वक़्त बिल्कुल क़रीब है और उनको बताया गया था कि वह चन्द घण्टों से ज़्यादा ज़िन्दा नहीं रह सकते लेकिन बावजूद इसके रूहानियत के इस जज़्बे के मातेहत को अपने मशारि से मख़सूस है आपने अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी रात भी डेलीगेटों को अपना आखिरी और अलविदाई पैग़ाम लिखवाने में गुजार दी।
   – सीरते मुहम्मद अलीः मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १६७-६८,

सद्भावना से आये थे।[१] लन्दन के डेली एक्सप्रेस के अनुसार मौलाना मुहम्मद अली अपनी प्रिय मातृभूमि की स्वतन्त्रता, प्रसन्नता, शक्ति तथा श्री सम्पन्नता के आकांक्षी थे।[२]

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" की मृत्यु का समाचार ज्ञात होने पर रामपुर, लखनऊ, अजमेर, कलकत्ता, देहली एवं अलीगढ़ आदि स्थानों से मौलाना की अन्त्येष्टि अपने यहां कराने का तार द्वारा सन्देश भेजा। इस संदर्भ में रामपुर का कथन था कि मौलाना मुहम्मद अली की जन्म भूमि रामपुर होने के कारण उनकी अन्त्येष्टि रामपुर में सम्पन्न होनी चाहिए।[३] किन्तु फिलीस्तीन के बड़े मौलवी श्री अमीनुल हुसैनी के अनुरोध पर आपके ज्येष्ठ भ्राता आपके पार्थिव शरीर को अन्त्यष्टि के लिए बेतुल मुक़द्दस ले जाने के लिए सहमत हो गये।[४] जिससे मौलाना की भविष्यवाणी

---

1. टाइम्स आफ इन्डिया का एडीटर लिखता है - 'मरहूम के साथ (मो० अली) मेरी दोस्ती सालहा साल से चली आ रही थी — वह अस्ल में बर लवे मर्ग से और इस हक़ीक़त से ख़ुद भी आगाह थे लेकिन वह कान्फ्रेन्स की एक निहायत तबील और बेहद दिलकश तक़रीर करने तक ज़िन्दा रहे। मरहूम ने मुझसे कहा कि मैं अमन और सुलह के लिए आया हूँ।
   – सीरते मुहम्मद अली, मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १६८,
2. लन्दन के अख़बार डेली एक्सप्रेस का बयान - 'मैं अपने प्यारे वतन की आजादी सरसब्जी, ख़ुशी और अमन चैन का ख़्वाइशमन्द हूं। और इस्लामी दुनिया में मुकम्मल और इत्तेहाद का आरजूमन्द हूं।'
   – हयाते जौहर - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२२,
3. जब ज़ेरे बहस का मसला था कि लाश दफ़न कहाँ की जाय। हिन्दोस्तान के मुख़तलिफ़ शहरों से दावतें पहुंची कि मुहम्मद अली की लाश यहाँ आये। रामपुर ने यह इस्तेक़ाक़ पेश किया कि उसे मुहम्मद अली के वतन होने का. फ़ख़्र हासिल है इसलिये मुहम्मद अली को वहीं सिपुर्दे खाक़ होना चाहिए जहाँ उनका ख़मीर है।-
   - सीरते मुहम्मद अली, मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १५६,
4. मौलाना मुहम्मद अली की वफ़ात की ख़बर हिन्दोस्तान पहुँची तो रामपुर, लखनऊ, अजमेर, कलकत्ता, देहली, अलीगढ़ से तार पहुँचे कि उनकी मय्यत की तदफ़ीन की सआदत उनको मिले। लेकिन फ़िलीस्तीन के मुफ़्तिये आज़म अमीनुल हुसेनी का इसरार बढ़ा कि वह बेतुल मुक़द्दस में दफ़न किये जाएँ तो मौलाना शौकत अली इसके लिए राजी हो गये।
   मौ. मुहम्मद अली की याद में, मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६१,

साकार हो सके।[१]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने जीवन भर खादी ही पहनी थी। उनका शव परिधान भी खादी ही था। यह भी उनकी देश भक्ति का प्रतीक है।[२] आपका शव ५ दिनों तक कफनदोजों के मकान पर रहा और वहाँ से उसे टिलबरी बन्दरगाह ले जाया गया। वहाँ से ३ बजे 'नरकन्डा' नामक जहाज आपके शव को लेकर पवित्र स्थान बेतुल को चल दिया। २१ जनवरी को पोर्ट सईद पहुंचा जहाँ मिश्र के शहजादे ने ताबूत के लिए 'गिलाफ़ेकावा' अर्पित किया।[३] २३ जनवरी सन् १९३१ ई. को मौलाना का शव जेरूशलम पहुंचा।[४] यहाँ कम्युनिस्ट पार्टी ने

---

1. ख़ुद मौलाना मुहम्मद अली ने अपनी क़ाबिले रश्क मौत की पैशीनगोई यह कर की थी–

   है रश्क एक ख़ल्क़ को जौहर की मौत पर।
   यह उसकी देन है जिसे परवरदिगार दे॥

   – मौलाना मुहम्मद अली की याद में, मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६४,

2. ज़िन्दगी भर ख़द्दर पोश रहे। यहाँ तक कि क़फन भी ख़द्दर ही का था।
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुत्तलेआ - मुर - अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८३,
   – मरहूम (मौ. मु. अली) का कफ़न ख़ालिस ख़द्दर का था।
   – सीरते मुहम्मद अली मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १६०,

3. लाश 'नारकन्डा' जहाज से टिलबरी बन्दरगाह से बेतुल मुक़द्दस रवाना की गयी। २१ जनवरी को पोर्ट सईद पहुंची। शहज़ादा मुहम्मद अली ने गिलाफ़े कावा का एक टुकड़ा ताबूत पर रखने के लिए पेश किया।
   - मौ. मुहम्मद अली की याद में - मुर -सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ.२६१,

4. आज० मुहम्मद अली का जनाज़ा पांच दिन कफ़न दोज़ों के मकान आराम करके टिलबरी बन्दरगाह को गया और ३ बजे जहाज नरकन्डा उसको लेकर बेतुल मुकद्दस को रवाना हो गया।
   - मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्दवर्क़, मु- अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३००,३०१,
   २३ जनवरी को यह ताबूत यूरोसलम पहुँचा। तो वहाँ की सारी दुकाने बन्द हो गयी अराबी अख़बारात हमदर्दी ताज़ियत के ब्यानात से भरे थे।
   मौलाना मुहम्मद अली की याद में मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६१,
   - यूरोसलम २३ जनवरी सन् १९३१ ई. अज़ शहीदे मिल्लत मौलाना मुहम्मद अली का ताबूत यहाँ आ पहुँचा।
   – हयाते जौहर, मु. इशरत रामपुरी, पृ. १२३,

मौलाना के अन्तिम संस्कार में बाधा डालने का प्रयास किया जिसमें अरब और यहूदी भी शामिल थे। उनमें से अनेक बन्दी बनाये गये।[१] जब ताबूत पवित्र भूमि बेतुल पहुंचा तो इतना जन समूह एकत्रित हो चुका था कि बड़ी कठिनाई के साथ यान से ताबूत को निकाला जा सका। तीन घंटे में ताबूत हरम शरीफ़ पहुँचा। शुक्रवार की नमाज़ के बाद ज़नाज़े की नमाज पढ़ी गयी। मस्जिद के अन्दर चारों ओर असंख्य स्त्री और पुरुष एकत्रित थे।[२] ताबूत को शख़रा शरीफ के आगे रखकर अनेक प्रसिद्ध मुसलमानों ने अन्तिम भाषण दिये।[३] तत्पश्चात् आपका पार्थिव शरीर बेतुल मुकद्दस की पवित्र भूमि को समर्पित कर दिया।[४]

---

1. यरोशलम २३ जनवरी १९३१ ई. कम्युनिस्ट की जमात ने मौलाना मरहूम के ज़नाज़े पर गड़बड़ करने की साज़िश की थी। उसमें बयान दिया जाता है कि अरब और यहूदी दोनों शामिल थे।बहुत से उनमें से गिरफ़्तार भी किये कर लिये गये।
   – हयाते जौहर - मुर - इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२४,
2. ताबूत कोई ३ घण्टे में हरमशरीफ़ पहुँचा। रास्ते में सड़कों के दोनों तरफ मकानों की खिड़कियाँ और छतें आदमियों से पटी पड़ी थी। मस्जिदें अक़्सा में जनाज़े की नमाज़ अदा की गयी। इस वक्त सब क़ौमों के मुअज़्ज़ेजीन बर्तानवी हकूमत का नुमाइन्दा अमीर अब्दुल्ला और शाह हुसेन के कौन्सल प्रेसीडेन्ट और ग्रीक चर्च के मज़हबी पेशवा मौजूद थे।
   - मौ. मु. अली की याद में - मुर- सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६३,
   – जब ताबूत बेतुल मुकद्दस पहुंचा तो मजमा इस कदर बढ़ गया कि हम (शौकत आदि) बहुत मुश्किल से ताबूत गाड़ी में से निकाल सके। — ताबूत को तीन घंटे में हरम शरीफ (बेतुल मुकद्दस की चार दीवारी)पहुंचा।— बाद नमाज़े जुमा ज़नाज़े की नमाज पढ़ी गयी। मस्जिदे अक़्सा के अन्दर बाहर और सारे सहन में मर्दों और औरतों का बड़ा ज़बरदस्त मजमा था।
   – हयाते जौहर मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२४,
3. मौलाना दुनिया से कूंच कर गये। मुफ़तिये आज़म की दावत पर बैतुल मुकद्दस में मस्जिदे अक़्सा में तदफ़ीन हुए।
   – मौ. मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामत, सै. नज़रबर्नी, पृ. ७८,
   - उनकी (मुहम्मद अली) जिसमें ख़ाकी बेतुल मुक़द्दस (यूरोसलम) में सुपुर्द खाक किया गया।
   - हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में, सै. आबिद हुसेन, पृ. १३४,
   - मुहम्मद अली की तदफ़ीन के लिए बेतुल मुक़द्दस वहसरजनीन इन्तेख़ाब की गयी जहाँ अम्बिआँ अलेहिमउस सलाम आराम फरमा है।
   - उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल, साहिबज़ादा तज्जुमुल अली खां, पृ. ११२,

मौलाना मुहम्मद अली जौहर की भू समाधि मस्ज़िद अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) के बरामदे के खुले सहन में निर्मित की गयी। तथा बरामदे की भित्ति पर आपका नाम, परिचय एवं मृत्यु दिनांक अंकित किया गया।[१]

आज मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" हमारे मध्य नहीं है परन्तु उनकी महान् आत्मा स्वतन्त्र भारत के कण-कण में व्याप्त है। हम उस अमर प्रकाश के दर्शन कर सकते हैं जबकि हमारे पास सच्चे प्रेम को देख सकने वाली दृष्टि हो।[२]

---

1. उनकी कब्र (मौ. मुहम्मद अली) बरामदे में है। खुले सहन में बरामदे की दीवार पर लिखा हुआ है कि यह मुज़ाहिदे आज़म जौहर मरहूम की कब्र है जो —— लन्दन में वफात पा गये और रमज़ान के ५वे जुनये (शुक्रवार) को बेतुल मुक़द्दस में दफ़न हुए।
   – मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात
   मुर -सै. नज़रबर्नी, पृ. ४९,
2. आज मौलाना साहब हमारे बीच नहीं रहे, किन्तु उनकी आत्मा को हम आज़ाद हिन्दोस्तान के जर्रे-जर्रे में देख सकते हैं। बशर्ते कि हम वह आँख रखते हों, जिसमें हुबबे का सुरमा लगा हो।
   – मानवता व देश प्रेम का फरिश्ता,
   डा. राममूर्ति 'रेणु', एम. ए. डी. लिट्.
   मौलाना मुहम्मद अली बर्थ सेन्चुरी, सेलीबरेशन, हैदराबाद, - ४ दिसम्बर, १९७८

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" का जन्म १० दिसम्बर सन् १८७८ ई. को रियासत रामपुर में हुआ था। १० दिसम्बर सन् १९७८ ई. को सम्पूर्ण राष्ट्र में आपकी जन्म शताब्दी मनायी गयी एवं भारत सरकार ने आपकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया। आपकी मृत्यु ४ जनबरी सन् १९३१ ई. को लन्दन में हुई। एवम् आपको बेतुल मुकद्दस में भू समाधि दी गयी। आप केवल मातृभूमि भारत के ही नहीं, अपितु माता वसुन्धरा के सपूत थे तथा विश्वबन्धुत्व की महान भावना से ओतप्रेत थे। आपका निधन विश्वभर की हानि थी। इसीलिए आपके असामयिक निधन पर विश्व के महान व्यक्तियों ने श्रद्धांजलियाँ अर्पित की।

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" के ज्येष्ठ भ्राता शौकत अली साहिब ने दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि मुहम्मद अली मेरा भाई, पुत्र, सरदार, दास, प्रिय सब कुछ था। उसके निधन से मैं एकाकी रह गया, पर ईश्वर पर विश्वास है। वह मानव जाति की सेवा के पवित्र कार्य के लिए अनेक मुहम्मद अली उत्पन्न करेगा।[१] इसके अतिरिक्त आपका कथन था कि मौलाना मुहम्मद अली इस्लाम और भारत के लिए निर्भीकता पूर्वक जीवनपर्यन्त संघर्षरत रहे।[२]

मौलाना शौकत अली के विचारानुसार मौलाना मुहम्मद अली का शव भारत की ओर से अरब वासियों के लिए एक तुच्छ सा पुरस्कार है - उस सेवा का जो अरब जाति सारे संसार में विद्या की ज्योति प्रसारित करने में करती रही है।[३]

---

1. मेरा भाई कहो, बेटा कहो, सरदार कहो, गुलाम कहो, आशिक़ कहो, या माशूक़ मुझसे रुख़सत हो गया और अब मैं अकेला रह गया। बेदस्त व पा हूँ। मगर ख़ुदा पर भरोसा है। वह एक मुहम्मद अली की जगह दीने मुक़द्दस की ख़िदमत के लिए हज़ार मुहम्मद अली पैदा कर देगा।
   मौलाना मुहम्मद अली की याद में - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, पृ. २६१,
2. मेरा भाई (मौ. मु. अली) इस्लाम और हिन्दोस्तान के मफाद की ख़ातिर निडर और अन्थक कोशिशों के साथ हमेशा काम करता और लड़ता रहा।
   -निगारिशाते मुहम्मद अली -मुर - रईस अहमद जाफरी, पृ. २७७,
3. मौलाना शौकत अली ने कहा कि मौलाना मुहम्मद अली की लाश मुसलमान हिन्दोस्तान की तरफ से एक हक़ीर सा इनआम है, उस ख़िदमत का जो अरब क़ौम सारी दुनिया में इल्म की रोशनी फैलाने में करती रही है।
   - हयाते जौहर - मुस- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२६,

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के अनुसार मौलाना मुहम्मद अली एक उच्च विचारों वाले अद्वितीय देशभक्त थे। विश्व भर में आपकी आत्मा का विस्तार था। विश्व शांति आपके जीवन की कल्पना थी। मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" उनके घनिष्ठ मित्र थे। सम्पूर्ण विश्व की सेवा उनका उद्देश्य था। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण होगा।[१]

मौलाना मुहम्मद अली जौहर की मृत्यु सम्पूर्ण मानवजाति की कभी न पूर्ण हो सकने वाली हानि थी। गांधी जी ने संवेदना प्रकट करते हुए कहा उनका निधन ऐसे समय में हुआ जबकि देश को उनकी आवश्यकता थी। उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए भरसक प्रयत्न किया।[२] आपने कृतज्ञता भरे शब्दों में कहा कि मुझे मौलाना मुहम्मद अली की छत के नीचे जितना अच्छा व्यवहार मिला, उतना कहीं और नहीं। मैं यहाँ अत्यधिक प्रेम का अनुभव कर रहा हूँ।[३]

पं. मोतीलाल नेहरू के विचार से मौलाना मुहम्मद अली उनके घनिष्ठ मित्र, पक्के मुसलमान और भारत का एक शक्तिशाली व्यक्तित्व थे।[४]

पं जवाहर लाल नेहरू उनका (मौलाना मुहम्मद अली) एक मुख्य प्रियजन होने में स्वयं का सौभाग्य समझते थे। आपके विचारानुसार

---

1. 'मौलाना एक बुलन्द इरादा और अदीमुन नज़ीर क़ाइद थे, जो सफ़े अव्वल में मसरूफ़े जंग थे। आपकी सर गर्मियां सिर्फ़ मादरे वतन तक महदूद न थी बल्कि आपकी निगाह बसीतर थी। और इत्तेहाद शर्क़ आपकी ज़िन्दगी का ख़्वाब था। मौलाना मेरे ज़ाती दोस्त थे। हाल ही में चन्द उमूर में मुझे मौलाना मुहम्मद अली से इख्तेलाफ हो गया था। लेकिन बिना शुबा और बिला ख़ौफ़े तरदीद कहा जा सकता है कि इन उमूर में जिनमें लोग उनसे मुत्ताफ़िक़ नहीं मौलाना का मक़सद महज़ ख़िदमते ख़ल्क़ था। मौलाना की ज़िन्दगी आने वाली नस्लों के लिए हमेशा एक क़ाबिले तक़लीद मिसाल होगी।
   - हयाते जौहर, मुर - इशरतरहमानी रामपुरी, पृ. १२८.
2. 'मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" की मौत उस वक़्त वाक़े हुई जबकि हमें उनकी जुरूरत थी। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम इत्तेहाद के लिए ज़बरदस्त काम किया है।
   - मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ -मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८४,
3. I have never received warmer or better treatment than under Mohamed Ali's roof..... I am experiencing here the rechest love, Hamdard Jauhar (Monthly), Dec. 1982 and Jan, 1983 page no. (last page)
4. मौलाना मुहम्मद अली मेरे पुराने दोस्त पुख़्ताकार मुसलमान और हिन्दोस्तान की ज़बरदस्त शख़्सीयत थे।
   - हयाते जौहर, - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२९,

मौलाना मुहम्मद अली में असीम प्रेम एवं क्रोध था।[१] आप मौलाना की सच्चाई, ओजस्विता तथा गहन प्रतिभा से आकर्षित थे। मौलाना भारतीय स्वतन्त्रता के आदर्श के प्रति समर्पित थे।[२] आपके अनुसार अली भाईयों से ख़िलाफत आन्दोलन में तथा कांग्रेस की राजनीति में मुख्य भूमिका निभाई तथा अनेक बार कारागार की यातनाएँ सहीं।[३] आपका कथन था कि मौलाना को धर्मान्ध एंव स्वार्थी व्यक्तियों से कोई लगाव न था जो जाति और धर्म का झंडा हाथ में लिए नेता बने फिरते हैं।[४] इसके अतिरिक्त नेहरू जी का कथन कि यदि मौ. मु. अली साहब के भाग्य में भारत का प्रत्यागमन होता तो निश्चय ही वह पुनः स्वतन्त्रता संग्राम में सम्मिलित होते।[५]

भारत की प्रधानमन्त्री दिवंगता श्रीमती इन्दिरा गांधी ने श्री जौहर को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि अली बन्धु स्वतन्त्रता संग्राम के चोटी के नेताओं में से थे। वे सच्चे राष्ट्रवादी थे और भारत की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के अनुसार उन्होंने साम्प्रदायिक सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयास किया। वे एकतापूर्ण प्रयत्नों में विश्वास करते थे और उसी

---

1. मुहम्मद अली की मुहब्बत भी ग़ज़ब की थी और गुस्सा भी ग़ज़ब का और मेरी ख़ुशकिस्मती थी कि मेरा शुमार मुहम्मद अली के महबूबों में था। मुहब्बत वाहमी और हमख़्याली का रिश्ता हम दोनों को जोड़े हुए था।
   - मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - मुर - अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. २५३,
2. I was attached by his (Maulana Mohd. Ali's) earnestness, his over flowing enerty and keen intellegence..... He was devoted to the idea of Indian Independence.
   — Hamdard Jauhar (Monthly) July, 1983, Last page.
3. The Ali brothers played very prominent part in the Khilafat agitation and in Congress politics in the early twenties and suffered prison for it.
   . Discovery of India - Jawahar Lal Nehru, page 302,
4. मौलाना मुहम्मद अली को रिज़वत फसन्दों से कोई निसबत ही न थी जो फ़िरका वाराना मसाइल के अलमबरदार बने घूम रहे हैं।
   – मौलाना मुहम्मद अली एक मुतालेआ, मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ८४,
5. अगर मुक़द्दर में उनका (मुहम्मद अली) हिन्दोस्तान वापस आना होता तो मुझे यक़ीन है कि वह दोबारा शरीके जंग होकर रहते।
   - मौलाना मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़ - हिस्सा दोयम मुर- अब्दुल माज़िद दरियाबादी, पृ. २५८,

के लिए उन्होने कार्य किया। मौलाना मुहम्मद अली एक शक्तिशाली व्यक्तित्व थे तथा प्रभावशाली वक्ता थे। वे स्वतन्त्रता के लिए सर्वप्रथम आवाज उठाने वालों में से एक थे। हम सबके लिए प्रेरणास्रोत थे। वे हमारे परिवार के मित्र थे। मेरे पिता उनके प्रशंसक थे। उनका तथा मौलाना का सहकार्यकर्ता का संबंध था। मैं नन्हीं बालिका थी और जब वह मुझे पकड़कर हवा में उछालते थे तो मैं भयभीत हो जाया करती थी। ऐसे समय में जब इतना अधिक समय एवं शक्ति व्यर्थ की बातों में नष्ट करते हैं, ऐसे व्यक्तियों को स्मरण करना श्रेयस्कर है, जिन्होंने अपना जीवन प्रसन्नता पूर्वक कष्ट सहते हुए हमारे देश के महान् उद्देश्य के लिए बलिदान कर दिया।

भारत के महान् सुपुत्र मुहम्मद अली की स्मृति को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।[१]

भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने १३ नवम्बर सन् १९७८ ई. को एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" की प्रशन्सा में कहा कि महात्मा गांधी और मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" ने हिन्दू मुस्लिम एकता की नींव रखी और ब्रिटिश शासन

---

1. The Ali brotheres were amongst the top-most leaders of our freedom struggle. They were staunch nationalists and in the best India tradition, promoted communal harmony and understanding between different communities. They believed in and worked for a united effort.

   Maulana Mohamed Ali was a powerful personality and a forceful speaker. He was one of the first to speak of Independence. And to us it was a image and inspiring word.

   Like most such men and women in India and else where they were friends of our family. My father had admiration for him and a good working relationship with him. To me, a small thin child in the early twentice, they seemed like veritable giants and I used to be a little afraid Maulana Mohamed Ali would catch me up and awing me high in the air.

   At a time when so much time and energy is being wasted on non-issues, it is good to remember such people who devoted their lives, who cheerfully bore all suffering and sacrifices in the larger cause of our country.

   My homage to the memory of Maulan Mohamed Ali a great son of India.

   Sd. Indira Gandhi.

के विरुद्ध संघर्ष की अवधि में उसे दृढ़ किया। उन्होने मौलाना एवं गांधी जी की समानता को स्मरण करते हुए कहा कि जन सेवा के लिए उन्होने सरकारी सेवाओं का त्याग किया तथा मौलाना मुहम्मद अली एक महान् देश भक्त थे।[१]

सर तेज बहादुर सिप्रु ने मौलाना को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका ३० वर्षों से मौलाना साहब से परिचय था। निः संदेह वह सच्चे देश प्रेमी थे। उनका निधन ऐसे समय में हुआ जबकि भारत को उनकी बहुत आवश्यकता थी।[२] श्री नारायण दत्त तिवारी (वर्तमान मुख्यमन्त्री उ.प्र.) ने कहा कि मौलाना मुहम्मद अली की सेवाएँ सदैव स्मरणीय रहेंगी।[३]

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. नीलम संजीव रेड्डी ने कहा कि व कोकनाड़ा के लिए नये नंहीं थे जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।[४] तथा डॉ. सै. अब्दुलबानी के अनुसार मौलाना मुहम्मद

---

1. Prime Minister Morarji Desai while addressing a Public meeting on 13 November 1978 at Hyderabad said Mahatma Gandhi and Maulana Mohd. Ali had laid the foundation for Hindu Muslim unity during the Khilafat Movement and for that consolidated it during the struggle against the British. He recalled that there was similarity between the Maulana and him, as both had left Government service for Public cause ... The Prime Minister said Maulana Mohd Ali was a great Patriot.

   — Hamdard Jauhar (Monthly)
   April 1983, last page
   - Printed by Sabri Printing Press Rampur

2. मैं (सर तेज बहादुर सिप्रु) मौलाना मुहम्मद अली से ३० साल से वाकिफ़ था। उनकी शख़्सीयत शानदार और जोरदार थी। इसमें कोई शक नहीं कि वह मुल्क से बहुत मुहब्बत रखते थे। और उनकी वफ़ात ऐसे वक़्त में हुई है जबकि हिन्दोस्तान को उनकी अशद ज़रूरत थी।
   – हयाते जौहर - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी पृ. १२९,

3. श्री जौहर की देश के लिए सर्वोच्च सेवाएँ सदैव याद रखी जायेंगी।
   स्वीनियर, १९८१, पृ. १८,

4. Dr. N. Sanjiva Reddy President of India said that he was not new to Kokinada which played an active role during the freedom movement.
   – Hamdard Jauhar (Monthly) February 1983, last page,

अली "जौहर" का व्यक्तित्व एक शक्तिशाली वक्ता, नेता सुधारक, कवि, लेखक, पत्रकार और एक धर्म मर्मज्ञ का एक अनोखा सम्मिश्रण था।[१]

सै. मुहम्मद खान (बी.ए. अलीगढ़) के विचारानुसार मौलाना मुहम्मद "जौहर" ईश्वर की एक विशिष्ट रचना थे।[२]

सलेक्टेड वर्क्स आफ जवाहर लाल नेहरू के सम्पादक श्री एस. गोपाल का कथन था कि एक राजा की तरह वह (मुहम्मद अली) कानून के ऊपर प्रतीत होते थे। भारतीय स्वतन्त्रता के एक वीर नेता के रूप में उनके प्रति मेरे मन में उच्च सम्मान था।[३]

मौलाना सै. हुसैन अहमद के विचार में मौलाना मुहम्मद अली भारतीय स्वतन्त्रता के ध्वज के सबसे शक्तिशाली रक्षक थे। राजनीति और धर्म में उनकी दृष्टि जहां पहुंच जाती, साधारण मनुष्य की दृष्टि वहां पहुंचनी ही कठिन थी।[४]

---

1. Maulana Mohamed Ali was a fire blend of powerful orator, Leader, reformer poet, Writer, Journalist and a Theologian.
   – Maulana Mohd. Ali. Birth Century Celeberatio, Article Maulana Mohd. Ali and his mission by S. Abdul Bari, Hyderabad-4, Dec. 1978. Souvenir, Seminar 30th & 31st Dec. 1978.
2. Mohamed Ali was an unique creation of the maker transecending all good things that may be said or sing in his praise.
   – Maulana Mohd. Ali ... Said Mohamed Ali Khan, B.A., (Aligarh) page no. 3,
3. Like the king they appear to be above the law. I had ventured to criticise a statement made by on of them for get ful of this truism in Indian politics because of my high regard for this gallant leader in the cause of Indian freedom. He has made history and, if he but will, can do so again.
   — Selected works of Jawahar Lal Nehru.
4. मौलाना मुहम्मद अली आज़ादिये हिन्द के सबसे बड़े अलम्बरदारों में से थे। और इन्हें अपने मुल्क की सियासी निजात के साथ ख़ास शग़फ़ थी। उनकी नज़र सियासी, मजहबी और फ़िकही मुआमिलात में उस बलन्दी पर पहुँच जाती थी। जहाँ हर शख़्स की निगाह का पहुँचना मुहाल है।
   – हयाते जौहर - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२८,

श्री रईस अहमद ज़ाफ़री ने मौलाना मुहम्मद अली की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनकी लेखनी तेज़ तलवार थी और दृष्टि बिजली थी।[१]

दि टाइम्स आफ इन्डिया ने लिखा कि मौलाना ने गहन और विस्तृत अध्ययन भारत की वर्तमान दशा के बारे में किया था। उनकी लेखनी शक्तिशाली और आकर्षक थी। वह पूर्ण रूप से ईमानदार थे।[२] तत्कालीन भारत मन्त्री श्री बिन ने कहा कि मौलाना मुहम्मद अली एक महान देश भक्त और मानवता के हित चिंतक थे।[३] तथा मिस्टर जेकर के कथानुसार मौलाना मुहम्मद अली जौहर भारतीय राजनीति के एक मुख्य व्यक्तित्व थे। आपने जाति की भरसक सेवा की।[४] लार्ड पेअल ने मौलाना मुहम्मद अली के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि वह मेरे सच्चे हिताकांक्षी थे और उनकी मृत्यु से मेरी निजी हानि और असीम शोक हुआ है।[५] तथा लार्ड रैडिंग ने उनकी भूरि-भूरि प्रशन्सा करते हुए कहा कि उनमें (मौलाना मुहम्मद अली) कार्य करने की अपरिमिति शक्ति थी।

---

1. उसका कलम (मौलाना मुहम्मद अली) तेग़े असील, उसकी निगाहें बर्क़े जां सोज़ थीं।
   - निगारिशाते मुहम्मद अली, मुर- रईस अहमद जाफ़री, पृ. १६,
2. Mr. Mohamed Ali has read widely and has thought well over the present conditions of India. He has the ardent temperament of the east, controlled by knowledge, and wields a powerful and attractive pen above all his absolutely honest. ... The comerade, 19th August, 1914, Vol 7,8 pg no. 139
   Some Press Opinions,
   By The Times of India.
3. Maulana Mohamed Ali was a great Muslim great patriot and a great prophet of humanity.
   - मौलाना मुहम्मद अली की याद में मुर - सै. सबाहुद्दीन अब्दुर रहमान, पृ. २६४,
4. मौलाना मुहम्मद अली हिन्दोस्तानी सियासियात में एक अहमद हस्ती थे। और उन्होंने क़ौमी मफ़ाद की ज़बरदस्त खिदमत अंजाम दी थी।
   - हयाते जौहर - मुर- इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२८, १२९,
5. मौलाना मुहम्मद अली मेरे रफ़ीक़ेकार थे और मुझे ज़ाती तौर पर उनके इन्तेक़ाल से बेइन्तेहा रन्ज हुआ है।
   - हयाते जौहर - इशरत रहमानी रामपुरी, पृ. १२९,

वह अपने अभिमत को दृढ़ विश्वास के साथ भारतीय जनता के सामने प्रस्तुत करते थे।[१]

तत्कालीन ब्रिटेन के सचिव (सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इन्डिया) ने घोषणा की कि आज हमारे मध्य से एक देवदूत चला गया है।[२]

मौलाना मुहम्मद अली बालगंगाधर तिलक को अपना राजनीतिक गुरु मानते थे दोनों का जीवन दर्शन और मार्ग एक ही थे। दोनों का उद्देश्य स्वयं प्रभुता प्राप्त करना था और दोनों ही धर्म को राजनैतिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग करना चाहते थे।[३] अंग्रेजों के प्रसिद्ध साहित्यकार एच. जी. वेल्स ने मौलाना मुहम्मद अली जौहर की प्रशंसा करते हुए कहा कि मौलाना का हृदय नेपोलियन का, वाणी तुर्क की, लेखिनी मैकाले की थी। यद्यपि आज मौलाना मुहम्मद अली साहब हमारे मध्य विद्यमान नहीं है परन्तु उनकी आत्मा स्वतन्त्र भारत के कण-कण में व्याप्त है। देश प्रेम के अंजन से युक्त आँख ही उसके दर्शन में सक्षम हो सकती है।[४]

---

1. मौलाना मुहम्मद अली ज़बरदस्त कुवते अमल के मालिक थे और वह अपने अक़ाइद को निहायत पुख़्तगी के साथ अहले हिन्द के सामने पेश करते थे। उनकी हिम्मत और जुरअत को देखते हुए हमारे क़लूब में तौसीफ़ व तारीफ का जज़्बा मौजजन है।
   - हयाते जौहर मुर- इशरत रहमान रामपुरी, पृ. १२९,
2. उस वक्त के बर्तानवी सिक्रेटरी आफ स्टेट फार इन्डिया करनल बेजोड़ बेयन ने ऐलान किया कि आज हम में से पैग़म्बर अज़ीमत का एक शख़्स चला गया है।
   – शख़्सीयत और ख़िदामात मुर - सै. नज़रबर्नी, पृ. ४७,
3. मुहम्मद अली 'तिलक' को अपना सियासी गुरू मानते थे। तिलक की तरह यह भी मुल्क की सियासी तहरीक को अवामी बुनियाद फ़राहम करने के क़ायल थे और दोनो ही का मकसद खुद इख़्तेयारी हासिल करना था और दोनों इन तरीकों को नापसन्द करते थे जो उस दौर के आज़ाद ख़्याल लोगों ने इख़्तेयार कर लिये थे। यह दोनों मज़हब के सियासी मकसद के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे।
   - मौ. मुहम्मद अली एक मुतालेआ - मुर- अब्दुल लतीफ़ आज़मी, पृ. ९१,
4. मौलाना साहब के दिलोदिमाग की तारीफ़ करते हुए बैल्स ने लिखा था– Maulana Mohamed Ali's heart was that Napolean. His tongue was that of Eurke and his pens was that of Macalay..... आज मौलाना साहब हमारे बीच में नहीं रहे, किन्तु उनकी आत्मा को हम आज़ाद हिन्दोस्तान के जर्रे-जर्रे में देख सकते हैं, बशर्ते कि हम वह आँख रखते हों, जिसमें वतन का सुरमा लगा हो।
   - मानवता और देश प्रेम का फरिश्ता - डॉ. राममूर्ति रेणु, एम. ए. डी.लिट्. मौलाना मुहम्मद अली बर्थ सेन्चुरी सेलिबरेशन, हैदराबाद-४, दिसम्बर १९७८,

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर"
एक शायर

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" साहब की कवित्व शक्ति का अनुभव उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही है जिन्हें उनके भाषण सुनने का सुअवसर मिला है। जन साधारण उनके कवित्व की वास्तविकता को कम ही जानते है। कुछ लोगों के विचार में वह एक स्वान्त: सुखाय शायरी करते थे। कुछ की धारणा है कि वह जन्म से ही शायर थे और कुछ लोगों के विचार में उन्होंने जनता के राजनीतिक मार्गदर्शन के बाद शायरी छोड़ दी। यह बात निर्विवाद है कि उह एक उच्च कोटि के शायर थे। परन्तु उनकी शायरी मुशायरे में प्रशंसा लूटने वाली शायरी न थी। उनकी शायरी का उद्देश्य जनजागरण था। उनकी शायरी हृदयों में ज्वार उठाकर अनियन्त्रित कर देने वाली आह के लिए थी। वह एक शब्दाडम्बर या मानसिक विलास के लिए नहीं थी।[१] निष्प्राण जनता को प्राणवान् बनाना ही उनकी शायरी का उद्देश्य था।

उनके शेर सिंहनाद है जिनका उद्देश्य पथभ्रष्टों को सुपथगामी बनाना है। उनके शेरों में बिम्बात्मकता और अद्‌भुत अभिव्यंजना शक्ति है। समाज के उत्थान के लिए वे उनके हृदय से निकले हैं। उनमें पीड़ा, प्रभाव, उत्साह और सन्देश है। आपके शेर श्रृंगारिकता से मुक्त है। "जौहर" साहब के शेर समसामयिक बोध से परिपूर्ण है। उनके शेर व्यावहारिक और अनुभवजन्य है। उनकी शायरी से उनकी दृढ़ संकल्पता और आत्म विश्वास तथा राजनैतिक उच्चता प्रकट होती है। उनके शेरों में संघर्ष और मानवता का सन्देश है। धर्म और ईश्वर के प्रति उनके शेरों में विश्वास व्यक्त हुआ है। मौलाना साहब देश के शुभचिन्तक थे उनकी विशाल आत्मा के साथ साथ देश शब्द का विस्तार भी असीम था जिसके अन्तर्गत पूरा विश्व सिमट आता था। उनकी शायरी में उच्च भावनाओं, विचारों और गहरी पीड़ा का प्रकाशन हुआ है।

मौलाना मुहम्मद अली जौहर की सुकुमार अवस्था में ही कवित्व का

---

1. _ he never wasted his time or words on merely praising and playing on the words,
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar, Book one,
By. Late Allah Bakhsh Yusufi, page no. 169,.

अंकुरण हो चुका था।[१] अलीगढ़ पहुँचने पर अनेक छात्र उनके चारों ओर एकत्र हुए और उन्होंने मुशायरा की नींव डाली। बाद में हसरत मोहानी जो कि अपने समय के जाने माने उग्रवादी राजनीतिक नेता और उच्च कोटि के शायर रहे हैं, ने इसका परिष्कार किया। प्रकृति ने उन्हें एक राष्ट्रीय कवि के गुणों से युक्त किया था। जिन्होंने बाद में स्वयं को अपने समसामयिक व्यक्तियों के बीच उच्च स्थान पर खड़ा कर लिया।[२]

हज़रत दाग़ के शिष्य मौलाना मुहम्मद अली जौहर के भाई ज़ुल्फ़िकार अली खां 'गौहर' को शायरी से बहुत लगाव था।[३] उनके घर पर बहुधा

---

1. मेरी (मुहम्मद अली) पैदाइश सन् १८७८ ई. के आख़िर की है। मैने १० बरस की ही उम्र में बहुत से लगब व फ़जल शेर मगर बामानी और मौजु कहे थे।
- जौहर और उनकी शायरी, अ ज़मौ. अब्दुल माजिद साहिब दरियाबादी, बीए. पृ. ४,
— आप मेरी (मुहम्मद अली) शायरी को क्या पूछते है बचपन में तो बहुत से सामान ऐसे बहम हो गये थे कि मैं आज ज़ुल्फ व अबरू की तारीफ़ में ख़ासे शेर निकाल लिया करता। रामपुर में उस जमाने में पैदा हुआ था जब घर-घर मुशायरा होता था।
- जौहर और उनकी शायरी, अ ज़मौ. अब्दुल माजिद साहिब दरियाबादी, बीए., पृ. ३,
- Mohamed Ali named 'Jauhar' as a poet started his poetical carrier even before he slipped into his teens.
. Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar.
- Late Allah Bakhsh Yusufi, page 169,
2. On reaching Aligarh he attracted several students around him and laid the foundation of Mushaiera (Poetical Symposium) which, later on, was illuminated by Hasrat Mohani, the welknown extremist political leader of the later days and a poet of distinction. Nature had showered all the good qualities of a national poet on him which led him to create for himself a most prominent and distinguished position among his contemporaries.
- Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar,
3. "जौहर" के भाई जुल्फ़िक़ार अली खां 'गौहर' हज़रत दाग़ के शागिर्द थे और शेरों शायरी का बहुत शौक़ था।
- उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल, साहिबज़ादा तजम्मुल अली खाँ, पृ. ११३,
– ख़ुद मेरे (मुहम्मद अली) खानदान में शेर गोई का ज़ौक हुआ। ३-४ अज़ीज़ उस्ताद दाग़ के शागिर्द हुए जिनमें एक मेरे हक़ीक़ी भाई जुल्फ़िक़ार अली खां साहब 'गौहर' और मेरे चचाज़ाद भाई खुसुर अज़मत अली खां साहब और उनके भाई हाफिज़ अहमद अली खां साहब 'शौक' शामिल थे। घर पर बारहा मुशायरा हुआ।
- जौहर और उनकी शायरी, अज़० अब्दुल माजिद दरियाबादी, पृ. ३

मुशायरों का आयोजन हुआ करता था। इस वातावरण ने जौहर के कवित्व को प्रेरित किया। नियमित और नियम पूर्वक उन्होनें किसी काव्य की शिक्षा ग्रहण नहीं की उनके भाई ही उनके एक मात्र परामर्शदाता थे।[१] स्वयं की अनुभूतियाँ राजनैतिक और धार्मिक झुकाव, कारागार और नज़रबन्दी के जीवन में उनकी काव्य कृतियों को विशेष रूप से प्रभावित किया।

मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" की शायरी का लक्ष्य अपने देशवासियों में साहब और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्षरत रहने की प्रेरणा देना था।[२] सन् १९१३ ई. से १९१९ तक की अवधि में जौहर साहब नज़रबन्द रहे। उनकी वाणी, समाचार पत्र, भाषण अर्थात् भाव प्रकाश के समस्त साधन अवरुद्ध हो चुके थे परन्तु उनके मष्तिष्क और हृदय में भावों का झंझावात था। इसी काल में उनके कवित्व का विकास हुआ।[३]

सन् १९१५ ई. में छिन्दवाड़ा नज़रबन्दी की अवधि में निम्नलिखित उद्‌गार व्यक्त कियेः-

यह कारागार चमत्कारिक सिद्ध हुआ। इसके फलस्वरूप हमारे चेतना चक्षु खुल गये।[४] तथा नज़रबन्दी ने हमारे भ्रम को तोड़ दिया है और

---

1. घर पर अक्सर मुशायरे भी होते थे। इसी माहौल में जौहर में शायरी का शौक़ पैदा हुआ। बाक़ायेदा उन्होंने (मुहम्मद अली) सिवाय अपने भाई 'गौहर' के किसी से इस्लाह नहीं ली।

   - उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल, साहिबज़ादा तज़म्मुल अली खाँ, पृ. ११३,

2. His verses aim at infusing courage among his countrymen and inducing them to fight against Imperialism.
   Life of Maulana Mohamed Ali Jauhar,
   by. late Allah Bakhsh Yusufi, page no. 170,

3. सन् १९१३ ई. से १९१९ ई. तक मुहम्मद अली खुद नज़रबन्द, उनकी ज़ुबान बन्द, अख़बार बन्द, तहरीर व तक़रीर क़यूद व शराइत की पाबन्द, सिर्फ दिमाग़ काम करता था या इससे भी ज़्यादा जज़बात का तूफान था। जो उठता था लेकिन क़ैद व बन्द की बन्दिशों में घुस कर रह जाता था। यही वो जमाना है कि मुहम्मद अली की शायरी ने जन्म लिया।

   - मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात
   मुरत- सै. नज़रबर्नी, उनवान - बहैसियत शायर नुरूररहमान पृ. ११८

4. यह नज़रबन्दी तो निकली रद्दे सैहर।
   दीदाहाये होश अब जाकर खुले॥

   मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात
   मुरत. सै. नज़रबर्नी उनवान- बहैसियत शायर नुरूर रहमान, पृ. ११८,

सच्चाई स्पष्ट हो गयी है।[१]

ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त वेतनभोगी कारागार के पहरेदार जिन्हें अपनी वास्तविक दासता का कभी कोई अनुभव ही न होता था, के प्रति जौहर साहब ने निम्नलिखित भाव व्यक्त किये। मानसिक रूप से सुप्त और अज्ञानवश सन्तुष्ट व्यक्तियों को हमारी चिन्ता छोड़कर अपने कठिन बन्धनों पर दुखी होना चाहिए। जिनको वे अलंकार समझते है वही उनके बन्धन के कारण हैं।[२]

कुछ लोग ऐसे भी थे जो एक बार कारवास भोग लेने के पश्चात् कष्टों के भय से दुबारा कोई ऐसा काम करने का साहस नहीं करते थे जिससे उन्हें दुबारा कारागार जाना पड़े। ऐसे कायरों के उद्बोधन के लिए बीजापुर जेल में मौलाना मुहम्मद अली ने कहा कि अपने अपराधों पर लज्जित होना और क्षमा याचना करना निर्दोषता से भी बढ़कर अपराध है।[३]

उन्होंने अंग्रेजों के द्वारा दिये गये कारावास को भी आशा वादी दृष्टि से देखा इसी कारागार की कृपा से उनकी भुजाएँ शक्तिशाली हो गयीं, मष्तिष्क और भी अधिक क्रियाशील हो गया और वे स्वतन्त्रता के लिए संघर्षशील हो उठे।[४]

---

1. अब कहीं टूटा है बातिल का फ़रेब।
हक़ के उक़दे अब कहीं हम पर खुले॥
मौलाना मुहम्मद अली शख़्सीयत और ख़िदामात, मुरत. सै. नज़रबर्नी, उनवान बहैसियत शायर, नुरूर रहमान, पृ. ११८,

2. छोड़ दी फ़िक्र ग़ाफ़िल रो ख़ुद अपनी क़ैद पर।
जिस को तू ज़ेवर समझता है वोहि ज़ंजीर है॥
- ख़ुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. १४४,

3. बेगुनाही से बढ़कर है अगर कोई गुनाह।
तो सज़ाए ज़ुर्म पाकर ख़िजलते तकसीर है॥
खुतबये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली, पृ. १४७,

4. फ़ैज़ से तेरे ही ऐ क़ैदे फ़िरंग।
बाल व पर निकले क़फ़स के दर खुले॥
मौलाना मुहम्मद अली, शख्सीयत और ख़िदामात, मुरत. सै नज़रबर्नी, उनवान बहैसियत शायर, नुरूररहमान, पृ. ११८,

स्वदेश से दूर होने पर उनका स्मरण हो आना स्वाभाविक है। उपवन की सुगन्ध उपवन से दूर पहुँच ही जाती है।[१] बन्दी बनाने वाला पिंजड़े को उपवन से कितना ही दूर क्यों न रक्खे, वहाँ उपवन का दृश्य न सही परन्तु फूलों का स्मरण तो ही आता है।[२]

मृत्यु से भयभीत होने वाले जीवन का आनन्द और महत्व नहीं जानते। यदि जीवन की लालसा उच्च कोटि की अर्थात् देश प्रेम और बलिदान से भरी हो तो मृत्यु भी सार्थक है। जैसा कि मौलाना का विचार था।[३]

मौलाना सद्विचारों को तुरन्त कार्य रूप में परिणत कर लेना चाहते थे। क्योंकि भविष्य में जीवन का कोई विश्वास नहीं है।[४] ईश्वर की कृपा पर विश्वास करते हुए तथा ब्रिटिश शासन की ओर इंगित करते हुए उन्होनें कहा था कि कोई रुष्ट होकर हमें कुछ भी हानि नंहीं पहुंचा सकता। क्योंकि ईश्वर हम पर कृपालु है।[५] मौलाना मुहम्मद अली

---

1. यादें वतन न आये हमें क्यों वतन से दूर।
जाती नहीं है बूये चमन क्या वतन से दूर॥
उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल,
साहिबज़ादा तजम्मुल अली खां, पृ. ११३

2. गर बूए गुल नहीं न सही यादे गुल तो है।
सय्याद लाख रक्खे क़फ़स को चमन से दूर॥
- जौहर और उनकी शायरी
अज़ मौलाना अब्दुल माजिद साहिब दरियाबादी, पृ. सं. ८२

3. ख़ाक जीना है अगर मौत से डरना है यहीं।
हवसे जीस्त हो इस दरज़े की तो मरना है यही॥
- उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल,
साहिबज़ादा तजम्मुल अली खां, पृ. सं. ११३,

4. आज कर लो जो कर सको कल तक।
कौन जीता है कौन मरता है॥
- उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल
साहिब ज़ादा तजम्मुल अली खां पृ. सं, ११३,

5. कोई न महरबाँ होकर हमारा क्या बिगाड़ेगा।
करम तेरा तो है हम पर तुझे जो महरबां पाया॥
- हयाते जौहर, इशरत रामपुरी, पृ. सं. ४३,

"जौहर" आत्म बलिदान से इस्लाम के उपवन में मधुमास खिला देना चाहते थे।[१]

दूरदर्शी होने के कारण मौलाना मुहम्मद अली जौहर को भविष्य की घटनाओं का पूर्वाभास हो जाया करता था। इसीलिए उन्हें अपने जीवन के कारावास तथ कष्टों का पूर्वानुमान था।[२] ठीक इसी प्रकार एक सिद्ध आध्यात्मिक पुरुष की तरह उन्हें अपनी मृत्यु का भी ज्ञान था, जिसका संकेत उन्होंने यह कह कर दिया कि जनता को जौहर के निधन पर ईर्ष्या होगी। ऐसी सुन्दर मृत्यु तो ईश्वर बड़ा कृपालु होकर ही किसी सौभाग्यशाली को देता है।[३]

---

1. मेरे लहू से ख़ाके वतन लालाज़ार देख।
इस्लाम के चमन की फ़िज़ा में बहार देख॥
- मौलाना मुहम्मद अली जामेआ नम्बर
मुदीर - ज़ियाउल हसन फ़ारुख़ी,
पृष्ठ संख्या १६५,

2. कल को है फिर वही ज़िन्दा जौहर।
ठीक क्या आपसे सौदाई की॥
मौलाना मुहम्मद अली,
शख़्सीयत और ख़िदामात,
मुरत० सै. नज़रबर्नी, उनवान - बहैसियत शायर,
नुरूररहमान पृ. सं० १३४,

3. है रश्क एक ख़ल्क को जौहर की मौत पर।
यह उसकी देन है जिसे परवर दिगार दे॥
स्वीनियर १९८१, मुदीर - ख़ान क़मर इक़बाल,
पृ. सं. ९६,

शब्दावली

शब्द	भाषा	अर्थ
अज़ीम	अरबी	बहुत बड़ा
अज़ीज़ अक़रुबा	अरबी	अधिक निकट संबंधी
अतराफ़	अरबी	दिशायें
अफ़राद	अरबी	आदमी
अतालीक़	उर्दू	गृह शिक्षक
अदीमुल मिसाल	अरबी	अद्वितीय
अज़मेसिबात	फारसी	दृढ़ निश्चय
अशख़ास	अरबी	व्यक्तियों
अय्याराना	अरबी	चालाकी वाले
अलमबरदार	फारसी	झंडा उठाने वाले
अद्ल	अरबी	इन्साफ(न्याय)
अवाम	अरबी	जनता
अकाबिर	अरबी	बड़े बड़े व्यक्ति (उच्च व्यक्ति)
अज़ीम ईसार	अरबी	बहुत बड़ा त्याग
अहतेजाजी	अरबी	शिकायती आवाज़
अलील	अरबी	बीमार
अक़द	अरबी	निकाह(विवाह)
अक़ीदत मन्दी	फारसी	दृढ़ विश्वास
असीरी	फारसी	क़ैद
अदमतेआबुन	अरबी	साथ न देना
अग़ियार	अरबी	अन्य व्यक्ति
अमल	अरबी	कार्य करना
अज़ीयत	अरबी	कष्ट देना
असबाब	अरबी	कारणों
असातिज़ा	अरबी	शिक्षकों
अहदे तिफ़ली	फारसी	लड़कपन की अवस्था
अहतेयात	अरबी	बचाव

शब्द	भाषा	अर्थ
अलहदा	उर्दू	अलग थलग
अहादीस	अरबी	हदीसें
अज़रुये कुरआन	फारसी	कुरान के अनुसार
अरमान	फारसी	इच्छा, आरजू, हसरत
अफ़सरे तालीमात	फारसी	शिक्षाधिकारी
अदायगी	फारसी	भुगतान कर देना
अय्यामे ग़दर	फारसी	क्रान्ति का समय
असेंसे	उर्दू	बहुत दिनों से
अक्सर	अरबी	अधिकतर
अहम	अरबी	विशेष
अन्दाज़ा	फारसी	ज्ञात होना
अख़बार	अरबी	समाचार पत्र
अफ़सोस	उर्दू	दुख
आतिशफ़िशा	फारसी	ज्वालामुखी
आजिज़	अरबी	कमजोर
आफ़्ताब	फारसी	सूर्य
आसारात	अरबी	लक्षण
आका	उर्दू	मालिक, स्वामी
आली हौसला	अरबी	महाधैर्यवान
आज़ादी	फारसी	स्वतन्त्रता
आईनये अय्याय	फारसी	दिनों का दर्पण
आख़िरी	अरबी	अन्तिम
आबाई	अरबी	पिता प्रपितावाला
आबाद	फारसी	बसा हुआ
आला	अरबी	बहुत बढ़िया
आरास्ता	फारसी	सजा हुआ
आजहानी	फारसी	स्वर्गीय
आनवान	उर्दू	शान से
आइन्दा	फारसी	आने वाला
आख़िरकार	फारसी	ग़रज़ कि

शब्द	भाषा	अर्थ
आबाओ अजदाद	अरबी	बाप दादे
ओहदा	फारसी	पद
क़ब्र	अरबी	भूसमाधि
कशिश	फारसी	आकर्षण
क़दर	उर्दू	इतना
कस्बा	उर्दू	उपनगर
क़र्ज़	अरबी	उधार
क़्याम	अरबी	ठहरना
कशमकश	फारसी	खेंचम खांच, तनाव
कमसिन	फारसी	कम आयु वाली
क़दामत पसन्द	फारसी	पुरानी बातों को पसंद करने वाला
कसीर	अरबी	अधिक
कमाहक़्कोहु	अरबी	पूरा पूरा
क़ल्ब	अरबी	दिल
क़ज़ा	अरबी	ईश्वर का आदेश, छूटना
करम	अरबी	कृपा
क्यूद व हुदुद	अरबी	बन्धन व सीमायें
कम व बेश	फारसी	थोड़ा और बहुत
करीबुलमर्ग	फारसी	मरने के निकट
कब्ल	फारसी	पहले
क़ायम	फारसी	स्थिर
क़ाफ़िलये हिन्द	फारसी	हिन्दोस्तान का क़ाफ़िला (गिरोह)
कामिलाने	फारसी	बड़े मौलवी (सन्त)
काफ़ी	अरबी	भरपूर
कारख़ाना	फारसी	काम का घर
क़ाबिलियत	अरबी	योग्यता
कामयाबी	फारसी	उद्देश्य में सफल होना

शब्द	भाषा	अर्थ
क़ायल	अरबी	मानने वाले, शर्मिंदा
क़ायदा	अरबी	नियम
क़ाबिलेज़िक्र	फारसी	उल्लेखनीय
क़िबला	अरबी	बुजुर्ग, कावा (जिधर मुँह करके नमाज पढ़ी जाती है।)
क़िस्म	अरबी	तरह
कुफ़्र	अरबी	धर्म के विरुद्ध, बेदीनी
कैदे क़फ़स	फारसी	पिंजड़े की कैद
क़ौमपरस्त	फारसी	धर्म का पुजारी
ख़राब	फारसी	बुरा लगने वाला
ख़तूत	फारसी	बहुत से पत्र
ख़्याल	अरबी	विचार
ख़लफ़े पंजुम	फारसी	पंचमपुत्र
ख़तरा	अरबी	विपत्ति, भय, डर
खामोशी	फारसी	शान्ति, चुपचुपाहट
खबर	अरबी	सन्देश
ख़लीज़	उर्दू	खाड़ी
खताओं	उर्दू	गल्तियों
खत्मशुदा	फारसी	समाप्त हुआ
ख़ादिम	अरबी	सेवक
ख़ातिर	अरबी	आवभगत, लिए, दिल
ख़ानदान	फारसी	घराना
ख़ातून	अरबी	औरत, स्त्री, नारी,
ख़ातिमा	अरबी	समाप्ति
ख़ानाबीरानी	फारसी	घर का उजाड़ होना
ख़ारे मुग़ीला	फारसी	बबूल के काँटे

शब्द	भाषा	अर्थ
ख़ाका	उर्दू	नक्शा, मानचित्र
ख़ानगी जुरूरत	फारसी	व्यक्तिगत काम, निजी कार्य
ख़िदामात	अरबी	सेवायें
ख़िलाफ़	अरबी	विरोध
ख़िताब	फारसी	किसी योग्यता के कारण दी गयी उपाधि
ख़िसारा	अरबी	हानि, घाटा, नुकसान
ख़िलाफ़वर्जी	फारसी	आदेश के विपरीत चलना
ख़ुद	फारसी	स्वयं
ख़ुश	फारसी	प्रसन्न
ख़ुशमज़ाक़ी	फारसी	प्रसन्नचित्त, अच्छा, स्वभाव,
ख़ुशनुदी	फारसी	खुशी, प्रसन्नता
ख़्वाह	फारसी	चाहे
ख़्वाब	फारसी	स्वप्न
ख़ुदमुख्तारी	फारसी	अपनी इच्छा का होना
ख़ुशख़ुलक़ी	फारसी	अच्छी आदत
ख़ुलुश	अरबी	वास्तविक प्रेम सच्च प्रेम
खुससियत	अरबी	खास तरह
ख़ुशगवार	फारसी	अच्छा लगने वाला
ख़ैर ख़्वाही	फारसी	भला चाहना
खैर मक़दम	अरबी	स्वागत
गर्द	फारसी	धूल
ग़स्ब	अरबी	हड़पना, छीन लेना
गवाह	फारसी	साक्षी
गवारा	फारसी	स्वीकार करना, कबूल करना

शब्द	भाषा	अर्थ
ग़ालेबन	फारसी	लगभग, शायद
ग़िजा	अरबी	खुराक, आहार
गुफ़्तगू	फारसी	बातचीत, वार्तालाप
गुलाम	अरबी	दास, पुत्र, शिष्य, शागिर्द
गुलामी	अरबी	दासता
ग़ैर	अरबी	दूसरे
ग़ैरेमशरूत	अरबी	बगैर शर्त किया हुआ, बन्धन रहित
गो	फारसी	अगरवे
गोया	फारसी	जो कि, बोलने वाला, कहने वाला
ग़ोश गुज़ार	फारसी	बात का कान में डालना
चन्द	फारसी	कुछ
चराग़	फारसी	दीपक
चुंनाचे	फारसी	इसलिए
चहीती	उर्दू	लाडली, प्रिय
जवांमर्दी	फारसी	दिलेरी, बहादुरी
ज़रियाये परवानये दोयम	फारसी	दूसरे आदेशानुसार
जानिब	अरबी	तरफ
जमानत	अरबी	जिम्मेदारी, प्रत्याभूति
जज़बात	अरबी	उमंगे
जज़बये आज़ादी	फारसी	स्वतन्त्रता की उमंग
ज़बरदस्त	फारसी	जोर व कुवत वाला
जलसा गाह	फारसी	जलसे का स्थान
जहन्नुम	अरबी	नर्क, दो जख़
जमावतों	उर्दू	पार्टियों
जल्द फ़ौरी	उर्दू	तुरन्त, शीघ्र
ज़मीर	फारसी	दिल
ज़नाज़ा	फारसी	मय्यत, अर्थी

शब्द	भाषा	अर्थ
जामेसिफ़ात शख़्सीयत	अरबी	ऐसा व्यक्तित्व, जिसमें बहुत सी अच्छाइयाँ हों
ज़ाती	उर्दू	व्यक्तिगत
जानिब	अरबी	तरफ
जायदाद	फारसी	मकान, जमीन आदि
ज़ातीताल्लुकात	अरबी	व्यक्तिगत संबंध
जाइज़	अरबी	ठीक, सही
ज़ाविये	उर्दू	कोने. गोशे
ज़्यादातर	फारसी	अधिकतर
जाबजा	फारसी	जगह जगह
ज़ायेशुदा	फारसी	नष्ट होने वाली
जांतोड़	उर्दू	अधिकतर
ज़िन्दगी	फारसी	जीवन
ज़िन्दा	फारसी	जीवित
ज़िला	अरबी	जिसमें कुछ तहसीलें हों
ज़िम्मये	फारसी	तरफ
ज़िम्मेदारी	अरबी	वह काम जिसका पूरा होना आवश्यक हो
ज़ियारत	अरबी	देखना
ज़िब से ज़िबतर	फारसी	बद से बदतर, बुरे से बुरा
जिद वे जेहद	अरबी	प्रयास, कोशिशें
ज़ेवर	फारसी	आभूषण, गहना,
ज़ेवरे तालीम	फारसी	शिक्षा रूपी आभूषण से
ज़ेरबारी	फारसी	बोझ से दबना
ज़ोरे ख़िलाफ़त	फारसी	ख़िलाफ़त का जोर
ज़ुल्फ़	फारसी	बालों की लट

शब्द	भाषा	अर्थ
तय	उर्दू	पूरा करना, लपेटना
तरजीह	अरबी	बढ़ाई
तसब्बुर	अरबी	ख़्याल करना
तहरीर	अरबी	लेख
तज़करा	अरबी	ज़िक्र करना
तनख़्वाह	फारसी	वेतन
तलब	अरबी,फारसी	बुलाना
तक़सीमे इन आमात	फारसी	इनामों का बंटवारा
तबके	अरबी	टुकड़े, हिस्से
तशवीशनाक	फारसी	चिन्ताग्रस्त, फिक्र से भरा हुआ
तक़रीबन	अरबी	लगभग
तशरीफ़	अरबी	पधारना, आना
तमन्ना	अरबी	अभिलाषा, इच्छा, आरजू
तक़रुर	अरबी	नियुक्त करना
तकाज़े	उर्दू	शख़्ती से मांगे
तर्जुमानी	अरबी	अनुवाद करना
तनज़ीम	अरबी	दुरुस्ती, इस्लाह
तमवीह	अरबी	शख़्ती से मना करना
तहरीक	अरबी	छेड़छाड़, उभार
तवाहाल	फारसी	बुरेहाल वाला
तक़दीर	अरबी	भाग्य
तकलीफ़	अरबी	परेशानी
तनक़ीदी	अरबी	आलोचनात्मक
तलकीन तवलीग़	अरबी	समझाना बुझाना, अपनी बातें दूसरे तक पहुंचाना
तजवीज़	अरबी	तय करना
तवील	अरबी	लम्बी

शब्द	भाषा	अर्थ
तकरीर	अरबी	भाषण
तरग़ीब	अरबी	ध्यान दिलाना
तस्लीम	अरबी	स्वीकार
ततब्बो	अरबी	तावेदारी
तहाफ़्फ़ुज	अरबी	हिफ़ाजत करना
तब्दील	अरबी	बदलना
तरफ़दारी	फारसी	किसी का साथ देना, मदद करना
तलाश	उर्दू	देखभाल करना, खोज करना
तरक्की	अरबी	उन्नति
तबीबों	उर्दू	हकीमों
तस्वीश अंगेज	फारसी	आश्चर्यजनक
तसललुत	अरबी	दबाव, ग़लबा
तरफ़दार	फारसी	हिमायती
तनदेही	फारसी	बहुत अधिक परिश्रम करना
तअससुब	अरबी	अपने धर्म का अनुचित पक्ष लेना
तंगदिली	फारसी	कठोर हृदय
तदवीर	अरबी	चिन्ता करना
तलक़ीन	अरबी	समझाना बुझाना
तारीख़	अरबी	दिनांक, इतिहास
तादाद	अरबी	संख्या
तालीम	अरबी	शिक्षा
ताल्लुकात	अरबी	सम्बन्ध
ताकत	फारसी	शक्ति
ताहाल	फारसी	अब तक
तामील	अरबी	किसी काम को करने लगना

शब्द	भाषा	अर्थ
तिब्बीमशीरकारो	उर्दू	राय देने वाले हकीम
तिलावतेकलामे	फारसी	कुरानशरीफ का पढ़ना
तुलाबा	अरबी	छात्र,
तुलू	अरबी	निकलना
तेहीदस्त	फारसी	खाली हाथ
दफ़न	अरबी	गाड़ देना
दस्तगाह	फारसी	महारथ
दस्तूरे क़दीम	फारसी	पुराना रिवाज
दस्त व दुआ	फारसी	दुआ के लिए हाथ उठाना
दरेग़	फारसी	सोचविचार
दरजा	अरबी	स्थान, कक्षा
दरिम्यान	फारसी	बीच
दफ़अतन	उर्दू	यकायक
दस्तख़त	फारसी	हस्ताक्षर
दर्स	अरबी	पाठ, सबक
दरख़्वास्त	फारसी	माँग
दावा	अरबी	बढ़ाई के साथ, जाहिर करना
दाख़िल	अरबी	प्रवेश
दावत	अरबी	बुलावा
दिलदादा	फारसी	दिल दिये हुए, आशिक
दिलकश	फारसी	दिल को अपनी ओर आकर्षित करने वाला
दिमाग	अरबी	भेजा, अक़्ल, समझ
दिलचस्पी	फारसी	रुचि

शब्द	भाषा	अर्थ
दुश्वारियाँ	फारसी	कठिनाईयाँ
दुश्वार तरीन	फारसी	बहुत अधिक कठिन
दूररस	फारसी	दूर तक पहुँचने वाला
दोबारा	फारसी	पुनः
दोश व दोश	फारसी	कन्धे से कन्धा मिलाये
दौरा	फारसी	जांच पड़ताल, मुआयना
नवाब	उर्दू	बहुत बड़ा रईस, जिसके पास बहुत से गाँव हों
नज़राना	अरबी	भेंट
नज़ीर	अरबी	मिसाल, उपमा
नफ़्स परवरी	फारसी	तन बदन पालना
नफ़्स परस्ती	फारसी	अपने धर्म की पूजा करना
नफ़्स	अरबी	जान
नफ़रत	अरबी	घृणा
नज़ार	फारसी	कमजोर
निगाह	,,	दृष्टि
नज़रबन्द	,,	जो निगरानी में हो
नज़रअन्दाज़	,,	दृष्टि से गिरा देना
नामुलाइद	,,	जो माफिक न हो
नाइन्साफ़ी	,,	ज़्यादती
नाफ़िज़	अरबी	जारी होने वाला
नाकारा	फारसी	बेकार
नाकाम	फारसी	बेमकसद
नुक्श	अरबी	चिह्न, नक़्श कीजमा
नुमाइन्दे	फारसी	लीडर

शब्द	भाषा	अर्थ
नुफ़ुर	अरबी	घृणा करने वाला
नुक़्तये नज़र	फ़ारसी	नज़र का नुक़्ता, समझ से
परवरदिगार	,,	पालनहार
परवाना	,,	पतंगा
परस्त	,,	पुजारी
पयरास्ता	,,	सजा हुआ
परवरिश	,,	लालनपालन
पयाम	,,	सन्देश
पाक	,,	शुद्ध
पाकज़ात	,,	रसूल
पाबन्द	,,	पक्का
पुख़्ताकार	,,	जिसका काम खूब पक्का हो
पुरशोर	,,	शोर से भरा हुआ
पुर	,,	भर लेना
पुरतपाक	फ़ारसी	उत्साह से, उमंग से
पेशाब	उर्दू	मूत्र
पेशतर	फ़ारसी	बहुत आगे, बहुत पहले
पेशकश	,,	नज़राना
पैदाइश	,,	जन्म
पैग़ाम	,,	सन्देश
फजूल	अरबी	जो अच्छे न हों, बेकार
फ़ना	-	मिटना
फ़रामोश	फ़ारसी	भूलना
फ़रज़न्द	,,	बेटा
फ़रमाया	उर्दू	कहा, किया
फ़राइज़	अरबी	बहुत ज़रूरी बातें
फ़ज़ीलत	-	बुजुर्ग, बढ़ाई

शब्द	भाषा	अर्थ
फ़लाह व बहबूद	फारसी	भलाई
फ़रमाबरदार	"	आदेश मानने वाला
फ़तवा	अरबी	धर्मी फैसला
फ़र्द	फारसी	व्यक्ति, शख़्स
फ़सादात	अरबी	झगड़े, टण्टे
फ़रीक़ों	उर्दू	पार्टियों
फ़ाइज़	अरबी	उच्च पद पर पहुँचने वाला
फातेआ	-	किसी की आत्मा को भेंट पहुंचाना
फ़ायदा	-	लाभ
फ़िज़ा	उर्दू	हवा
फ़िकारात में ग़र्क़	उर्दू	चिन्ता में डूबी हुई
फ़िरकापरस्त	फारसी	पार्टियों का पुजारी
फिदाईयाने मिल्लत		जाति पर बलिदान हो जाने वाले
फ़िरकेवराना	"	पार्टीबन्दी
फ़िरोगुज़ास्त	"	छोड़ देना
फ़ौरन	अरबी	तुरन्त
बयकवक़्त	फारसी	एक समय में
बजलासंज	"	चुटकुलों को पसंद करने वाला
बर्तानवी	उर्दू	अंग्रेजी
बहादुर	उर्दू	वीर
बरहना	फारसी	नंगी
बज़ाहिर	"	प्रत्यक्ष में
बलाकेज़हीन	उर्दू	बहुत तेज
बराहेरास्त	फारसी	सीधे रास्ते पर
बरबाद	"	मिटा हुआ
बदजन	"	बुरे विचार करने वाला

शब्द	भाषा	अर्थ
बक़िया	अरबी	बाक़ी रहे हुए लोग
बहालिये सेहत	फारसी	स्वास्थ्य सुधार हेतु
बहुकम	,,	आदेश से
बहरवर	,,	हिस्से पाने वाला
बदअहद	,,	जो अपने वचन पर स्थिर न हो
बकौल	,,	कहने के अनुसार
बजहत	अरबी	तफसील, विस्तृत
बइज्तेफ़ाके राय	फारसी	राय की एकता
बग़ावत	अरबी	विद्रोह, खिलाफ़ चलना
बदन	-	शरीर
बरदश्त	फारसी	सहना
बाइस	उर्दू	कारण, वजह
बारे अज़ीम	फारसी	बड़ा बोझ
बादरे बुजुर्ग	फारसी	बड़ा भाई
बाहमी	,,	आपसवाले
बारयाब	,,	दखल पानेवाला
बानी	अरबी	बनाने वाला, कायम करने वाला
बाज़	-	कुछ
बारहा	फारसी	अफसर
बाग़ियाना	उर्दू	ख़िलाफ चलना
बागडार	उर्दू	इन्तेज़ाम, व्यवस्था
बाज़ी	उर्दू	जान पर खेलकर काम करना
बातिल	अरबी	जो सही न हो
बाल व पर	फारसी	पर और बाजू
बिलाख़ौफ़े तरदीद	फारसी	बिना रद्द करने की डर से
बिस्तरे अलालत	फारसी	बीमारी का बिस्तर

शब्द	भाषा	अर्थ
बुजुर्ग	फारसी	बहुत बड़ा
बूये चमन	फारसी	चमन की खुश्बू
बेदस्त व पा	फारसी	मजबूर, बेबस
बेनुक़्त सुनाना	उर्दू	बहुत कुछ बुरा भला कहना
बेइख़्तेयार	फारसी	जिस पर अधिकार न हो
बेशक	फारसी	जिसमें सन्देह न हो
मरहूम	अरबी	स्वर्गीय
मक़ाम	अरबी	स्थान
मकातीब	अरबी	तख्ती पर लिखने
मशहूर	अरबी	प्रसिद्ध
मुसन्निफ	अरबी	लेखक रचयिता
मक़बरा	अरबी	समाधि
महसूस	अरबी	अहसास किया हुआ
मग़फ़र	अरबी	जिसे अल्लाह ने बख्श दिया हो
मुअज़्ज़िज	अरबी	इज़्ज़त वाले
मुसनदनशीने	फारसी	गद्दी पर बैठना
मशवरा	अरबी	राय देना
मदरसा	अरबी	पढ़ने की जगह
मज़ार	अरबी	समाधि
महबूब	अरबी	प्यारा
महकमा	अरबी	विभाग
मदफ़न	अरबी	दफन होने की जगह
मरज़	अरबी	रोग
मज़ालिम	अरबी	अत्याचार
मज़ामीन	अरबी	लेख, निबन्ध
मरज़ी	अरबी	इच्छा
मफ़ाद	अरबी	फायदा
मबनी	अरबी	मौकूफ, ठहरी हुयी

शब्द	भाषा	अर्थ
मशग़ला	अरबी	काम
मग़रबी	अरबी	पश्चिमी
मक़ामात	अरबी	जगहें
मसाइल	अरबी	मामले
मवाईद	अरबी	वायदे
मरज़ुल	अरबी	मौत की बीमारी
मजबूर	अरबी	बेबस
मशवरा	अरबी	राय
मज़ाहिमत	अरबी	रोक टोक करना
मजहका	अरबी	मजाक उड़ाना
मनक़वत	अरबी	बुजुर्गों की तारीख
मुसलसल	अरबी	लगातार
मलिके मौअज़्ज़म	फारसी	बड़ा बादशाह
महरूम	अरबी	हिस्सा न पाने वाला
मसलक	अरबी	चलने का रास्ता
मरकज़ी	उर्दू	खास जगह वाले
मख़सूस	अरबी	खास किया हुआ
महदूद	अरबी	हद किया हुआ
महरबां	फारसी	काम करने वाला
महरूमाना	अरबी	नाकामियों, असफलताओं
मातम करना	उर्दू	सिर व सीना पीटना
माहौल	अरबी	वातावरण
माहेरीनेफ़न	फारसी	अपने हुनर में कमाल रखने वाला
माज़ूर	अरबी	बेवश
माली ऐतवार	अरबी	आर्थिक स्थिति से
मालगुज़ारी	फारसी	सरकारी पैसा जमा करना
मामूर	अरबी	नियुक्त करना
मामाओं	उर्दू	दासियों

शब्द	भाषा	अर्थ
माकूल	अरबी	बढ़िया, उच्च, ठीक
मामूल	अरबी	नियम, दस्तूर, तरीका
मायूस	अरबी	निराश नाउम्मीद
मिकदार	अरबी	मात्रा
मिल्लतों	उर्दू	धर्मों, क़ौमों
मिज़ाज	अरबी	स्वभाव
मुक़ाबिला	अरबी	सामना करना
मुरततिबा	अरबी	तरतीब देने वाला, संग्रह कर्ता
मुज़ाहिद	अरबी	दीनके रास्ते में लड़ने वाला
मुमताज़	अरबी	इज़्ज़त और बढ़ाई वाला
मुदीर	अरबी	सम्पादक, एडीटर
मुखलिसाना	अरबी	सच्चा प्रेम
मुसिर	अरबी	हठ करने वाला
मुआमिला	अरबी	मामला, किस्सा
मुन्तक़िल	अरबी	एक स्थान से दूसरे स्थान को चले जाना
मुनअक़िद	अरबी	कायम, स्थिर
मुसल लिमा	अरबी	माना हुआ
मुस्ताफ़ी	अरबी	अलहेदगी, लेने वाला
मुत्सादिम	अरबी	टकराव करने वाला
मुन्तख़ब	अरबी	चुना हुआ
मुतालेबात	अरबी	मांगे
मुख्ततसर	अरबी	थोड़ा सा
मुस्तक़बिल	अरबी	आने वाला जमाना
मुक़ीम	अरबी	ठहरा हुआ
मुजरिम	अरबी	जुर्म करने वाला
मुलज़िम	अरबी	जिस पर इलज़ाम हो

शब्द	भाषा	अर्थ
मुद्दत	उर्दू	बहुत ज्यादा दिन
मुततहिदा	अरबी	मिला हुआ
मुसख़्ख़र	अरबी	कब्जे में लिया हुआ
मुक़ातेआ	अरबी	बहिष्कार करना
मूंजी	अरबी	सताने वाला
मूरिसेआला	अरबी	सगरदादा
मेहमान	फारसी	अतिथि
मौतमेदीन	अरबी	विश्वासवाले व्यक्ति
मोहतरमा	अरबी	इज्जत व हुरमत वाली
मोतरिफ़	अरबी	पहचाननेवाला
मौसमेसरमा	फारसी	जाड़े का मौसम
मौज़ा	अरबी	जगह, गाँव आदि
मंजिल	अरबी	पहुँचने की जगह
यक़ीनी	अरबी	विश्वास के योग्य
यादगार	फारसी	निशानी,
रहनुमा	उर्दू	नेता, लीडर
रफ़ीक़	अरबी	साथी
रक़म	अरबी	रुपये, पैसा
रफ़्ता रफ़्ता	फारसी	धीरे धीरे
रस्म	अरबी	दस्तूर, तरीका
रियासत	अरबी	बहुत बड़ा इलाका
रिवायत	अरबी	बयान
रियाया	फारसी	प्रजा
रिहाई	फारसी	छुटकारा
रिफ़ाकत	अरबी	साथ देना
रेज़गारी	उर्दू	टूटे हुए पैसे
रंज	फारसी	ग़म
लम्हा	अरबी	क्षण
लफ़्ज़	अरबी	शब्द
लाज़िमी	अरबी	जरूरी

शब्द	भाषा	अर्थ
लिबास	अरबी	पहनावा
लिहाज	अरबी	ख़्याल
वतन	अरबी	देश
वर्क़	अरबी	पृष्ठ
वलद	अरबी	बेटा
वज़ीफा	अरबी	छात्रवृत्ति
वफ़ात	अरबी	मौत
वरायेनाम	फारसी	नामवार को
वफद	अरबी	गिरोह
वज़ीरे आज़म	फारसी	सबसे बड़ा मन्त्री
वालिये	फारसी	हाकिम
वालिद	अरबी	पिता
वायदा	अरबी	वचन
वाक़ेया	अरबी	किस्सा
वाइल	उर्दू	कारण
वाक़ेयात	अरबी	किस्से
विलादत	अरबी	पैदा होना
विजारत	अरबी	वजीर होना
विकालत	अरबी	पैरवी करना
वेदार	फारसी	जागा हुआ
शख़्सीयत	अरबी	व्यक्तित्व
शमशीर बरहना	फारसी	नंगी तलवर
शहीदे वफ़ा	फारसी	वफ़ा का शहीद
शब	फारसी	रात
शहजादों	उर्दू	राजकुमारों
शरीफ नजीब ख़ातून	अरबी	बहुत अच्छे घरानों की औरत
शफ़क़त	अरबी	मुहब्बत
शख़्स	अरबी	आदमी
शरकत	अरबी	सम्मिलित
शदीद	अरबी	सख्त, तेज

शब्द	भाषा	अर्थ
शख्ततरीनदौर	फारसी	ज्यादा कठिनाई का जमाना
शकस्त	फारसी	हार
शफ़ीरं	अरबी	राजदूत
शायर	अरबी	शेर कहने वाला
शाना व शाना	फारसी	कन्धे से कन्धा मिलाये हुए
शामिल	अरबी	मिलने वाला
शाये होना	अरबी	छापा जाना
शानदार	फारसी	बढ़िया, शान वाला
शिकायत	अरबी	ख़फणीवाली बात
शुबह	अरबी	शक, सन्देह
शुमारे	फारसी	परिचय
शेरानेवतन	फारसी	वतन के शेर
शौहर	फारसी	पति
शोलये जब्वाला	फारसी	आतिशबाज़ी का चक्कर
सफ़र	अरबी	यात्रा
सरपरस्ती	फारसी	निगरानी में
सफाहात	अरबी	पृष्ठों
सदका	अरबी	मेहरबानी, कृपा
सर	फारसी	अपने ऊपर से
सर्फ व नहब	अरबी	अरबी ग्रामर की प्रारम्भिक किताबें
सहाफ़्ती	अरबी	बड़ी बड़े निबन्ध लिखने वाला
सज़ा	फारसी	दण्ड
सफ़र व हज़र	अरबी	यात्रा व अपना स्थान
सआदत	अरबी	नेक बख्ती, शुभ अवसर
सदके	अरबी	तुफेल, द्वारा

शब्द	भाषा	अर्थ
सरज़मीन	फारसी	जमीन
सबब	अरबी	कारण
सरर्कदगी	फारसी	लीडरी
सरासर	फारसी	बिलकुल
सलाहियत	अरबी	अच्छाई
सालारेआज़म	फारसी	बहुत बड़ा सरदार
सामराजियत	उर्दू	राज्य
साया	फारसी	छांव
साहबज़ादेगान	फारसी	लड़कों को
साज़िश	फारसी	षडयन्त्र
सामेइन	अरबी	सुनने वाले
सालेसिदारत	फारसी	अध्यक्ष बनने का वर्ष
सिर्फ	उर्दू	केवल
सिपाही	उर्दू	सैनिक
सियासी	उर्दू	इन्तेज़ाम में दख़ल देने वाला, राजनैतिक
सिपुर्द	फारसी	सौंपना
सिले में	उर्दू	बदले में
सिदाकत	अरबी	सच्चाई
सिपह सालार	फारसी	फ़ौज का सरदार
सिदारत	अरबी	सद्र बनना
सिफ़ारिशात	फारसी	सिफ़ारिशें
सिफर	फारसी	ढाल
सुकूनत	अरबी	रहना सहना
सुबक दोषी	फारसी	हलका फुलका होना
हक़गो	फारसी	सच्ची बात कहने वाला
हमाजिहत	फारसी	सब तरफ़ वाली
हक़ीक़त	अरबी	वास्तविकता, असलियत

शब्द	भाषा	अर्थ
हक़ीक़ी	अरबी	सगे, ठीक, सच्ची, सही
हंगामा फ़िरो हो जाने पर	उर्दू	गड़बड़ी कम होने पर
हरदिल अज़ीज़	फारसी	हरेक को अच्छा लगने वाला, प्रिय
हमराह	फारसी	साथी
हफ़्ता	फारसी	सप्ताह
हदिया	फारसी	तोहफ़ा, उपहार
हरगिज़	उर्दू	कभी नहीं
हक़परस्त	फारसी	ख़ुदा का पुजारी, ईश्वरभक्त
हक़गोई	फारसी	सच्ची बात कहना
हस्बे मामूल	अरबी	क़ायदे के अनुसार, नियमानुसार
हंगामा बरपा होना	फारसी	गुलगपाड़ा मचाना
हक़हकुक़	अरबी	जाइज़ हिस्सा, उचित भाग
हक़तलफी	फारसी	हक़ को मारना, किसी का भाग हड़पना
हजारहा पैरों	फारसी	बहुत से अनुयाइयों
हज़रात	अरबी	बड़े लोग
हद्देकमाल	फारसी	कमाल की हद
हमलावर	फारसी	चढ़ाई करने वाला
हलाक करना	उर्दू	जान से मार डालना
हबारीन	अरबी	संबंधितों
हाकिम नशीन	फारसी	हाकिम के बैठने का स्थान
हासिल	अरबी	प्राप्त करना
हाज़िर जवाबी	अरबी	तुरन्त जवाब देना

शब्द	भाषा	अर्थ
हामी	अरबी	तरफदार
हादसा	अरबी	घटना
हिम्मत	उर्दू	शक्ति, जवाँमर्दी
हिस्सा	अरबी	टुकड़ा,
हिम्मत अफ़ज़ाई	फारसी	दिल बढ़ाना
हिफ़ाज़त	अरबी	सुरक्षा, रक्षा
हिमायत	अरबी	तरफदारी, पक्ष लेना
हिदायत	अरबी	समझाना बुझाना
हुब्बेवतन	फारसी	देश प्रेम
हजूर तहसील	अरबी	रामपुर शहर के अन्दपायीजाने वाली तहसील
हुर्रियत	अरबी	आज़ादी
हकूमत	अरबी	सरकार
हुकुमनामा	फारसी	आदेश
हजूर	अरबी	श्रीमान्, जनाब
हेजान	उर्दू	बौखलाहट
हैरतअंगेज़	फारसी	आश्चर्य करने वाला

अन्य शब्दावली

इत्तेहादेशर्क़	फारसी	पूरब का मेलजोल
इन्सानियत	अरबी	आदमियत
इन्तेक़ाल	अरबी	मौत
इज़ाफ़ा	उर्दू	बढ़ोत्तरी
इमदाद व ऐआन	अरबी	मदद करना
इसरार	अरबी	हठ
इलाकाये मुस्ताजिरी	अरबी	इलाके के ठेकेदार
इन्तेज़ाम	अरबी	प्रबन्ध

शब्द	भाषा	अर्थ
इस्लामी फुतूहात	अरबी	मुस्लिमों की कामयाबियों एवं दूसरे देश पर आधिपत्य
इनआमात	अरबी	इनाम, उपहार
इमतेहान	अरबी	परीक्षा
इबतिदायी	अरबी	प्रारम्भिक
इन्तेहायी	अरबी	बहुत ज़्यादा
इल्म व अमल	अरबी	जानना और काम करना
इसतिकलाल	फारसी	कायम मिज़ाज़ी, स्थिर स्वभाव
इजरा	अरबी	जारी होना
इख़्तेताम	अरबी	समाप्त होना
इज़हार	अरबी	व्यक्त करना
इदारिया	अरबी	निबन्ध
इत्तेहाद	अरबी	मेलजोल
इत्तेफ़ाक़	अरबी	एकता
इजलाम	अरबी	दोष
इश्क़	अरबी	शौक़
इलज़ाम	अरबी	जलसा, हाकिम के बैठने की जगह
इल्म	अरबी	ज्ञान
इस्लामनवाज़ी	फारसी	इस्लाम पर मेहरबानी करना
इख़्तेयार	अरबी	अधिकार
इश्तेआल	अरबी	भड़कना
इशाअत	अरबी	फैलाव
इख़्तेलाफ़	अरबी	विरोध
इल्तेवाये जंग	फारसी	लड़ाई का बन्द होना

शब्द	भाषा	अर्थ
इन्तेहापसन्द	फारसी	अख़िरी हद को पसंद करने वाला
इनहिसार	अरबी	मौसूफ होना, ठहराव
इशारा	अरबी	संकेत
इकतिफ़ा	अरबी	बस कर लेना
इबारत	उर्दू	लेख, मतलब
इन्तेखाबात	अरबी	चुनाव
इस्तेकामत	अरबी	होश व हवास
इफ़्तिराक़ व इनशकाक	अरबी	फ़िरक़ाबन्दी व ग़ैरियत
इलतवा	अरबी	रोक देना
उनवान	अरबी	शीर्षक
उलूलअज़्मी	अरबी	बलन्द इरादे का होना
उलामा	अरबी	बड़े-बड़े दीन का इल्म जानने वाले
उनसुर	अरबी	हिस्सा
उज्र	अरबी	इनकार
एज़ाज़	अरबी	इज़्ज़त करना, सम्मान करना
ऐतराफ़	अरबी	पहचानना, मानना
ऐलान	अरबी	घोषणा
ऐतेबार	अरबी	विश्वास
ऐन	अरबी	ठीक
रू	फारसी	तरफ से
रूह	अरबी	आत्मा
रूबरू	फारसी	आमने सामने
रूनुमा	फारसी	जाहिर होने वाला, प्रत्यक्ष
रूह व रवा	अरबी/फारसी,	आत्मा व दिल

शब्द	भाषा	अर्थ
रूशनास	फारसी	सूरत को पहचानने वाला, जानकार, परिचित।
रुख़सत	फारसी	विदा

संदर्भ ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

	पुस्तक का नाम	लेखक/प्रकाशक
1.	स्वतन्त्रता संग्राम	विपन चन्द्र, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया नई दिल्ली, १९७२
2.	भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम और हिन्दी उपन्यास	डॉ. सीताराम "झा" "श्याम" हिन्दी प्रचारक प्रकाशन वाराणसी, १९७२
3.	मेरी कहानी	जवाहर लाल नेहरू, हिन्द पाकेट बुक्स, प्राइवेट लिमिटेड, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२
4.	यंग इंडिया	महात्मा गांधी, अनुवादक छविनाथ पाण्डेय, बी.ए. एल.एल.बी. मुद्रक महादेव प्रसाद सेठ, बालकृष्ण प्रेस १३, शंकर घोष लेन कलकत्ता।
5.	स्वतन्त्र दिल्ली	डॉ. सै. अतहर अब्बास रिज़वी, प्रथम संस्करण १८५७, प्रकाशन ब्यूरो सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश।
6.	१९२१ के असहयोग आन्दोलन की झांकियाँ	सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार, नवीन प्रेस नई देहली दिसम्बर १९७१
7.	संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह "दिनकर" उदयाचल पटना
8.	भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास	राम गोपाल
9.	भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास (१६००-१९१९)	गुरुमुख निहाल सिंह, आत्मा राम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली-६, १९५२
10.	कुछ पुरानी चिट्ठियाँ	जवाहर लाल नेहरू के संग्रह के महत्वपूर्ण पत्र, मार्तण्ड उपाध्याय मन्त्री, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, १९७४
11.	हिन्दुस्तान की कहानी	जवाहर लाल नेहरू, मुद्रक - इन्द्रप्रस्थ प्रेस (सी.बी.टी.) नई दिल्ली

पुस्तक का नाम	लेखक/प्रकाशक
12. जलियाँ वाला बाग	सुरेश सलिल, अतुल आलोक प्रकाशन, ३५४३, जटवाड़ा दरियागंज, शान प्रिन्टर्स, नई दिल्ली, १९८२
13. यंग इंडिया	लाला लाजपत राय
14. स्वप्न	राम नरेश त्रिपाठी
15. कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास	किशोरी लाल बाजपेयी, जनवाणी प्रकाशन, हरिसन रोड, कलकत्ता-७ १९४९ ई.

पत्र-पत्रिकाएँ

16. रजत (त्रैमासिक हिन्दी) वर्ष-१ अंक २	प्रकाशक "रजत" आनन्द कुमार जैन मार्ग रामपुर, अप्रैल १९७७ ई.
17. रामपुर का इतिहास	श्री देवेन्द्र नाथ जिला सूचना अधिकारी शंकर प्रिन्टिंग प्रेस रामपुर १९८०
18. मुहम्मद अली "जौहर" स्मारिका	इन्डियन पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ १०-१२-१९७८
19. हिन्दुस्तान, रविवासरीय परिशिष्ट	९ मई १९८२, अन्दर के पृष्ठों पर, पृ. सं. क,

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (उर्दू)

पुस्तक का नाम	लेखक/प्रकाशक
1. सीरते मुहम्मदअली,	मुरत. - रईस अहमद ज़ाफरी, जामेआ मिल्लिया इस्लामिया, सन् १९३२
2. हयाते जौहर	मुरत. - नश्तर बलरामी, मुस्लिम युनिवर्सिटी प्रेस, अलीगढ़, सन् १९३२
3. मजामीने मुहम्मद अली हिस्सा दोयम	मुहम्मद अली, मुरत. मुहम्मद सुरूर उस्ताद, जय्यद बरकी प्रैस लाहोर, १९४०,
4. मौलाना मुहम्मद अली, शख़्सीयत और ख़िदामात	मुरत. सै. नज़रबर्नी, कोहीनूर प्रेस, देहली सन् १९७६
5. मुहम्मद अली ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, हिस्सा अव्वल	मुरत. - अब्दुल माजिद दरियाबादी,
6. शौकत अली, मुहम्मद अली साहबान की नज़रबन्दी, चन्द अहम ख़तूत	मुस. वालदा आबादी बानू, प्रिन्टिंग प्रेस, देहली, १९१८,
7. उर्दू शायरी का तीसरा स्कूल,	मुस. साहबज़ादा तजम्मुल अली खां, एजुकेशनल प्रेस, पाकिस्तान चौक, जौहर एकेडमी, करांची
8. निगारिशाते मुहम्मद अली,	मुरत. रईस अहमद जाफरी रज़्ज़ाकी मशीन प्रेस हैदराबाद (दकन), १९४४ ई.
9. मुहम्मद अली - ज़ाती डायरी के चन्द वर्क़, हिस्सा दोयम	मुरत. अब्दुल माजिद दरियाबादी मारिफ प्रेस आज़मगढ़, १९५६ ई.
10. हयाते जौहर	मुरत. इशरत रहमानी रामपुरी
11. यादों की दुनियाँ	यूसुफ हुसेन खां, मआरिफ़ प्रेस आजमगढ़ १९६७ ई.
12. मौलाना मुहम्मद अली की याद में	मुरत. सै. सबाहुद्दीन अब्दुर्र रहमान, मआरिफ प्रेस आजमगढ़, १९७७
13. तज़करा क़ामिलाने रामपुर	मुसन्निफ - हाफ़िज़ अहमद अली खां "शौक" हमदर्द प्रेस वाक़े कूचाये चेलान देहली मार्च, १९२९ ई.

पुस्तक का नाम	लेखक/प्रकाशक
14. तहरीके ख़िलाफ़त	मुसन्निफ़ - क़ाजी मुहम्मद अदील अब्बासी तरक़्क़ी उर्दू बोर्ड नई दिल्ली, १९७८ ई.
15. जामेआ मौलाना मुहम्मद अली नम्बर, जिल्द ७६, शुमारा-३, बाबत माहे अप्रैल	जमाल प्रेस देहली, १९७९ ई.
16. हिन्दोस्तानी मुसलमान आइनये अय्याम में	सै. आबिद हुसेन, मकतबा, जामेआ मिल्लिया इस्लामिया, यूनियन प्रिंटिंग प्रेस देहली, १९६५,
17. ख़तुवये सिदारते मौलाना मुहम्मद अली बी.ए. इलाहाबाद व आक्सफोर्ड, कोकनाडा २६ दिस. १९२३	मतबये जामेआ मिल्लिया इस्लामिया अलीगढ़, मेतबा हुआ।
18. बयान मौलाना मुहम्मद अली साहब जो करांची के मैजिस्ट्रेट की अदालत में दिया	मुर- मुन्शी मुश्ताक़ अहमद नाज़िमे क़ौमी दारूल इशाअत मौ. कोटलाशहर मेरठ, १९२१ ई.
19. सिलसिला हालाते नज़रबन्दा ने इस्लाम न. १, शौकत अली व मुहम्मद अली साहिबान की नज़रबन्दी, चन्द अहम ख़तूत	सद्र दफ्तर अंजुमने, नज़रबन्दाने इस्लाम देहली ने शाये किया
20. मिफ़्ता हुल तक़वीम	तरक़्क़ी उर्दू बोर्ड, नई दिल्ली १९७७ ई.
21. नुकुश मकातीब नम्बर हिस्सा अव्वल, १९५७	
22. जौहर और उनकी शायरी	अज़ मौ. अब्दुल माज़िद साहिब दरियाबादी दानिश महल, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ ख्वाज़ा वर्की प्रेस,
23. खतूत मुहम्मद अली	मुरत. मुर० सुरूर उस्ताद, बर्की प्रेस, देहली १९४०
24. मौलाना मुहम्मद अली- एक मुतालेआ	मुरत. अब्दुल लतीफ आज़मी,

पुस्तक का नाम	लेखक/प्रकाशक
25.महनामा नुकुश	ख़तूत न. १ १९६८ ई.
26.औराक़े गुमगश्ता	मुरत. रईस अहमद जाफ़री, मतबूआ लौहर, १९६८

पत्र-पत्रिकाएँ

27.स्वीनियर १९८१	मुदीर, डॉ. कमर इक़बाल, मुहम्मद अली जौहर मेमोरियल सोसाइटी, बाजार मुल्ला ज़रीफ, रामपुर
28.आजकल (माहवार) वौल्यूम ३७, न. ५, दिस. १९७८	स्काईलार्क प्रिन्टर्स नई दिल्ली, दिस. १९७८,
29.हमदर्द जौहर माहवार, फरवरी १९८३,	साबरी प्रिंटिंग प्रेस रामपुर उ.प्र. ।
30.हमदर्द, जौहर (माहवार) अप्रेल १९८३	साबरी प्रिंटिंग प्रेस रामपुर उ.प्र. ।
31.हमदर्द, जौहर (माहवार) जौलाई १९८३,	साबरी प्रिन्टिंग प्रेस रामपुर
32.रामपुर गजट, २० जनवरी, १९०२	
33.हमारी जुबान	२२ जनवरी १९७९, देहली
34.कौमी जंग	२२ जून १९८३, रामपुर
35.तौक़ियाते जौहर,	डॉ. जहीर सिद्दीक़ी, मौ. मु. अली, जौहर सेमिनार, (पम्फलेट) जनवरी १९८३
36.हमदर्द	मुदीर, मुहम्मद अली, २२ फरवरी, १९२६, देहली
37.हमदर्द	मुदीर, मुहम्मद अली, २१ अक्टूबर, १९२६, देहली
38.हमदर्द	मुदीर मुहम्मद अली, १६ मार्च, १९२८, देहली

ठ

BIBLIOGRAPHY

Name of Books	Writer/Publisher
1. My life a Fragment	Mohd. Ali Etd. By Afzal Iqbal, Lahore, Sh. Mohammed Ashraf, Kashmiri Bazar, Lahore, 1946
2. Jawahar Lal Nehru, An-autobiography,	New Edition containing an additional (five years letters, 1958)
3. Maulana Mohammed Ali,	Said Mohd Khan B.A. Alig. Wazir Manzil Khurja, Oct. 14, 1957.
4. The life and Times of Bultan Mahmood of Ghajna	Mohd. Nazin, Arnold Sir, J. Cambridge University Press, 1931.
5. The Rise of the British power in the east	Hon'ble Mountstuart elphin stone, London, 1887.
6. The History of the British Empire in India	Edward thornton, R.S.Q. Vol. I London. Leadon Hall Street, 1841,
7. Discovery of India	Jawahar Lal Nehru, The Signet Press Calcutta, 1946.
8. British Para Mountcy and Indian Resaissance part one	R.C. Majumdar, Published by S. Rama Krishnan Executive secretary Bharatiya Vidya Bhawan Bombay, 1963,
9. A History of Freedom Movement Vol II, 1831, 1905,	Pakistan Historical Society 30-New Karanchi housing society, Karachi, 1960

Name of Books	Writer/Publisher
10. Indian Mutiny of 1857-1858	Sir, John Kaye, Pub. London W.H. Allen & Co. 13 water 100, place, 1888,
11. Ox Ford, History of India	Vincent A. Smith at the Ox Ford Clarendon Press, 1958,
12. Selected Writings & Speeches of Mohammed Ali, Vol. I	Edt. By. Afzal Iqbal, Fellow Royal Society of Arts Printed at Ashraf Press Lahore, 1969.
13. Life of Maulana Mohammed Ali Jauhar, Book one,	Late Allah Bakhsh Yusufi, Education Society Karachi-5, 1970
14. The Historic State Trial of the Ali Brothers and five others	By. Thadani R.V. Published by R.V. Thadani, E.S.Q. Pleader Karachi-1921
15. Maualana Mohammed Ali, Birth Century Celeberation Souvenir Dec. 1978, Hyderabad-4	Editors - Katam Lakshmi Narayan, Fareed Mirza, Dr. Anwar Moazzam, Abdul Kalam Azad, Hyderabad-4 Dec. 1978
16. How speep the brave	William Collins, From : Poems for the young, Edt. by. S.B. Singh, B. II Bharat Bharati Prakashan, Meerut 1976.
17. At the Feet of Mahatma Gandhi	By. Rajendra Prasad, Asia Publishing House Bombay, Calcutta, New Delhi, Madras, London, New York, 1961

Name of Books	Writer/Publisher
18. The Voice of Freedom The speeches of Pandit Moti Lal Nehru	Edt. by K.M. Panikar and A. Prasad, Asia Publishing House Bombay, 1961,
19. Selected Writings & Speeches of Mohammed Ali, Vol. II,	Edt. By. Afzal Iqbal, Fellow, Royal Society of Arts. Printed at Asharaf Press Lahore, 1969.

Magazine and News Papers

20. Hamdard Jauhar Monthly (Urdu) Last page. Jan. 1983	Printed by Sabri Printing Press Rampur.
21. The Comrade 22nd Nov. 1913	Edt. By. Mohammed Ali, Vol. VI, Delhi, page no. 364–65
22. The Comrade 10th Jan. 1914,	Edt. by. Mohammed Ali, Delhi, 1914 page no. १८.
23. The Comrade 19th August 1914.	Edt. by. Mohammed Ali, Vol. VII, VIII